ऊँ गं गणपतये नमः

शुभ 卐 लाभ

जन्मपत्रिका

Hritik Roshan

Pandit.com

Astrology | Numerology | Vastu Shastra

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

जन्मपत्रिका

Hritik Roshan

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	10/01/1974
दिन	गुरुवार
जन्म समय	12:00:00 घंटे
इष्ट	11:54:11 घटी
स्थान	Mumbai
राज्य	Maharashtra
देश	India
अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे

Model: 3-Platinum-Horoscope-Plan

SrNo: 112-114-105-1023 / 502 Date: 07/11/2019

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**10/01/1974**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**12:00:00 घंटे**
इष्ट	11:54:11 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:21:20 घंटे
वेलान्तर	-00:07:24 घंटे
साम्पातिक काल	18:38:56 घंटे
सूर्योदय	07:14:19 घंटे
सूर्यास्त	18:17:55 घंटे
दिनमान	11:03:36 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	26:08:06 धनु
लग्न के अंश	18:55:35 मीन

चैत्रादि संवत / शक	2030 / 1895
मास	माघ
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	2
तिथि समाप्ति काल	10:42:18
जन्म तिथि	3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल	26:37:26 घंटे
जन्म नक्षत्र	आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग	प्रीति
योग समाप्ति काल	26:29:21 घंटे
जन्म योग	प्रीति
सूर्योदय कालीन करण	गर
करण समाप्ति काल	10:42:18 घंटे
जन्म करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मीन – गुरु
राशि–स्वामी	**कर्क – चन्द्र**
नक्षत्र–चरण	**आश्लेषा – 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	प्रीति
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डू–डूंगरमल
पाया(राशि–नक्षत्र)	रजत – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

घात चक्र

मास	पौष
तिथि	2-7-12
दिन	बुधवार
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्याघात
करण	नाग
प्रहर	1
वर्ग	मेष
लग्न	तुला
सूर्य	सिंह
चन्द्र	सिंह
मंगल	कन्या
बुध	मिथुन
गुरु	तुला
शुक्र	वृश्चिक
शनि	कर्क
राहु	धनु

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	18:55:35	457:14:32	रेवती	1	27	गुरु	बुध	केतु	———
सूर्य			धनु	26:08:06	01:01:07	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	20:53:31	15:02:24	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	स्वराशि
मंगल			मेष	12:37:35	00:24:42	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	स्वराशि
बुध		अ	धनु	26:42:18	01:38:23	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	सम राशि
गुरु			मक	22:58:23	00:13:35	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	सूर्य	नीच राशि
शुक्र	व		मक	16:50:31	00:17:36	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	शनि	मित्र राशि
शनि	व		मिथु	06:19:01	00:04:30	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	मित्र राशि
राहु	व		धनु	05:00:22	00:02:29	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	नीच राशि
केतु	व		मिथु	05:00:22	00:02:29	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	नीच राशि
हर्ष			तुला	04:03:29	00:01:13	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	———
नेप			वृश्चि	15:07:53	00:01:49	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	———
प्लूटो	व		कन्या	13:19:44	00:00:03	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	———
दशम भाव			धनु	15:26:47	--	पूर्वाषाढ़ा	--	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर

अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:29:58

लग्न–चलित

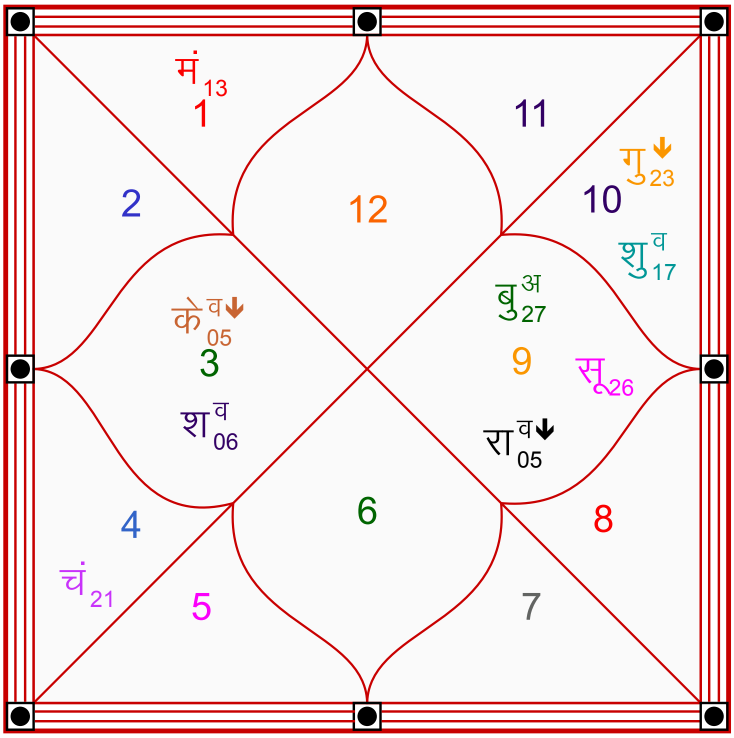

चन्द्र कुंडली

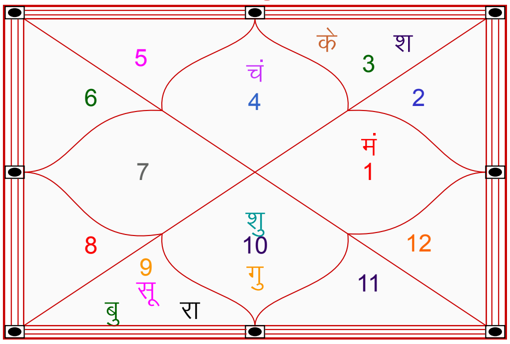

नवमांश कुंडली

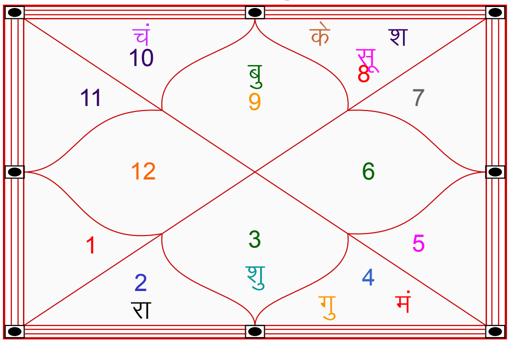

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मीन	03:20:47	मीन	18:55:35
2	मेष	03:20:47	मेष	17:45:59
3	वृष	02:11:11	वृष	16:36:23
4	मिथुन	01:01:35	मिथुन	15:26:47
5	कर्क	01:01:35	कर्क	16:36:23
6	सिंह	02:11:11	सिंह	17:45:59
7	कन्या	03:20:47	कन्या	18:55:35
8	तुला	03:20:47	तुला	17:45:59
9	वृश्चिक	02:11:11	वृश्चिक	16:36:23
10	धनु	01:01:35	धनु	15:26:47
11	मकर	01:01:35	मकर	16:36:23
12	कुम्भ	02:11:11	कुम्भ	17:45:59

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	18:55:35
2	मेष	22:38:34
3	वृष	20:19:44
4	मिथुन	15:26:47
5	कर्क	11:37:01
6	सिंह	12:16:02
7	कन्या	18:55:35
8	तुला	22:38:34
9	वृश्चिक	20:19:44
10	धनु	15:26:47
11	मकर	11:37:01
12	कुम्भ	12:16:02

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

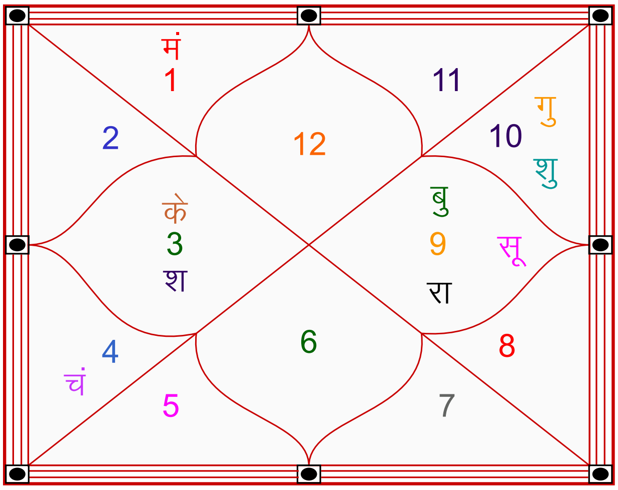

भाव कुंडली

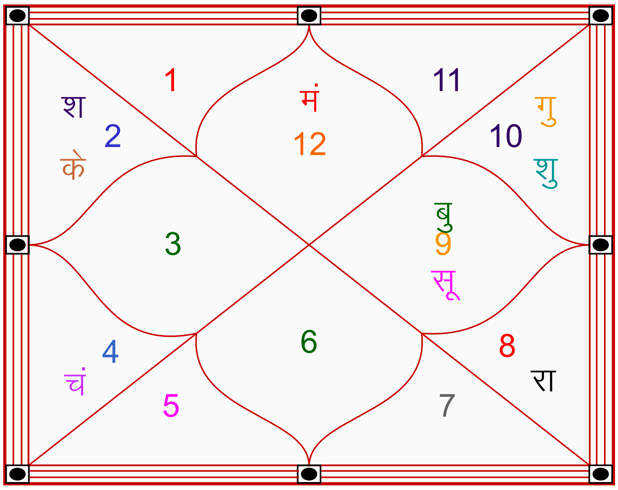

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------		---------- अवस्था ----------				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	मृत	मुदित	निद्रा	5.64	39 %
चंद्र	मातृ	मातृ	कुमार	स्वस्थ	उपवेशन	7.66	57 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	युवा	स्वस्थ	आगम	4.39	30 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	मृत	विकल	आगम	0.00	45 %
गुरु	भ्रातृ	धन	कुमार	भीत	नृत्यलिप्सा	0.35	55 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	मुदित	आगम	4.88	76 %
शनि	कलत्र	आयु	कुमार	मुदित	आगमन	1.29	35 %
राहु	----	ज्ञान	बाल	भीत	निद्रा	0.00	72 %
केतु	----	मोक्ष	बाल	भीत	उपवेशन	0.00	72 %
कुल						**24.21**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली

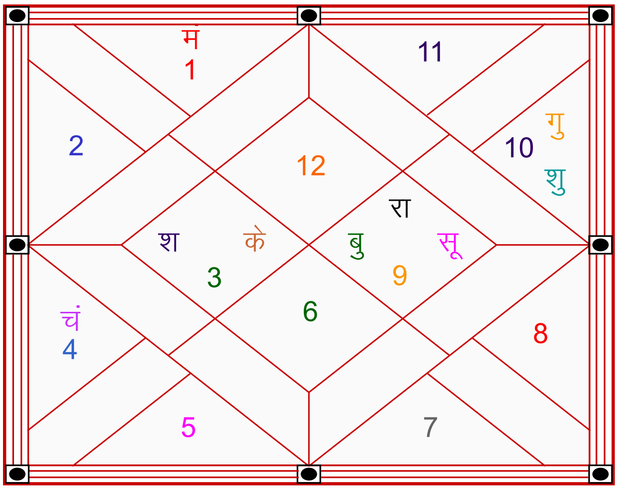

लग्न–चलित

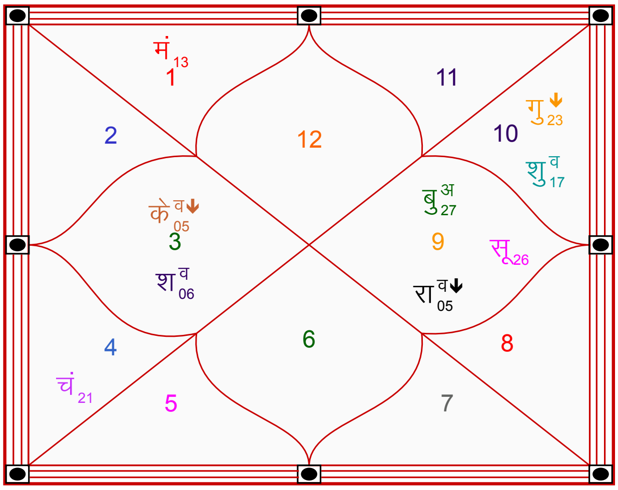

Pandit.com
Astrology | Numerology | Vastu Shastra
Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

सुदर्शन चक्र

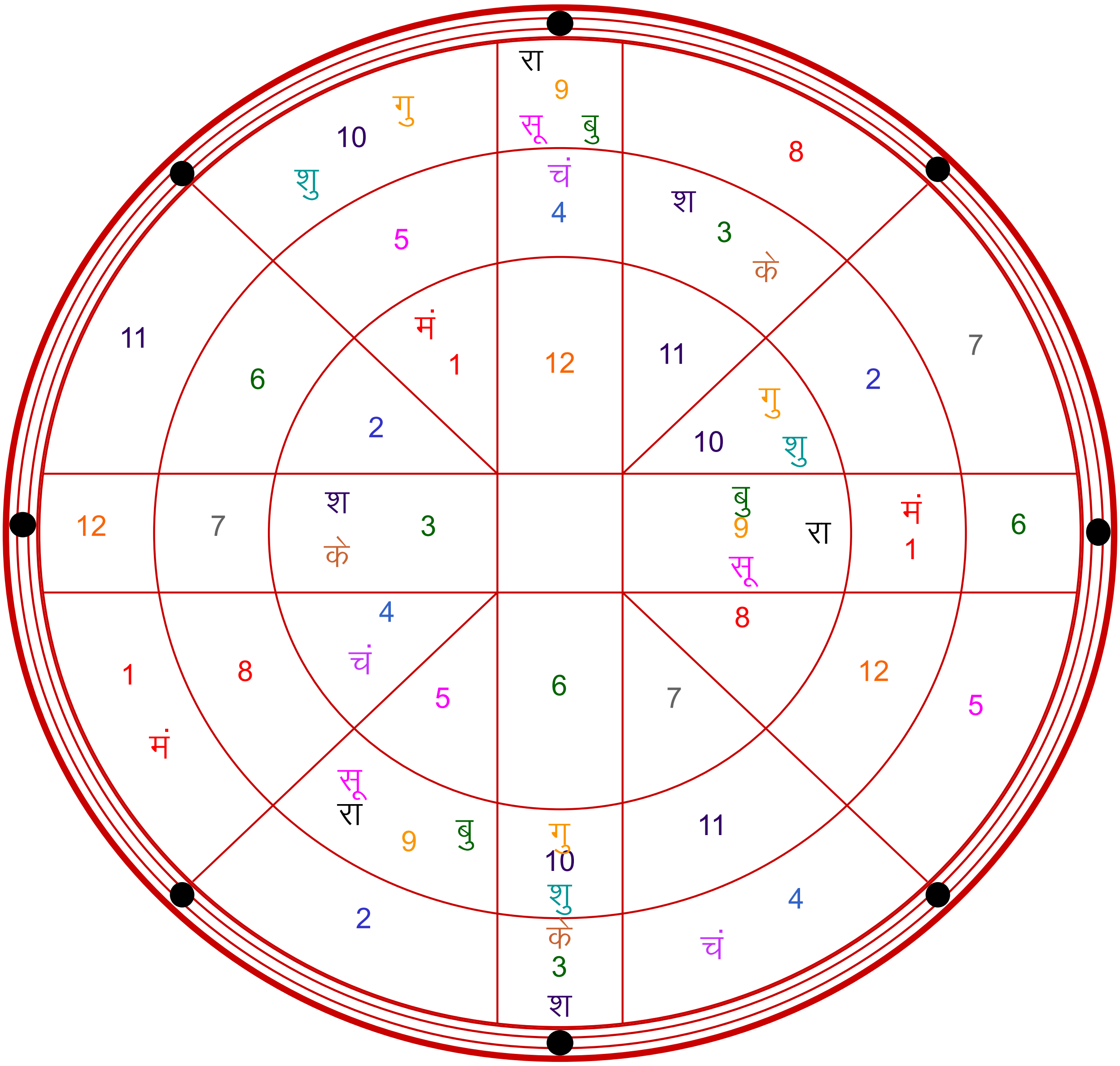

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : बुध 11 वर्ष 5 मास 21 दिन

ग्रह									निरयण भाव						
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	26:14:32	गुरु	शुक्र	केतु	राहु	1	मीन	19:02:01	गुरु	बुध	केतु	गुरु
चंद्र		कर्क	20:59:57	चंद्र	बुध	शुक्र	शनि	2	मेष	22:45:00	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र
मंगल		मेष	12:44:01	मंगल	केतु	बुध	राहु	3	वृष	20:26:10	शुक्र	चंद्र	केतु	बुध
बुध		धनु	26:48:44	गुरु	सूर्य	सूर्य	राहु	4	मिथु	15:33:13	बुध	राहु	शुक्र	शुक्र
गुरु		मक	23:04:49	शनि	चंद्र	सूर्य	शनि	5	कर्क	11:43:28	चंद्र	शनि	चंद्र	बुध
शुक्र	व	मक	16:56:57	शनि	चंद्र	शनि	चंद्र	6	सिंह	12:22:29	सूर्य	केतु	बुध	चंद्र
शनि	व	मिथु	06:25:27	बुध	मंगल	चंद्र	केतु	7	कन्या	19:02:01	बुध	चंद्र	बुध	राहु
राहु	व	धनु	05:06:48	गुरु	केतु	मंगल	शनि	8	तुला	22:45:00	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र
केतु	व	मिथु	05:06:48	बुध	मंगल	सूर्य	राहु	9	वृश्चि	20:26:10	मंगल	बुध	शुक्र	राहु
हर्ष		तुला	04:09:55	शुक्र	मंगल	शुक्र	शनि	10	धनु	15:33:13	गुरु	शुक्र	शुक्र	केतु
नेप		वृश्चि	15:14:20	मंगल	शनि	गुरु	शनि	11	मक	11:43:28	शनि	चंद्र	मंगल	शुक्र
प्लूटो	व	कन्या	13:26:10	बुध	चंद्र	राहु	शुक्र	12	कुंभ	12:22:29	शनि	राहु	शनि	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:23:31

फॉरच्युना : तुला 13:47:26

लग्न कुंडली

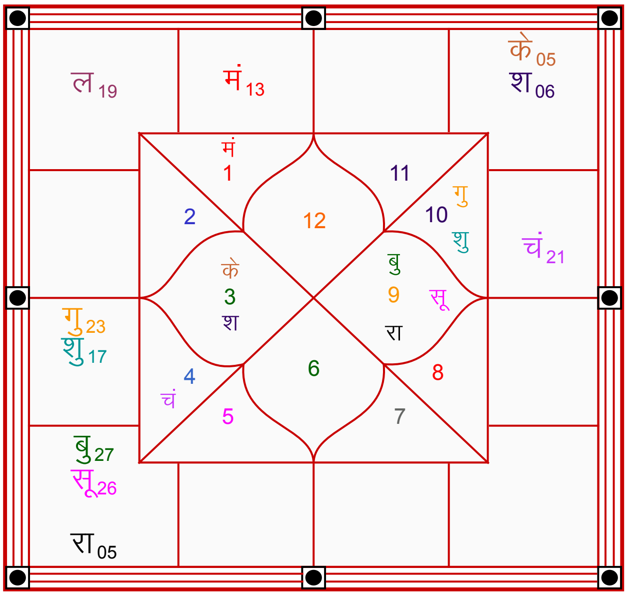

भाव कुंडली

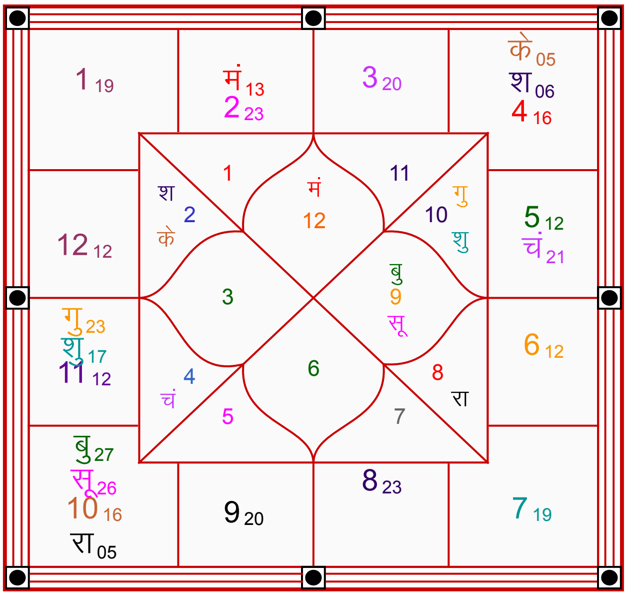

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल, गुरु– शनि, केतु,
2	मंगल– शनि– केतु–
3	सूर्य– मंगल, शुक्र– शनि, राहु, केतु,
4	चंद्र– बुध–
5	चंद्र, गुरु+ शुक्र+
6	सूर्य– बुध–
7	चंद्र– बुध–
8	सूर्य– शुक्र–
9	मंगल– शनि– राहु, केतु–
10	सूर्य, चंद्र, बुध+ गुरु–
11	सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि–
12	शनि–

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 6- 8- 10, 11,
चंद्र	4- 5, 7- 10,
मंगल	1, 2- 3, 9-
बुध	4- 6- 7- 10+
गुरु	1- 5+ 10- 11,
शुक्र	3- 5+ 8- 11,
शनि	1, 2- 3, 9- 11- 12-
राहु	3, 9,
केतु	1, 2- 3, 9-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	शुक्र

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	श के	मं	--	गु
2	--	--	श के	मं
3	मं रा	श के	सू	शु
4	--	--	चं	बु
5	गु शु	चं	गु शु	चं
6	--	--	बु	सू
7	--	--	चं	बु
8	--	--	सू	शु
9	--	रा	श के	मं
10	चं बु	सू बु	--	गु
11	सू	गु शु	--	श
12	--	--	--	श

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	6	---	धनु	10
चंद्र	5	3,7,11	कर्क	5
मंगल	2,9	---	मेष	1
बुध	4,7	1,9	धनु	10
गुरु	1,10	8	मकर	11
शुक्र	3,8	2,10	मकर	11
शनि	11,12	5	मिथुन	3
राहु	---	4,12	धनु	9
केतु	---	6	मिथुन	3

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	3,8	2,10	11	---	6	3
चंद्र	4,7	1,9	10	3,8	2,10	11
मंगल	---	6	3	4,7	1,9	10
बुध	6	---	10	6	---	10
गुरु	5	3,7,11	5	6	---	10
शुक्र	5	3,7,11	5	11,12	5	3
शनि	2,9	---	1	5	3,7,11	5
राहु	---	6	3	2,9	---	1
केतु	2,9	---	1	6	---	10

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	348.93	17.77	46.61	75.45	106.61	137.77	168.93	197.77	226.61	255.45	286.61	317.77
सूर्य	——	——	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	——
266.14	0.00	0.00	0.00	4.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.36	0.00	0.00
चंद्र	——	——	——	——	युति	——	तृती	चतु	पंच	——	सप्त	——
110.89	0.00	0.00	0.00	0.00	9.01	0.00	2.61	2.05	1.30	0.00	9.01	0.00
मंगल	——	युति	——	तृती	4था	पंच	——	सप्त	8वां	——	——	——
12.63	0.00	8.59	0.00	2.22	9.14	0.67	0.00	8.59	9.14	0.00	0.00	0.00
बुध	——	——	——	——	——	——	——	——	——	युति	——	——
266.70	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.82	0.00	0.00
गुरु	तृती	चतु	5वां	——	——	——	9वां	——	——	——	युति	——
292.97	1.47	0.62	7.86	0.00	0.00	0.00	9.12	0.00	0.00	0.00	7.86	0.00
शुक्र	तृती	चतु	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——
286.84	2.56	2.91	2.99	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00
शनि	10वा	——	——	युति	नवां	3रा	——	——	——	सप्त	——	——
66.32	2.48	0.00	0.00	5.77	0.90	3.63	0.00	0.00	0.00	5.77	0.00	0.00
राहु	——	——	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	पंचा
245.01	0.00	0.00	0.00	4.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.60	0.00	0.37
केतु	——	——	——	युति	——	पंचा	——	——	——	सप्त	——	——
65.01	0.00	0.00	0.00	4.60	0.00	0.37	0.00	0.00	0.00	4.60	0.00	0.00
हर्ष	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	——	——	——
184.06	0.00	1.35	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.35	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	——	चतु
225.13	1.64	0.00	9.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.88	0.00	0.00	2.31
प्लूटो	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	तृती	चतु	पंच	——
163.33	8.33	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.33	0.00	1.96	2.55	1.96	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 266.14	चंद्र 110.89	मंगल 12.63	बुध 266.70	गुरु 292.97	शुक्र 286.84	शनि 66.32	राहु 245.01	केतु 65.01	हर्ष 184.06	नेप 225.13	प्लूटो 163.33
सूर्य	——	——	——	युति	——	——	——	——	——	——	——	——
266.14	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	——	——	——	——	सप्त	सप्त	——	अष्टां	——	——	पंच	——
110.89	0.00	0.00	0.00	0.00	9.76	9.11	0.00	0.18	0.00	0.00	0.19	0.00
मंगल	——	4था	——	——	——	——	——	——	——	सप्त	8वां	षष्ठ
12.63	0.00	6.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.24	9.66	0.45
बुध	युति	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——
266.70	9.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	——	सप्त	——	——	——	युति	5वां	——	5वां	9वां	——	9वां
292.97	0.00	9.76	0.00	0.00	0.00	8.01	1.73	0.00	3.06	3.99	0.00	5.32
शुक्र	——	सप्त	चतु	——	युति	——	——	——	——	——	——	——
286.84	0.00	9.11	1.35	0.00	8.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	——	अष्ट	——	——	——	——	——	सप्त	युति	पंच	——	——
66.32	0.00	0.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	9.91	2.49	0.00	0.00
राहु	——	——	——	——	——	——	सप्त	——	सप्त	——	——	——
245.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	——	अष्ट	——	——	——	——	युति	सप्त	——	पंच	——	——
65.01	0.00	0.18	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	10.00	0.00	2.91	0.00	0.00
हर्ष	——	——	सप्त	——	——	——	——	तृती	——	——	——	——
184.06	0.00	0.00	6.24	0.00	0.00	0.00	0.00	2.91	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	——	——	——	——	——	तृती	——	——	——	——	——	——
225.13	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.70	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	——	——	——	——	——	पंच	——	——	——	——	तृती	——
163.33	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.82	0.00	0.00	0.00	0.00	2.67	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	348.93	22.64	50.33	75.45	101.62	132.27	168.93	202.64	230.33	255.45	281.62	312.27
सूर्य	——	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	——
266.14	0.00	1.83	0.00	4.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.36	0.00	0.00
चंद्र	——	——	——	——	युति	——	तृती	चतु	पंच	——	सप्त	——
110.89	0.00	0.00	0.00	0.00	5.64	0.00	2.61	2.69	2.97	0.00	5.64	0.00
मंगल	——	युति	——	तृती	4था	पंच	——	सप्त	8वां	——	——	——
12.63	0.00	4.99	0.00	2.22	9.94	2.99	0.00	4.99	6.92	0.00	0.00	0.00
बुध	——	पंच	——	——	सप्त	——	——	——	——	युति	युति	अष्ट
266.70	0.00	1.46	0.00	0.00	0.09	0.00	0.00	0.00	0.00	3.82	0.09	0.63
गुरु	तृती	चतु	5वां	——	——	——	9वां	——	——	——	युति	——
292.97	1.47	2.99	9.62	0.00	0.00	0.00	9.12	0.00	0.00	0.00	3.72	0.00
शुक्र	तृती	चतु	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——
286.84	2.56	0.16	1.83	0.00	8.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.54	0.00
शनि	10वा	——	——	युति	——	3रा	——	——	——	सप्त	——	——
66.32	2.48	0.00	0.00	5.77	0.00	8.12	0.00	0.00	0.00	5.77	0.00	0.00
राहु	——	——	सप्त	सप्त	——	——	——	——	युति	युति	——	——
245.01	0.00	0.00	0.34	4.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.34	4.60	0.00	0.00
केतु	——	——	युति	युति	——	——	——	——	——	सप्त	——	——
65.01	0.00	0.00	0.34	4.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.60	0.00	0.00
हर्ष	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——
184.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	——	चतु
225.13	1.64	0.00	8.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.56	0.00	0.00	2.20
प्लूटो	सप्त	——	——	——	——	——	युति	नवां	——	चतु	पंच	——
163.33	8.33	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.33	0.47	0.00	2.55	2.70	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

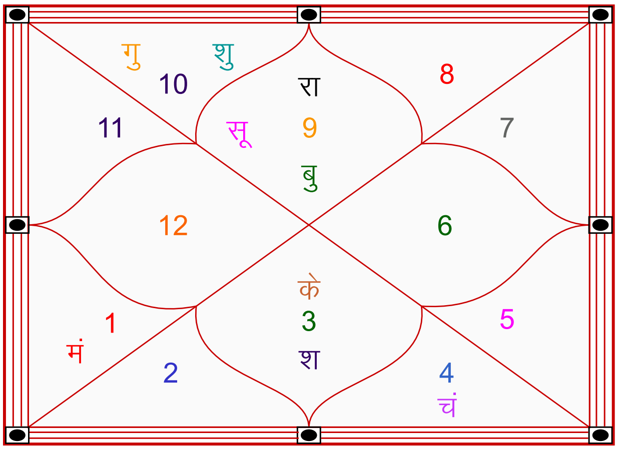

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

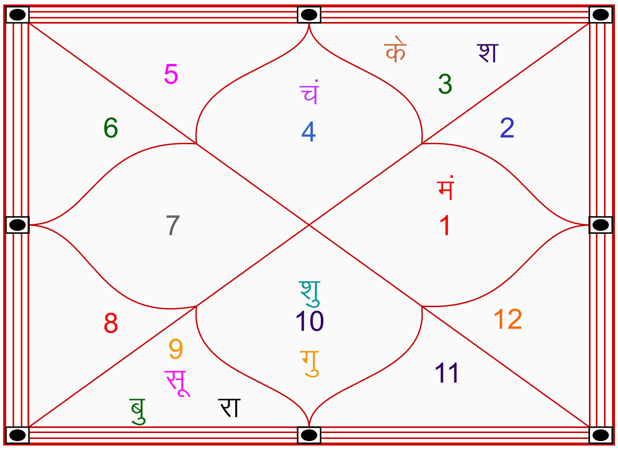

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

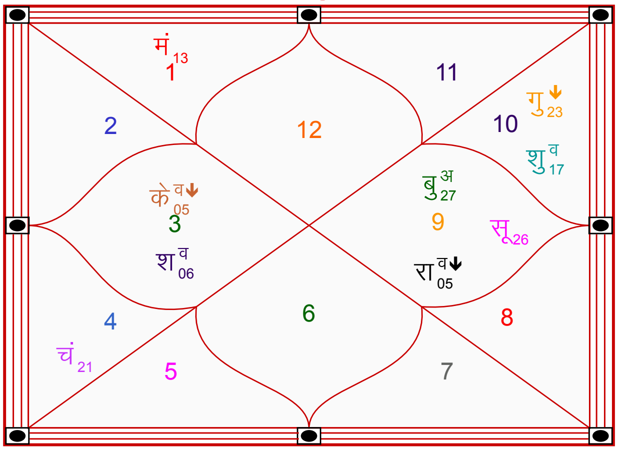

देह विचारः

होरा कुंडली

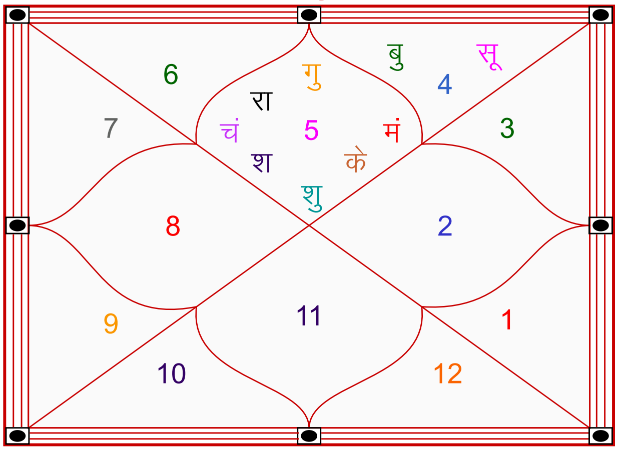

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

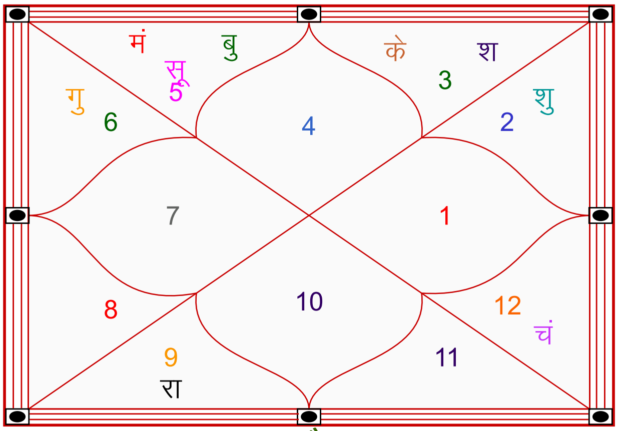

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

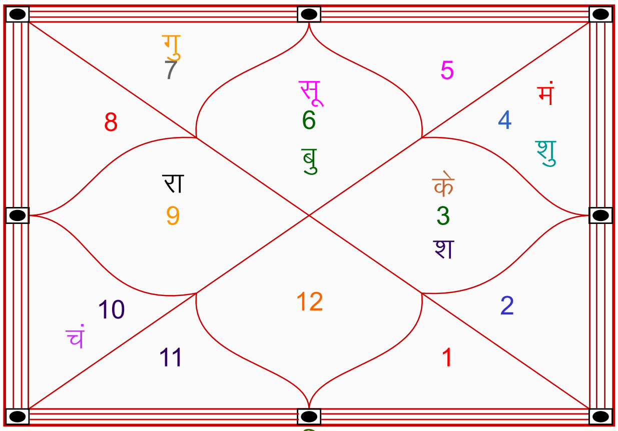

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

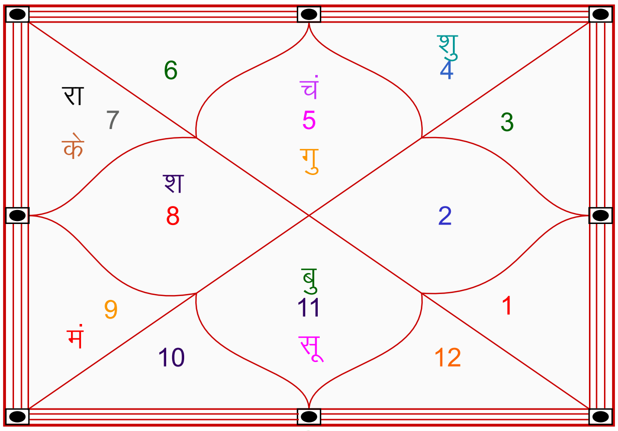

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

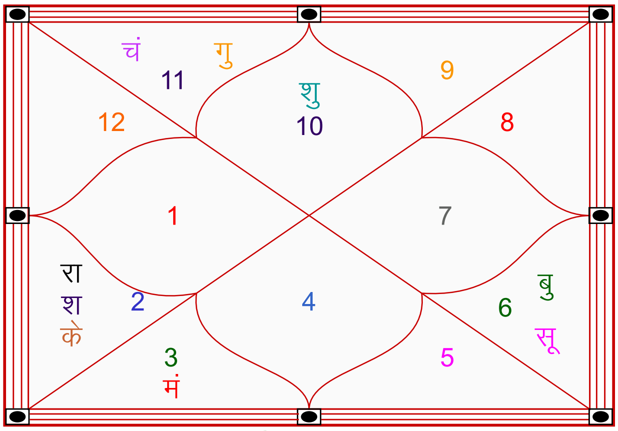

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

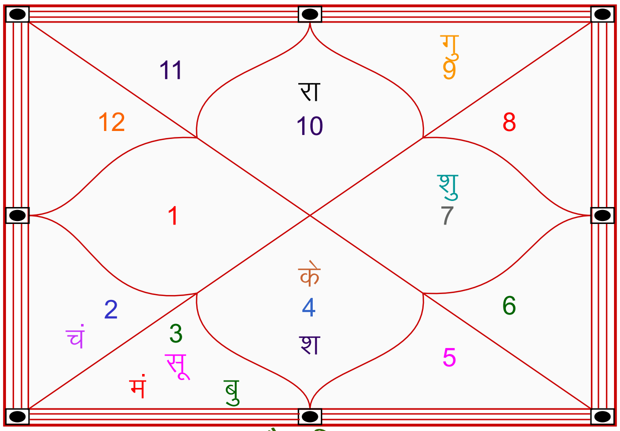

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

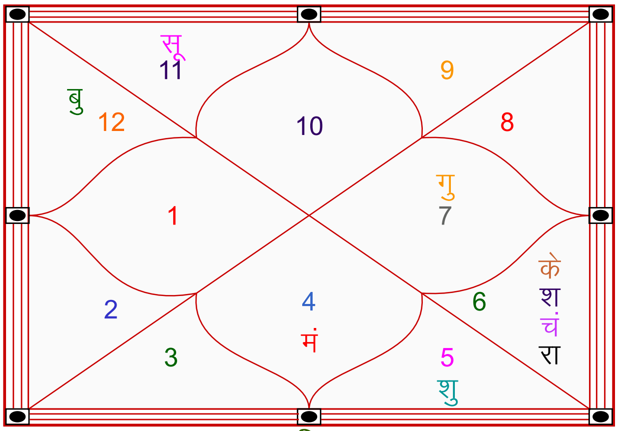

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

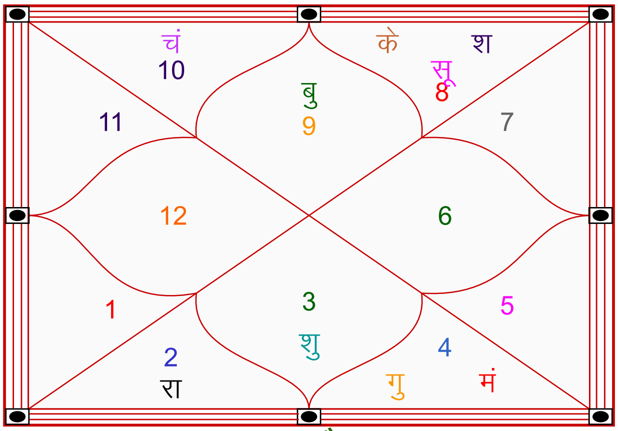

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

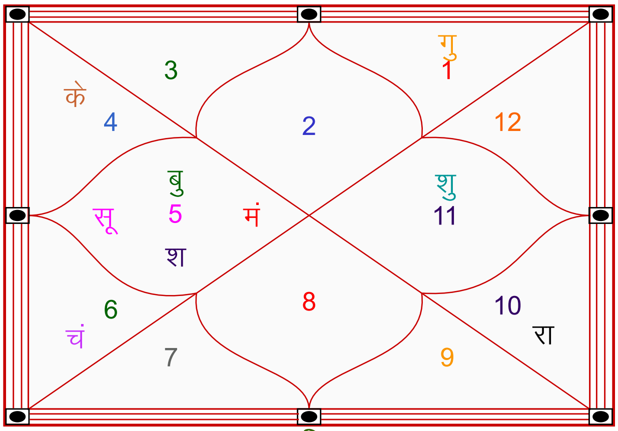

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

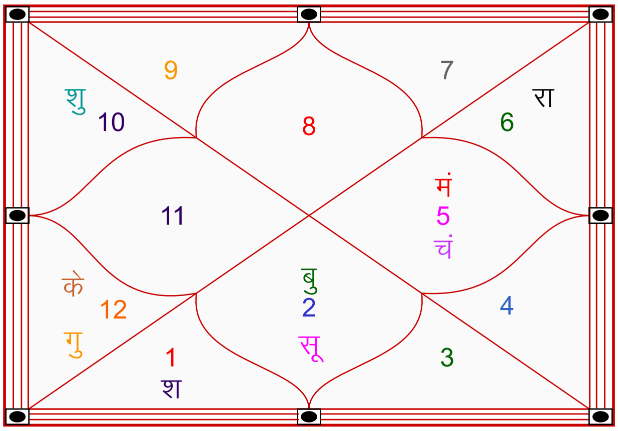

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

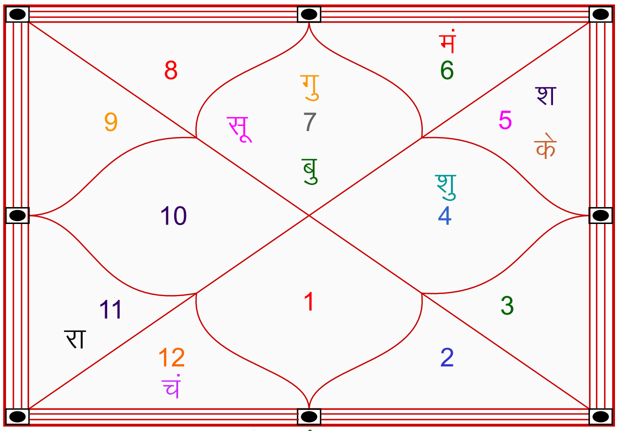

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

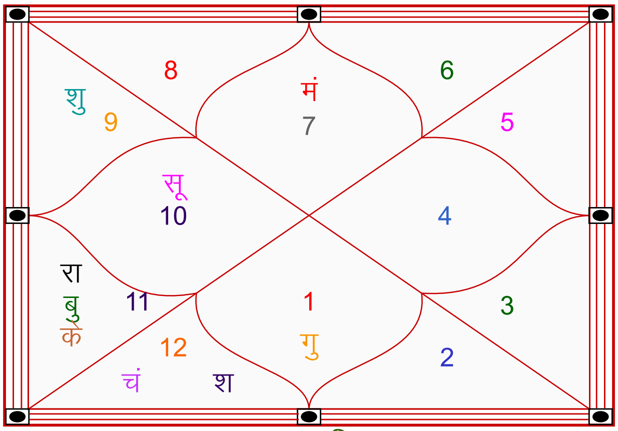

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

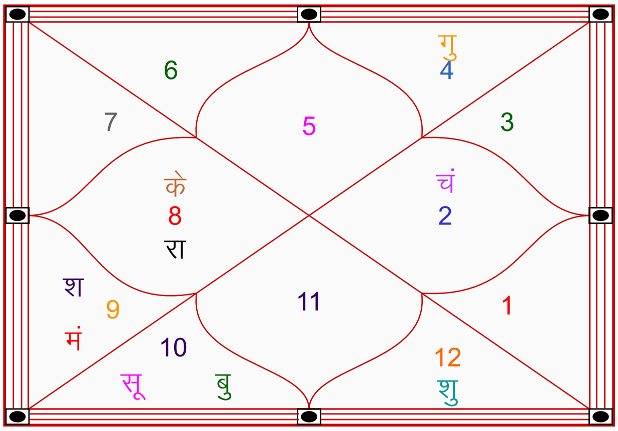

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

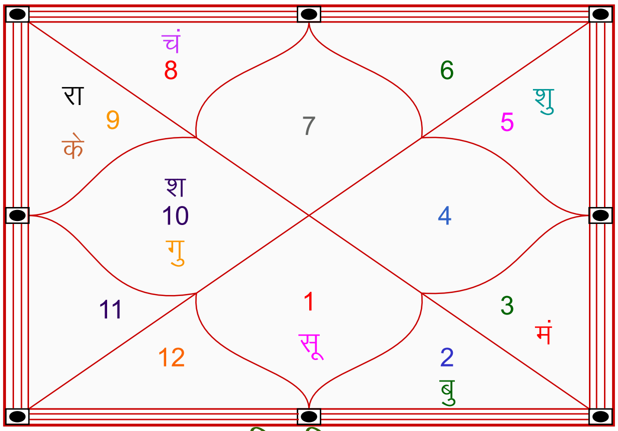

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

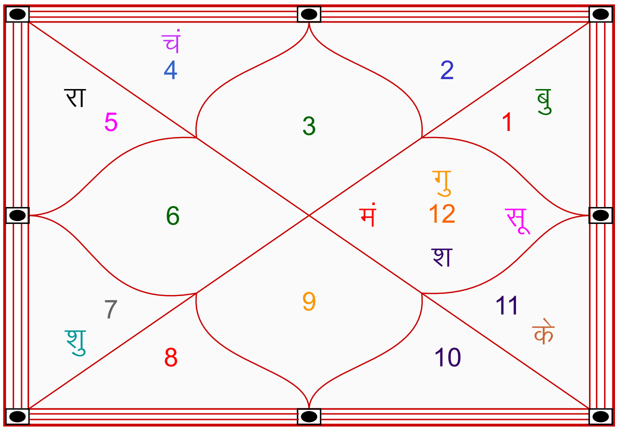

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

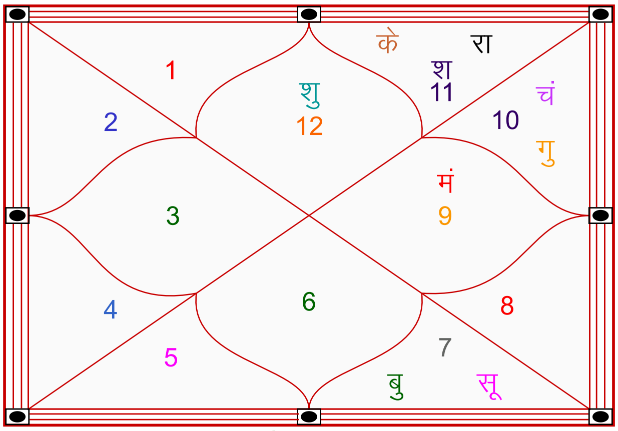

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

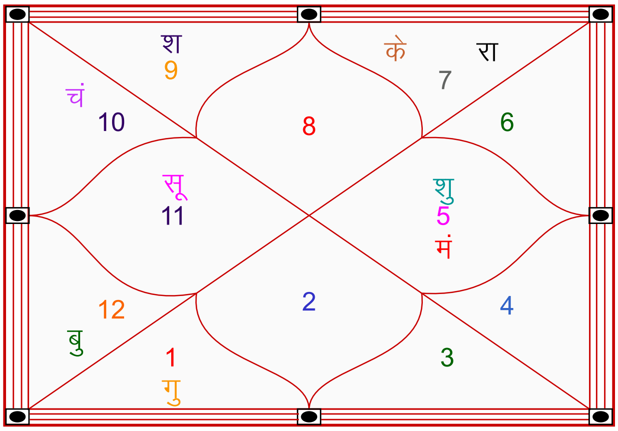

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

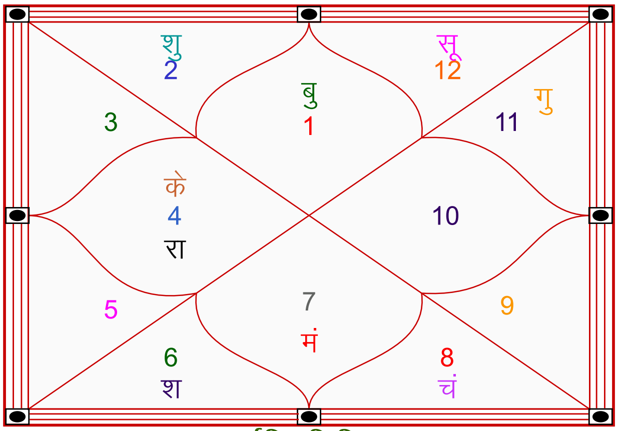

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

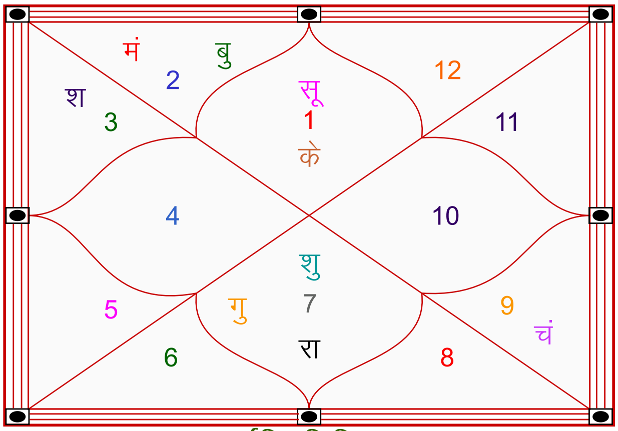

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मीन	धनु	कर्क	मेष	धनु	मक	मक	मिथु	धनु	मिथु
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कर्क	सिंह	मीन	सिंह	सिंह	कन्या	वृष	मिथु	धनु	मिथु
चतुर्थांश	कन्या	कन्या	मक	कर्क	कन्या	तुला	कर्क	मिथु	धनु	मिथु
सप्तमांश	मक	मिथु	वृष	मिथु	मिथु	धनु	तुला	कर्क	मक	कर्क
नवमांश	धनु	वृश्चि	मक	कर्क	धनु	कर्क	मिथु	वृश्चि	वृष	वृश्चि
दशमांश	वृष	सिंह	कन्या	सिंह	सिंह	मेष	कुंभ	सिंह	मक	कर्क
द्वादशांश	तुला	तुला	मीन	कन्या	तुला	तुला	कर्क	सिंह	कुंभ	सिंह
षोडशांश	तुला	मक	मीन	तुला	कुंभ	मेष	धनु	मीन	कुंभ	कुंभ
विंशांश	सिंह	मक	वृष	धनु	मक	कर्क	मीन	धनु	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	तुला	मेष	वृश्चि	मिथु	वृष	मक	सिंह	मक	धनु	धनु
सप्तविंशांश	मिथु	मीन	कर्क	मीन	मेष	मीन	तुला	मीन	सिंह	कुंभ
त्रिंशांश	मीन	तुला	मक	धनु	तुला	मक	मीन	कुंभ	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	वृश्चि	कुंभ	मक	सिंह	मीन	मेष	सिंह	धनु	तुला	तुला
अक्षवेदांश	मेष	मीन	वृश्चि	तुला	मेष	कुंभ	वृष	कन्या	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	मेष	मेष	धनु	वृष	वृष	तुला	तुला	मिथु	तुला	मेष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 –––	1 –––	3 उत्तम	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 –––	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
मंगल	1 –––	1 –––	1 –––	1 –––
बुध	0 –––	1 –––	1 –––	2 भेदक
गुरु	1 –––	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शुक्र	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	7 कल्पवृक्ष
शनि	1 –––	1 –––	1 –––	2 भेदक
राहु	0 –––	0 –––	0 –––	0 –––
केतु	0 –––	0 –––	0 –––	1 –––

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.40	13.60	14.90	13.45	9.25	13.35	9.50	14.00	9.25
सप्तवर्ग	13.13	12.75	13.58	14.33	10.65	13.90	9.50	13.30	9.35
दशवर्ग	12.10	10.60	13.58	14.48	10.25	13.78	9.40	13.35	10.43
षोडशवर्ग	11.65	12.23	15.20	13.88	10.03	13.68	9.73	13.75	10.93

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	–––	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	–––	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	–––	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	–––	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	–––	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	–––

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	–––	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	अतिमित्र	–––	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	–––	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	–––	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	–––	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	–––	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	–––	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	–––

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	25	34	35	26	6	37	15
सप्तवर्गज बल	86	79	109	114	77	103	64
ओजयुग्मक बल	15	30	15	30	0	15	15
केन्द्र बल	60	30	30	60	30	30	60
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	187	188	189	230	113	185	154
कुल दिग्बल	56	48	21	33	41	10	26
नतोन्नत बल	56	4	4	60	56	56	4
पक्ष बल	8	103	8	8	52	52	8
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	3	9	48	58	9	7	0
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	128	116	60	186	222	145	27
कुल चेष्टाबल	0	0	40	10	11	55	53
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-16	-11	5	-15	3	0	1
कुल षट्बल	415	392	332	470	425	438	270
रूप षट्बल	6.9	6.5	5.5	7.8	7.1	7.3	4.5
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.1	1.1	1.1	1.1	1.3	0.9
संबंधित पद	1	5	4	3	6	2	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	12.89	41.97	37.37	16.54	8.00	44.79	28.70
कष्ट फल	43.02	14.64	22.44	40.97	51.61	11.02	17.21

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	425	332	438	470	392	415	470	438	332	425	270	270
भावदिग्बल	30	20	10	30	50	20	0	10	40	60	10	50
भावदृष्टि बल	39	81	48	61	84	61	44	46	-8	-20	0	14
कुल भाव बल	494	433	496	562	526	496	515	494	363	465	280	334
रूप भाव बल	8.2	7.2	8.3	9.4	8.8	8.3	8.6	8.2	6.1	7.7	4.7	5.6
संबंधित पद	6	9	4	1	2	5	3	7	10	8	12	11

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

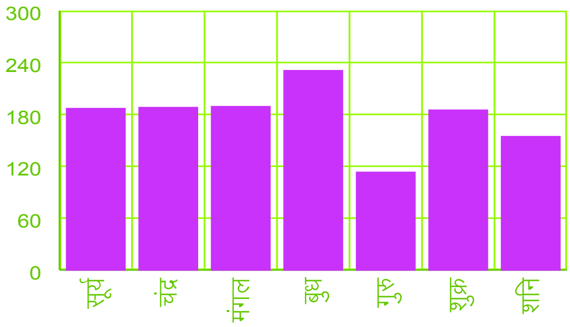

दिग्बल

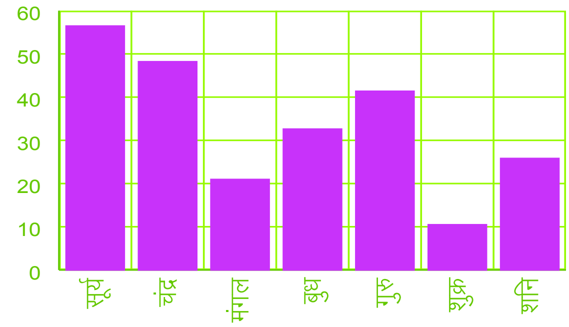

कालबल

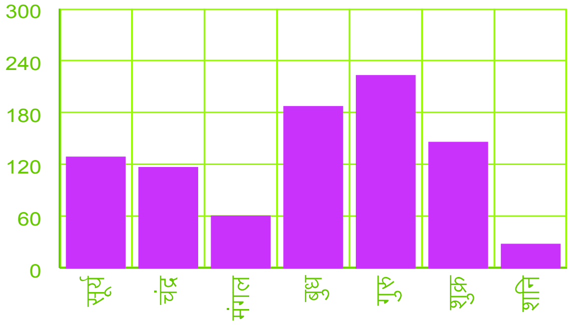

चेष्टाबल

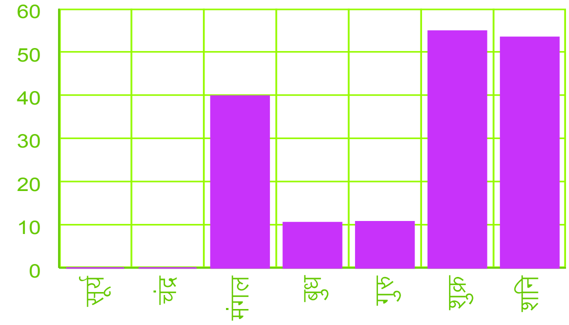

नैसर्गिक बल

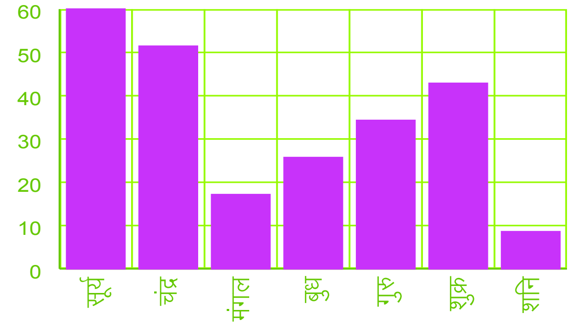

दृग्बल

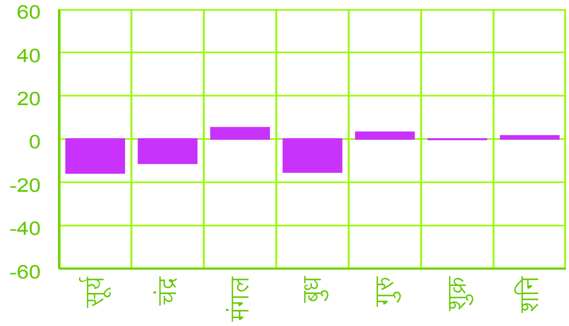

रूप षट्बल

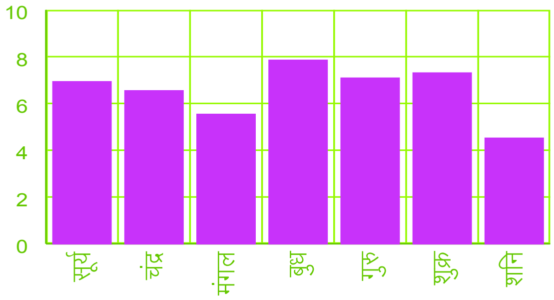

न्यूनतम षट्बल

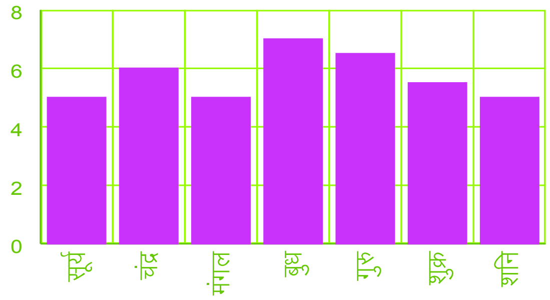

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

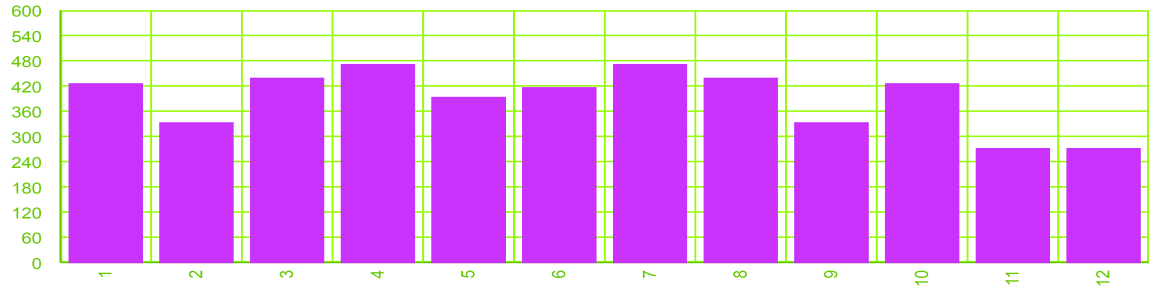

भावदिग्बल

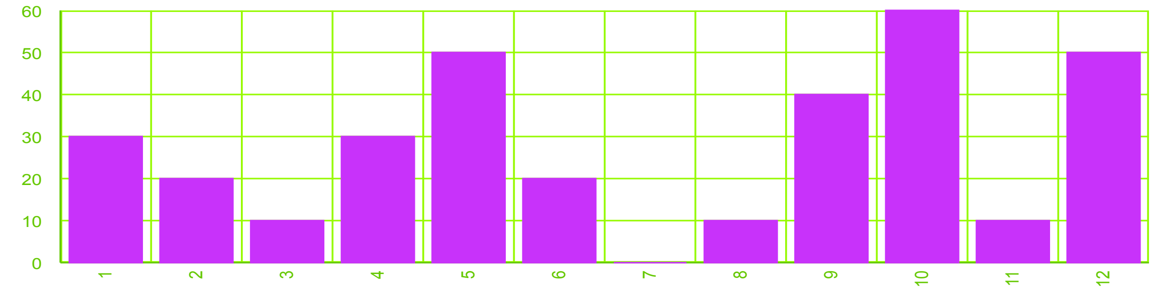

भावदृष्टि बल

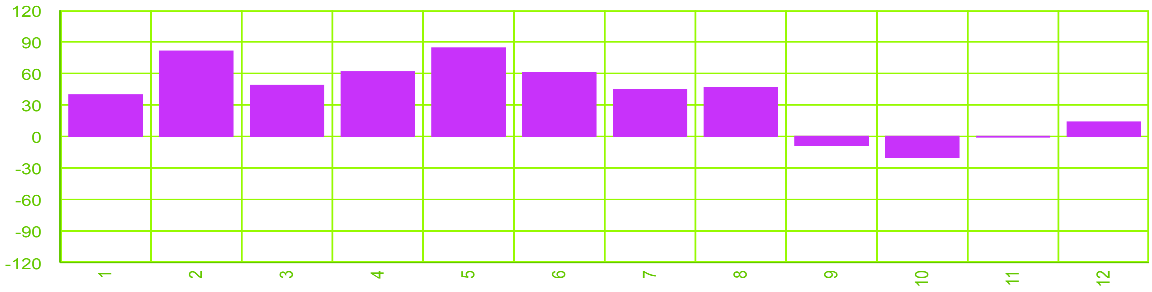

भाव बल

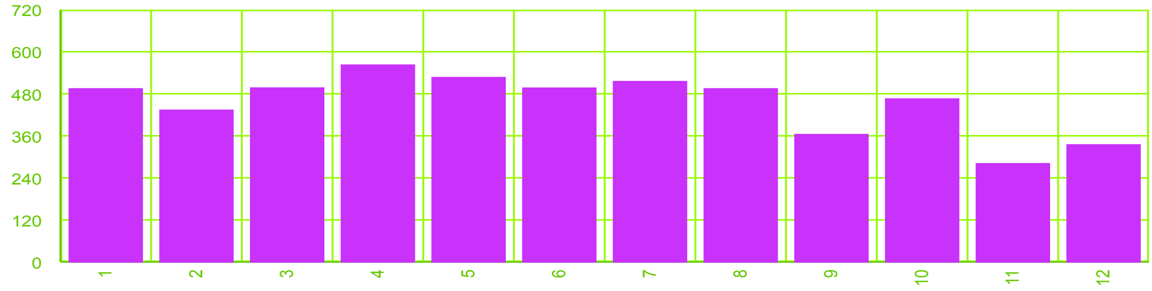

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

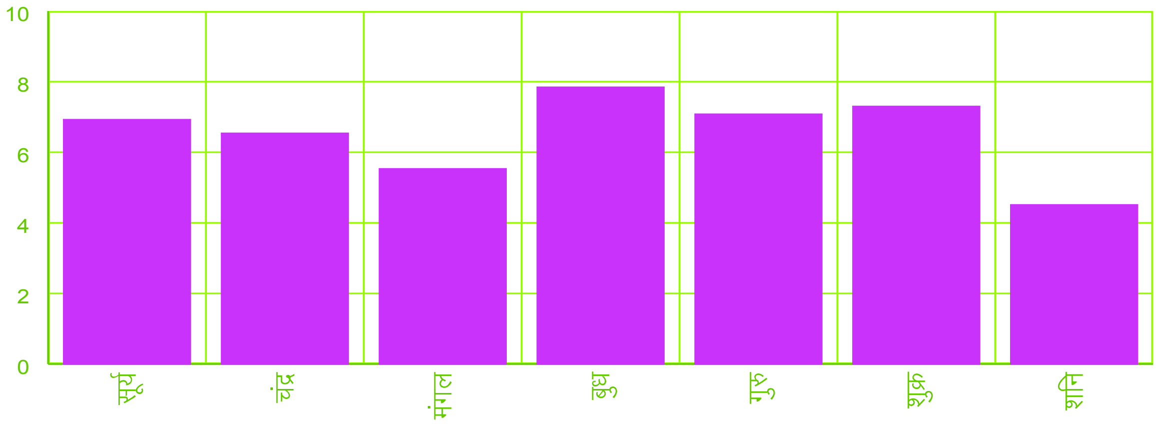

इष्ट – कष्ट फल

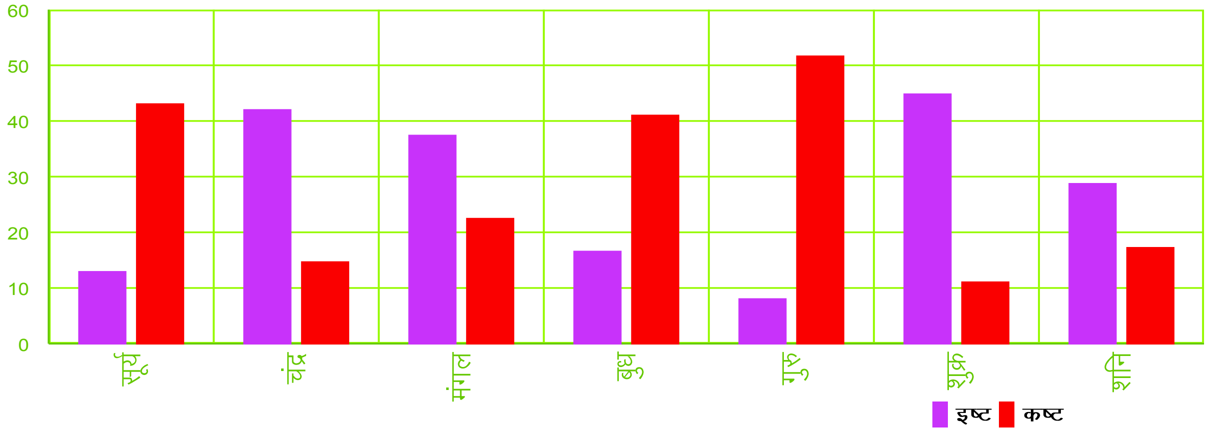

रूप भाव बल

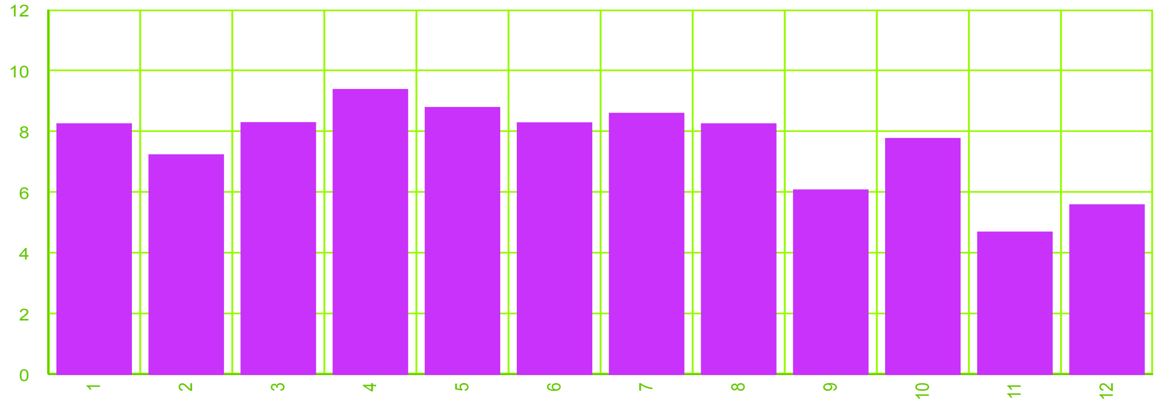

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मीन	18:55:35	——	——	रेवती	1	27
गुलिक	गु	मीन	07:08:40	——	——	उ०भाद्रपद	2	26
काल	का	मेष	03:19:50	——	——	अश्विनी	1	1
मृत्यु	मृ	वृष	18:57:18	——	——	रोहिणी	3	4
यमघंटक	यम	मक	16:40:16	——	——	श्रवण	3	22
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	08:47:16	——	मूल	आर्द्रा	1	6
धूम	धू	वृष	09:28:06	——	——	कृतिका	4	3
व्यतिपात	व्य	कुंभ	20:31:54	——	——	पू०भाद्रपद	1	25
परिवेश	परि	सिंह	20:31:54	——	——	पू०फाल्गुनी	3	11
इन्द्रचाप	इ	वृश्चि	09:28:06	——	——	अनुराधा	2	17
उपकेतु	उप	वृश्चि	26:08:06	——	——	ज्येष्ठा	3	18

प्राणपद	:	मेष	14:31:04	कारकाँश लग्न	:	धनु	00:20:38
भाव लग्न	:	मिथु	00:20:44	होरा लग्न	:	सिंह	11:45:53
घटी लग्न	:	धनु	23:13:51	वर्णद लग्न	:	सिंह	00:41:28

उपग्रह कुंडली

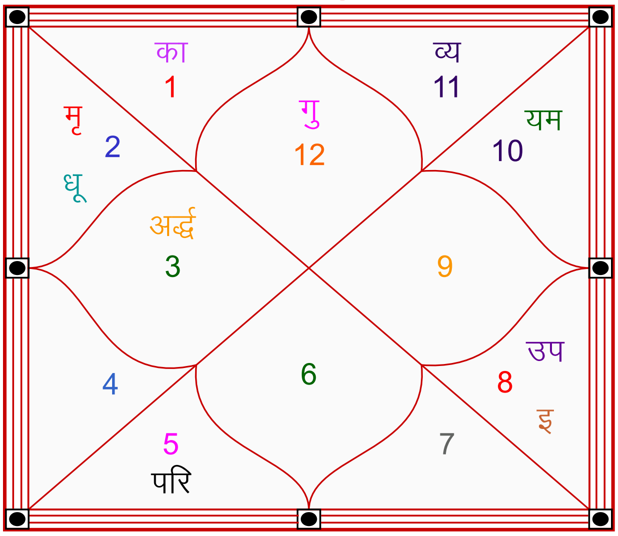

आरूढ़ कुंडली

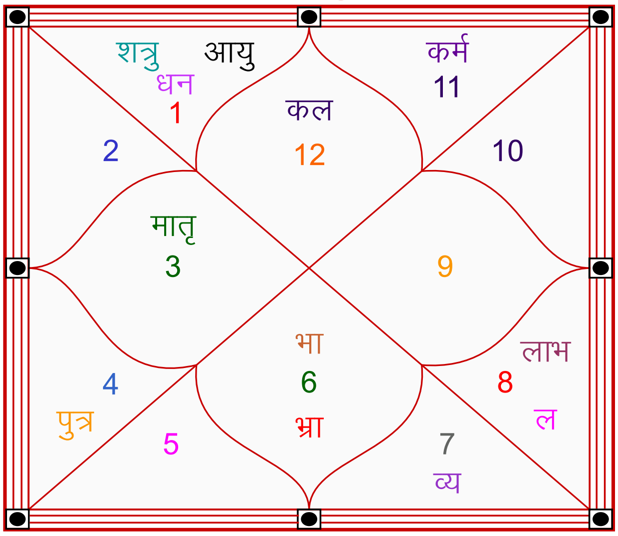

षन्नाडी चक्र

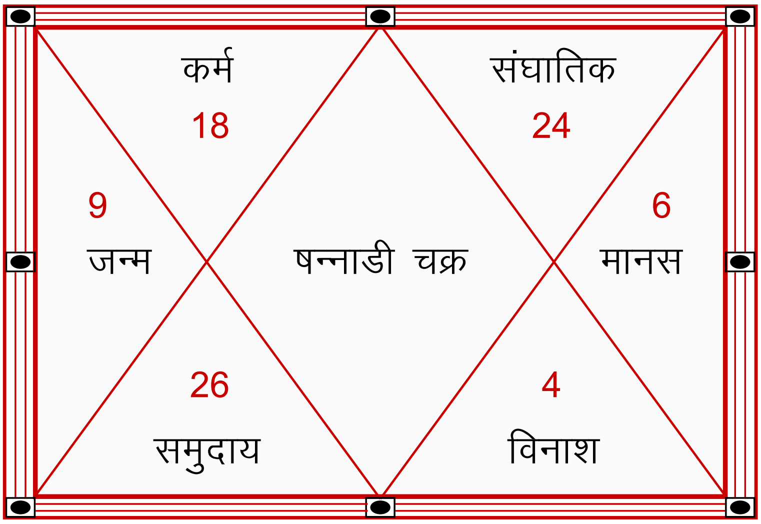

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
कुल	**6**	**4**	**4**	**2**	**4**	**5**	**5**	**4**	**3**	**5**	**3**	**3**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
कुल	**5**	**4**	**5**	**5**	**3**	**3**	**4**	**4**	**3**	**5**	**5**	**3**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	**4**	**5**	**3**	**1**	**2**	**3**	**4**	**3**	**5**	**3**	**4**	**2**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
कुल	**6**	**4**	**5**	**3**	**7**	**5**	**3**	**2**	**6**	**3**	**5**	**5**	**54**

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
कुल	**6**	**4**	**5**	**4**	**5**	**3**	**4**	**6**	**4**	**6**	**6**	**3**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	**3**	**5**	**5**	**4**	**5**	**3**	**4**	**5**	**5**	**7**	**5**	**1**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	**5**	**2**	**4**	**4**	**3**	**4**	**5**	**3**	**1**	**3**	**1**	**4**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**5**	**6**	**4**	**2**	**3**	**7**	**3**	**3**	**3**	**5**	**4**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	4	5	2	4	4	3	4	5	3	1	3	39
गुरु	4	5	3	4	6	4	6	6	3	6	4	5	56
मंगल	4	5	3	1	2	3	4	3	5	3	4	2	39
सूर्य	4	5	5	4	3	5	3	3	6	4	4	2	48
शुक्र	4	5	3	4	5	5	7	5	1	3	5	5	52
बुध	7	5	3	2	6	3	5	5	6	4	5	3	54
चंद्र	5	5	3	5	4	5	5	3	3	4	4	3	49
बिन्दु	29	34	25	22	30	29	33	29	29	27	27	23	337
रेखा	27	22	31	34	26	27	23	27	27	29	29	33	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	4	0	3	1	2	2	4	0	0	1	18
गुरु	1	1	0	0	3	0	3	2	0	2	1	1	14
मंगल	2	2	0	0	0	0	1	2	3	0	1	1	12
सूर्य	1	1	2	2	0	1	0	1	3	0	1	0	12
शुक्र	3	2	0	0	4	2	4	1	0	0	2	1	19
बुध	1	2	0	0	0	0	2	3	0	1	2	1	12
चंद्र	2	1	0	2	1	1	2	0	0	0	1	0	10
रेखा	10	10	6	4	11	5	14	11	10	3	8	5	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	4	0	3	0	1	2	4	0	0	0	15
गुरु	1	1	0	0	3	0	2	1	0	2	0	1	11
मंगल	2	1	0	0	0	0	1	0	3	0	1	0	8
सूर्य	1	1	2	2	0	0	0	0	3	0	1	0	10
शुक्र	3	2	0	0	4	2	2	0	0	0	2	1	16
बुध	1	0	0	0	0	0	0	2	0	1	1	1	6
चंद्र	2	1	0	2	1	1	1	0	0	0	1	0	9
रेखा	10	7	6	4	11	3	7	5	10	3	6	3	75

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	79	65	69	51	91	139	131
ग्रह पिंड	58	26	46	25	42	24	60
शोध्य पिंड	137	91	115	76	133	163	191

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

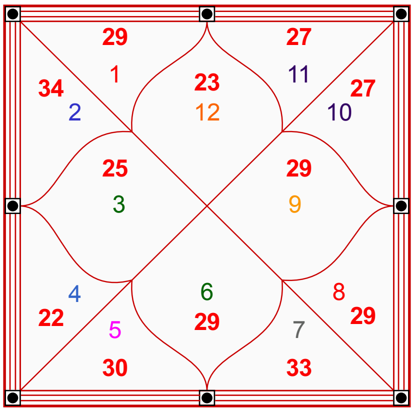

सूर्य का अष्टकवर्ग

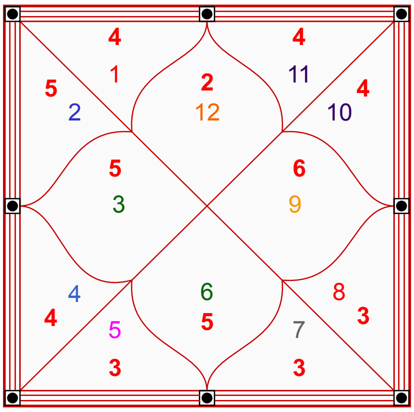

चंद्र का अष्टकवर्ग

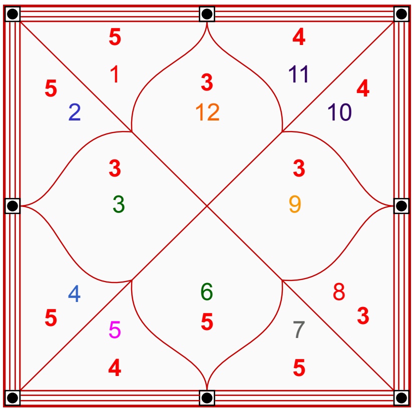

मंगल का अष्टकवर्ग

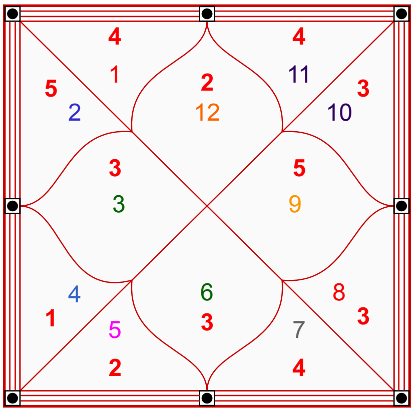

बुध का अष्टकवर्ग

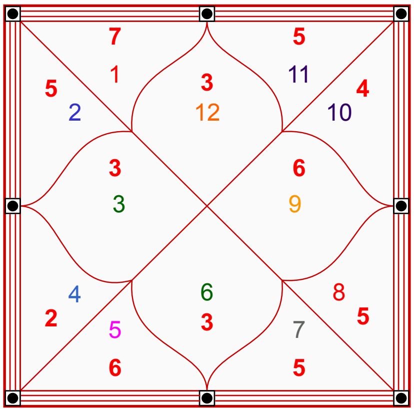

गुरू का अष्टकवर्ग

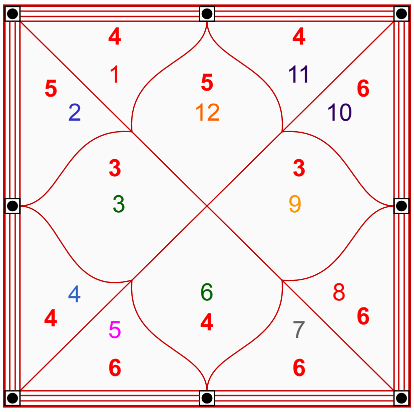

शुक्र का अष्टकवर्ग

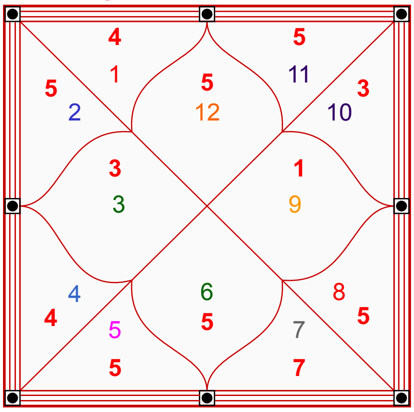

शनि का अष्टकवर्ग

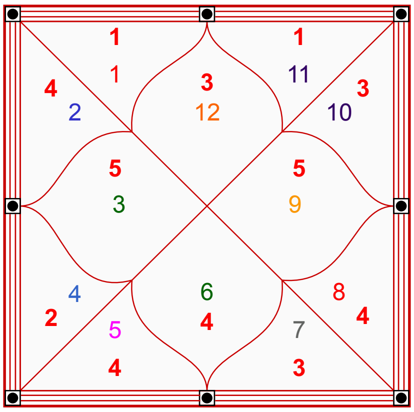

लग्न का अष्टकवर्ग

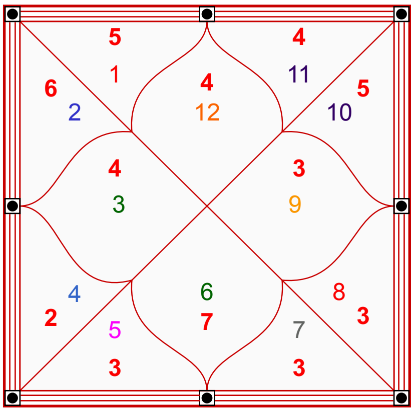

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

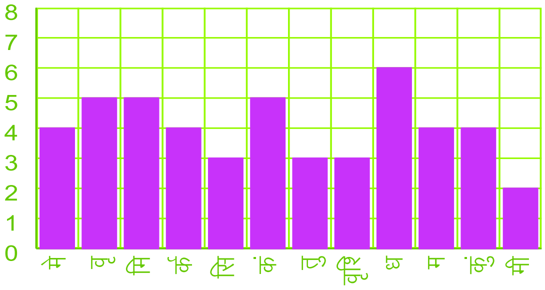

चन्द्र

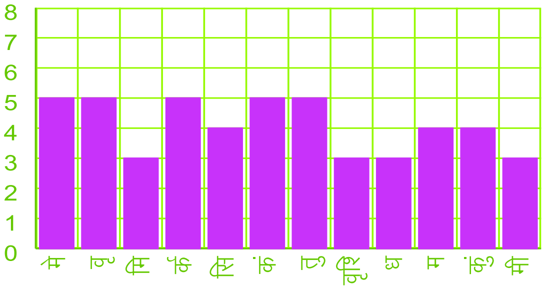

मंगल

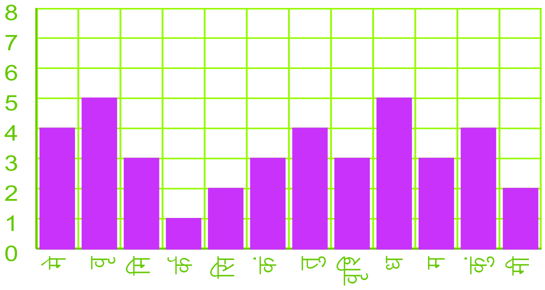

बुध

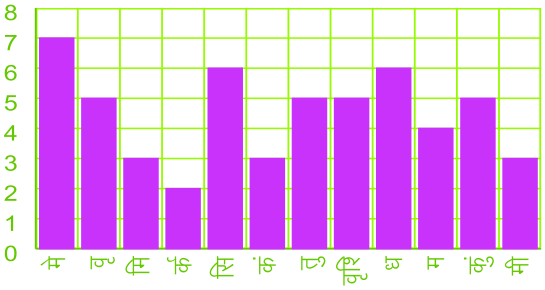

गुरु

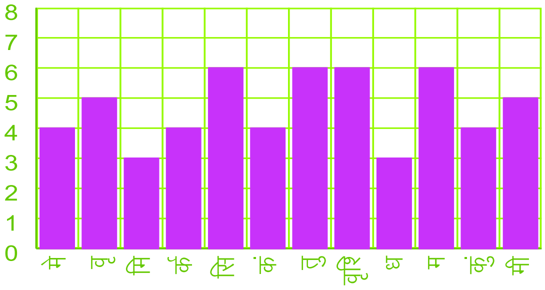

शुक्र

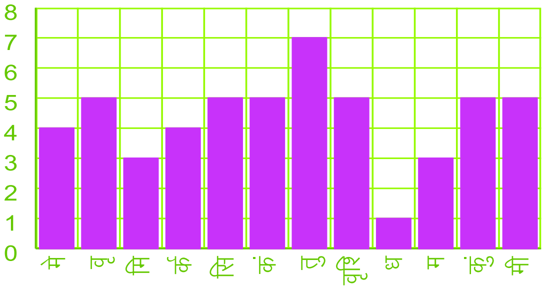

शनि

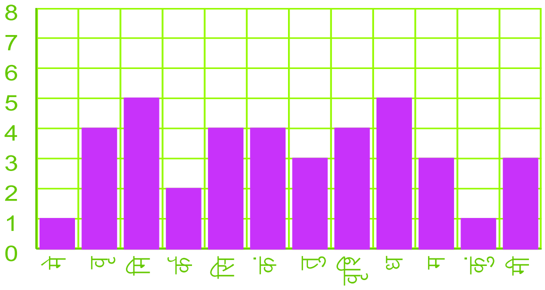

लग्न

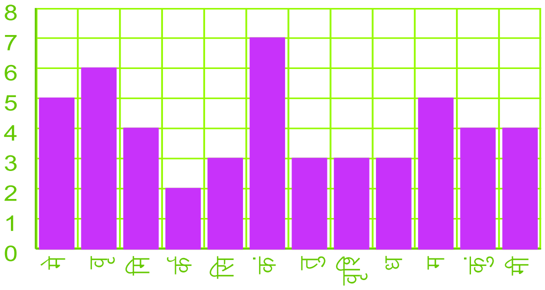

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

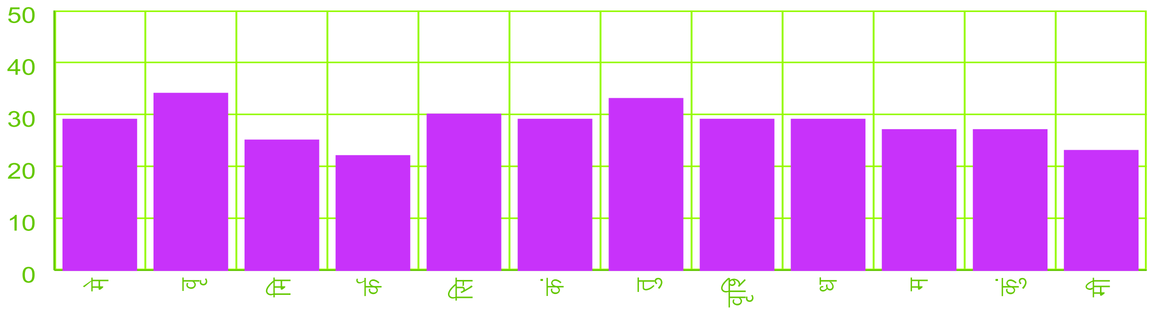

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

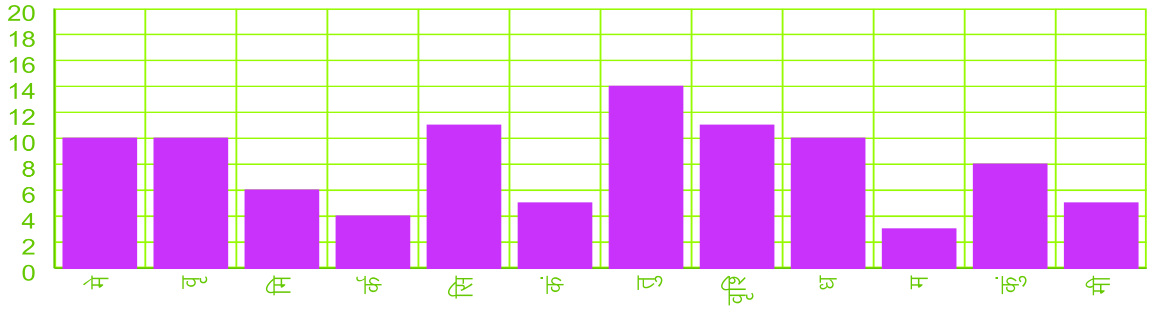

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

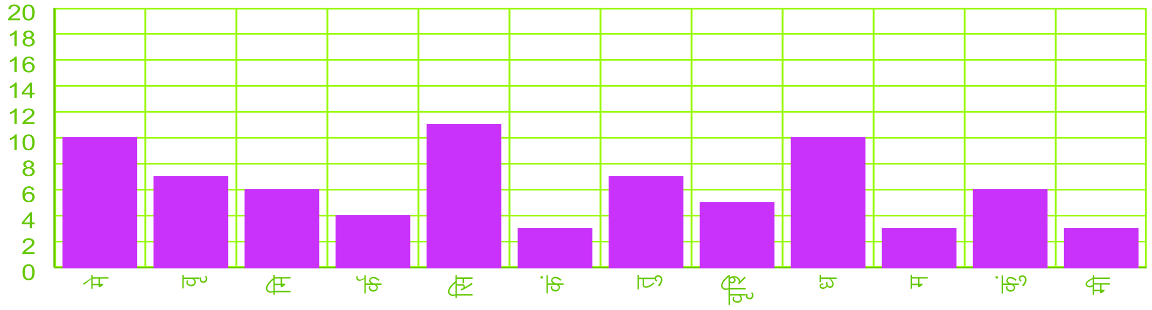

शोध्य पिंड

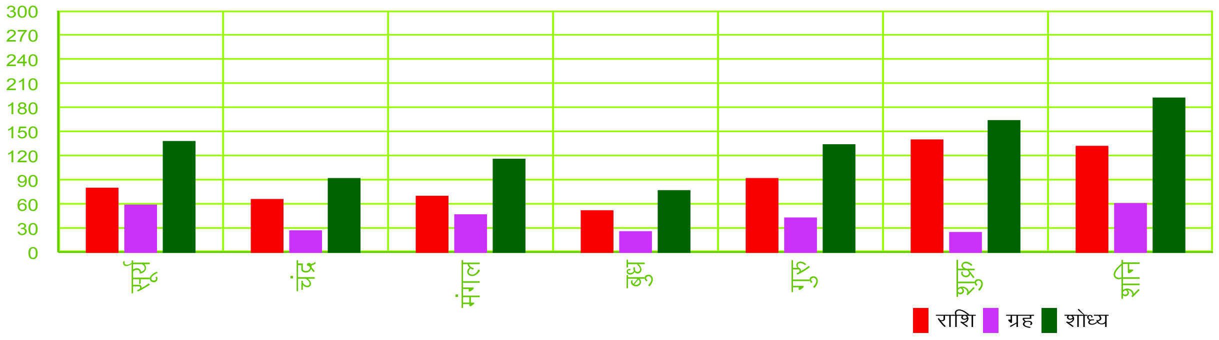

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 11 वर्ष 7 मास 10 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
10/01/1974		22/08/1985		21/08/1992		21/08/2012		22/08/2018	
22/08/1985		21/08/1992		21/08/2012		22/08/2018		21/08/2028	
	00/00/0000	केतु	18/01/1986	शुक्र	22/12/1995	सूर्य	09/12/2012	चंद्र	22/06/2019
	10/01/1974	शुक्र	20/03/1987	सूर्य	21/12/1996	चंद्र	10/06/2013	मंगल	21/01/2020
शुक्र	15/11/1974	सूर्य	26/07/1987	चंद्र	22/08/1998	मंगल	15/10/2013	राहु	22/07/2021
सूर्य	22/09/1975	चंद्र	24/02/1988	मंगल	22/10/1999	राहु	09/09/2014	गुरु	21/11/2022
चंद्र	20/02/1977	मंगल	22/07/1988	राहु	22/10/2002	गुरु	28/06/2015	शनि	21/06/2024
मंगल	17/02/1978	राहु	09/08/1989	गुरु	22/06/2005	शनि	09/06/2016	बुध	21/11/2025
राहु	06/09/1980	गुरु	16/07/1990	शनि	21/08/2008	बुध	16/04/2017	केतु	22/06/2026
गुरु	12/12/1982	शनि	25/08/1991	बुध	22/06/2011	केतु	22/08/2017	शुक्र	21/02/2028
शनि	22/08/1985	बुध	21/08/1992	केतु	21/08/2012	शुक्र	22/08/2018	सूर्य	21/08/2028

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
21/08/2028		22/08/2035		22/08/2053		22/08/2069		21/08/2088	
22/08/2035		22/08/2053		22/08/2069		21/08/2088		00/00/0000	
मंगल	17/01/2029	राहु	04/05/2038	गुरु	10/10/2055	शनि	24/08/2072	बुध	18/01/2091
राहु	05/02/2030	गुरु	27/09/2040	शनि	22/04/2058	बुध	04/05/2075	केतु	15/01/2092
गुरु	12/01/2031	शनि	04/08/2043	बुध	28/07/2060	केतु	12/06/2076	शुक्र	10/01/2094
शनि	21/02/2032	बुध	20/02/2046	केतु	04/07/2061	शुक्र	13/08/2079		00/00/0000
बुध	17/02/2033	केतु	11/03/2047	शुक्र	04/03/2064	सूर्य	25/07/2080		00/00/0000
केतु	16/07/2033	शुक्र	10/03/2050	सूर्य	21/12/2064	चंद्र	23/02/2082		00/00/0000
शुक्र	15/09/2034	सूर्य	02/02/2051	चंद्र	22/04/2066	मंगल	04/04/2083		00/00/0000
सूर्य	21/01/2035	चंद्र	03/08/2052	मंगल	29/03/2067	राहु	08/02/2086		00/00/0000
चंद्र	22/08/2035	मंगल	22/08/2053	राहु	22/08/2069	गुरु	21/08/2088		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 11 वर्ष 7 मा 22 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र	
10/01/1974	
15/11/1974	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/01/1974
शनि	22/04/1974
बुध	16/09/1974
केतु	15/11/1974

बुध - सूर्य	
15/11/1974	
22/09/1975	
सूर्य	01/12/1974
चंद्र	26/12/1974
मंगल	14/01/1975
राहु	01/03/1975
गुरु	12/04/1975
शनि	31/05/1975
बुध	14/07/1975
केतु	01/08/1975
शुक्र	22/09/1975

बुध - चंद्र	
22/09/1975	
20/02/1977	
चंद्र	04/11/1975
मंगल	04/12/1975
राहु	19/02/1976
गुरु	28/04/1976
शनि	19/07/1976
बुध	01/10/1976
केतु	31/10/1976
शुक्र	25/01/1977
सूर्य	20/02/1977

बुध - मंगल	
20/02/1977	
17/02/1978	
मंगल	13/03/1977
राहु	06/05/1977
गुरु	24/06/1977
शनि	20/08/1977
बुध	10/10/1977
केतु	31/10/1977
शुक्र	31/12/1977
सूर्य	18/01/1978
चंद्र	17/02/1978

बुध - राहु	
17/02/1978	
06/09/1980	
राहु	07/07/1978
गुरु	08/11/1978
शनि	05/04/1979
बुध	14/08/1979
केतु	08/10/1979
शुक्र	11/03/1980
सूर्य	27/04/1980
चंद्र	13/07/1980
मंगल	06/09/1980

बुध - गुरु	
06/09/1980	
12/12/1982	
गुरु	25/12/1980
शनि	05/05/1981
बुध	30/08/1981
केतु	18/10/1981
शुक्र	05/03/1982
सूर्य	15/04/1982
चंद्र	23/06/1982
मंगल	10/08/1982
राहु	12/12/1982

बुध - शनि	
12/12/1982	
22/08/1985	
शनि	17/05/1983
बुध	03/10/1983
केतु	30/11/1983
शुक्र	12/05/1984
सूर्य	30/06/1984
चंद्र	20/09/1984
मंगल	16/11/1984
राहु	12/04/1985
गुरु	22/08/1985

केतु - केतु	
22/08/1985	
18/01/1986	
केतु	30/08/1985
शुक्र	24/09/1985
सूर्य	02/10/1985
चंद्र	14/10/1985
मंगल	23/10/1985
राहु	14/11/1985
गुरु	04/12/1985
शनि	28/12/1985
बुध	18/01/1986

केतु - शुक्र	
18/01/1986	
20/03/1987	
शुक्र	30/03/1986
सूर्य	20/04/1986
चंद्र	26/05/1986
मंगल	19/06/1986
राहु	22/08/1986
गुरु	18/10/1986
शनि	25/12/1986
बुध	23/02/1987
केतु	20/03/1987

केतु - सूर्य	
20/03/1987	
26/07/1987	
सूर्य	26/03/1987
चंद्र	06/04/1987
मंगल	13/04/1987
राहु	03/05/1987
गुरु	20/05/1987
शनि	09/06/1987
बुध	27/06/1987
केतु	04/07/1987
शुक्र	26/07/1987

केतु - चंद्र	
26/07/1987	
24/02/1988	
चंद्र	12/08/1987
मंगल	25/08/1987
राहु	26/09/1987
गुरु	24/10/1987
शनि	27/11/1987
बुध	27/12/1987
केतु	09/01/1988
शुक्र	13/02/1988
सूर्य	24/02/1988

केतु - मंगल	
24/02/1988	
22/07/1988	
मंगल	03/03/1988
राहु	26/03/1988
गुरु	15/04/1988
शनि	08/05/1988
बुध	29/05/1988
केतु	07/06/1988
शुक्र	02/07/1988
सूर्य	09/07/1988
चंद्र	22/07/1988

केतु - राहु	
22/07/1988	
09/08/1989	
राहु	17/09/1988
गुरु	08/11/1988
शनि	07/01/1989
बुध	03/03/1989
केतु	25/03/1989
शुक्र	28/05/1989
सूर्य	16/06/1989
चंद्र	18/07/1989
मंगल	09/08/1989

केतु - गुरु	
09/08/1989	
16/07/1990	
गुरु	24/09/1989
शनि	17/11/1989
बुध	04/01/1990
केतु	24/01/1990
शुक्र	22/03/1990
सूर्य	08/04/1990
चंद्र	06/05/1990
मंगल	26/05/1990
राहु	16/07/1990

केतु - शनि	
16/07/1990	
25/08/1991	
शनि	18/09/1990
बुध	15/11/1990
केतु	08/12/1990
शुक्र	14/02/1991
सूर्य	06/03/1991
चंद्र	09/04/1991
मंगल	02/05/1991
राहु	02/07/1991
गुरु	25/08/1991

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
25/08/1991		21/08/1992		22/12/1995		21/12/1996		22/08/1998	
21/08/1992		22/12/1995		21/12/1996		22/08/1998		22/10/1999	
बुध	15/10/1991	शुक्र	12/03/1993	सूर्य	09/01/1996	चंद्र	10/02/1997	मंगल	16/09/1998
केतु	06/11/1991	सूर्य	12/05/1993	चंद्र	09/02/1996	मंगल	17/03/1997	राहु	19/11/1998
शुक्र	05/01/1992	चंद्र	22/08/1993	मंगल	01/03/1996	राहु	17/06/1997	गुरु	14/01/1999
सूर्य	23/01/1992	मंगल	01/11/1993	राहु	25/04/1996	गुरु	06/09/1997	शनि	23/03/1999
चंद्र	22/02/1992	राहु	02/05/1994	गुरु	12/06/1996	शनि	11/12/1997	बुध	22/05/1999
मंगल	14/03/1992	गुरु	12/10/1994	शनि	09/08/1996	बुध	07/03/1998	केतु	16/06/1999
राहु	08/05/1992	शनि	22/04/1995	बुध	30/09/1996	केतु	12/04/1998	शुक्र	26/08/1999
गुरु	25/06/1992	बुध	12/10/1995	केतु	21/10/1996	शुक्र	22/07/1998	सूर्य	16/09/1999
शनि	21/08/1992	केतु	22/12/1995	शुक्र	21/12/1996	सूर्य	22/08/1998	चंद्र	22/10/1999

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
22/10/1999		22/10/2002		22/06/2005		21/08/2008		22/06/2011	
22/10/2002		22/06/2005		21/08/2008		22/06/2011		21/08/2012	
राहु	03/04/2000	गुरु	01/03/2003	शनि	22/12/2005	बुध	15/01/2009	केतु	17/07/2011
गुरु	27/08/2000	शनि	02/08/2003	बुध	04/06/2006	केतु	16/03/2009	शुक्र	26/09/2011
शनि	17/02/2001	बुध	18/12/2003	केतु	10/08/2006	शुक्र	05/09/2009	सूर्य	17/10/2011
बुध	22/07/2001	केतु	13/02/2004	शुक्र	19/02/2007	सूर्य	27/10/2009	चंद्र	22/11/2011
केतु	24/09/2001	शुक्र	24/07/2004	सूर्य	18/04/2007	चंद्र	21/01/2010	मंगल	17/12/2011
शुक्र	26/03/2002	सूर्य	11/09/2004	चंद्र	23/07/2007	मंगल	22/03/2010	राहु	19/02/2012
सूर्य	19/05/2002	चंद्र	01/12/2004	मंगल	29/09/2007	राहु	24/08/2010	गुरु	15/04/2012
चंद्र	19/08/2002	मंगल	27/01/2005	राहु	20/03/2008	गुरु	09/01/2011	शनि	22/06/2012
मंगल	22/10/2002	राहु	22/06/2005	गुरु	21/08/2008	शनि	22/06/2011	बुध	21/08/2012

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
21/08/2012		09/12/2012		10/06/2013		15/10/2013		09/09/2014	
09/12/2012		10/06/2013		15/10/2013		09/09/2014		28/06/2015	
सूर्य	27/08/2012	चंद्र	24/12/2012	मंगल	17/06/2013	राहु	04/12/2013	गुरु	18/10/2014
चंद्र	05/09/2012	मंगल	04/01/2013	राहु	06/07/2013	गुरु	16/01/2014	शनि	03/12/2014
मंगल	11/09/2012	राहु	31/01/2013	गुरु	23/07/2013	शनि	10/03/2014	बुध	14/01/2015
राहु	28/09/2012	गुरु	25/02/2013	शनि	12/08/2013	बुध	25/04/2014	केतु	31/01/2015
गुरु	12/10/2012	शनि	25/03/2013	बुध	31/08/2013	केतु	14/05/2014	शुक्र	20/03/2015
शनि	30/10/2012	बुध	20/04/2013	केतु	07/09/2013	शुक्र	08/07/2014	सूर्य	04/04/2015
बुध	14/11/2012	केतु	01/05/2013	शुक्र	28/09/2013	सूर्य	25/07/2014	चंद्र	28/04/2015
केतु	21/11/2012	शुक्र	31/05/2013	सूर्य	05/10/2013	चंद्र	21/08/2014	मंगल	15/05/2015
शुक्र	09/12/2012	सूर्य	10/06/2013	चंद्र	15/10/2013	मंगल	09/09/2014	राहु	28/06/2015

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि	
28/06/2015	09/06/2016
शनि	22/08/2015
बुध	10/10/2015
केतु	31/10/2015
शुक्र	27/12/2015
सूर्य	14/01/2016
चंद्र	12/02/2016
मंगल	03/03/2016
राहु	24/04/2016
गुरु	09/06/2016

सूर्य - बुध	
09/06/2016	16/04/2017
बुध	23/07/2016
केतु	10/08/2016
शुक्र	01/10/2016
सूर्य	17/10/2016
चंद्र	11/11/2016
मंगल	30/11/2016
राहु	15/01/2017
गुरु	26/02/2017
शनि	16/04/2017

सूर्य - केतु	
16/04/2017	22/08/2017
केतु	23/04/2017
शुक्र	14/05/2017
सूर्य	21/05/2017
चंद्र	01/06/2017
मंगल	08/06/2017
राहु	27/06/2017
गुरु	14/07/2017
शनि	03/08/2017
बुध	22/08/2017

सूर्य - शुक्र	
22/08/2017	22/08/2018
शुक्र	21/10/2017
सूर्य	09/11/2017
चंद्र	09/12/2017
मंगल	30/12/2017
राहु	23/02/2018
गुरु	13/04/2018
शनि	10/06/2018
बुध	01/08/2018
केतु	22/08/2018

चंद्र - चंद्र	
22/08/2018	22/06/2019
चंद्र	16/09/2018
मंगल	04/10/2018
राहु	19/11/2018
गुरु	29/12/2018
शनि	15/02/2019
बुध	30/03/2019
केतु	17/04/2019
शुक्र	07/06/2019
सूर्य	22/06/2019

चंद्र - मंगल	
22/06/2019	21/01/2020
मंगल	05/07/2019
राहु	06/08/2019
गुरु	03/09/2019
शनि	07/10/2019
बुध	06/11/2019
केतु	18/11/2019
शुक्र	24/12/2019
सूर्य	03/01/2020
चंद्र	21/01/2020

चंद्र - राहु	
21/01/2020	22/07/2021
राहु	12/04/2020
गुरु	24/06/2020
शनि	19/09/2020
बुध	06/12/2020
केतु	07/01/2021
शुक्र	08/04/2021
सूर्य	06/05/2021
चंद्र	20/06/2021
मंगल	22/07/2021

चंद्र - गुरु	
22/07/2021	21/11/2022
गुरु	25/09/2021
शनि	11/12/2021
बुध	18/02/2022
केतु	19/03/2022
शुक्र	08/06/2022
सूर्य	02/07/2022
चंद्र	12/08/2022
मंगल	09/09/2022
राहु	21/11/2022

चंद्र - शनि	
21/11/2022	21/06/2024
शनि	21/02/2023
बुध	14/05/2023
केतु	16/06/2023
शुक्र	21/09/2023
सूर्य	20/10/2023
चंद्र	07/12/2023
मंगल	10/01/2024
राहु	05/04/2024
गुरु	21/06/2024

चंद्र - बुध	
21/06/2024	21/11/2025
बुध	03/09/2024
केतु	03/10/2024
शुक्र	28/12/2024
सूर्य	23/01/2025
चंद्र	07/03/2025
मंगल	06/04/2025
राहु	23/06/2025
गुरु	31/08/2025
शनि	21/11/2025

चंद्र - केतु	
21/11/2025	22/06/2026
केतु	03/12/2025
शुक्र	08/01/2026
सूर्य	18/01/2026
चंद्र	05/02/2026
मंगल	18/02/2026
राहु	22/03/2026
गुरु	19/04/2026
शनि	23/05/2026
बुध	22/06/2026

चंद्र - शुक्र	
22/06/2026	21/02/2028
शुक्र	01/10/2026
सूर्य	01/11/2026
चंद्र	22/12/2026
मंगल	26/01/2027
राहु	27/04/2027
गुरु	18/07/2027
शनि	22/10/2027
बुध	16/01/2028
केतु	21/02/2028

चंद्र - सूर्य	
21/02/2028	21/08/2028
सूर्य	01/03/2028
चंद्र	16/03/2028
मंगल	27/03/2028
राहु	23/04/2028
गुरु	17/05/2028
शनि	15/06/2028
बुध	11/07/2028
केतु	22/07/2028
शुक्र	21/08/2028

मंगल - मंगल	
21/08/2028	17/01/2029
मंगल	30/08/2028
राहु	21/09/2028
गुरु	11/10/2028
शनि	04/11/2028
बुध	25/11/2028
केतु	04/12/2028
शुक्र	29/12/2028
सूर्य	05/01/2029
चंद्र	17/01/2029

मंगल - राहु	
17/01/2029	05/02/2030
राहु	16/03/2029
गुरु	06/05/2029
शनि	06/07/2029
बुध	29/08/2029
केतु	21/09/2029
शुक्र	23/11/2029
सूर्य	13/12/2029
चंद्र	14/01/2030
मंगल	05/02/2030

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु	
05/02/2030	12/01/2031
गुरु	22/03/2030
शनि	15/05/2030
बुध	03/07/2030
केतु	23/07/2030
शुक्र	17/09/2030
सूर्य	04/10/2030
चंद्र	02/11/2030
मंगल	22/11/2030
राहु	12/01/2031

मंगल - शनि	
12/01/2031	21/02/2032
शनि	17/03/2031
बुध	13/05/2031
केतु	06/06/2031
शुक्र	12/08/2031
सूर्य	02/09/2031
चंद्र	05/10/2031
मंगल	29/10/2031
राहु	29/12/2031
गुरु	21/02/2032

मंगल - बुध	
21/02/2032	17/02/2033
बुध	12/04/2032
केतु	03/05/2032
शुक्र	02/07/2032
सूर्य	21/07/2032
चंद्र	20/08/2032
मंगल	10/09/2032
राहु	03/11/2032
गुरु	22/12/2032
शनि	17/02/2033

मंगल - केतु	
17/02/2033	16/07/2033
केतु	26/02/2033
शुक्र	22/03/2033
सूर्य	30/03/2033
चंद्र	11/04/2033
मंगल	20/04/2033
राहु	12/05/2033
गुरु	01/06/2033
शनि	25/06/2033
बुध	16/07/2033

मंगल - शुक्र	
16/07/2033	15/09/2034
शुक्र	25/09/2033
सूर्य	16/10/2033
चंद्र	21/11/2033
मंगल	16/12/2033
राहु	18/02/2034
गुरु	15/04/2034
शनि	22/06/2034
बुध	21/08/2034
केतु	15/09/2034

मंगल - सूर्य	
15/09/2034	21/01/2035
सूर्य	22/09/2034
चंद्र	02/10/2034
मंगल	10/10/2034
राहु	29/10/2034
गुरु	15/11/2034
शनि	05/12/2034
बुध	23/12/2034
केतु	31/12/2034
शुक्र	21/01/2035

मंगल - चंद्र	
21/01/2035	22/08/2035
चंद्र	08/02/2035
मंगल	20/02/2035
राहु	24/03/2035
गुरु	22/04/2035
शनि	25/05/2035
बुध	24/06/2035
केतु	07/07/2035
शुक्र	11/08/2035
सूर्य	22/08/2035

राहु - राहु	
22/08/2035	04/05/2038
राहु	17/01/2036
गुरु	27/05/2036
शनि	31/10/2036
बुध	19/03/2037
केतु	16/05/2037
शुक्र	27/10/2037
सूर्य	16/12/2037
चंद्र	08/03/2038
मंगल	04/05/2038

राहु - गुरु	
04/05/2038	27/09/2040
गुरु	29/08/2038
शनि	15/01/2039
बुध	19/05/2039
केतु	09/07/2039
शुक्र	02/12/2039
सूर्य	15/01/2040
चंद्र	28/03/2040
मंगल	18/05/2040
राहु	27/09/2040

राहु - शनि	
27/09/2040	04/08/2043
शनि	11/03/2041
बुध	05/08/2041
केतु	05/10/2041
शुक्र	27/03/2042
सूर्य	18/05/2042
चंद्र	13/08/2042
मंगल	13/10/2042
राहु	18/03/2043
गुरु	04/08/2043

राहु - बुध	
04/08/2043	20/02/2046
बुध	14/12/2043
केतु	06/02/2044
शुक्र	10/07/2044
सूर्य	26/08/2044
चंद्र	11/11/2044
मंगल	05/01/2045
राहु	25/05/2045
गुरु	26/09/2045
शनि	20/02/2046

राहु - केतु	
20/02/2046	11/03/2047
केतु	15/03/2046
शुक्र	17/05/2046
सूर्य	06/06/2046
चंद्र	08/07/2046
मंगल	30/07/2046
राहु	26/09/2046
गुरु	16/11/2046
शनि	15/01/2047
बुध	11/03/2047

राहु - शुक्र	
11/03/2047	10/03/2050
शुक्र	09/09/2047
सूर्य	03/11/2047
चंद्र	02/02/2048
मंगल	06/04/2048
राहु	18/09/2048
गुरु	11/02/2049
शनि	03/08/2049
बुध	06/01/2050
केतु	10/03/2050

राहु - सूर्य	
10/03/2050	02/02/2051
सूर्य	27/03/2050
चंद्र	23/04/2050
मंगल	12/05/2050
राहु	01/07/2050
गुरु	14/08/2050
शनि	05/10/2050
बुध	20/11/2050
केतु	09/12/2050
शुक्र	02/02/2051

राहु - चंद्र	
02/02/2051	03/08/2052
चंद्र	20/03/2051
मंगल	21/04/2051
राहु	12/07/2051
गुरु	23/09/2051
शनि	19/12/2051
बुध	05/03/2052
केतु	06/04/2052
शुक्र	07/07/2052
सूर्य	03/08/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
03/08/2052		22/08/2053		10/10/2055		22/04/2058		28/07/2060	
22/08/2053		10/10/2055		22/04/2058		28/07/2060		04/07/2061	
मंगल	25/08/2052	गुरु	03/12/2053	शनि	04/03/2056	बुध	17/08/2058	केतु	17/08/2060
राहु	22/10/2052	शनि	06/04/2054	बुध	13/07/2056	केतु	05/10/2058	शुक्र	13/10/2060
गुरु	12/12/2052	बुध	25/07/2054	केतु	05/09/2056	शुक्र	20/02/2059	सूर्य	30/10/2060
शनि	11/02/2053	केतु	09/09/2054	शुक्र	07/02/2057	सूर्य	02/04/2059	चंद्र	27/11/2060
बुध	06/04/2053	शुक्र	17/01/2055	सूर्य	25/03/2057	चंद्र	10/06/2059	मंगल	17/12/2060
केतु	29/04/2053	सूर्य	24/02/2055	चंद्र	10/06/2057	मंगल	28/07/2059	राहु	06/02/2061
शुक्र	01/07/2053	चंद्र	30/04/2055	मंगल	03/08/2057	राहु	29/11/2059	गुरु	24/03/2061
सूर्य	21/07/2053	मंगल	15/06/2055	राहु	20/12/2057	गुरु	19/03/2060	शनि	17/05/2061
चंद्र	22/08/2053	राहु	10/10/2055	गुरु	22/04/2058	शनि	28/07/2060	बुध	04/07/2061

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
04/07/2061		04/03/2064		21/12/2064		22/04/2066		29/03/2067	
04/03/2064		21/12/2064		22/04/2066		29/03/2067		22/08/2069	
शुक्र	13/12/2061	सूर्य	18/03/2064	चंद्र	31/01/2065	मंगल	12/05/2066	राहु	07/08/2067
सूर्य	31/01/2062	चंद्र	12/04/2064	मंगल	28/02/2065	राहु	02/07/2066	गुरु	02/12/2067
चंद्र	22/04/2062	मंगल	29/04/2064	राहु	12/05/2065	गुरु	17/08/2066	शनि	19/04/2068
मंगल	18/06/2062	राहु	12/06/2064	गुरु	16/07/2065	शनि	10/10/2066	बुध	21/08/2068
राहु	11/11/2062	गुरु	21/07/2064	शनि	01/10/2065	बुध	27/11/2066	केतु	11/10/2068
गुरु	21/03/2063	शनि	05/09/2064	बुध	09/12/2065	केतु	17/12/2066	शुक्र	07/03/2069
शनि	22/08/2063	बुध	16/10/2064	केतु	07/01/2066	शुक्र	12/02/2067	सूर्य	19/04/2069
बुध	07/01/2064	केतु	02/11/2064	शुक्र	29/03/2066	सूर्य	01/03/2067	चंद्र	01/07/2069
केतु	04/03/2064	शुक्र	21/12/2064	सूर्य	22/04/2066	चंद्र	29/03/2067	मंगल	22/08/2069

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
22/08/2069		24/08/2072		04/05/2075		12/06/2076		13/08/2079	
24/08/2072		04/05/2075		12/06/2076		13/08/2079		25/07/2080	
शनि	12/02/2070	बुध	11/01/2073	केतु	28/05/2075	शुक्र	22/12/2076	सूर्य	30/08/2079
बुध	17/07/2070	केतु	09/03/2073	शुक्र	04/08/2075	सूर्य	18/02/2077	चंद्र	28/09/2079
केतु	19/09/2070	शुक्र	20/08/2073	सूर्य	24/08/2075	चंद्र	25/05/2077	मंगल	18/10/2079
शुक्र	21/03/2071	सूर्य	08/10/2073	चंद्र	27/09/2075	मंगल	01/08/2077	राहु	09/12/2079
सूर्य	15/05/2071	चंद्र	29/12/2073	मंगल	20/10/2075	राहु	21/01/2078	गुरु	25/01/2080
चंद्र	15/08/2071	मंगल	24/02/2074	राहु	20/12/2075	गुरु	24/06/2078	शनि	20/03/2080
मंगल	18/10/2071	राहु	22/07/2074	गुरु	12/02/2076	शनि	25/12/2078	बुध	08/05/2080
राहु	31/03/2072	गुरु	30/11/2074	शनि	16/04/2076	बुध	06/06/2079	केतु	28/05/2080
गुरु	24/08/2072	शनि	04/05/2075	बुध	12/06/2076	केतु	13/08/2079	शुक्र	25/07/2080

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - मंगल - केतु	
06/11/2019 09:42	
18/11/2019 19:59	
केतु	07/11/2019 03:06
शुक्र	09/11/2019 04:49
सूर्य	09/11/2019 19:44
चंद्र	10/11/2019 20:35
मंगल	11/11/2019 13:59
राहु	13/11/2019 10:44
गुरु	15/11/2019 02:30
शनि	17/11/2019 01:44
बुध	18/11/2019 19:59

चंद्र - मंगल - शुक्र	
18/11/2019 19:59	
24/12/2019 08:14	
शुक्र	24/11/2019 18:02
सूर्य	26/11/2019 12:39
चंद्र	29/11/2019 11:40
मंगल	01/12/2019 13:23
राहु	06/12/2019 21:13
गुरु	11/12/2019 14:51
शनि	17/12/2019 05:47
बुध	22/12/2019 06:32
केतु	24/12/2019 08:14

चंद्र - मंगल - सूर्य	
24/12/2019 08:14	
03/01/2020 23:55	
सूर्य	24/12/2019 21:02
चंद्र	25/12/2019 18:20
मंगल	26/12/2019 09:15
राहु	27/12/2019 23:36
गुरु	29/12/2019 09:41
शनि	31/12/2019 02:10
बुध	01/01/2020 14:23
केतु	02/01/2020 05:18
शुक्र	03/01/2020 23:55

चंद्र - मंगल - चंद्र	
03/01/2020 23:55	
21/01/2020 18:02	
चंद्र	05/01/2020 11:26
मंगल	06/01/2020 12:17
राहु	09/01/2020 04:12
गुरु	11/01/2020 13:01
शनि	14/01/2020 08:29
बुध	16/01/2020 20:51
केतु	17/01/2020 21:43
शुक्र	20/01/2020 20:44
सूर्य	21/01/2020 18:02

चंद्र - राहु - राहु	
21/01/2020 18:02	
12/04/2020 22:23	
राहु	03/02/2020 01:54
गुरु	14/02/2020 00:52
शनि	27/02/2020 01:10
बुध	09/03/2020 16:35
केतु	14/03/2020 11:38
शुक्र	28/03/2020 04:21
सूर्य	01/04/2020 06:59
चंद्र	08/04/2020 03:20
मंगल	12/04/2020 22:23

चंद्र - राहु - गुरु	
12/04/2020 22:23	
24/06/2020 23:35	
गुरु	22/04/2020 16:09
शनि	04/05/2020 05:44
बुध	14/05/2020 14:07
केतु	18/05/2020 20:23
शुक्र	31/05/2020 00:35
सूर्य	03/06/2020 16:14
चंद्र	09/06/2020 18:20
मंगल	14/06/2020 00:37
राहु	24/06/2020 23:35

चंद्र - राहु - शनि	
24/06/2020 23:35	
19/09/2020 17:31	
शनि	08/07/2020 17:14
बुध	21/07/2020 00:10
केतु	26/07/2020 01:37
शुक्र	09/08/2020 12:36
सूर्य	13/08/2020 20:42
चंद्र	21/08/2020 02:12
मंगल	26/08/2020 03:38
राहु	08/09/2020 03:56
गुरु	19/09/2020 17:31

चंद्र - राहु - बुध	
19/09/2020 17:31	
06/12/2020 08:17	
बुध	30/09/2020 17:25
केतु	05/10/2020 06:04
शुक्र	18/10/2020 04:32
सूर्य	22/10/2020 01:40
चंद्र	28/10/2020 12:54
मंगल	02/11/2020 01:34
राहु	13/11/2020 16:59
गुरु	24/11/2020 01:21
शनि	06/12/2020 08:17

चंद्र - राहु - केतु	
06/12/2020 08:17	
07/01/2021 07:19	
केतु	08/12/2020 05:02
शुक्र	13/12/2020 12:52
सूर्य	15/12/2020 03:13
चंद्र	17/12/2020 19:09
मंगल	19/12/2020 15:53
राहु	24/12/2020 10:56
गुरु	28/12/2020 17:13
शनि	02/01/2021 18:39
बुध	07/01/2021 07:19

चंद्र - राहु - शुक्र	
07/01/2021 07:19	
08/04/2021 14:49	
शुक्र	22/01/2021 12:34
सूर्य	27/01/2021 02:08
चंद्र	03/02/2021 16:46
मंगल	09/02/2021 00:36
राहु	22/02/2021 17:20
गुरु	06/03/2021 21:32
शनि	21/03/2021 08:31
बुध	03/04/2021 06:59
केतु	08/04/2021 14:49

चंद्र - राहु - सूर्य	
08/04/2021 14:49	
06/05/2021 00:16	
सूर्य	09/04/2021 23:41
चंद्र	12/04/2021 06:29
मंगल	13/04/2021 20:50
राहु	17/04/2021 23:27
गुरु	21/04/2021 15:06
शनि	25/04/2021 23:12
बुध	29/04/2021 20:20
केतु	01/05/2021 10:41
शुक्र	06/05/2021 00:16

चंद्र - राहु - चंद्र	
06/05/2021 00:16	
20/06/2021 16:01	
चंद्र	09/05/2021 19:35
मंगल	12/05/2021 11:30
राहु	19/05/2021 07:52
गुरु	25/05/2021 09:58
शनि	01/06/2021 15:27
बुध	08/06/2021 02:41
केतु	10/06/2021 18:36
शुक्र	18/06/2021 09:14
सूर्य	20/06/2021 16:01

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - राहु - मंगल	
20/06/2021 16:01	22/07/2021 15:02
मंगल	22/06/2021 12:46
राहु	27/06/2021 07:49
गुरु	01/07/2021 14:05
शनि	06/07/2021 15:32
बुध	11/07/2021 04:11
केतु	13/07/2021 00:56
शुक्र	18/07/2021 08:46
सूर्य	19/07/2021 23:07
चंद्र	22/07/2021 15:02

चंद्र - गुरु - गुरु	
22/07/2021 15:02	25/09/2021 13:26
गुरु	31/07/2021 06:50
शनि	10/08/2021 13:34
बुध	19/08/2021 18:21
केतु	23/08/2021 13:15
शुक्र	03/09/2021 08:59
सूर्य	06/09/2021 14:54
चंद्र	12/09/2021 00:46
मंगल	15/09/2021 19:41
राहु	25/09/2021 13:26

चंद्र - गुरु - शनि	
25/09/2021 13:26	11/12/2021 16:02
शनि	07/10/2021 18:27
बुध	18/10/2021 16:37
केतु	23/10/2021 04:34
शुक्र	05/11/2021 01:00
सूर्य	08/11/2021 21:32
चंद्र	15/11/2021 07:45
मंगल	19/11/2021 19:42
राहु	01/12/2021 09:18
गुरु	11/12/2021 16:02

चंद्र - गुरु - बुध	
11/12/2021 16:02	18/02/2022 15:50
बुध	21/12/2021 10:37
केतु	25/12/2021 11:12
शुक्र	05/01/2022 23:10
सूर्य	09/01/2022 09:57
चंद्र	15/01/2022 03:56
मंगल	19/01/2022 04:32
राहु	29/01/2022 12:54
गुरु	07/02/2022 17:40
शनि	18/02/2022 15:50

चंद्र - गुरु - केतु	
18/02/2022 15:50	19/03/2022 01:38
केतु	20/02/2022 07:37
शुक्र	25/02/2022 01:15
सूर्य	26/02/2022 11:20
चंद्र	28/02/2022 20:09
मंगल	02/03/2022 11:55
राहु	06/03/2022 18:12
गुरु	10/03/2022 13:06
शनि	15/03/2022 01:03
बुध	19/03/2022 01:38

चंद्र - गुरु - शुक्र	
19/03/2022 01:38	08/06/2022 05:38
शुक्र	01/04/2022 14:18
सूर्य	05/04/2022 15:42
चंद्र	12/04/2022 10:02
मंगल	17/04/2022 03:40
राहु	29/04/2022 07:52
गुरु	10/05/2022 03:36
शनि	23/05/2022 00:02
बुध	03/06/2022 12:00
केतु	08/06/2022 05:38

चंद्र - गुरु - सूर्य	
08/06/2022 05:38	02/07/2022 14:02
सूर्य	09/06/2022 10:52
चंद्र	11/06/2022 11:34
मंगल	12/06/2022 21:39
राहु	16/06/2022 13:19
गुरु	19/06/2022 19:14
शनि	23/06/2022 15:46
बुध	27/06/2022 02:33
केतु	28/06/2022 12:38
शुक्र	02/07/2022 14:02

चंद्र - गुरु - चंद्र	
02/07/2022 14:02	12/08/2022 04:02
चंद्र	05/07/2022 23:12
मंगल	08/07/2022 08:01
राहु	14/07/2022 10:07
गुरु	19/07/2022 19:59
शनि	26/07/2022 06:12
बुध	01/08/2022 00:11
केतु	03/08/2022 09:00
शुक्र	10/08/2022 03:20
सूर्य	12/08/2022 04:02

चंद्र - गुरु - मंगल	
12/08/2022 04:02	09/09/2022 13:50
मंगल	13/08/2022 19:49
राहु	18/08/2022 02:05
गुरु	21/08/2022 20:59
शनि	26/08/2022 08:56
बुध	30/08/2022 09:32
केतु	01/09/2022 01:18
शुक्र	05/09/2022 18:56
सूर्य	07/09/2022 05:01
चंद्र	09/09/2022 13:50

चंद्र - गुरु - राहु	
09/09/2022 13:50	21/11/2022 15:02
राहु	20/09/2022 12:49
गुरु	30/09/2022 06:35
शनि	11/10/2022 20:10
बुध	22/10/2022 04:32
केतु	26/10/2022 10:49
शुक्र	07/11/2022 15:01
सूर्य	11/11/2022 06:40
चंद्र	17/11/2022 08:46
मंगल	21/11/2022 15:02

चंद्र - शनि - शनि	
21/11/2022 15:02	21/02/2023 04:38
शनि	06/12/2022 03:00
बुध	19/12/2022 02:19
केतु	24/12/2022 10:31
शुक्र	08/01/2023 16:46
सूर्य	13/01/2023 06:39
चंद्र	20/01/2023 21:47
मंगल	26/01/2023 05:59
राहु	08/02/2023 23:37
गुरु	21/02/2023 04:38

चंद्र - शनि - बुध	
21/02/2023 04:38	14/05/2023 02:53
बुध	04/03/2023 19:11
केतु	09/03/2023 13:53
शुक्र	23/03/2023 05:36
सूर्य	27/03/2023 07:54
चंद्र	03/04/2023 03:46
मंगल	07/04/2023 22:28
राहु	20/04/2023 05:24
गुरु	01/05/2023 03:34
शनि	14/05/2023 02:53

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - शनि - केतु	
14/05/2023 02:53	
16/06/2023 20:32	
केतु	16/05/2023 02:07
शुक्र	21/05/2023 17:04
सूर्य	23/05/2023 09:33
चंद्र	26/05/2023 05:01
मंगल	28/05/2023 04:14
राहु	02/06/2023 05:41
गुरु	06/06/2023 17:38
शनि	12/06/2023 01:50
बुध	16/06/2023 20:32

चंद्र - शनि - शुक्र	
16/06/2023 20:32	
21/09/2023 05:47	
शुक्र	02/07/2023 22:04
सूर्य	07/07/2023 17:44
चंद्र	15/07/2023 18:30
मंगल	21/07/2023 09:27
राहु	04/08/2023 20:26
गुरु	17/08/2023 16:52
शनि	01/09/2023 23:08
बुध	15/09/2023 14:50
केतु	21/09/2023 05:47

चंद्र - शनि - सूर्य	
21/09/2023 05:47	
20/10/2023 03:45	
सूर्य	22/09/2023 16:29
चंद्र	25/09/2023 02:19
मंगल	26/09/2023 18:47
राहु	01/10/2023 02:53
गुरु	04/10/2023 23:25
शनि	09/10/2023 13:18
बुध	13/10/2023 15:37
केतु	15/10/2023 08:05
शुक्र	20/10/2023 03:45

चंद्र - शनि - चंद्र	
20/10/2023 03:45	
07/12/2023 08:23	
चंद्र	24/10/2023 04:08
मंगल	26/10/2023 23:37
राहु	03/11/2023 05:06
गुरु	09/11/2023 15:19
शनि	17/11/2023 06:27
बुध	24/11/2023 02:18
केतु	26/11/2023 21:47
शुक्र	04/12/2023 22:33
सूर्य	07/12/2023 08:23

चंद्र - शनि - मंगल	
07/12/2023 08:23	
10/01/2024 02:01	
मंगल	09/12/2023 07:36
राहु	14/12/2023 09:03
गुरु	18/12/2023 21:00
शनि	24/12/2023 05:12
बुध	28/12/2023 23:54
केतु	30/12/2023 23:08
शुक्र	05/01/2024 14:04
सूर्य	07/01/2024 06:33
चंद्र	10/01/2024 02:01

चंद्र - शनि - राहु	
10/01/2024 02:01	
05/04/2024 19:56	
राहु	23/01/2024 02:18
गुरु	03/02/2024 15:54
शनि	17/02/2024 09:32
बुध	29/02/2024 16:28
केतु	05/03/2024 17:55
शुक्र	20/03/2024 04:54
सूर्य	24/03/2024 13:00
चंद्र	31/03/2024 18:30
मंगल	05/04/2024 19:56

चंद्र - शनि - गुरु	
05/04/2024 19:56	
21/06/2024 22:32	
गुरु	16/04/2024 02:41
शनि	28/04/2024 07:42
बुध	09/05/2024 05:52
केतु	13/05/2024 17:49
शुक्र	26/05/2024 14:15
सूर्य	30/05/2024 10:47
चंद्र	05/06/2024 21:00
मंगल	10/06/2024 08:57
राहु	21/06/2024 22:32

चंद्र - बुध - बुध	
21/06/2024 22:32	
03/09/2024 05:50	
बुध	02/07/2024 07:46
केतु	06/07/2024 14:24
शुक्र	18/07/2024 19:37
सूर्य	22/07/2024 11:35
चंद्र	28/07/2024 14:11
मंगल	01/08/2024 20:49
राहु	12/08/2024 20:42
गुरु	22/08/2024 15:17
शनि	03/09/2024 05:50

चंद्र - बुध - केतु	
03/09/2024 05:50	
03/10/2024 10:14	
केतु	05/09/2024 00:05
शुक्र	10/09/2024 00:49
सूर्य	11/09/2024 13:03
चंद्र	14/09/2024 01:25
मंगल	15/09/2024 19:40
राहु	20/09/2024 08:20
गुरु	24/09/2024 08:55
शनि	29/09/2024 03:37
बुध	03/10/2024 10:14

चंद्र - बुध - शुक्र	
03/10/2024 10:14	
28/12/2024 15:59	
शुक्र	17/10/2024 19:12
सूर्य	22/10/2024 02:41
चंद्र	29/10/2024 07:10
मंगल	03/11/2024 07:54
राहु	16/11/2024 06:22
गुरु	27/11/2024 18:20
शनि	11/12/2024 10:02
बुध	23/12/2024 15:15
केतु	28/12/2024 15:59

चंद्र - बुध - सूर्य	
28/12/2024 15:59	
23/01/2025 12:55	
सूर्य	29/12/2024 23:02
चंद्र	01/01/2025 02:47
मंगल	02/01/2025 15:00
राहु	06/01/2025 12:08
गुरु	09/01/2025 22:56
शनि	14/01/2025 01:15
बुध	17/01/2025 17:12
केतु	19/01/2025 05:26
शुक्र	23/01/2025 12:55

चंद्र - बुध - चंद्र	
23/01/2025 12:55	
07/03/2025 15:47	
चंद्र	27/01/2025 03:09
मंगल	29/01/2025 15:31
राहु	05/02/2025 02:45
गुरु	10/02/2025 20:44
शनि	17/02/2025 16:36
बुध	23/02/2025 19:12
केतु	26/02/2025 07:34
शुक्र	05/03/2025 12:03
सूर्य	07/03/2025 15:47

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - बुध - मंगल
07/03/2025 15:47
06/04/2025 20:12

मंगल	09/03/2025 10:03
राहु	13/03/2025 22:43
गुरु	17/03/2025 23:18
शनि	22/03/2025 18:00
बुध	27/03/2025 00:37
केतु	28/03/2025 18:53
शुक्र	02/04/2025 19:37
सूर्य	04/04/2025 07:50
चंद्र	06/04/2025 20:12

चंद्र - बुध - राहु
06/04/2025 20:12
23/06/2025 10:59

राहु	18/04/2025 11:37
गुरु	28/04/2025 19:59
शनि	11/05/2025 02:56
बुध	22/05/2025 02:49
केतु	26/05/2025 15:29
शुक्र	08/06/2025 13:57
सूर्य	12/06/2025 11:05
चंद्र	18/06/2025 22:19
मंगल	23/06/2025 10:59

चंद्र - बुध - गुरु
23/06/2025 10:59
31/08/2025 10:47

गुरु	02/07/2025 15:45
शनि	13/07/2025 13:55
बुध	23/07/2025 08:30
केतु	27/07/2025 09:05
शुक्र	07/08/2025 21:03
सूर्य	11/08/2025 07:50
चंद्र	17/08/2025 01:49
मंगल	21/08/2025 02:25
राहु	31/08/2025 10:47

चंद्र - बुध - शनि
31/08/2025 10:47
21/11/2025 09:02

शनि	13/09/2025 10:06
बुध	25/09/2025 00:39
केतु	29/09/2025 19:21
शुक्र	13/10/2025 11:04
सूर्य	17/10/2025 13:23
चंद्र	24/10/2025 09:14
मंगल	29/10/2025 03:56
राहु	10/11/2025 10:52
गुरु	21/11/2025 09:02

चंद्र - केतु - केतु
21/11/2025 09:02
03/12/2025 19:20

केतु	22/11/2025 02:26
शुक्र	24/11/2025 04:09
सूर्य	24/11/2025 19:04
चंद्र	25/11/2025 19:56
मंगल	26/11/2025 13:20
राहु	28/11/2025 10:04
गुरु	30/11/2025 01:51
शनि	02/12/2025 01:04
बुध	03/12/2025 19:20

चंद्र - केतु - शुक्र
03/12/2025 19:20
08/01/2026 07:35

शुक्र	09/12/2025 17:22
सूर्य	11/12/2025 11:59
चंद्र	14/12/2025 11:00
मंगल	16/12/2025 12:43
राहु	21/12/2025 20:33
गुरु	26/12/2025 14:11
शनि	01/01/2026 05:08
बुध	06/01/2026 05:52
केतु	08/01/2026 07:35

चंद्र - केतु - सूर्य
08/01/2026 07:35
18/01/2026 23:15

सूर्य	08/01/2026 20:22
चंद्र	09/01/2026 17:40
मंगल	10/01/2026 08:35
राहु	11/01/2026 22:56
गुरु	13/01/2026 09:01
शनि	15/01/2026 01:30
बुध	16/01/2026 13:44
केतु	17/01/2026 04:38
शुक्र	18/01/2026 23:15

चंद्र - केतु - चंद्र
18/01/2026 23:15
05/02/2026 17:23

चंद्र	20/01/2026 10:46
मंगल	21/01/2026 11:37
राहु	24/01/2026 03:32
गुरु	26/01/2026 12:21
शनि	29/01/2026 07:50
बुध	31/01/2026 20:12
केतु	01/02/2026 21:03
शुक्र	04/02/2026 20:04
सूर्य	05/02/2026 17:23

चंद्र - केतु - मंगल
05/02/2026 17:23
18/02/2026 03:40

मंगल	06/02/2026 10:47
राहु	08/02/2026 07:31
गुरु	09/02/2026 23:18
शनि	11/02/2026 22:31
बुध	13/02/2026 16:47
केतु	14/02/2026 10:11
शुक्र	16/02/2026 11:54
सूर्य	17/02/2026 02:49
चंद्र	18/02/2026 03:40

चंद्र - केतु - राहु
18/02/2026 03:40
22/03/2026 02:41

राहु	22/02/2026 22:43
गुरु	27/02/2026 04:59
शनि	04/03/2026 06:26
बुध	08/03/2026 19:06
केतु	10/03/2026 15:50
शुक्र	15/03/2026 23:41
सूर्य	17/03/2026 14:02
चंद्र	20/03/2026 05:57
मंगल	22/03/2026 02:41

चंद्र - केतु - गुरु
22/03/2026 02:41
19/04/2026 12:29

गुरु	25/03/2026 21:36
शनि	30/03/2026 09:33
बुध	03/04/2026 10:08
केतु	05/04/2026 01:55
शुक्र	09/04/2026 19:33
सूर्य	11/04/2026 05:38
चंद्र	13/04/2026 14:27
मंगल	15/04/2026 06:13
राहु	19/04/2026 12:29

चंद्र - केतु - शनि
19/04/2026 12:29
23/05/2026 06:08

शनि	24/04/2026 20:41
बुध	29/04/2026 15:23
केतु	01/05/2026 14:37
शुक्र	07/05/2026 05:33
सूर्य	08/05/2026 22:02
चंद्र	11/05/2026 17:30
मंगल	13/05/2026 16:44
राहु	18/05/2026 18:11
गुरु	23/05/2026 06:08

विंशोत्तरी दशा - प्राण

चंद्र - मंगल - केतु - शुक्र		चंद्र - मंगल - केतु - सूर्य		चंद्र - मंगल - केतु - चंद्र		चंद्र - मंगल - केतु - मंगल	
07/11/2019 03:06		09/11/2019 04:49		09/11/2019 19:44		10/11/2019 20:35	
09/11/2019 04:49		09/11/2019 19:44		10/11/2019 20:35		11/11/2019 13:59	
शुक्र	07/11/2019 11:23	सूर्य	09/11/2019 05:34	चंद्र	09/11/2019 21:48	मंगल	10/11/2019 21:36
सूर्य	07/11/2019 13:53	चंद्र	09/11/2019 06:48	मंगल	09/11/2019 23:15	राहु	11/11/2019 00:13
चंद्र	07/11/2019 18:01	मंगल	09/11/2019 07:41	राहु	10/11/2019 02:59	गुरु	11/11/2019 02:32
मंगल	07/11/2019 20:55	राहु	09/11/2019 09:55	गुरु	10/11/2019 06:18	शनि	11/11/2019 05:17
राहु	08/11/2019 04:23	गुरु	09/11/2019 11:54	शनि	10/11/2019 10:14	बुध	11/11/2019 07:45
गुरु	08/11/2019 11:00	शनि	09/11/2019 14:16	बुध	10/11/2019 13:45	केतु	11/11/2019 08:46
शनि	08/11/2019 18:53	बुध	09/11/2019 16:23	केतु	10/11/2019 15:12	शुक्र	11/11/2019 11:40
बुध	09/11/2019 01:55	केतु	09/11/2019 17:15	शुक्र	10/11/2019 19:21	सूर्य	11/11/2019 12:32
केतु	09/11/2019 04:49	शुक्र	09/11/2019 19:44	सूर्य	10/11/2019 20:35	चंद्र	11/11/2019 13:59

चंद्र - मंगल - केतु - राहु		चंद्र - मंगल - केतु - गुरु		चंद्र - मंगल - केतु - शनि		चंद्र - मंगल - केतु - बुध	
11/11/2019 13:59		13/11/2019 10:44		15/11/2019 02:30		17/11/2019 01:44	
13/11/2019 10:44		15/11/2019 02:30		17/11/2019 01:44		18/11/2019 19:59	
राहु	11/11/2019 20:42	गुरु	13/11/2019 16:02	शनि	15/11/2019 09:59	बुध	17/11/2019 07:43
गुरु	12/11/2019 02:40	शनि	13/11/2019 22:20	बुध	15/11/2019 16:40	केतु	17/11/2019 10:11
शनि	12/11/2019 09:45	बुध	14/11/2019 03:58	केतु	15/11/2019 19:26	शुक्र	17/11/2019 17:14
बुध	12/11/2019 16:05	केतु	14/11/2019 06:17	शुक्र	16/11/2019 03:18	सूर्य	17/11/2019 19:20
केतु	12/11/2019 18:42	शुक्र	14/11/2019 12:55	सूर्य	16/11/2019 05:40	चंद्र	17/11/2019 22:52
शुक्र	13/11/2019 02:09	सूर्य	14/11/2019 14:54	चंद्र	16/11/2019 09:36	मंगल	18/11/2019 01:20
सूर्य	13/11/2019 04:24	चंद्र	14/11/2019 18:13	मंगल	16/11/2019 12:21	राहु	18/11/2019 07:40
चंद्र	13/11/2019 08:07	मंगल	14/11/2019 20:32	राहु	16/11/2019 19:26	गुरु	18/11/2019 13:18
मंगल	13/11/2019 10:44	राहु	15/11/2019 02:30	गुरु	17/11/2019 01:44	शनि	18/11/2019 19:59

चंद्र - मंगल - शुक्र - शुक्र		चंद्र - मंगल - शुक्र - सूर्य		चंद्र - मंगल - शुक्र - चंद्र		चंद्र - मंगल - शुक्र - मंगल	
18/11/2019 19:59		24/11/2019 18:02		26/11/2019 12:39		29/11/2019 11:40	
24/11/2019 18:02		26/11/2019 12:39		29/11/2019 11:40		01/12/2019 13:23	
शुक्र	19/11/2019 19:40	सूर्य	24/11/2019 20:10	चंद्र	26/11/2019 18:34	मंगल	29/11/2019 14:34
सूर्य	20/11/2019 02:46	चंद्र	24/11/2019 23:43	मंगल	26/11/2019 22:42	राहु	29/11/2019 22:01
चंद्र	20/11/2019 14:36	मंगल	25/11/2019 02:12	राहु	27/11/2019 09:22	गुरु	30/11/2019 04:39
मंगल	20/11/2019 22:53	राहु	25/11/2019 08:36	गुरु	27/11/2019 18:50	शनि	30/11/2019 12:31
राहु	21/11/2019 20:12	गुरु	25/11/2019 14:16	शनि	28/11/2019 06:04	बुध	30/11/2019 19:34
गुरु	22/11/2019 15:08	शनि	25/11/2019 21:01	बुध	28/11/2019 16:08	केतु	30/11/2019 22:28
शनि	23/11/2019 13:37	बुध	26/11/2019 03:03	केतु	28/11/2019 20:17	शुक्र	01/12/2019 06:45
बुध	24/11/2019 09:45	केतु	26/11/2019 05:33	शुक्र	29/11/2019 08:07	सूर्य	01/12/2019 09:14
केतु	24/11/2019 18:02	शुक्र	26/11/2019 12:39	सूर्य	29/11/2019 11:40	चंद्र	01/12/2019 13:23

विंशोत्तरी दशा - प्राण

चंद्र - मंगल - शुक्र - राहु	
01/12/2019 13:23	
06/12/2019 21:13	
राहु	02/12/2019 08:33
गुरु	03/12/2019 01:36
शनि	03/12/2019 21:51
बुध	04/12/2019 15:57
केतु	04/12/2019 23:25
शुक्र	05/12/2019 20:43
सूर्य	06/12/2019 03:06
चंद्र	06/12/2019 13:46
मंगल	06/12/2019 21:13

चंद्र - मंगल - शुक्र - गुरु	
06/12/2019 21:13	
11/12/2019 14:51	
गुरु	07/12/2019 12:22
शनि	08/12/2019 06:22
बुध	08/12/2019 22:28
केतु	09/12/2019 05:05
शुक्र	10/12/2019 00:02
सूर्य	10/12/2019 05:43
चंद्र	10/12/2019 15:11
मंगल	10/12/2019 21:48
राहु	11/12/2019 14:51

चंद्र - मंगल - शुक्र - शनि	
11/12/2019 14:51	
17/12/2019 05:47	
शनि	12/12/2019 12:13
बुध	13/12/2019 07:20
केतु	13/12/2019 15:12
शुक्र	14/12/2019 13:42
सूर्य	14/12/2019 20:27
चंद्र	15/12/2019 07:41
मंगल	15/12/2019 15:34
राहु	16/12/2019 11:48
गुरु	17/12/2019 05:47

चंद्र - मंगल - शुक्र - बुध	
17/12/2019 05:47	
22/12/2019 06:32	
बुध	17/12/2019 22:54
केतु	18/12/2019 05:56
शुक्र	19/12/2019 02:04
सूर्य	19/12/2019 08:06
चंद्र	19/12/2019 18:10
मंगल	20/12/2019 01:12
राहु	20/12/2019 19:19
गुरु	21/12/2019 11:25
शनि	22/12/2019 06:32

चंद्र - मंगल - शुक्र - केतु	
22/12/2019 06:32	
24/12/2019 08:14	
केतु	22/12/2019 09:26
शुक्र	22/12/2019 17:43
सूर्य	22/12/2019 20:12
चंद्र	23/12/2019 00:20
मंगल	23/12/2019 03:14
राहु	23/12/2019 10:42
गुरु	23/12/2019 17:20
शनि	24/12/2019 01:12
बुध	24/12/2019 08:14

चंद्र - मंगल - सूर्य - सूर्य	
24/12/2019 08:14	
24/12/2019 21:02	
सूर्य	24/12/2019 08:53
चंद्र	24/12/2019 09:57
मंगल	24/12/2019 10:41
राहु	24/12/2019 12:37
गुरु	24/12/2019 14:19
शनि	24/12/2019 16:20
बुध	24/12/2019 18:09
केतु	24/12/2019 18:54
शुक्र	24/12/2019 21:02

चंद्र - मंगल - सूर्य - चंद्र	
24/12/2019 21:02	
25/12/2019 18:20	
चंद्र	24/12/2019 22:48
मंगल	25/12/2019 00:03
राहु	25/12/2019 03:14
गुरु	25/12/2019 06:05
शनि	25/12/2019 09:27
बुध	25/12/2019 12:28
केतु	25/12/2019 13:43
शुक्र	25/12/2019 17:16
सूर्य	25/12/2019 18:20

चंद्र - मंगल - सूर्य - मंगल	
25/12/2019 18:20	
26/12/2019 09:15	
मंगल	25/12/2019 19:12
राहु	25/12/2019 21:26
गुरु	25/12/2019 23:26
शनि	26/12/2019 01:47
बुध	26/12/2019 03:54
केतु	26/12/2019 04:46
शुक्र	26/12/2019 07:15
सूर्य	26/12/2019 08:00
चंद्र	26/12/2019 09:15

चंद्र - मंगल - सूर्य - राहु	
26/12/2019 09:15	
27/12/2019 23:36	
राहु	26/12/2019 15:00
गुरु	26/12/2019 20:07
शनि	27/12/2019 02:11
बुध	27/12/2019 07:37
केतु	27/12/2019 09:51
शुक्र	27/12/2019 16:15
सूर्य	27/12/2019 18:10
चंद्र	27/12/2019 21:22
मंगल	27/12/2019 23:36

चंद्र - मंगल - सूर्य - गुरु	
27/12/2019 23:36	
29/12/2019 09:41	
गुरु	28/12/2019 04:09
शनि	28/12/2019 09:32
बुध	28/12/2019 14:22
केतु	28/12/2019 16:21
शुक्र	28/12/2019 22:02
सूर्य	28/12/2019 23:45
चंद्र	29/12/2019 02:35
मंगल	29/12/2019 04:34
राहु	29/12/2019 09:41

चंद्र - मंगल - सूर्य - शनि	
29/12/2019 09:41	
31/12/2019 02:10	
शनि	29/12/2019 16:06
बुध	29/12/2019 21:50
केतु	30/12/2019 00:12
शुक्र	30/12/2019 06:56
सूर्य	30/12/2019 08:58
चंद्र	30/12/2019 12:20
मंगल	30/12/2019 14:42
राहु	30/12/2019 20:46
गुरु	31/12/2019 02:10

चंद्र - मंगल - सूर्य - बुध	
31/12/2019 02:10	
01/01/2020 14:23	
बुध	31/12/2019 07:18
केतु	31/12/2019 09:25
शुक्र	31/12/2019 15:27
सूर्य	31/12/2019 17:16
चंद्र	31/12/2019 20:17
मंगल	31/12/2019 22:24
राहु	01/01/2020 03:50
गुरु	01/01/2020 08:39
शनि	01/01/2020 14:23

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 8 वर्ष 2 मास 11 दिन

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष	
10/01/1974		23/03/1982		23/03/1995		23/03/2009		23/03/2024	
23/03/1982		23/03/1995		23/03/2009		23/03/2024		23/03/2040	
	00/00/0000	गुरु	06/09/1983	शनि	29/11/1996	केतु	01/03/2011	चंद्र	07/06/2026
	10/01/1974	शनि	01/04/1985	केतु	22/09/1998	चंद्र	26/03/2013	बुध	10/10/2028
शनि	05/04/1974	केतु	06/12/1986	चंद्र	27/08/2000	बुध	07/06/2015	शुक्र	05/04/2031
केतु	23/10/1975	चंद्र	21/09/1988	बुध	15/09/2002	शुक्र	04/10/2017	सूर्य	10/10/2032
चंद्र	19/06/1977	बुध	18/08/1990	शुक्र	17/11/2004	सूर्य	08/03/2019	मंगल	07/06/2034
बुध	23/03/1979	शुक्र	24/08/1992	सूर्य	17/03/2006	मंगल	24/09/2020	गुरु	23/03/2036
शुक्र	31/01/1981	सूर्य	17/11/1993	मंगल	28/08/2007	गुरु	31/05/2022	शनि	26/02/2038
सूर्य	23/03/1982	मंगल	23/03/1995	गुरु	23/03/2009	शनि	23/03/2024	केतु	23/03/2040

बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष	
23/03/2040		23/03/2057		23/03/2075		23/03/2086	
23/03/2057		23/03/2075		23/03/2086		00/00/0000	
बुध	19/09/2042	शुक्र	07/01/2060	सूर्य	07/04/2076	मंगल	19/06/2087
शुक्र	09/05/2045	सूर्य	21/09/2061	मंगल	28/05/2077	गुरु	23/10/2088
सूर्य	19/12/2046	मंगल	03/08/2063	गुरु	21/08/2078	शनि	10/01/2090
मंगल	21/09/2048	गुरु	08/08/2065	शनि	19/12/2079		00/00/0000
गुरु	18/08/2050	शनि	11/10/2067	केतु	22/05/2081		00/00/0000
शनि	05/09/2052	केतु	07/02/2070	चंद्र	27/11/2082		00/00/0000
केतु	17/11/2054	चंद्र	02/08/2072	बुध	08/07/2084		00/00/0000
चंद्र	23/03/2057	बुध	23/03/2075	शुक्र	23/03/2086		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र	
10/01/1974		05/04/1974		23/10/1975		19/06/1977		23/03/1979	
05/04/1974		23/10/1975		19/06/1977		23/03/1979		31/01/1981	
	00/00/0000	केतु	17/06/1974	चंद्र	15/01/1976	बुध	21/09/1977	शुक्र	07/07/1979
	00/00/0000	चंद्र	03/09/1974	बुध	12/04/1976	शुक्र	30/12/1977	सूर्य	09/09/1979
	00/00/0000	बुध	25/11/1974	शुक्र	15/07/1976	सूर्य	01/03/1978	मंगल	19/11/1979
	00/00/0000	शुक्र	21/02/1975	सूर्य	11/09/1976	मंगल	06/05/1978	गुरु	03/02/1980
	00/00/0000	सूर्य	16/04/1975	मंगल	12/11/1976	गुरु	17/07/1978	शनि	25/04/1980
	10/01/1974	मंगल	13/06/1975	गुरु	19/01/1977	शनि	03/10/1978	केतु	22/07/1980
मंगल	04/02/1974	गुरु	16/08/1975	शनि	02/04/1977	केतु	25/12/1978	चंद्र	24/10/1980
गुरु	05/04/1974	शनि	23/10/1975	केतु	19/06/1977	चंद्र	23/03/1979	बुध	31/01/1981

मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र	
31/01/1981		23/03/1982		06/09/1983		01/04/1985		06/12/1986	
23/03/1982		06/09/1983		01/04/1985		06/12/1986		21/09/1988	
सूर्य	12/03/1981	गुरु	22/05/1982	शनि	14/11/1983	केतु	20/06/1985	चंद्र	07/03/1987
मंगल	24/04/1981	शनि	25/07/1982	केतु	27/01/1984	चंद्र	12/09/1985	बुध	11/06/1987
गुरु	09/06/1981	केतु	02/10/1982	चंद्र	15/04/1984	बुध	11/12/1985	शुक्र	20/09/1987
शनि	30/07/1981	चंद्र	14/12/1982	बुध	08/07/1984	शुक्र	17/03/1986	सूर्य	21/11/1987
केतु	21/09/1981	बुध	02/03/1983	शुक्र	05/10/1984	सूर्य	14/05/1986	मंगल	28/01/1988
चंद्र	18/11/1981	शुक्र	24/05/1983	सूर्य	29/11/1984	मंगल	16/07/1986	गुरु	10/04/1988
बुध	18/01/1982	सूर्य	13/07/1983	मंगल	27/01/1985	गुरु	23/09/1986	शनि	28/06/1988
शुक्र	23/03/1982	मंगल	06/09/1983	गुरु	01/04/1985	शनि	06/12/1986	केतु	21/09/1988

गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि	
21/09/1988		18/08/1990		24/08/1992		17/11/1993		23/03/1995	
18/08/1990		24/08/1992		17/11/1993		23/03/1995		29/11/1996	
बुध	01/01/1989	शुक्र	10/12/1990	सूर्य	06/10/1992	मंगल	07/01/1994	शनि	06/06/1995
शुक्र	19/04/1989	सूर्य	18/02/1991	मंगल	21/11/1992	गुरु	03/03/1994	केतु	25/08/1995
सूर्य	24/06/1989	मंगल	05/05/1991	गुरु	11/01/1993	शनि	01/05/1994	चंद्र	18/11/1995
मंगल	04/09/1989	गुरु	27/07/1991	शनि	06/03/1993	केतु	04/07/1994	बुध	16/02/1996
गुरु	21/11/1989	शनि	24/10/1991	केतु	03/05/1993	चंद्र	10/09/1994	शुक्र	22/05/1996
शनि	13/02/1990	केतु	27/01/1992	चंद्र	04/07/1993	बुध	20/11/1994	सूर्य	19/07/1996
केतु	14/05/1990	चंद्र	08/05/1992	बुध	08/09/1993	शुक्र	05/02/1995	मंगल	21/09/1996
चंद्र	18/08/1990	बुध	24/08/1992	शुक्र	17/11/1993	सूर्य	23/03/1995	गुरु	29/11/1996

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
29/11/1996		22/09/1998		27/08/2000		15/09/2002		17/11/2004	
22/09/1998		27/08/2000		15/09/2002		17/11/2004		17/03/2006	
केतु	23/02/1997	चंद्र	28/12/1998	बुध	15/12/2000	शुक्र	16/01/2003	सूर्य	02/01/2005
चंद्र	25/05/1997	बुध	10/04/1999	शुक्र	10/04/2001	सूर्य	02/04/2003	मंगल	21/02/2005
बुध	30/08/1997	शुक्र	29/07/1999	सूर्य	20/06/2001	मंगल	23/06/2003	गुरु	16/04/2005
शुक्र	11/12/1997	सूर्य	04/10/1999	मंगल	06/09/2001	गुरु	20/09/2003	शनि	14/06/2005
सूर्य	11/02/1998	मंगल	16/12/1999	गुरु	29/11/2001	शनि	25/12/2003	केतु	16/08/2005
मंगल	21/04/1998	गुरु	04/03/2000	शनि	27/02/2002	केतु	05/04/2004	चंद्र	21/10/2005
गुरु	04/07/1998	शनि	28/05/2000	केतु	04/06/2002	चंद्र	24/07/2004	बुध	01/01/2006
शनि	22/09/1998	केतु	27/08/2000	चंद्र	15/09/2002	बुध	17/11/2004	शुक्र	17/03/2006

शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध	
17/03/2006		28/08/2007		23/03/2009		01/03/2011		26/03/2013	
28/08/2007		23/03/2009		01/03/2011		26/03/2013		07/06/2015	
मंगल	10/05/2006	गुरु	31/10/2007	केतु	22/06/2009	चंद्र	13/06/2011	बुध	22/07/2013
गुरु	09/07/2006	शनि	08/01/2008	चंद्र	28/09/2009	बुध	02/10/2011	शुक्र	23/11/2013
शनि	11/09/2006	केतु	22/03/2008	बुध	10/01/2010	शुक्र	27/01/2012	सूर्य	07/02/2014
केतु	18/11/2006	चंद्र	09/06/2008	शुक्र	30/04/2010	सूर्य	08/04/2012	मंगल	01/05/2014
चंद्र	30/01/2007	बुध	01/09/2008	सूर्य	06/07/2010	मंगल	25/06/2012	गुरु	30/07/2014
बुध	17/04/2007	शुक्र	29/11/2008	मंगल	17/09/2010	गुरु	18/09/2012	शनि	04/11/2014
शुक्र	09/07/2007	सूर्य	23/01/2009	गुरु	06/12/2010	शनि	18/12/2012	केतु	16/02/2015
सूर्य	28/08/2007	मंगल	23/03/2009	शनि	01/03/2011	केतु	26/03/2013	चंद्र	07/06/2015

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
07/06/2015		04/10/2017		08/03/2019		24/09/2020		31/05/2022	
04/10/2017		08/03/2019		24/09/2020		31/05/2022		23/03/2024	
शुक्र	17/10/2015	सूर्य	22/11/2017	मंगल	05/05/2019	गुरु	02/12/2020	शनि	19/08/2022
सूर्य	05/01/2016	मंगल	15/01/2018	गुरु	08/07/2019	शनि	14/02/2021	केतु	13/11/2022
मंगल	02/04/2016	गुरु	14/03/2018	शनि	14/09/2019	केतु	05/05/2021	चंद्र	12/02/2023
गुरु	07/07/2016	शनि	16/05/2018	केतु	26/11/2019	चंद्र	28/07/2021	बुध	20/05/2023
शनि	17/10/2016	केतु	22/07/2018	चंद्र	13/02/2020	बुध	26/10/2021	शुक्र	30/08/2023
केतु	04/02/2017	चंद्र	02/10/2018	बुध	06/05/2020	शुक्र	30/01/2022	सूर्य	01/11/2023
चंद्र	01/06/2017	बुध	17/12/2018	शुक्र	02/08/2020	सूर्य	29/03/2022	मंगल	08/01/2024
बुध	04/10/2017	शुक्र	08/03/2019	सूर्य	24/09/2020	मंगल	31/05/2022	गुरु	23/03/2024

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
23/03/2024		07/06/2026		10/10/2028		05/04/2031		10/10/2032	
07/06/2026		10/10/2028		05/04/2031		10/10/2032		07/06/2034	
चंद्र	12/07/2024	बुध	10/10/2026	शुक्र	28/02/2029	सूर्य	27/05/2031	मंगल	12/12/2032
बुध	07/11/2024	शुक्र	20/02/2027	सूर्य	25/05/2029	मंगल	24/07/2031	गुरु	17/02/2033
शुक्र	12/03/2025	सूर्य	12/05/2027	मंगल	27/08/2029	गुरु	24/09/2031	शनि	01/05/2033
सूर्य	27/05/2025	मंगल	09/08/2027	गुरु	06/12/2029	शनि	30/11/2031	केतु	18/07/2033
मंगल	19/08/2025	गुरु	13/11/2027	शनि	26/03/2030	केतु	09/02/2032	चंद्र	10/10/2033
गुरु	17/11/2025	शनि	24/02/2028	केतु	21/07/2030	चंद्र	26/04/2032	बुध	06/01/2034
शनि	22/02/2026	केतु	14/06/2028	चंद्र	23/11/2030	बुध	16/07/2032	शुक्र	10/04/2034
केतु	07/06/2026	चंद्र	10/10/2028	बुध	05/04/2031	शुक्र	10/10/2032	सूर्य	07/06/2034

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
07/06/2034		23/03/2036		26/02/2038		23/03/2040		19/09/2042	
23/03/2036		26/02/2038		23/03/2040		19/09/2042		09/05/2045	
गुरु	19/08/2034	शनि	16/06/2036	केतु	04/06/2038	बुध	03/08/2040	शुक्र	15/02/2043
शनि	06/11/2034	केतु	15/09/2036	चंद्र	16/09/2038	शुक्र	22/12/2040	सूर्य	17/05/2043
केतु	30/01/2035	चंद्र	21/12/2036	बुध	05/01/2039	सूर्य	18/03/2041	मंगल	25/08/2043
चंद्र	30/04/2035	बुध	04/04/2037	शुक्र	02/05/2039	मंगल	21/06/2041	गुरु	11/12/2043
बुध	04/08/2035	शुक्र	22/07/2037	सूर्य	12/07/2039	गुरु	01/10/2041	शनि	05/04/2044
शुक्र	14/11/2035	सूर्य	27/09/2037	मंगल	29/09/2039	शनि	18/01/2042	केतु	08/08/2044
सूर्य	15/01/2036	मंगल	09/12/2037	गुरु	22/12/2039	केतु	16/05/2042	चंद्र	19/12/2044
मंगल	23/03/2036	गुरु	26/02/2038	शनि	23/03/2040	चंद्र	19/09/2042	बुध	09/05/2045

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
09/05/2045		19/12/2046		21/09/2048		18/08/2050		05/09/2052	
19/12/2046		21/09/2048		18/08/2050		05/09/2052		17/11/2054	
सूर्य	04/07/2045	मंगल	23/02/2047	गुरु	08/12/2048	शनि	16/11/2050	केतु	18/12/2052
मंगल	03/09/2045	गुरु	06/05/2047	शनि	02/03/2049	केतु	21/02/2051	चंद्र	08/04/2053
गुरु	08/11/2045	शनि	23/07/2047	केतु	31/05/2049	चंद्र	05/06/2051	बुध	04/08/2053
शनि	18/01/2046	केतु	14/10/2047	चंद्र	04/09/2049	बुध	23/09/2051	शुक्र	06/12/2053
केतु	04/04/2046	चंद्र	10/01/2048	बुध	15/12/2049	शुक्र	17/01/2052	सूर्य	20/02/2054
चंद्र	24/06/2046	बुध	14/04/2048	शुक्र	02/04/2050	सूर्य	28/03/2052	मंगल	14/05/2054
बुध	18/09/2046	शुक्र	22/07/2048	सूर्य	07/06/2050	मंगल	13/06/2052	गुरु	12/08/2054
शुक्र	19/12/2046	सूर्य	21/09/2048	मंगल	18/08/2050	गुरु	05/09/2052	शनि	17/11/2054

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
17/11/2054		23/03/2057		07/01/2060		21/09/2061		03/08/2063	
23/03/2057		07/01/2060		21/09/2061		03/08/2063		08/08/2065	
चंद्र	15/03/2055	शुक्र	28/08/2057	सूर्य	06/03/2060	मंगल	01/12/2061	गुरु	24/10/2063
बुध	19/07/2055	सूर्य	03/12/2057	मंगल	10/05/2060	गुरु	15/02/2062	शनि	21/01/2064
शुक्र	29/11/2055	मंगल	18/03/2058	गुरु	18/07/2060	शनि	08/05/2062	केतु	25/04/2064
सूर्य	18/02/2056	गुरु	11/07/2058	शनि	02/10/2060	केतु	04/08/2062	चंद्र	05/08/2064
मंगल	17/05/2056	शनि	11/11/2058	केतु	21/12/2060	चंद्र	06/11/2062	बुध	21/11/2064
गुरु	21/08/2056	केतु	23/03/2059	चंद्र	17/03/2061	बुध	14/02/2063	शुक्र	15/03/2065
शनि	02/12/2056	चंद्र	10/08/2059	बुध	17/06/2061	शुक्र	30/05/2063	सूर्य	24/05/2065
केतु	23/03/2057	बुध	07/01/2060	शुक्र	21/09/2061	सूर्य	03/08/2063	मंगल	08/08/2065

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
08/08/2065		11/10/2067		07/02/2070		02/08/2072		23/03/2075	
11/10/2067		07/02/2070		02/08/2072		23/03/2075		07/04/2076	
शनि	12/11/2065	केतु	29/01/2068	चंद्र	12/06/2070	बुध	21/12/2072	सूर्य	28/04/2075
केतु	23/02/2066	चंद्र	25/05/2068	बुध	23/10/2070	शुक्र	20/05/2073	मंगल	07/06/2075
चंद्र	12/06/2066	बुध	27/09/2068	शुक्र	13/03/2071	सूर्य	19/08/2073	गुरु	20/07/2075
बुध	06/10/2066	शुक्र	06/02/2069	सूर्य	07/06/2071	मंगल	27/11/2073	शनि	04/09/2075
शुक्र	07/02/2067	सूर्य	27/04/2069	मंगल	08/09/2071	गुरु	15/03/2074	केतु	23/10/2075
सूर्य	23/04/2067	मंगल	24/07/2069	गुरु	19/12/2071	शनि	09/07/2074	चंद्र	14/12/2075
मंगल	14/07/2067	गुरु	27/10/2069	शनि	07/04/2072	केतु	10/11/2074	बुध	08/02/2076
गुरु	11/10/2067	शनि	07/02/2070	केतु	02/08/2072	चंद्र	23/03/2075	शुक्र	07/04/2076

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
07/04/2076		28/05/2077		21/08/2078		19/12/2079		22/05/2081	
28/05/2077		21/08/2078		19/12/2079		22/05/2081		27/11/2082	
मंगल	20/05/2076	गुरु	17/07/2077	शनि	19/10/2078	केतु	24/02/2080	चंद्र	06/08/2081
गुरु	06/07/2076	शनि	10/09/2077	केतु	20/12/2078	चंद्र	06/05/2080	बुध	26/10/2081
शनि	25/08/2076	केतु	07/11/2077	चंद्र	25/02/2079	बुध	21/07/2080	शुक्र	20/01/2082
केतु	18/10/2076	चंद्र	08/01/2078	बुध	07/05/2079	शुक्र	10/10/2080	सूर्य	14/03/2082
चंद्र	14/12/2076	बुध	15/03/2078	शुक्र	22/07/2079	सूर्य	28/11/2080	मंगल	10/05/2082
बुध	13/02/2077	शुक्र	24/05/2078	सूर्य	06/09/2079	मंगल	21/01/2081	गुरु	11/07/2082
शुक्र	19/04/2077	सूर्य	06/07/2078	मंगल	26/10/2079	गुरु	20/03/2081	शनि	16/09/2082
सूर्य	28/05/2077	मंगल	21/08/2078	गुरु	19/12/2079	शनि	22/05/2081	केतु	27/11/2082

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 7 वर्ष 8 मास 27 दिन

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
10/01/1974		08/10/1981		08/06/1986		08/10/1999		08/10/2003	
08/10/1981		08/06/1986		08/10/1999		08/10/2003		08/06/2010	
	00/00/0000	केतु	15/01/1982	शुक्र	28/08/1988	सूर्य	20/12/1999	चंद्र	28/04/2004
	10/01/1974	शुक्र	26/10/1982	सूर्य	28/04/1989	चंद्र	20/04/2000	मंगल	17/09/2004
शुक्र	04/08/1974	सूर्य	19/01/1983	चंद्र	08/06/1990	मंगल	14/07/2000	राहु	17/09/2005
सूर्य	27/02/1975	चंद्र	10/06/1983	मंगल	19/03/1991	राहु	18/02/2001	गुरु	08/08/2006
चंद्र	07/02/1976	मंगल	18/09/1983	राहु	19/03/1993	गुरु	01/09/2001	शनि	29/08/2007
मंगल	05/10/1976	राहु	31/05/1984	गुरु	28/12/1994	शनि	21/04/2002	बुध	08/08/2008
राहु	18/06/1978	गुरु	13/01/1985	शनि	06/02/1997	बुध	13/11/2002	केतु	28/12/2008
गुरु	22/12/1979	शनि	10/10/1985	बुध	28/12/1998	केतु	07/02/2003	शुक्र	06/02/2010
शनि	08/10/1981	बुध	08/06/1986	केतु	08/10/1999	शुक्र	08/10/2003	सूर्य	08/06/2010

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
08/06/2010		07/02/2015		07/02/2027		08/10/2037		08/06/2050	
07/02/2015		07/02/2027		08/10/2037		08/06/2050		00/00/0000	
मंगल	16/09/2010	राहु	25/11/2016	गुरु	10/07/2028	शनि	10/10/2039	बुध	16/01/2052
राहु	29/05/2011	गुरु	03/07/2018	शनि	19/03/2030	बुध	27/07/2041	केतु	13/09/2052
गुरु	12/01/2012	शनि	27/05/2020	बुध	22/09/2031	केतु	23/04/2042	शुक्र	10/01/2054
शनि	07/10/2012	बुध	06/02/2022	केतु	06/05/2032	शुक्र	02/06/2044		00/00/0000
बुध	06/06/2013	केतु	20/10/2022	शुक्र	15/02/2034	सूर्य	19/01/2045		00/00/0000
केतु	13/09/2013	शुक्र	20/10/2024	सूर्य	28/08/2034	चंद्र	08/02/2046		00/00/0000
शुक्र	24/06/2014	सूर्य	27/05/2025	चंद्र	19/07/2035	मंगल	05/11/2046		00/00/0000
सूर्य	18/09/2014	चंद्र	27/05/2026	मंगल	02/03/2036	राहु	29/09/2048		00/00/0000
चंद्र	07/02/2015	मंगल	07/02/2027	राहु	08/10/2037	गुरु	08/06/2050		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र	
10/01/1974	
04/08/1974	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/01/1974
शनि	19/03/1974
बुध	25/06/1974
केतु	04/08/1974

बुध - सूर्य	
04/08/1974	
27/02/1975	
सूर्य	14/08/1974
चंद्र	01/09/1974
मंगल	13/09/1974
राहु	14/10/1974
गुरु	10/11/1974
शनि	13/12/1974
बुध	11/01/1975
केतु	24/01/1975
शुक्र	27/02/1975

बुध - चंद्र	
27/02/1975	
07/02/1976	
चंद्र	28/03/1975
मंगल	17/04/1975
राहु	08/06/1975
गुरु	24/07/1975
शनि	16/09/1975
बुध	04/11/1975
केतु	24/11/1975
शुक्र	21/01/1976
सूर्य	07/02/1976

बुध - मंगल	
07/02/1976	
05/10/1976	
मंगल	21/02/1976
राहु	28/03/1976
गुरु	29/04/1976
शनि	07/06/1976
बुध	11/07/1976
केतु	25/07/1976
शुक्र	03/09/1976
सूर्य	15/09/1976
चंद्र	05/10/1976

बुध - राहु	
05/10/1976	
18/06/1978	
राहु	07/01/1977
गुरु	30/03/1977
शनि	07/07/1977
बुध	03/10/1977
केतु	08/11/1977
शुक्र	19/02/1978
सूर्य	22/03/1978
चंद्र	13/05/1978
मंगल	18/06/1978

बुध - गुरु	
18/06/1978	
22/12/1979	
गुरु	31/08/1978
शनि	26/11/1978
बुध	13/02/1979
केतु	17/03/1979
शुक्र	17/06/1979
सूर्य	14/07/1979
चंद्र	29/08/1979
मंगल	30/09/1979
राहु	22/12/1979

बुध - शनि	
22/12/1979	
08/10/1981	
शनि	04/04/1980
बुध	06/07/1980
केतु	13/08/1980
शुक्र	30/11/1980
सूर्य	02/01/1981
चंद्र	26/02/1981
मंगल	05/04/1981
राहु	12/07/1981
गुरु	08/10/1981

केतु - केतु	
08/10/1981	
15/01/1982	
केतु	14/10/1981
शुक्र	30/10/1981
सूर्य	04/11/1981
चंद्र	12/11/1981
मंगल	18/11/1981
राहु	03/12/1981
गुरु	16/12/1981
शनि	01/01/1982
बुध	15/01/1982

केतु - शुक्र	
15/01/1982	
26/10/1982	
शुक्र	03/03/1982
सूर्य	18/03/1982
चंद्र	10/04/1982
मंगल	27/04/1982
राहु	09/06/1982
गुरु	16/07/1982
शनि	30/08/1982
बुध	10/10/1982
केतु	26/10/1982

केतु - सूर्य	
26/10/1982	
19/01/1983	
सूर्य	30/10/1982
चंद्र	07/11/1982
मंगल	12/11/1982
राहु	24/11/1982
गुरु	06/12/1982
शनि	19/12/1982
बुध	31/12/1982
केतु	05/01/1983
शुक्र	19/01/1983

केतु - चंद्र	
19/01/1983	
10/06/1983	
चंद्र	31/01/1983
मंगल	09/02/1983
राहु	02/03/1983
गुरु	21/03/1983
शनि	12/04/1983
बुध	02/05/1983
केतु	11/05/1983
शुक्र	03/06/1983
सूर्य	10/06/1983

केतु - मंगल	
10/06/1983	
18/09/1983	
मंगल	16/06/1983
राहु	01/07/1983
गुरु	14/07/1983
शनि	30/07/1983
बुध	13/08/1983
केतु	19/08/1983
शुक्र	05/09/1983
सूर्य	10/09/1983
चंद्र	18/09/1983

केतु - राहु	
18/09/1983	
31/05/1984	
राहु	26/10/1983
गुरु	29/11/1983
शनि	09/01/1984
बुध	14/02/1984
केतु	29/02/1984
शुक्र	12/04/1984
सूर्य	24/04/1984
चंद्र	16/05/1984
मंगल	31/05/1984

केतु - गुरु	
31/05/1984	
13/01/1985	
गुरु	30/06/1984
शनि	05/08/1984
बुध	06/09/1984
केतु	19/09/1984
शुक्र	27/10/1984
सूर्य	08/11/1984
चंद्र	27/11/1984
मंगल	10/12/1984
राहु	13/01/1985

केतु - शनि	
13/01/1985	
10/10/1985	
शनि	25/02/1985
बुध	04/04/1985
केतु	20/04/1985
शुक्र	04/06/1985
सूर्य	17/06/1985
चंद्र	10/07/1985
मंगल	25/07/1985
राहु	04/09/1985
गुरु	10/10/1985

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
10/10/1985		08/06/1986		28/08/1988		28/04/1989		08/06/1990	
08/06/1986		28/08/1988		28/04/1989		08/06/1990		19/03/1991	
बुध	13/11/1985	शुक्र	21/10/1986	सूर्य	09/09/1988	चंद्र	01/06/1989	मंगल	25/06/1990
केतु	27/11/1985	सूर्य	01/12/1986	चंद्र	29/09/1988	मंगल	25/06/1989	राहु	06/08/1990
शुक्र	06/01/1986	चंद्र	07/02/1987	मंगल	14/10/1988	राहु	25/08/1989	गुरु	13/09/1990
सूर्य	18/01/1986	मंगल	26/03/1987	राहु	19/11/1988	गुरु	18/10/1989	शनि	28/10/1990
चंद्र	07/02/1986	राहु	26/07/1987	गुरु	22/12/1988	शनि	21/12/1989	बुध	07/12/1990
मंगल	22/02/1986	गुरु	11/11/1987	शनि	29/01/1989	बुध	17/02/1990	केतु	24/12/1990
राहु	30/03/1986	शनि	19/03/1988	बुध	05/03/1989	केतु	12/03/1990	शुक्र	09/02/1991
गुरु	01/05/1986	बुध	12/07/1988	केतु	19/03/1989	शुक्र	19/05/1990	सूर्य	24/02/1991
शनि	08/06/1986	केतु	28/08/1988	शुक्र	28/04/1989	सूर्य	08/06/1990	चंद्र	19/03/1991

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
19/03/1991		19/03/1993		28/12/1994		06/02/1997		28/12/1998	
19/03/1993		28/12/1994		06/02/1997		28/12/1998		08/10/1999	
राहु	07/07/1991	गुरु	13/06/1993	शनि	29/04/1995	बुध	15/05/1997	केतु	14/01/1999
गुरु	12/10/1991	शनि	24/09/1993	बुध	16/08/1995	केतु	24/06/1997	शुक्र	02/03/1999
शनि	05/02/1992	बुध	25/12/1993	केतु	30/09/1995	शुक्र	17/10/1997	सूर्य	16/03/1999
बुध	18/05/1992	केतु	01/02/1994	शुक्र	06/02/1996	सूर्य	21/11/1997	चंद्र	09/04/1999
केतु	30/06/1992	शुक्र	20/05/1994	सूर्य	15/03/1996	चंद्र	17/01/1998	मंगल	25/04/1999
शुक्र	30/10/1992	सूर्य	22/06/1994	चंद्र	19/05/1996	मंगल	26/02/1998	राहु	07/06/1999
सूर्य	05/12/1992	चंद्र	15/08/1994	मंगल	03/07/1996	राहु	10/06/1998	गुरु	15/07/1999
चंद्र	04/02/1993	मंगल	22/09/1994	राहु	26/10/1996	गुरु	10/09/1998	शनि	29/08/1999
मंगल	19/03/1993	राहु	28/12/1994	गुरु	06/02/1997	शनि	28/12/1998	बुध	08/10/1999

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
08/10/1999		20/12/1999		20/04/2000		14/07/2000		18/02/2001	
20/12/1999		20/04/2000		14/07/2000		18/02/2001		01/09/2001	
सूर्य	12/10/1999	चंद्र	30/12/1999	मंगल	25/04/2000	राहु	16/08/2000	गुरु	16/03/2001
चंद्र	18/10/1999	मंगल	07/01/2000	राहु	08/05/2000	गुरु	14/09/2000	शनि	16/04/2001
मंगल	22/10/1999	राहु	25/01/2000	गुरु	19/05/2000	शनि	19/10/2000	बुध	14/05/2001
राहु	02/11/1999	गुरु	10/02/2000	शनि	02/06/2000	बुध	19/11/2000	केतु	25/05/2001
गुरु	12/11/1999	शनि	29/02/2000	बुध	14/06/2000	केतु	02/12/2000	शुक्र	27/06/2001
शनि	23/11/1999	बुध	18/03/2000	केतु	19/06/2000	शुक्र	07/01/2001	सूर्य	06/07/2001
बुध	04/12/1999	केतु	25/03/2000	शुक्र	03/07/2000	सूर्य	18/01/2001	चंद्र	23/07/2001
केतु	08/12/1999	शुक्र	14/04/2000	सूर्य	07/07/2000	चंद्र	06/02/2001	मंगल	03/08/2001
शुक्र	20/12/1999	सूर्य	20/04/2000	चंद्र	14/07/2000	मंगल	18/02/2001	राहु	01/09/2001

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि	
01/09/2001	21/04/2002
शनि	08/10/2001
बुध	10/11/2001
केतु	23/11/2001
शुक्र	01/01/2002
सूर्य	12/01/2002
चंद्र	31/01/2002
मंगल	14/02/2002
राहु	21/03/2002
गुरु	21/04/2002

सूर्य - बुध	
21/04/2002	13/11/2002
बुध	20/05/2002
केतु	01/06/2002
शुक्र	05/07/2002
सूर्य	16/07/2002
चंद्र	02/08/2002
मंगल	14/08/2002
राहु	14/09/2002
गुरु	12/10/2002
शनि	13/11/2002

सूर्य - केतु	
13/11/2002	07/02/2003
केतु	18/11/2002
शुक्र	03/12/2002
सूर्य	07/12/2002
चंद्र	14/12/2002
मंगल	19/12/2002
राहु	01/01/2003
गुरु	12/01/2003
शनि	26/01/2003
बुध	07/02/2003

सूर्य - शुक्र	
07/02/2003	08/10/2003
शुक्र	19/03/2003
सूर्य	31/03/2003
चंद्र	21/04/2003
मंगल	05/05/2003
राहु	10/06/2003
गुरु	13/07/2003
शनि	21/08/2003
बुध	24/09/2003
केतु	08/10/2003

चंद्र - चंद्र	
08/10/2003	28/04/2004
चंद्र	25/10/2003
मंगल	06/11/2003
राहु	06/12/2003
गुरु	02/01/2004
शनि	04/02/2004
बुध	03/03/2004
केतु	15/03/2004
शुक्र	18/04/2004
सूर्य	28/04/2004

चंद्र - मंगल	
28/04/2004	17/09/2004
मंगल	06/05/2004
राहु	28/05/2004
गुरु	16/06/2004
शनि	08/07/2004
बुध	28/07/2004
केतु	06/08/2004
शुक्र	29/08/2004
सूर्य	05/09/2004
चंद्र	17/09/2004

चंद्र - राहु	
17/09/2004	17/09/2005
राहु	11/11/2004
गुरु	30/12/2004
शनि	25/02/2005
बुध	18/04/2005
केतु	10/05/2005
शुक्र	09/07/2005
सूर्य	28/07/2005
चंद्र	27/08/2005
मंगल	17/09/2005

चंद्र - गुरु	
17/09/2005	08/08/2006
गुरु	31/10/2005
शनि	21/12/2005
बुध	05/02/2006
केतु	24/02/2006
शुक्र	19/04/2006
सूर्य	05/05/2006
चंद्र	01/06/2006
मंगल	20/06/2006
राहु	08/08/2006

चंद्र - शनि	
08/08/2006	29/08/2007
शनि	08/10/2006
बुध	02/12/2006
केतु	24/12/2006
शुक्र	26/02/2007
सूर्य	18/03/2007
चंद्र	19/04/2007
मंगल	11/05/2007
राहु	08/07/2007
गुरु	29/08/2007

चंद्र - बुध	
29/08/2007	08/08/2008
बुध	16/10/2007
केतु	06/11/2007
शुक्र	02/01/2008
सूर्य	19/01/2008
चंद्र	17/02/2008
मंगल	08/03/2008
राहु	29/04/2008
गुरु	14/06/2008
शनि	08/08/2008

चंद्र - केतु	
08/08/2008	28/12/2008
केतु	16/08/2008
शुक्र	09/09/2008
सूर्य	16/09/2008
चंद्र	27/09/2008
मंगल	06/10/2008
राहु	27/10/2008
गुरु	15/11/2008
शनि	08/12/2008
बुध	28/12/2008

चंद्र - शुक्र	
28/12/2008	06/02/2010
शुक्र	05/03/2009
सूर्य	26/03/2009
चंद्र	28/04/2009
मंगल	22/05/2009
राहु	22/07/2009
गुरु	14/09/2009
शनि	17/11/2009
बुध	14/01/2010
केतु	06/02/2010

चंद्र - सूर्य	
06/02/2010	08/06/2010
सूर्य	13/02/2010
चंद्र	23/02/2010
मंगल	02/03/2010
राहु	20/03/2010
गुरु	05/04/2010
शनि	25/04/2010
बुध	12/05/2010
केतु	19/05/2010
शुक्र	08/06/2010

मंगल - मंगल	
08/06/2010	16/09/2010
मंगल	14/06/2010
राहु	29/06/2010
गुरु	12/07/2010
शनि	28/07/2010
बुध	11/08/2010
केतु	17/08/2010
शुक्र	02/09/2010
सूर्य	07/09/2010
चंद्र	16/09/2010

मंगल - राहु	
16/09/2010	29/05/2011
राहु	24/10/2010
गुरु	27/11/2010
शनि	07/01/2011
बुध	12/02/2011
केतु	27/02/2011
शुक्र	10/04/2011
सूर्य	23/04/2011
चंद्र	14/05/2011
मंगल	29/05/2011

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु	29/05/2011 - 12/01/2012
गुरु	29/06/2011
शनि	04/08/2011
बुध	05/09/2011
केतु	18/09/2011
शुक्र	26/10/2011
सूर्य	06/11/2011
चंद्र	25/11/2011
मंगल	08/12/2011
राहु	12/01/2012

मंगल - शनि	12/01/2012 - 07/10/2012
शनि	23/02/2012
बुध	02/04/2012
केतु	17/04/2012
शुक्र	01/06/2012
सूर्य	15/06/2012
चंद्र	07/07/2012
मंगल	23/07/2012
राहु	01/09/2012
गुरु	07/10/2012

मंगल - बुध	07/10/2012 - 06/06/2013
बुध	11/11/2012
केतु	25/11/2012
शुक्र	04/01/2013
सूर्य	16/01/2013
चंद्र	05/02/2013
मंगल	19/02/2013
राहु	28/03/2013
गुरु	29/04/2013
शनि	06/06/2013

मंगल - केतु	06/06/2013 - 13/09/2013
केतु	12/06/2013
शुक्र	28/06/2013
सूर्य	03/07/2013
चंद्र	12/07/2013
मंगल	17/07/2013
राहु	01/08/2013
गुरु	15/08/2013
शनि	30/08/2013
बुध	13/09/2013

मंगल - शुक्र	13/09/2013 - 24/06/2014
शुक्र	31/10/2013
सूर्य	14/11/2013
चंद्र	08/12/2013
मंगल	24/12/2013
राहु	05/02/2014
गुरु	15/03/2014
शनि	29/04/2014
बुध	08/06/2014
केतु	24/06/2014

मंगल - सूर्य	24/06/2014 - 18/09/2014
सूर्य	29/06/2014
चंद्र	06/07/2014
मंगल	11/07/2014
राहु	24/07/2014
गुरु	04/08/2014
शनि	17/08/2014
बुध	29/08/2014
केतु	03/09/2014
शुक्र	18/09/2014

मंगल - चंद्र	18/09/2014 - 07/02/2015
चंद्र	30/09/2014
मंगल	08/10/2014
राहु	29/10/2014
गुरु	17/11/2014
शनि	10/12/2014
बुध	30/12/2014
केतु	07/01/2015
शुक्र	31/01/2015
सूर्य	07/02/2015

राहु - राहु	07/02/2015 - 25/11/2016
राहु	16/05/2015
गुरु	12/08/2015
शनि	24/11/2015
बुध	25/02/2016
केतु	04/04/2016
शुक्र	22/07/2016
सूर्य	24/08/2016
चंद्र	18/10/2016
मंगल	25/11/2016

राहु - गुरु	25/11/2016 - 03/07/2018
गुरु	11/02/2017
शनि	15/05/2017
बुध	05/08/2017
केतु	08/09/2017
शुक्र	15/12/2017
सूर्य	13/01/2018
चंद्र	03/03/2018
मंगल	06/04/2018
राहु	03/07/2018

राहु - शनि	03/07/2018 - 27/05/2020
शनि	20/10/2018
बुध	27/01/2019
केतु	08/03/2019
शुक्र	02/07/2019
सूर्य	06/08/2019
चंद्र	02/10/2019
मंगल	12/11/2019
राहु	24/02/2020
गुरु	27/05/2020

राहु - बुध	27/05/2020 - 06/02/2022
बुध	22/08/2020
केतु	28/09/2020
शुक्र	09/01/2021
सूर्य	09/02/2021
चंद्र	02/04/2021
मंगल	08/05/2021
राहु	09/08/2021
गुरु	31/10/2021
शनि	06/02/2022

राहु - केतु	06/02/2022 - 20/10/2022
केतु	21/02/2022
शुक्र	05/04/2022
सूर्य	18/04/2022
चंद्र	09/05/2022
मंगल	24/05/2022
राहु	01/07/2022
गुरु	04/08/2022
शनि	14/09/2022
बुध	20/10/2022

राहु - शुक्र	20/10/2022 - 20/10/2024
शुक्र	19/02/2023
सूर्य	27/03/2023
चंद्र	27/05/2023
मंगल	09/07/2023
राहु	26/10/2023
गुरु	01/02/2024
शनि	27/05/2024
बुध	07/09/2024
केतु	20/10/2024

राहु - सूर्य	20/10/2024 - 27/05/2025
सूर्य	31/10/2024
चंद्र	18/11/2024
मंगल	01/12/2024
राहु	03/01/2025
गुरु	01/02/2025
शनि	07/03/2025
बुध	07/04/2025
केतु	20/04/2025
शुक्र	27/05/2025

राहु - चंद्र	27/05/2025 - 27/05/2026
चंद्र	26/06/2025
मंगल	18/07/2025
राहु	10/09/2025
गुरु	29/10/2025
शनि	26/12/2025
बुध	16/02/2026
केतु	09/03/2026
शुक्र	09/05/2026
सूर्य	27/05/2026

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
27/05/2026		07/02/2027		10/07/2028		19/03/2030		22/09/2031	
07/02/2027		10/07/2028		19/03/2030		22/09/2031		06/05/2032	
मंगल	11/06/2026	गुरु	17/04/2027	शनि	16/10/2028	बुध	05/06/2030	केतु	05/10/2031
राहु	19/07/2026	शनि	08/07/2027	बुध	11/01/2029	केतु	07/07/2030	शुक्र	12/11/2031
गुरु	22/08/2026	बुध	20/09/2027	केतु	16/02/2029	शुक्र	07/10/2030	सूर्य	23/11/2031
शनि	02/10/2026	केतु	20/10/2027	शुक्र	30/05/2029	सूर्य	04/11/2030	चंद्र	12/12/2031
बुध	07/11/2026	शुक्र	15/01/2028	सूर्य	30/06/2029	चंद्र	20/12/2030	मंगल	26/12/2031
केतु	22/11/2026	सूर्य	10/02/2028	चंद्र	20/08/2029	मंगल	21/01/2031	राहु	29/01/2032
शुक्र	04/01/2027	चंद्र	24/03/2028	मंगल	25/09/2029	राहु	14/04/2031	गुरु	28/02/2032
सूर्य	16/01/2027	मंगल	23/04/2028	राहु	27/12/2029	गुरु	27/06/2031	शनि	04/04/2032
चंद्र	07/02/2027	राहु	10/07/2028	गुरु	19/03/2030	शनि	22/09/2031	बुध	06/05/2032

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु	
06/05/2032		15/02/2034		28/08/2034		19/07/2035		02/03/2036	
15/02/2034		28/08/2034		19/07/2035		02/03/2036		08/10/2037	
शुक्र	22/08/2032	सूर्य	24/02/2034	चंद्र	24/09/2034	मंगल	01/08/2035	राहु	29/05/2036
सूर्य	24/09/2032	चंद्र	13/03/2034	मंगल	13/10/2034	राहु	04/09/2035	गुरु	15/08/2036
चंद्र	17/11/2032	मंगल	24/03/2034	राहु	01/12/2034	गुरु	05/10/2035	शनि	15/11/2036
मंगल	25/12/2032	राहु	22/04/2034	गुरु	13/01/2035	शनि	10/11/2035	बुध	06/02/2037
राहु	01/04/2033	गुरु	18/05/2034	शनि	06/03/2035	बुध	12/12/2035	केतु	12/03/2037
गुरु	27/06/2033	शनि	18/06/2034	बुध	21/04/2035	केतु	25/12/2035	शुक्र	18/06/2037
शनि	08/10/2033	बुध	16/07/2034	केतु	10/05/2035	शुक्र	01/02/2036	सूर्य	17/07/2037
बुध	08/01/2034	केतु	27/07/2034	शुक्र	03/07/2035	सूर्य	12/02/2036	चंद्र	04/09/2037
केतु	15/02/2034	शुक्र	28/08/2034	सूर्य	19/07/2035	चंद्र	02/03/2036	मंगल	08/10/2037

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
08/10/2037		10/10/2039		27/07/2041		23/04/2042		02/06/2044	
10/10/2039		27/07/2041		23/04/2042		02/06/2044		19/01/2045	
शनि	01/02/2038	बुध	11/01/2040	केतु	11/08/2041	शुक्र	29/08/2042	सूर्य	13/06/2044
बुध	15/05/2038	केतु	18/02/2040	शुक्र	25/09/2041	सूर्य	07/10/2042	चंद्र	02/07/2044
केतु	27/06/2038	शुक्र	07/06/2040	सूर्य	09/10/2041	चंद्र	10/12/2042	मंगल	16/07/2044
शुक्र	27/10/2038	सूर्य	09/07/2040	चंद्र	31/10/2041	मंगल	24/01/2043	राहु	20/08/2044
सूर्य	03/12/2038	चंद्र	02/09/2040	मंगल	16/11/2041	राहु	20/05/2043	गुरु	20/09/2044
चंद्र	02/02/2039	मंगल	10/10/2040	राहु	27/12/2041	गुरु	30/08/2043	शनि	26/10/2044
मंगल	17/03/2039	राहु	16/01/2041	गुरु	01/02/2042	शनि	30/12/2043	बुध	28/11/2044
राहु	05/07/2039	गुरु	14/04/2041	शनि	15/03/2042	बुध	18/04/2044	केतु	11/12/2044
गुरु	10/10/2039	शनि	27/07/2041	बुध	23/04/2042	केतु	02/06/2044	शुक्र	19/01/2045

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 2 वर्ष 6 मास 22 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
10/01/1974		03/08/1976		03/08/1984		03/08/2001		03/08/2011	
03/08/1976		03/08/1984		03/08/2001		03/08/2011		03/08/2030	
	00/00/0000	मंगल	07/03/1977	बुध	07/04/1987	शनि	07/07/2002	गुरु	06/12/2014
	00/00/0000	बुध	10/06/1978	शनि	02/11/1988	गुरु	10/04/2004	राहु	15/01/2017
	00/00/0000	शनि	08/03/1979	गुरु	30/10/1991	राहु	20/05/2005	शुक्र	26/09/2020
	00/00/0000	गुरु	03/08/1980	राहु	19/09/1993	शुक्र	01/05/2007	सूर्य	16/10/2021
	00/00/0000	राहु	23/06/1981	शुक्र	09/01/1997	सूर्य	20/11/2007	चंद्र	06/06/2024
	10/01/1974	शुक्र	12/01/1983	सूर्य	20/12/1997	चंद्र	10/04/2009	मंगल	02/11/2025
शुक्र	03/10/1975	सूर्य	24/06/1983	चंद्र	30/04/2000	मंगल	05/01/2010	बुध	30/10/2028
सूर्य	03/08/1976	चंद्र	03/08/1984	मंगल	03/08/2001	बुध	03/08/2011	शनि	03/08/2030

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
03/08/2030		03/08/2042		03/08/2063		03/08/2069	
03/08/2042		03/08/2063		03/08/2069		00/00/0000	
राहु	03/12/2031	शुक्र	03/09/2046	सूर्य	03/12/2063	चंद्र	03/09/2071
शुक्र	03/04/2034	सूर्य	03/11/2047	चंद्र	03/10/2064	मंगल	13/10/2072
सूर्य	03/12/2034	चंद्र	03/10/2050	मंगल	14/03/2065	बुध	22/02/2075
चंद्र	03/08/2036	मंगल	23/04/2052	बुध	22/02/2066	शनि	13/07/2076
मंगल	23/06/2037	बुध	14/08/2055	शनि	13/09/2066	गुरु	04/03/2079
बुध	14/05/2039	शनि	24/07/2057	गुरु	03/10/2067	राहु	02/11/2080
शनि	23/06/2040	गुरु	03/04/2061	राहु	03/06/2068	शुक्र	10/01/2082
गुरु	03/08/2042	राहु	03/08/2063	शुक्र	03/08/2069		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि	
10/01/1974		03/10/1975		03/08/1976		07/03/1977		10/06/1978	
03/10/1975		03/08/1976		07/03/1977		10/06/1978		08/03/1979	
	00/00/0000	सूर्य	20/10/1975	मंगल	19/08/1976	बुध	18/05/1977	शनि	05/07/1978
	00/00/0000	चंद्र	01/12/1975	बुध	22/09/1976	शनि	30/06/1977	गुरु	22/08/1978
	10/01/1974	मंगल	24/12/1975	शनि	12/10/1976	गुरु	19/09/1977	राहु	21/09/1978
मंगल	10/03/1974	बुध	10/02/1976	गुरु	19/11/1976	राहु	09/11/1977	शुक्र	12/11/1978
बुध	25/08/1974	शनि	09/03/1976	राहु	13/12/1976	शुक्र	07/02/1978	सूर्य	27/11/1978
शनि	01/12/1974	गुरु	02/05/1976	शुक्र	24/01/1977	सूर्य	04/03/1978	चंद्र	04/01/1979
गुरु	07/06/1975	राहु	04/06/1976	सूर्य	05/02/1977	चंद्र	07/05/1978	मंगल	24/01/1979
राहु	03/10/1975	शुक्र	03/08/1976	चंद्र	07/03/1977	मंगल	10/06/1978	बुध	08/03/1979

मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
08/03/1979		03/08/1980		23/06/1981		12/01/1983		24/06/1983	
03/08/1980		23/06/1981		12/01/1983		24/06/1983		03/08/1984	
गुरु	06/06/1979	राहु	08/09/1980	शुक्र	12/10/1981	सूर्य	21/01/1983	चंद्र	19/08/1983
राहु	02/08/1979	शुक्र	10/11/1980	सूर्य	12/11/1981	चंद्र	13/02/1983	मंगल	18/09/1983
शुक्र	10/11/1979	सूर्य	28/11/1980	चंद्र	30/01/1982	मंगल	25/02/1983	बुध	21/11/1983
सूर्य	09/12/1979	चंद्र	12/01/1981	मंगल	13/03/1982	बुध	23/03/1983	शनि	29/12/1983
चंद्र	18/02/1980	मंगल	05/02/1981	बुध	11/06/1982	शनि	07/04/1983	गुरु	09/03/1984
मंगल	27/03/1980	बुध	28/03/1981	शनि	02/08/1982	गुरु	05/05/1983	राहु	23/04/1984
बुध	16/06/1980	शनि	27/04/1981	गुरु	10/11/1982	राहु	23/05/1983	शुक्र	11/07/1984
शनि	03/08/1980	गुरु	23/06/1981	राहु	12/01/1983	शुक्र	24/06/1983	सूर्य	03/08/1984

बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र	
03/08/1984		07/04/1987		02/11/1988		30/10/1991		19/09/1993	
07/04/1987		02/11/1988		30/10/1991		19/09/1993		09/01/1997	
बुध	03/01/1985	शनि	30/05/1987	गुरु	13/05/1989	राहु	15/01/1992	शुक्र	12/05/1994
शनि	04/04/1985	गुरु	08/09/1987	राहु	12/09/1989	शुक्र	28/05/1992	सूर्य	18/07/1994
गुरु	23/09/1985	राहु	11/11/1987	शुक्र	12/04/1990	सूर्य	05/07/1992	चंद्र	02/01/1995
राहु	10/01/1986	शुक्र	02/03/1988	सूर्य	12/06/1990	चंद्र	09/10/1992	मंगल	01/04/1995
शुक्र	19/07/1986	सूर्य	03/04/1988	चंद्र	10/11/1990	मंगल	29/11/1992	बुध	08/10/1995
सूर्य	11/09/1986	चंद्र	22/06/1988	मंगल	30/01/1991	बुध	18/03/1993	शनि	28/01/1996
चंद्र	25/01/1987	मंगल	03/08/1988	बुध	21/07/1991	शनि	21/05/1993	गुरु	27/08/1996
मंगल	07/04/1987	बुध	02/11/1988	शनि	30/10/1991	गुरु	19/09/1993	राहु	09/01/1997

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु	
09/01/1997	20/12/1997	20/12/1997	30/04/2000	30/04/2000	03/08/2001	03/08/2001	07/07/2002	07/07/2002	10/04/2004
सूर्य	28/01/1997	चंद्र	18/04/1998	मंगल	03/06/2000	शनि	03/09/2001	गुरु	28/10/2002
चंद्र	17/03/1997	मंगल	21/06/1998	बुध	14/08/2000	गुरु	02/11/2001	राहु	08/01/2003
मंगल	11/04/1997	बुध	04/11/1998	शनि	26/09/2000	राहु	09/12/2001	शुक्र	12/05/2003
बुध	05/06/1997	शनि	23/01/1999	गुरु	16/12/2000	शुक्र	13/02/2002	सूर्य	17/06/2003
शनि	06/07/1997	गुरु	24/06/1999	राहु	05/02/2001	सूर्य	04/03/2002	चंद्र	14/09/2003
गुरु	05/09/1997	राहु	27/09/1999	शुक्र	05/05/2001	चंद्र	20/04/2002	मंगल	01/11/2003
राहु	13/10/1997	शुक्र	13/03/2000	सूर्य	31/05/2001	मंगल	15/05/2002	बुध	10/02/2004
शुक्र	20/12/1997	सूर्य	30/04/2000	चंद्र	03/08/2001	बुध	07/07/2002	शनि	10/04/2004

शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
10/04/2004	20/05/2005	20/05/2005	01/05/2007	01/05/2007	20/11/2007	20/11/2007	10/04/2009	10/04/2009	05/01/2010
राहु	25/05/2004	शुक्र	06/10/2005	सूर्य	12/05/2007	चंद्र	29/01/2008	मंगल	30/04/2009
शुक्र	12/08/2004	सूर्य	14/11/2005	चंद्र	09/06/2007	मंगल	07/03/2008	बुध	12/06/2009
सूर्य	03/09/2004	चंद्र	21/02/2006	मंगल	24/06/2007	बुध	25/05/2008	शनि	07/07/2009
चंद्र	30/10/2004	मंगल	14/04/2006	बुध	26/07/2007	शनि	11/07/2008	गुरु	23/08/2009
मंगल	29/11/2004	बुध	04/08/2006	शनि	14/08/2007	गुरु	09/10/2008	राहु	22/09/2009
बुध	01/02/2005	शनि	09/10/2006	गुरु	19/09/2007	राहु	04/12/2008	शुक्र	14/11/2009
शनि	10/03/2005	गुरु	11/02/2007	राहु	11/10/2007	शुक्र	13/03/2009	सूर्य	29/11/2009
गुरु	20/05/2005	राहु	01/05/2007	शुक्र	20/11/2007	सूर्य	10/04/2009	चंद्र	05/01/2010

शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
05/01/2010	03/08/2011	03/08/2011	06/12/2014	06/12/2014	15/01/2017	15/01/2017	26/09/2020	26/09/2020	16/10/2021
बुध	06/04/2010	गुरु	05/03/2012	राहु	02/03/2015	शुक्र	05/10/2017	सूर्य	17/10/2020
शनि	29/05/2010	राहु	19/07/2012	शुक्र	30/07/2015	सूर्य	19/12/2017	चंद्र	10/12/2020
गुरु	07/09/2010	शुक्र	13/03/2013	सूर्य	11/09/2015	चंद्र	24/06/2018	मंगल	07/01/2021
राहु	10/11/2010	सूर्य	20/05/2013	चंद्र	27/12/2015	मंगल	02/10/2018	बुध	09/03/2021
शुक्र	02/03/2011	चंद्र	06/11/2013	मंगल	22/02/2016	बुध	02/05/2019	शनि	14/04/2021
सूर्य	03/04/2011	मंगल	04/02/2014	बुध	22/06/2016	शनि	04/09/2019	गुरु	20/06/2021
चंद्र	22/06/2011	बुध	15/08/2014	शनि	02/09/2016	गुरु	29/04/2020	राहु	02/08/2021
मंगल	03/08/2011	शनि	06/12/2014	गुरु	15/01/2017	राहु	26/09/2020	शुक्र	16/10/2021

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु	
16/10/2021		06/06/2024		02/11/2025		30/10/2028		03/08/2030	
06/06/2024		02/11/2025		30/10/2028		03/08/2030		03/12/2031	
चंद्र	27/02/2022	मंगल	14/07/2024	बुध	23/04/2026	शनि	28/12/2028	राहु	26/09/2030
मंगल	10/05/2022	बुध	03/10/2024	शनि	02/08/2026	गुरु	20/04/2029	शुक्र	30/12/2030
बुध	08/10/2022	शनि	20/11/2024	गुरु	10/02/2027	राहु	01/07/2029	सूर्य	26/01/2031
शनि	06/01/2023	गुरु	18/02/2025	राहु	12/06/2027	शुक्र	02/11/2029	चंद्र	04/04/2031
गुरु	24/06/2023	राहु	16/04/2025	शुक्र	10/01/2028	सूर्य	08/12/2029	मंगल	10/05/2031
राहु	09/10/2023	शुक्र	25/07/2025	सूर्य	11/03/2028	चंद्र	07/03/2030	बुध	25/07/2031
शुक्र	14/04/2024	सूर्य	23/08/2025	चंद्र	10/08/2028	मंगल	24/04/2030	शनि	08/09/2031
सूर्य	06/06/2024	चंद्र	02/11/2025	मंगल	30/10/2028	बुध	03/08/2030	गुरु	03/12/2031

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
03/12/2031		03/04/2034		03/12/2034		03/08/2036		23/06/2037	
03/04/2034		03/12/2034		03/08/2036		23/06/2037		14/05/2039	
शुक्र	17/05/2032	सूर्य	17/04/2034	चंद्र	25/02/2035	मंगल	27/08/2036	बुध	10/10/2037
सूर्य	03/07/2032	चंद्र	21/05/2034	मंगल	12/04/2035	बुध	17/10/2036	शनि	13/12/2037
चंद्र	30/10/2032	मंगल	08/06/2034	बुध	16/07/2035	शनि	16/11/2036	गुरु	13/04/2038
मंगल	01/01/2033	बुध	16/07/2034	शनि	11/09/2035	गुरु	12/01/2037	राहु	29/06/2038
बुध	15/05/2033	शनि	08/08/2034	गुरु	27/12/2035	राहु	17/02/2037	शुक्र	10/11/2038
शनि	02/08/2033	गुरु	19/09/2034	राहु	03/03/2036	शुक्र	21/04/2037	सूर्य	18/12/2038
गुरु	30/12/2033	राहु	17/10/2034	शुक्र	30/06/2036	सूर्य	09/05/2037	चंद्र	24/03/2039
राहु	03/04/2034	शुक्र	03/12/2034	सूर्य	03/08/2036	चंद्र	23/06/2037	मंगल	14/05/2039

राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
14/05/2039		23/06/2040		03/08/2042		03/09/2046		03/11/2047	
23/06/2040		03/08/2042		03/09/2046		03/11/2047		03/10/2050	
शनि	21/06/2039	गुरु	06/11/2040	शुक्र	20/05/2043	सूर्य	26/09/2046	चंद्र	30/03/2048
गुरु	31/08/2039	राहु	30/01/2041	सूर्य	11/08/2043	चंद्र	24/11/2046	मंगल	17/06/2048
राहु	15/10/2039	शुक्र	29/06/2041	चंद्र	05/03/2044	मंगल	26/12/2046	बुध	01/12/2048
शुक्र	02/01/2040	सूर्य	11/08/2041	मंगल	24/06/2044	बुध	03/03/2047	शनि	10/03/2049
सूर्य	25/01/2040	चंद्र	26/11/2041	बुध	13/02/2045	शनि	12/04/2047	गुरु	13/09/2049
चंद्र	21/03/2040	मंगल	22/01/2042	शनि	01/07/2045	गुरु	25/06/2047	राहु	10/01/2050
मंगल	20/04/2040	बुध	24/05/2042	गुरु	21/03/2046	राहु	12/08/2047	शुक्र	05/08/2050
बुध	23/06/2040	शनि	03/08/2042	राहु	03/09/2046	शुक्र	03/11/2047	सूर्य	03/10/2050

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल	
03/10/2050	23/04/2052
मंगल	14/11/2050
बुध	12/02/2051
शनि	05/04/2051
गुरु	14/07/2051
राहु	15/09/2051
शुक्र	04/01/2052
सूर्य	04/02/2052
चंद्र	23/04/2052

शुक्र - बुध	
23/04/2052	14/08/2055
बुध	30/10/2052
शनि	19/02/2053
गुरु	19/09/2053
राहु	01/02/2054
शुक्र	23/09/2054
सूर्य	29/11/2054
चंद्र	16/05/2055
मंगल	14/08/2055

शुक्र - शनि	
14/08/2055	24/07/2057
शनि	18/10/2055
गुरु	20/02/2056
राहु	09/05/2056
शुक्र	24/09/2056
सूर्य	03/11/2056
चंद्र	09/02/2057
मंगल	03/04/2057
बुध	24/07/2057

शुक्र - गुरु	
24/07/2057	03/04/2061
गुरु	18/03/2058
राहु	15/08/2058
शुक्र	04/05/2059
सूर्य	18/07/2059
चंद्र	22/01/2060
मंगल	01/05/2060
बुध	29/11/2060
शनि	03/04/2061

शुक्र - राहु	
03/04/2061	03/08/2063
राहु	07/07/2061
शुक्र	20/12/2061
सूर्य	05/02/2062
चंद्र	03/06/2062
मंगल	05/08/2062
बुध	18/12/2062
शनि	06/03/2063
गुरु	03/08/2063

सूर्य - सूर्य	
03/08/2063	03/12/2063
सूर्य	10/08/2063
चंद्र	27/08/2063
मंगल	05/09/2063
बुध	24/09/2063
शनि	06/10/2063
गुरु	27/10/2063
राहु	09/11/2063
शुक्र	03/12/2063

सूर्य - चंद्र	
03/12/2063	03/10/2064
चंद्र	14/01/2064
मंगल	06/02/2064
बुध	25/03/2064
शनि	22/04/2064
गुरु	15/06/2064
राहु	18/07/2064
शुक्र	16/09/2064
सूर्य	03/10/2064

सूर्य - मंगल	
03/10/2064	14/03/2065
मंगल	15/10/2064
बुध	09/11/2064
शनि	24/11/2064
गुरु	23/12/2064
राहु	10/01/2065
शुक्र	10/02/2065
सूर्य	19/02/2065
चंद्र	14/03/2065

सूर्य - बुध	
14/03/2065	22/02/2066
बुध	07/05/2065
शनि	08/06/2065
गुरु	08/08/2065
राहु	15/09/2065
शुक्र	21/11/2065
सूर्य	10/12/2065
चंद्र	27/01/2066
मंगल	22/02/2066

सूर्य - शनि	
22/02/2066	13/09/2066
शनि	13/03/2066
गुरु	17/04/2066
राहु	10/05/2066
शुक्र	18/06/2066
सूर्य	30/06/2066
चंद्र	28/07/2066
मंगल	12/08/2066
बुध	13/09/2066

सूर्य - गुरु	
13/09/2066	03/10/2067
गुरु	20/11/2066
राहु	01/01/2067
शुक्र	17/03/2067
सूर्य	08/04/2067
चंद्र	31/05/2067
मंगल	29/06/2067
बुध	29/08/2067
शनि	03/10/2067

सूर्य - राहु	
03/10/2067	03/06/2068
राहु	30/10/2067
शुक्र	17/12/2067
सूर्य	30/12/2067
चंद्र	02/02/2068
मंगल	20/02/2068
बुध	29/03/2068
शनि	21/04/2068
गुरु	03/06/2068

सूर्य - शुक्र	
03/06/2068	03/08/2069
शुक्र	25/08/2068
सूर्य	17/09/2068
चंद्र	15/11/2068
मंगल	17/12/2068
बुध	22/02/2069
शनि	03/04/2069
गुरु	17/06/2069
राहु	03/08/2069

चंद्र - चंद्र	
03/08/2069	03/09/2071
चंद्र	17/11/2069
मंगल	12/01/2070
बुध	12/05/2070
शनि	21/07/2070
गुरु	02/12/2070
राहु	25/02/2071
शुक्र	23/07/2071
सूर्य	03/09/2071

चंद्र - मंगल	
03/09/2071	13/10/2072
मंगल	03/10/2071
बुध	06/12/2071
शनि	12/01/2072
गुरु	24/03/2072
राहु	08/05/2072
शुक्र	26/07/2072
सूर्य	17/08/2072
चंद्र	13/10/2072

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भ्रामरी 2 वर्ष 8 मास 24 दिन

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
10/01/1974		**04/10/1976**		**04/10/1981**		**05/10/1987**		**05/10/1994**	
04/10/1976		**04/10/1981**		**05/10/1987**		**05/10/1994**		**05/10/2002**	
	00/00/0000	भद्रि	15/06/1977	उल्क	05/10/1982	सिद्ध	13/02/1989	संक	15/07/1996
	10/01/1974	उल्क	15/04/1978	सिद्ध	05/12/1983	संक	04/09/1990	मंग	04/10/1996
उल्क	05/06/1974	सिद्ध	05/04/1979	संक	05/04/1985	मंग	14/11/1990	पिंग	15/03/1997
सिद्ध	16/03/1975	संक	15/05/1980	मंग	05/06/1985	पिंग	05/04/1991	धांय	14/11/1997
संक	04/02/1976	मंग	05/07/1980	पिंग	04/10/1985	धांय	04/11/1991	भ्राम	05/10/1998
मंग	15/03/1976	पिंग	14/10/1980	धांय	05/04/1986	भ्राम	14/08/1992	भद्रि	14/11/1999
पिंग	04/06/1976	धांय	15/03/1981	भ्राम	04/12/1986	भद्रि	04/08/1993	उल्क	15/03/2001
धांय	04/10/1976	भ्राम	04/10/1981	भद्रि	05/10/1987	उल्क	05/10/1994	सिद्ध	05/10/2002

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
05/10/2002		**05/10/2003**		**04/10/2005**		**04/10/2008**		**04/10/2012**	
05/10/2003		**04/10/2005**		**04/10/2008**		**04/10/2012**		**04/10/2017**	
मंग	15/10/2002	पिंग	14/11/2003	धांय	04/01/2006	भ्राम	15/03/2009	भद्रि	15/06/2013
पिंग	04/11/2002	धांय	14/01/2004	भ्राम	05/05/2006	भद्रि	04/10/2009	उल्क	15/04/2014
धांय	04/12/2002	भ्राम	04/04/2004	भद्रि	05/10/2006	उल्क	05/06/2010	सिद्ध	05/04/2015
भ्राम	14/01/2003	भद्रि	15/07/2004	उल्क	05/04/2007	सिद्ध	16/03/2011	संक	15/05/2016
भद्रि	06/03/2003	उल्क	14/11/2004	सिद्ध	04/11/2007	संक	04/02/2012	मंग	05/07/2016
उल्क	06/05/2003	सिद्ध	05/04/2005	संक	05/07/2008	मंग	15/03/2012	पिंग	14/10/2016
सिद्ध	16/07/2003	संक	14/09/2005	मंग	04/08/2008	पिंग	04/06/2012	धांय	15/03/2017
संक	05/10/2003	मंग	04/10/2005	पिंग	04/10/2008	धांय	04/10/2012	भ्राम	04/10/2017

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
04/10/2017		05/10/2023		05/10/2030		05/10/2038		05/10/2039	
05/10/2023		05/10/2030		05/10/2038		05/10/2039		04/10/2041	
उल्क	05/10/2018	सिद्ध	13/02/2025	संक	15/07/2032	मंग	15/10/2038	पिंग	14/11/2039
सिद्ध	05/12/2019	संक	04/09/2026	मंग	04/10/2032	पिंग	04/11/2038	धांय	14/01/2040
संक	05/04/2021	मंग	14/11/2026	पिंग	15/03/2033	धांय	04/12/2038	भ्राम	04/04/2040
मंग	05/06/2021	पिंग	05/04/2027	धांय	14/11/2033	भ्राम	14/01/2039	भद्रि	15/07/2040
पिंग	04/10/2021	धांय	04/11/2027	भ्राम	05/10/2034	भद्रि	06/03/2039	उल्क	14/11/2040
धांय	05/04/2022	भ्राम	14/08/2028	भद्रि	14/11/2035	उल्क	06/05/2039	सिद्ध	05/04/2041
भ्राम	04/12/2022	भद्रि	04/08/2029	उल्क	15/03/2037	सिद्ध	16/07/2039	संक	14/09/2041
भद्रि	05/10/2023	उल्क	05/10/2030	सिद्ध	05/10/2038	संक	05/10/2039	मंग	04/10/2041

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
04/10/2041		04/10/2044		04/10/2048		04/10/2053		05/10/2059	
04/10/2044		04/10/2048		04/10/2053		05/10/2059		05/10/2066	
धांय	04/01/2042	भ्राम	15/03/2045	भद्रि	15/06/2049	उल्क	05/10/2054	सिद्ध	13/02/2061
भ्राम	05/05/2042	भद्रि	04/10/2045	उल्क	15/04/2050	सिद्ध	05/12/2055	संक	04/09/2062
भद्रि	05/10/2042	उल्क	05/06/2046	सिद्ध	05/04/2051	संक	05/04/2057	मंग	14/11/2062
उल्क	05/04/2043	सिद्ध	16/03/2047	संक	15/05/2052	मंग	05/06/2057	पिंग	05/04/2063
सिद्ध	04/11/2043	संक	04/02/2048	मंग	05/07/2052	पिंग	04/10/2057	धांय	04/11/2063
संक	05/07/2044	मंग	15/03/2048	पिंग	14/10/2052	धांय	05/04/2058	भ्राम	14/08/2064
मंग	04/08/2044	पिंग	04/06/2048	धांय	15/03/2053	भ्राम	04/12/2058	भद्रि	04/08/2065
पिंग	04/10/2044	धांय	04/10/2048	भ्राम	04/10/2053	भद्रि	05/10/2059	उल्क	05/10/2066

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
05/10/2066		05/10/2074		05/10/2075		04/10/2077		04/10/2080	
05/10/2074		05/10/2075		04/10/2077		04/10/2080		00/00/0000	
संक	15/07/2068	मंग	15/10/2074	पिंग	14/11/2075	धांय	04/01/2078	भ्राम	15/03/2081
मंग	04/10/2068	पिंग	04/11/2074	धांय	14/01/2076	भ्राम	05/05/2078	भद्रि	04/10/2081
पिंग	15/03/2069	धांय	04/12/2074	भ्राम	04/04/2076	भद्रि	05/10/2078	उल्क	10/01/2082
धांय	14/11/2069	भ्राम	14/01/2075	भद्रि	15/07/2076	उल्क	05/04/2079		00/00/0000
भ्राम	05/10/2070	भद्रि	06/03/2075	उल्क	14/11/2076	सिद्ध	04/11/2079		00/00/0000
भद्रि	14/11/2071	उल्क	06/05/2075	सिद्ध	05/04/2077	संक	05/07/2080		00/00/0000
उल्क	15/03/2073	सिद्ध	16/07/2075	संक	14/09/2077	मंग	04/08/2080		00/00/0000
सिद्ध	05/10/2074	संक	05/10/2075	मंग	04/10/2077	पिंग	04/10/2080		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - सिद्ध	
05/10/2018	05/12/2019
सिद्ध	26/12/2018
संक	31/03/2019
मंग	12/04/2019
पिंग	06/05/2019
धांय	10/06/2019
भ्राम	27/07/2019
भद्रि	25/09/2019
उल्क	05/12/2019

उल्क - संक	
05/12/2019	05/04/2021
संक	22/03/2020
मंग	04/04/2020
पिंग	01/05/2020
धांय	11/06/2020
भ्राम	04/08/2020
भद्रि	11/10/2020
उल्क	31/12/2020
सिद्ध	05/04/2021

उल्क - मंग	
05/04/2021	05/06/2021
मंग	06/04/2021
पिंग	10/04/2021
धांय	15/04/2021
भ्राम	22/04/2021
भद्रि	30/04/2021
उल्क	10/05/2021
सिद्ध	22/05/2021
संक	05/06/2021

उल्क - पिंग	
05/06/2021	04/10/2021
पिंग	11/06/2021
धांय	21/06/2021
भ्राम	05/07/2021
भद्रि	22/07/2021
उल्क	11/08/2021
सिद्ध	04/09/2021
संक	01/10/2021
मंग	04/10/2021

उल्क - धांय	
04/10/2021	05/04/2022
धांय	19/10/2021
भ्राम	09/11/2021
भद्रि	04/12/2021
उल्क	04/01/2022
सिद्ध	08/02/2022
संक	21/03/2022
मंग	26/03/2022
पिंग	05/04/2022

उल्क - भ्राम	
05/04/2022	04/12/2022
भ्राम	02/05/2022
भद्रि	05/06/2022
उल्क	15/07/2022
सिद्ध	01/09/2022
संक	25/10/2022
मंग	01/11/2022
पिंग	14/11/2022
धांय	04/12/2022

उल्क - भद्रि	
04/12/2022	05/10/2023
भद्रि	16/01/2023
उल्क	07/03/2023
सिद्ध	06/05/2023
संक	12/07/2023
मंग	21/07/2023
पिंग	07/08/2023
धांय	01/09/2023
भ्राम	05/10/2023

सिद्ध - सिद्ध	
05/10/2023	13/02/2025
सिद्ध	09/01/2024
संक	29/04/2024
मंग	13/05/2024
पिंग	09/06/2024
धांय	21/07/2024
भ्राम	14/09/2024
भद्रि	22/11/2024
उल्क	13/02/2025

सिद्ध - संक	
13/02/2025	04/09/2026
संक	19/06/2025
मंग	05/07/2025
पिंग	06/08/2025
धांय	22/09/2025
भ्राम	24/11/2025
भद्रि	11/02/2026
उल्क	17/05/2026
सिद्ध	04/09/2026

सिद्ध - मंग	
04/09/2026	14/11/2026
मंग	06/09/2026
पिंग	10/09/2026
धांय	16/09/2026
भ्राम	24/09/2026
भद्रि	04/10/2026
उल्क	16/10/2026
सिद्ध	29/10/2026
संक	14/11/2026

सिद्ध - पिंग	
14/11/2026	05/04/2027
पिंग	22/11/2026
धांय	04/12/2026
भ्राम	20/12/2026
भद्रि	08/01/2027
उल्क	01/02/2027
सिद्ध	01/03/2027
संक	01/04/2027
मंग	05/04/2027

सिद्ध - धांय	
05/04/2027	04/11/2027
धांय	23/04/2027
भ्राम	17/05/2027
भद्रि	15/06/2027
उल्क	21/07/2027
सिद्ध	31/08/2027
संक	17/10/2027
मंग	23/10/2027
पिंग	04/11/2027

सिद्ध - भ्राम	
04/11/2027	14/08/2028
भ्राम	06/12/2027
भद्रि	14/01/2028
उल्क	02/03/2028
सिद्ध	26/04/2028
संक	28/06/2028
मंग	06/07/2028
पिंग	22/07/2028
धांय	14/08/2028

सिद्ध - भद्रि	
14/08/2028	04/08/2029
भद्रि	03/10/2028
उल्क	01/12/2028
सिद्ध	08/02/2029
संक	28/04/2029
मंग	08/05/2029
पिंग	27/05/2029
धांय	26/06/2029
भ्राम	04/08/2029

सिद्ध - उल्क	
04/08/2029	05/10/2030
उल्क	14/10/2029
सिद्ध	05/01/2030
संक	10/04/2030
मंग	22/04/2030
पिंग	15/05/2030
धांय	20/06/2030
भ्राम	06/08/2030
भद्रि	05/10/2030

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - संक	
05/10/2030	
15/07/2032	
संक	26/02/2031
मंग	16/03/2031
पिंग	21/04/2031
धांय	14/06/2031
भ्राम	25/08/2031
भद्रि	23/11/2031
उल्क	11/03/2032
सिद्ध	15/07/2032

संक - मंग	
15/07/2032	
04/10/2032	
मंग	17/07/2032
पिंग	22/07/2032
धांय	28/07/2032
भ्राम	06/08/2032
भद्रि	18/08/2032
उल्क	31/08/2032
सिद्ध	16/09/2032
संक	04/10/2032

संक - पिंग	
04/10/2032	
15/03/2033	
पिंग	13/10/2032
धांय	27/10/2032
भ्राम	14/11/2032
भद्रि	06/12/2032
उल्क	02/01/2033
सिद्ध	03/02/2033
संक	11/03/2033
मंग	15/03/2033

संक - धांय	
15/03/2033	
14/11/2033	
धांय	05/04/2033
भ्राम	02/05/2033
भद्रि	05/06/2033
उल्क	15/07/2033
सिद्ध	31/08/2033
संक	25/10/2033
मंग	31/10/2033
पिंग	14/11/2033

संक - भ्राम	
14/11/2033	
05/10/2034	
भ्राम	20/12/2033
भद्रि	03/02/2034
उल्क	29/03/2034
सिद्ध	31/05/2034
संक	11/08/2034
मंग	20/08/2034
पिंग	07/09/2034
धांय	05/10/2034

संक - भद्रि	
05/10/2034	
14/11/2035	
भद्रि	30/11/2034
उल्क	06/02/2035
सिद्ध	25/04/2035
संक	25/07/2035
मंग	05/08/2035
पिंग	27/08/2035
धांय	30/09/2035
भ्राम	14/11/2035

संक - उल्क	
14/11/2035	
15/03/2037	
उल्क	04/02/2036
सिद्ध	08/05/2036
संक	24/08/2036
मंग	07/09/2036
पिंग	04/10/2036
धांय	14/11/2036
भ्राम	07/01/2037
भद्रि	15/03/2037

संक - सिद्ध	
15/03/2037	
05/10/2038	
सिद्ध	04/07/2037
संक	07/11/2037
मंग	23/11/2037
पिंग	24/12/2037
धांय	10/02/2038
भ्राम	14/04/2038
भद्रि	02/07/2038
उल्क	05/10/2038

मंग - मंग	
05/10/2038	
15/10/2038	
मंग	05/10/2038
पिंग	05/10/2038
धांय	06/10/2038
भ्राम	07/10/2038
भद्रि	09/10/2038
उल्क	10/10/2038
सिद्ध	12/10/2038
संक	15/10/2038

मंग - पिंग	
15/10/2038	
04/11/2038	
पिंग	16/10/2038
धांय	17/10/2038
भ्राम	20/10/2038
भद्रि	23/10/2038
उल्क	26/10/2038
सिद्ध	30/10/2038
संक	03/11/2038
मंग	04/11/2038

मंग - धांय	
04/11/2038	
04/12/2038	
धांय	06/11/2038
भ्राम	10/11/2038
भद्रि	14/11/2038
उल्क	19/11/2038
सिद्ध	25/11/2038
संक	02/12/2038
मंग	03/12/2038
पिंग	04/12/2038

मंग - भ्राम	
04/12/2038	
14/01/2039	
भ्राम	09/12/2038
भद्रि	15/12/2038
उल्क	21/12/2038
सिद्ध	29/12/2038
संक	07/01/2039
मंग	08/01/2039
पिंग	11/01/2039
धांय	14/01/2039

मंग - भद्रि	
14/01/2039	
06/03/2039	
भद्रि	21/01/2039
उल्क	29/01/2039
सिद्ध	08/02/2039
संक	20/02/2039
मंग	21/02/2039
पिंग	24/02/2039
धांय	28/02/2039
भ्राम	06/03/2039

मंग - उल्क	
06/03/2039	
06/05/2039	
उल्क	16/03/2039
सिद्ध	28/03/2039
संक	10/04/2039
मंग	12/04/2039
पिंग	15/04/2039
धांय	20/04/2039
भ्राम	27/04/2039
भद्रि	06/05/2039

मंग - सिद्ध	
06/05/2039	
16/07/2039	
सिद्ध	19/05/2039
संक	04/06/2039
मंग	06/06/2039
पिंग	10/06/2039
धांय	16/06/2039
भ्राम	24/06/2039
भद्रि	04/07/2039
उल्क	16/07/2039

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : वृश्चिक 2 वर्ष 3 मास 1 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : आश्लेषा - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष	
10/01/1974		13/04/1976		13/04/1992		13/04/2001		13/04/2022	
13/04/1976		13/04/1992		13/04/2001		13/04/2022		14/04/2027	
	00/00/0000	तुला	18/04/1979	कन्या	27/03/1993	कर्क	21/06/2006	सिंह	30/07/2022
	00/00/0000	कन्या	27/12/1980	कर्क	17/06/1995	सिंह	15/09/2007	मिथु	08/02/2023
	00/00/0000	कर्क	09/12/1984	सिंह	27/12/1995	मिथु	05/12/2009	मक	05/05/2023
	10/01/1974	सिंह	18/11/1985	मिथु	09/12/1996	मक	01/12/2010	कुंभ	30/07/2023
सिंह	22/01/1974	मिथु	30/07/1987	मक	13/05/1997	कुंभ	27/11/2011	मीन	01/03/2024
मिथु	19/10/1974	मक	30/04/1988	कुंभ	15/10/1997	मीन	18/05/2014	वृश्चि	29/07/2024
मक	17/02/1975	कुंभ	30/01/1989	मीन	06/11/1998	वृश्चि	08/02/2016	तुला	08/07/2025
कुंभ	17/06/1975	मीन	19/12/1990	वृश्चि	03/08/1999	तुला	22/01/2020	कन्या	17/01/2026
मीन	13/04/1976	वृश्चि	13/04/1992	तुला	13/04/2001	कन्या	13/04/2022	कर्क	14/04/2027

मिथुन 9 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष	
14/04/2027		13/04/2036		13/04/2040		13/04/2044		13/04/2054	
13/04/2036		13/04/2040		13/04/2044		13/04/2054		00/00/0000	
मिथु	27/03/2028	मक	21/06/2036	कुंभ	21/06/2040	मीन	16/06/2045	वृश्चि	10/11/2054
मक	28/08/2028	कुंभ	28/08/2036	मीन	09/12/2040	वृश्चि	13/04/2046	तुला	05/03/2056
कुंभ	30/01/2029	मीन	16/02/2037	वृश्चि	09/04/2041	तुला	01/03/2048	कन्या	01/12/2056
मीन	21/02/2030	वृश्चि	16/06/2037	तुला	09/01/2042	कन्या	23/03/2049	कर्क	24/08/2058
वृश्चि	18/11/2030	तुला	19/03/2038	कन्या	12/06/2042	कर्क	11/09/2051	सिंह	10/01/2059
तुला	29/07/2032	कन्या	20/08/2038	कर्क	08/06/2043	सिंह	13/04/2052		00/00/0000
कन्या	12/07/2033	कर्क	16/08/2039	सिंह	02/09/2043	मिथु	05/05/2053		00/00/0000
कर्क	02/10/2035	सिंह	10/11/2039	मिथु	04/02/2044	मक	23/10/2053		00/00/0000
सिंह	13/04/2036	मिथु	13/04/2040	मक	13/04/2044	कुंभ	13/04/2054		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - तुला		कर्क - कन्या		सिंह - सिंह		सिंह - मिथु		सिंह - मक	
08/02/2016		22/01/2020		13/04/2022		30/07/2022		08/02/2023	
22/01/2020		13/04/2022		30/07/2022		08/02/2023		05/05/2023	
तुला	06/11/2016	कन्या	17/04/2020	सिंह	20/04/2022	मिथु	19/08/2022	मक	12/02/2023
कन्या	08/04/2017	कर्क	04/11/2020	मिथु	01/05/2022	मक	28/08/2022	कुंभ	16/02/2023
कर्क	31/03/2018	सिंह	22/12/2020	मक	06/05/2022	कुंभ	06/09/2022	मीन	26/02/2023
सिंह	24/06/2018	मिथु	18/03/2021	कुंभ	11/05/2022	मीन	29/09/2022	वृश्चि	05/03/2023
मिथु	23/11/2018	मक	25/04/2021	मीन	24/05/2022	वृश्चि	15/10/2022	तुला	22/03/2023
मक	30/01/2019	कुंभ	02/06/2021	वृश्चि	02/06/2022	तुला	20/11/2022	कन्या	31/03/2023
कुंभ	08/04/2019	मीन	06/09/2021	तुला	22/06/2022	कन्या	11/12/2022	कर्क	21/04/2023
मीन	25/09/2019	वृश्चि	11/11/2021	कन्या	03/07/2022	कर्क	28/01/2023	सिंह	26/04/2023
वृश्चि	22/01/2020	तुला	13/04/2022	कर्क	30/07/2022	सिंह	08/02/2023	मिथु	05/05/2023

सिंह - कुंभ		सिंह - मीन		सिंह - वृश्चि		सिंह - तुला		सिंह - कन्या	
05/05/2023		30/07/2023		01/03/2024		29/07/2024		08/07/2025	
30/07/2023		01/03/2024		29/07/2024		08/07/2025		17/01/2026	
कुंभ	09/05/2023	मीन	24/08/2023	वृश्चि	13/03/2024	तुला	02/10/2024	कन्या	28/07/2025
मीन	19/05/2023	वृश्चि	11/09/2023	तुला	11/04/2024	कन्या	07/11/2024	कर्क	14/09/2025
वृश्चि	26/05/2023	तुला	21/10/2023	कन्या	26/04/2024	कर्क	31/01/2025	सिंह	26/09/2025
तुला	11/06/2023	कन्या	13/11/2023	कर्क	03/06/2024	सिंह	20/02/2025	मिथु	16/10/2025
कन्या	21/06/2023	कर्क	05/01/2024	सिंह	11/06/2024	मिथु	29/03/2025	मक	25/10/2025
कर्क	12/07/2023	सिंह	18/01/2024	मिथु	27/06/2024	मक	14/04/2025	कुंभ	03/11/2025
सिंह	17/07/2023	मिथु	10/02/2024	मक	04/07/2024	कुंभ	30/04/2025	मीन	26/11/2025
मिथु	26/07/2023	मक	20/02/2024	कुंभ	12/07/2024	मीन	10/06/2025	वृश्चि	12/12/2025
मक	30/07/2023	कुंभ	01/03/2024	मीन	29/07/2024	वृश्चि	08/07/2025	तुला	17/01/2026

सिंह - कर्क		मिथु - मिथु		मिथु - मक		मिथु - कुंभ		मिथु - मीन	
17/01/2026		14/04/2027		27/03/2028		28/08/2028		30/01/2029	
14/04/2027		27/03/2028		28/08/2028		30/01/2029		21/02/2030	
कर्क	09/05/2026	मिथु	20/05/2027	मक	03/04/2028	कुंभ	05/09/2028	मीन	16/03/2029
सिंह	04/06/2026	मक	06/06/2027	कुंभ	10/04/2028	मीन	23/09/2028	वृश्चि	17/04/2029
मिथु	22/07/2026	कुंभ	22/06/2027	मीन	28/04/2028	वृश्चि	06/10/2028	तुला	29/06/2029
मक	12/08/2026	मीन	02/08/2027	वृश्चि	11/05/2028	तुला	04/11/2028	कन्या	09/08/2029
कुंभ	03/09/2026	वृश्चि	31/08/2027	तुला	09/06/2028	कन्या	20/11/2028	कर्क	13/11/2029
मीन	26/10/2026	तुला	04/11/2027	कन्या	26/06/2028	कर्क	28/12/2028	सिंह	05/12/2029
वृश्चि	02/12/2026	कन्या	11/12/2027	कर्क	03/08/2028	सिंह	06/01/2029	मिथु	15/01/2030
तुला	25/02/2027	कर्क	06/03/2028	सिंह	12/08/2028	मिथु	23/01/2029	मक	03/02/2030
कन्या	14/04/2027	सिंह	27/03/2028	मिथु	28/08/2028	मक	30/01/2029	कुंभ	21/02/2030

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - वृश्चिक	21/02/2030 – 18/11/2030	मिथु - तुला	18/11/2030 – 29/07/2032	मिथु - कन्या	29/07/2032 – 12/07/2033	मिथु - कर्क	12/07/2033 – 02/10/2035	मिथु - सिंह	02/10/2035 – 13/04/2036
वृश्चि	15/03/2030	तुला	15/03/2031	कन्या	04/09/2032	कर्क	29/01/2034	सिंह	14/10/2035
तुला	05/05/2030	कन्या	19/05/2031	कर्क	29/11/2032	सिंह	18/03/2034	मिथु	03/11/2035
कन्या	03/06/2030	कर्क	19/10/2031	सिंह	20/12/2032	मिथु	12/06/2034	मक	12/11/2035
कर्क	09/08/2030	सिंह	25/11/2031	मिथु	25/01/2033	मक	20/07/2034	कुंभ	21/11/2035
सिंह	24/08/2030	मिथु	29/01/2032	मक	11/02/2033	कुंभ	27/08/2034	मीन	14/12/2035
मिथु	22/09/2030	मक	27/02/2032	कुंभ	27/02/2033	मीन	01/12/2034	वृश्चि	30/12/2035
मक	05/10/2030	कुंभ	27/03/2032	मीन	09/04/2033	वृश्चि	06/02/2035	तुला	05/02/2036
कुंभ	18/10/2030	मीन	08/06/2032	वृश्चि	08/05/2033	तुला	08/07/2035	कन्या	25/02/2036
मीन	18/11/2030	वृश्चि	29/07/2032	तुला	12/07/2033	कन्या	02/10/2035	कर्क	13/04/2036

मक - मक	13/04/2036 – 21/06/2036	मक - कुंभ	21/06/2036 – 28/08/2036	मक - मीन	28/08/2036 – 16/02/2037	मक - वृश्चिक	16/02/2037 – 16/06/2037	मक - तुला	16/06/2037 – 19/03/2038
मक	16/04/2036	कुंभ	24/06/2036	मीन	18/09/2036	वृश्चि	26/02/2037	तुला	07/08/2037
कुंभ	19/04/2036	मीन	02/07/2036	वृश्चि	02/10/2036	तुला	21/03/2037	कन्या	05/09/2037
मीन	27/04/2036	वृश्चि	08/07/2036	तुला	03/11/2036	कन्या	02/04/2037	कर्क	12/11/2037
वृश्चि	03/05/2036	तुला	20/07/2036	कन्या	21/11/2036	कर्क	02/05/2037	सिंह	28/11/2037
तुला	16/05/2036	कन्या	28/07/2036	कर्क	03/01/2037	सिंह	09/05/2037	मिथु	28/12/2037
कन्या	23/05/2036	कर्क	14/08/2036	सिंह	13/01/2037	मिथु	22/05/2037	मक	10/01/2038
कर्क	09/06/2036	सिंह	18/08/2036	मिथु	31/01/2037	मक	28/05/2037	कुंभ	23/01/2038
सिंह	13/06/2036	मिथु	25/08/2036	मक	08/02/2037	कुंभ	02/06/2037	मीन	24/02/2038
मिथु	21/06/2036	मक	28/08/2036	कुंभ	16/02/2037	मीन	16/06/2037	वृश्चि	19/03/2038

मक - कन्या	19/03/2038 – 20/08/2038	मक - कर्क	20/08/2038 – 16/08/2039	मक - सिंह	16/08/2039 – 10/11/2039	मक - मिथु	10/11/2039 – 13/04/2040	कुंभ - कुंभ	13/04/2040 – 21/06/2040
कन्या	04/04/2038	कर्क	17/11/2038	सिंह	21/08/2039	मिथु	26/11/2039	कुंभ	16/04/2040
कर्क	12/05/2038	सिंह	09/12/2038	मिथु	30/08/2039	मक	04/12/2039	मीन	24/04/2040
सिंह	21/05/2038	मिथु	16/01/2039	मक	03/09/2039	कुंभ	11/12/2039	वृश्चि	30/04/2040
मिथु	07/06/2038	मक	02/02/2039	कुंभ	07/09/2039	मीन	29/12/2039	तुला	13/05/2040
मक	14/06/2038	कुंभ	19/02/2039	मीन	18/09/2039	वृश्चि	11/01/2040	कन्या	20/05/2040
कुंभ	21/06/2038	मीन	02/04/2039	वृश्चि	25/09/2039	तुला	09/02/2040	कर्क	06/06/2040
मीन	09/07/2038	वृश्चि	02/05/2039	तुला	11/10/2039	कन्या	25/02/2040	सिंह	10/06/2040
वृश्चि	22/07/2038	तुला	09/07/2039	कन्या	20/10/2039	कर्क	04/04/2040	मिथु	17/06/2040
तुला	20/08/2038	कन्या	16/08/2039	कर्क	10/11/2039	सिंह	13/04/2040	मक	21/06/2040

चर दशा

भोग्य दशा काल : मीन 2 वर्ष 0 मास 0 दिन

मीन 2 वर्ष
10/01/1974
11/01/1976

मेष	12/03/1974
वृष	12/05/1974
मिथु	12/07/1974
कर्क	11/09/1974
सिंह	10/11/1974
कन्या	10/01/1975
तुला	12/03/1975
वृश्चि	12/05/1975
धनु	12/07/1975
मक	11/09/1975
कुंभ	11/11/1975
मीन	11/01/1976

मेष 12 वर्ष
11/01/1976
11/01/1988

वृष	10/01/1977
मिथु	10/01/1978
कर्क	10/01/1979
सिंह	11/01/1980
कन्या	10/01/1981
तुला	10/01/1982
वृश्चि	10/01/1983
धनु	11/01/1984
मक	10/01/1985
कुंभ	10/01/1986
मीन	10/01/1987
मेष	11/01/1988

वृष 8 वर्ष
11/01/1988
11/01/1996

मेष	10/09/1988
मीन	12/05/1989
कुंभ	10/01/1990
मक	11/09/1990
धनु	12/05/1991
वृश्चि	11/01/1992
तुला	10/09/1992
कन्या	12/05/1993
सिंह	10/01/1994
कर्क	11/09/1994
मिथु	12/05/1995
वृष	11/01/1996

मिथुन 6 वर्ष
11/01/1996
10/01/2002

वृष	11/07/1996
मेष	10/01/1997
मीन	11/07/1997
कुंभ	10/01/1998
मक	12/07/1998
धनु	10/01/1999
वृश्चि	12/07/1999
तुला	11/01/2000
कन्या	11/07/2000
सिंह	10/01/2001
कर्क	11/07/2001
मिथु	10/01/2002

कर्क 12 वर्ष
10/01/2002
10/01/2014

मिथु	10/01/2003
वृष	11/01/2004
मेष	10/01/2005
मीन	10/01/2006
कुंभ	10/01/2007
मक	11/01/2008
धनु	10/01/2009
वृश्चि	10/01/2010
तुला	10/01/2011
कन्या	11/01/2012
सिंह	10/01/2013
कर्क	10/01/2014

सिंह 8 वर्ष
10/01/2014
10/01/2022

कन्या	11/09/2014
तुला	12/05/2015
वृश्चि	11/01/2016
धनु	10/09/2016
मक	12/05/2017
कुंभ	10/01/2018
मीन	11/09/2018
मेष	12/05/2019
वृष	11/01/2020
मिथु	10/09/2020
कर्क	12/05/2021
सिंह	10/01/2022

कन्या 9 वर्ष
10/01/2022
10/01/2031

तुला	11/10/2022
वृश्चि	12/07/2023
धनु	11/04/2024
मक	10/01/2025
कुंभ	11/10/2025
मीन	12/07/2026
मेष	12/04/2027
वृष	11/01/2028
मिथु	10/10/2028
कर्क	11/07/2029
सिंह	11/04/2030
कन्या	10/01/2031

तुला 3 वर्ष
10/01/2031
10/01/2034

वृश्चि	12/04/2031
धनु	12/07/2031
मक	11/10/2031
कुंभ	11/01/2032
मीन	11/04/2032
मेष	11/07/2032
वृष	10/10/2032
मिथु	10/01/2033
कर्क	11/04/2033
सिंह	11/07/2033
कन्या	11/10/2033
तुला	10/01/2034

वृश्चिक 7 वर्ष
10/01/2034
10/01/2041

तुला	11/08/2034
कन्या	12/03/2035
सिंह	11/10/2035
कर्क	11/05/2036
मिथु	10/12/2036
वृष	11/07/2037
मेष	09/02/2038
मीन	11/09/2038
कुंभ	12/04/2039
मक	11/11/2039
धनु	11/06/2040
वृश्चि	10/01/2041

धनु 1 वर्ष
10/01/2041
10/01/2042

वृश्चि	09/02/2041
तुला	12/03/2041
कन्या	11/04/2041
सिंह	12/05/2041
कर्क	11/06/2041
मिथु	11/07/2041
वृष	11/08/2041
मेष	10/09/2041
मीन	11/10/2041
कुंभ	10/11/2041
मक	11/12/2041
धनु	10/01/2042

मकर 7 वर्ष
10/01/2042
10/01/2049

धनु	11/08/2042
वृश्चि	12/03/2043
तुला	11/10/2043
कन्या	11/05/2044
सिंह	10/12/2044
कर्क	11/07/2045
मिथु	09/02/2046
वृष	11/09/2046
मेष	12/04/2047
मीन	11/11/2047
कुंभ	11/06/2048
मक	10/01/2049

कुम्भ 2 वर्ष
10/01/2049
10/01/2051

मीन	12/03/2049
मेष	12/05/2049
वृष	11/07/2049
मिथु	10/09/2049
कर्क	10/11/2049
सिंह	10/01/2050
कन्या	12/03/2050
तुला	12/05/2050
वृश्चि	12/07/2050
धनु	11/09/2050
मक	10/11/2050
कुंभ	10/01/2051

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - वृष		सिंह - मिथु		सिंह - कर्क		सिंह - सिंह		कन्या - तुला	
12/05/2019		11/01/2020		10/09/2020		12/05/2021		10/01/2022	
11/01/2020		10/09/2020		12/05/2021		10/01/2022		11/10/2022	
मेष	01/06/2019	वृष	31/01/2020	मिथु	30/09/2020	कन्या	01/06/2021	वृश्चि	02/02/2022
मीन	22/06/2019	मेष	20/02/2020	वृष	21/10/2020	तुला	21/06/2021	धनु	25/02/2022
कुंभ	12/07/2019	मीन	11/03/2020	मेष	10/11/2020	वृश्चि	11/07/2021	मक	19/03/2022
मक	01/08/2019	कुंभ	01/04/2020	मीन	30/11/2020	धनु	01/08/2021	कुंभ	11/04/2022
धनु	21/08/2019	मक	21/04/2020	कुंभ	20/12/2020	मक	21/08/2021	मीन	04/05/2022
वृश्चि	11/09/2019	धनु	11/05/2020	मक	10/01/2021	कुंभ	10/09/2021	मेष	27/05/2022
तुला	01/10/2019	वृश्चि	01/06/2020	धनु	30/01/2021	मीन	01/10/2021	वृष	19/06/2022
कन्या	21/10/2019	तुला	21/06/2020	वृश्चि	19/02/2021	मेष	21/10/2021	मिथु	12/07/2022
सिंह	11/11/2019	कन्या	11/07/2020	तुला	12/03/2021	वृष	10/11/2021	कर्क	03/08/2022
कर्क	01/12/2019	सिंह	31/07/2020	कन्या	01/04/2021	मिथु	30/11/2021	सिंह	26/08/2022
मिथु	21/12/2019	कर्क	21/08/2020	सिंह	21/04/2021	कर्क	21/12/2021	कन्या	18/09/2022
वृष	11/01/2020	मिथु	10/09/2020	कर्क	12/05/2021	सिंह	10/01/2022	तुला	11/10/2022

कन्या - वृश्चि		कन्या - धनु		कन्या - मक		कन्या - कुंभ		कन्या - मीन	
11/10/2022		12/07/2023		11/04/2024		10/01/2025		11/10/2025	
12/07/2023		11/04/2024		10/01/2025		11/10/2025		12/07/2026	
तुला	03/11/2022	वृश्चि	04/08/2023	धनु	04/05/2024	मीन	02/02/2025	मेष	03/11/2025
कन्या	26/11/2022	तुला	27/08/2023	वृश्चि	26/05/2024	मेष	24/02/2025	वृष	25/11/2025
सिंह	18/12/2022	कन्या	18/09/2023	तुला	18/06/2024	वृष	19/03/2025	मिथु	18/12/2025
कर्क	10/01/2023	सिंह	11/10/2023	कन्या	11/07/2024	मिथु	11/04/2025	कर्क	10/01/2026
मिथु	02/02/2023	कर्क	03/11/2023	सिंह	03/08/2024	कर्क	04/05/2025	सिंह	02/02/2026
वृष	25/02/2023	मिथु	26/11/2023	कर्क	26/08/2024	सिंह	27/05/2025	कन्या	25/02/2026
मेष	20/03/2023	वृष	19/12/2023	मिथु	18/09/2024	कन्या	19/06/2025	तुला	19/03/2026
मीन	12/04/2023	मेष	11/01/2024	वृष	10/10/2024	तुला	11/07/2025	वृश्चि	11/04/2026
कुंभ	04/05/2023	मीन	02/02/2024	मेष	02/11/2024	वृश्चि	03/08/2025	धनु	04/05/2026
मक	27/05/2023	कुंभ	25/02/2024	मीन	25/11/2024	धनु	26/08/2025	मक	27/05/2026
धनु	19/06/2023	मक	19/03/2024	कुंभ	18/12/2024	मक	18/09/2025	कुंभ	19/06/2026
वृश्चि	12/07/2023	धनु	11/04/2024	मक	10/01/2025	कुंभ	11/10/2025	मीन	12/07/2026

कन्या - मेष		कन्या - वृष		कन्या - मिथु		कन्या - कर्क		कन्या - सिंह	
12/07/2026		12/04/2027		11/01/2028		10/10/2028		11/07/2029	
12/04/2027		11/01/2028		10/10/2028		11/07/2029		11/04/2030	
वृष	03/08/2026	मेष	04/05/2027	वृष	02/02/2028	मिथु	02/11/2028	कन्या	03/08/2029
मिथु	26/08/2026	मीन	27/05/2027	मेष	25/02/2028	वृष	25/11/2028	तुला	26/08/2029
कर्क	18/09/2026	कुंभ	19/06/2027	मीन	19/03/2028	मेष	18/12/2028	वृश्चि	18/09/2029
सिंह	11/10/2026	मक	12/07/2027	कुंभ	11/04/2028	मीन	10/01/2029	धनु	11/10/2029
कन्या	03/11/2026	धनु	04/08/2027	मक	04/05/2028	कुंभ	02/02/2029	मक	03/11/2029
तुला	26/11/2026	वृश्चि	27/08/2027	धनु	26/05/2028	मक	24/02/2029	कुंभ	25/11/2029
वृश्चि	18/12/2026	तुला	18/09/2027	वृश्चि	18/06/2028	धनु	19/03/2029	मीन	18/12/2029
धनु	10/01/2027	कन्या	11/10/2027	तुला	11/07/2028	वृश्चि	11/04/2029	मेष	10/01/2030
मक	02/02/2027	सिंह	03/11/2027	कन्या	03/08/2028	तुला	04/05/2029	वृष	02/02/2030
कुंभ	25/02/2027	कर्क	26/11/2027	सिंह	26/08/2028	कन्या	27/05/2029	मिथु	25/02/2030
मीन	20/03/2027	मिथु	19/12/2027	कर्क	18/09/2028	सिंह	19/06/2029	कर्क	19/03/2030
मेष	12/04/2027	वृष	11/01/2028	मिथु	10/10/2028	कर्क	11/07/2029	सिंह	11/04/2030

चर दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - कन्या
11/04/2030
10/01/2031

तुला	04/05/2030
वृश्चि	27/05/2030
धनु	19/06/2030
मक	12/07/2030
कुंभ	03/08/2030
मीन	26/08/2030
मेष	18/09/2030
वृष	11/10/2030
मिथु	03/11/2030
कर्क	26/11/2030
सिंह	18/12/2030
कन्या	10/01/2031

तुला - वृश्चि
10/01/2031
12/04/2031

तुला	18/01/2031
कन्या	25/01/2031
सिंह	02/02/2031
कर्क	10/02/2031
मिथु	17/02/2031
वृष	25/02/2031
मेष	05/03/2031
मीन	12/03/2031
कुंभ	20/03/2031
मक	27/03/2031
धनु	04/04/2031
वृश्चि	12/04/2031

तुला - धनु
12/04/2031
12/07/2031

वृश्चि	19/04/2031
तुला	27/04/2031
कन्या	04/05/2031
सिंह	12/05/2031
कर्क	20/05/2031
मिथु	27/05/2031
वृष	04/06/2031
मेष	11/06/2031
मीन	19/06/2031
कुंभ	27/06/2031
मक	04/07/2031
धनु	12/07/2031

तुला - मक
12/07/2031
11/10/2031

धनु	19/07/2031
वृश्चि	27/07/2031
तुला	04/08/2031
कन्या	11/08/2031
सिंह	19/08/2031
कर्क	27/08/2031
मिथु	03/09/2031
वृष	11/09/2031
मेष	18/09/2031
मीन	26/09/2031
कुंभ	04/10/2031
मक	11/10/2031

तुला - कुंभ
11/10/2031
11/01/2032

मीन	19/10/2031
मेष	26/10/2031
वृष	03/11/2031
मिथु	11/11/2031
कर्क	18/11/2031
सिंह	26/11/2031
कन्या	03/12/2031
तुला	11/12/2031
वृश्चि	19/12/2031
धनु	26/12/2031
मक	03/01/2032
कुंभ	11/01/2032

तुला - मीन
11/01/2032
11/04/2032

मेष	18/01/2032
वृष	26/01/2032
मिथु	02/02/2032
कर्क	10/02/2032
सिंह	18/02/2032
कन्या	25/02/2032
तुला	04/03/2032
वृश्चि	11/03/2032
धनु	19/03/2032
मक	27/03/2032
कुंभ	03/04/2032
मीन	11/04/2032

तुला - मेष
11/04/2032
11/07/2032

वृष	18/04/2032
मिथु	26/04/2032
कर्क	04/05/2032
सिंह	11/05/2032
कन्या	19/05/2032
तुला	26/05/2032
वृश्चि	03/06/2032
धनु	11/06/2032
मक	18/06/2032
कुंभ	26/06/2032
मीन	04/07/2032
मेष	11/07/2032

तुला - वृष
11/07/2032
10/10/2032

मेष	19/07/2032
मीन	26/07/2032
कुंभ	03/08/2032
मक	11/08/2032
धनु	18/08/2032
वृश्चि	26/08/2032
तुला	02/09/2032
कन्या	10/09/2032
सिंह	18/09/2032
कर्क	25/09/2032
मिथु	03/10/2032
वृष	10/10/2032

तुला - मिथु
10/10/2032
10/01/2033

वृष	18/10/2032
मेष	26/10/2032
मीन	02/11/2032
कुंभ	10/11/2032
मक	17/11/2032
धनु	25/11/2032
वृश्चि	03/12/2032
तुला	10/12/2032
कन्या	18/12/2032
सिंह	26/12/2032
कर्क	02/01/2033
मिथु	10/01/2033

तुला - कर्क
10/01/2033
11/04/2033

मिथु	17/01/2033
वृष	25/01/2033
मेष	02/02/2033
मीन	09/02/2033
कुंभ	17/02/2033
मक	24/02/2033
धनु	04/03/2033
वृश्चि	12/03/2033
तुला	19/03/2033
कन्या	27/03/2033
सिंह	03/04/2033
कर्क	11/04/2033

तुला - सिंह
11/04/2033
11/07/2033

कन्या	19/04/2033
तुला	26/04/2033
वृश्चि	04/05/2033
धनु	12/05/2033
मक	19/05/2033
कुंभ	27/05/2033
मीन	03/06/2033
मेष	11/06/2033
वृष	19/06/2033
मिथु	26/06/2033
कर्क	04/07/2033
सिंह	11/07/2033

तुला - कन्या
11/07/2033
11/10/2033

तुला	19/07/2033
वृश्चि	27/07/2033
धनु	03/08/2033
मक	11/08/2033
कुंभ	18/08/2033
मीन	26/08/2033
मेष	03/09/2033
वृष	10/09/2033
मिथु	18/09/2033
कर्क	25/09/2033
सिंह	03/10/2033
कन्या	11/10/2033

तुला - तुला
11/10/2033
10/01/2034

वृश्चि	18/10/2033
धनु	26/10/2033
मक	03/11/2033
कुंभ	10/11/2033
मीन	18/11/2033
मेष	25/11/2033
वृष	03/12/2033
मिथु	11/12/2033
कर्क	18/12/2033
सिंह	26/12/2033
कन्या	02/01/2034
तुला	10/01/2034

वृश्चि - तुला
10/01/2034
11/08/2034

वृश्चि	28/01/2034
धनु	15/02/2034
मक	04/03/2034
कुंभ	22/03/2034
मीन	09/04/2034
मेष	27/04/2034
वृष	14/05/2034
मिथु	01/06/2034
कर्क	19/06/2034
सिंह	07/07/2034
कन्या	24/07/2034
तुला	11/08/2034

वृश्चि - कन्या
11/08/2034
12/03/2035

तुला	29/08/2034
वृश्चि	16/09/2034
धनु	03/10/2034
मक	21/10/2034
कुंभ	08/11/2034
मीन	26/11/2034
मेष	13/12/2034
वृष	31/12/2034
मिथु	18/01/2035
कर्क	05/02/2035
सिंह	22/02/2035
कन्या	12/03/2035

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 5
शत्रु अंक	3, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	पुखराज	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	मूंगा	धन, भाग्योदय
कारक रत्नः	मोती	सन्तति सुख

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ
बुध	पुखराज	100%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
10/01/1974	मूंगा	98%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
22/08/1985	मोती	82%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, दम्पति
केतु	मूंगा	100%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
22/08/1985	पुखराज	100%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
21/08/1992	मोती	82%	सुख, सुख, दम्पति
शुक्र	पुखराज	100%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
21/08/1992	मूंगा	98%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
21/08/2012	मोती	82%	धनार्जन, पराक्रम, दुर्घटना से बचाव
सूर्य	मोती	100%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
21/08/2012	मूंगा	100%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
22/08/2018	पुखराज	100%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव
चन्द्र	मोती	100%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
22/08/2018	पुखराज	100%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
21/08/2028	मूंगा	98%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव
मंगल	मोती	100%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
21/08/2028	मूंगा	100%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
22/08/2035	पुखराज	100%	धन, भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
राहु	पुखराज	100%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
22/08/2035	मूंगा	86%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, घी
22/08/2053	मोती	82%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न – लहसुनिया

आपका जन्म मीन राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह गुरु होता है। लहसुनिया रत्न केतु ग्रह के लिये धारण किया जाता है केतु का फल मंगल के समान माना जाता है। मंगल मीन राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि मंगल की वृश्चिक राशि मीन लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः मीन राशि के लग्न वाले जातकों को लहसुनिया रत्न धारण करके केतु या मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। केतु ग्रह के लिये लहसुनिया रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी केतु आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को टोना, टोटका जैसे अशुभ फलों से मुक्ति व राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को नाना–नानी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। केतु ग्रह मोक्ष का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको कोई गंभीर संक्रामक रोग हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

लहसुनिया को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य सभी ग्रहों का राजा होता है। लहसुनिया केतु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। लहसुनिया को यदि मंगलवार के साथ–साथ केतु के नक्षत्र अर्थात् अश्विनी, मघा और मूल में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लहसुनिया को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, केतु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

केतु का मंत्र – ऊँ कें केतवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि केतु से संबंधित पदार्थ जैसे नारियल, सतनाजा सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो लहसुनिया की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन केतु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। यह लहसुनिया की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाना भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मीन लग्न वाले जातक यदि लहसुनिया की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	–––	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	–––	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	10/01/1974-23/07/1975	--------------------------	--------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/1975-07/09/1977	--------------------------	--------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	--------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	--------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	--------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	--------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	--------------------------

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	--------------------------	--------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	--------------------------	--------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	--------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	--------------------------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सन्तति कष्ट
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	दुर्घटना से बचाव
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता

पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से अलग रहता है। माता–पिता का स्नेह अधिक नहीं मिलता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय–समय पर नुकसान पहुँचाते रहते हैं। नाना–नानी या दादा–दादी का प्रायः वियोग होता है। इस योग के प्रभाव से सन्तान कभी अस्वस्थ हो जाते हैं और जातक चिन्ता व परेशानी के घेरे में आ जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को व्यापार व्यवसाय में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। नौकरी व्यवसाय में भी कभी कुछ व्यवधान उपस्थित हो जाता है पर कालान्तर में वह स्वतः नष्ट हो जाता है। जातक को भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है और सरकारी अधिकारियों से कभी अनबन भी हो जाती है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी–कभी अशान्त या कष्टमय हो जाता है। घर में सुख–शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। सुख–प्राप्ति के लिए विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और मित्र गण समय पर धोखा दे जाते हैं। परिणामस्वरूप जातक को आंशिक रूप में नुकसान उठाना पड़ता है। आय में कमी रहती है। फलस्वरूप आर्थिक संकट समय–समय पर घेर लेता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है जिसमें जातक को विशेष रूप से प्रसिद्धि मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।

8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि–विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे – कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

अंक जीवन ग्राफ

आपका मूलांक एवं भाग्यांक वर्ष के अंकों से एवं आयु के अंको से जो संबंध बनाते हैं वे एक ग्राफ के रूप में नीचे दिए गए हैं। इस ग्राफ द्वारा आप यह साफ साफ जान सकते हैं कि कौन सा आयु का वर्ष आपके लिए लाभकारी हो सकता है या कौन सा वर्ष अनिष्टकारी हो सकता है। इस ग्राफ को बनाने के लिए मूलांक एवं भाग्यांक के आयु वर्ष एवं उनके अलग अलग अंकों से संबंध को लिया गया है। यदि ग्राफ में 60 से ऊपर नंबर आ रहे हैं तो वह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकता है एवं जिसे 40 से कम नंबर प्राप्त हुए हैं वह वर्ष आपको कुछ कष्टदायक हो सकता है।

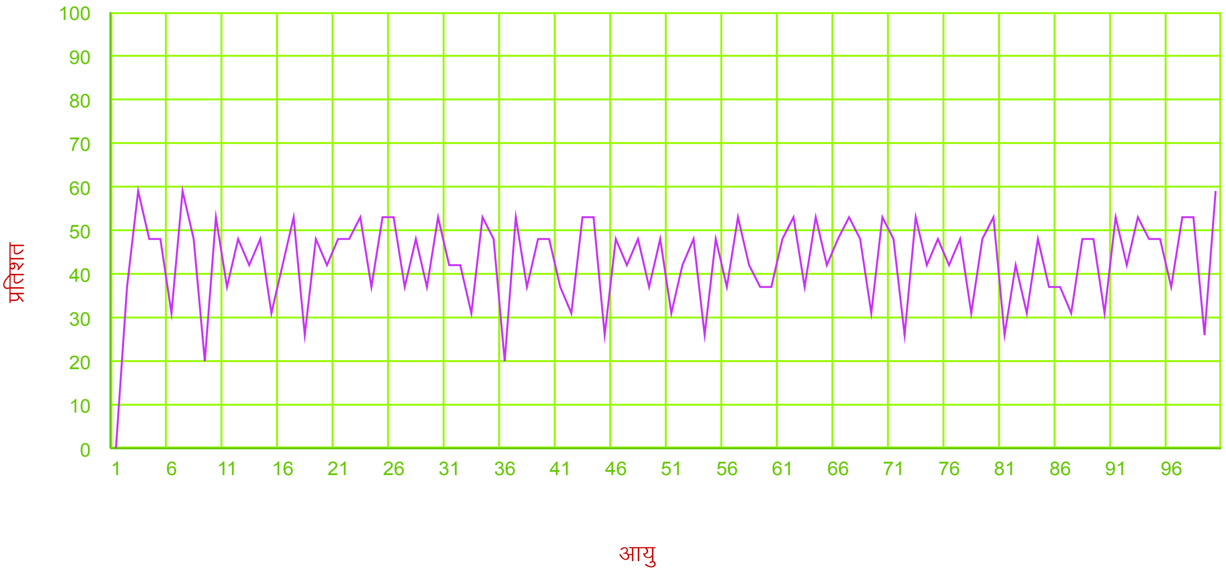

मुख्य वर्ष 1990,1999,2008,2017,2026,2035,2044,2053

शुभ आयु 16,25,34,43,52,61,70,79

नामांक विचार

संसार में नाम नहीं तो कुछ भी नहीं। मनुष्य का सही नाम ही गगन चुम्बी होता है। सही फलदायी नाम से ही मनुष्य देश–विदेश में प्रसिद्धि पाता है। अतः हमेशा ऐसे नाम का चुनाव करना चाहिए जो आपको समाज में यश, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा प्रदान करे और सदियों तक समाज में आदर के साथ याद किया जाए। आपका नाम आपके भाग्य व प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कितना साथ दे रहा है निम्न गणना से आप जान सकते हैं एवं नाम को ठीक कर अपने भाग्य की वृद्धि कर सकते हैं।

H r i t i k R o s h a n
5+2+1+4+1+2 2+7+3+5+1+5
नाम का योग : 38 नामांक : 2

आपके नाम का कुल योग अड़तीस होता है। तीन एवं आठ के योग से ग्यारह तथा अंक एक एवं एक के योग से दो आपका नामांक होता है। अंक तीन का स्वामी बृहस्पति आठ का घनि एवं दो का स्वामी चंद्र है। इन तीनों ग्रहों के गुण–अवगुण आपके नाम को प्रभावित करेंगे। चंद्र प्रभाव से आपके अन्दर भावुकता की मात्रा अधिक रहेगी। आपकी कल्पना शक्ति उच्चकोटि की रहेगी। शारीरिक कार्यों की अपेक्षा आपकी रुचि मानसिक कार्यों में अधिक रहेगी। चंद्र के प्रभाव से आपके मन को चचंल करता रहेगा। इसके कारण आपका नाम उतार–चढ़ाव लेगा। आपके स्वभाव में जल्दबाजी होने से कई बार हानि का सामना करना पड़ेगा। गुरु प्रभाव से आपका नाम समाज के विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रिय रहेगा। जीवन में उच्च सफलता पाने हेतु आपको धैर्य के साथ कार्य करना अधिक लाभप्रद रहेगा, क्योंकि शनि धीरे धीरे उच्चता के शिखर पर पहुंचाता है।

आपका नामांक 2 आपके मूलांक 1 से सम संबंध रखता है। लेकिन आपके भाग्यांक 5 से शत्रु संबंध है। ऐसी स्थिति में आपको अपने नामांक का पूर्ण फल प्राप्त करने में असुविधा होगी। आपका मूलांक से सम संबंध नाम को अधिक सफल नहीं होने देगा, जबकि भाग्यांक के साथ शत्रु संबंध असफलता के द्योतक रहेंगे। अतः आपको अपने नाम में परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है। आप अपने नाम में इस प्रकार से परिर्वतन करें जिससे आपके नाम के अक्षरों में अधिक परिवर्तन न हो तथा वह आपके मूलांक तथा भाग्यांक के साथ–साथ उत्तम तालमेल स्थापित करले।

आपके नाम के अंक का आपके मूलांक 1 तथा भाग्यांक 5 दोनों से ही मिलान नहीं हो रहा है। यदि आप अपने नाम का अच्छा फल पाना चाहते हैं तो आपको अपने नाम में परिवर्तन करना लाभप्रद रहेगा। आप ऐसे नाम का चुनाव कीजिये जोकि आपके मूलांक तथा भाग्यांक दोनों से ही मिलान करे तथा उसका नामांक 1 आता हो और 2 न हो तो ऐसा नाम आपकी रुकी हुई प्रगति के द्वार खोलेगा तथा आप पूर्ण रूपेण सांसारिक सफलताएं अर्जित करेंगे। नाम परिवर्तन हेतु आपके लिए 3,8,9 अंक शुभ रहेंगे तथा 6,4,5 अंक अहितकर होंगे।

नाम में परिवर्तन करने हेतु अंग्रेजी वर्णाक्षरों को अंकों में परिवर्तन करने की विधि

उदाहरण सहित नीचे दी जा रही है। जिसकी सहायता से आप आसानी से नाम परिवर्तन अथवा नाम में वांछित संशोधन कर अपने अनुकूल नामांक बना सकते हैं। नाम परिवर्तन से आप मूलांक तथा भाग्यांक के साथ–साथ अपने नाम को सार्थक कर सकेंगे।

A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

1 2 3 4 5 8 3 5 1 1 2 3 4 5 7 8 1 2 3 4 6 6 6 5 1 7

उदाहरणार्थः–

एक अंक घटानाः–	G A N E S H A 3+1+5+5+3+5+1=23=5	G A N E S H 3+1+5+5+3+5=22=4
एक अंक :–	R A M 2+1+4=7	R A M A 2+1+4+1=8
दो अंक :–	B I N D R A 2+1+5+4+2+1=15=6	B R I N D R A 2+2+1+5+4+2+1=17=8
तीन अंक :–	R A M C H A N D 2+1+4+3+5+1+5+4=25=7	R A M C H A N D R A 2+1+4+3+5+1+5+4+2+1=28=1
चार अंक :–	K R I S H N A 2+2+1+3+5+5+1=19=1	K R E S H N A 2+2+5+3+5+5+1=23=5
पाँच अंक :–	T E W A R I 4+5+6+1+2+1=19=1	T I W A R I 4+1+6+1+2+1=15=6
छः अंक :–	A G G A R W A L 1+3+3+1+2+6+1+3=20=2	A G A R W A L 1+3+1+2+6+1+3=17=8

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक दस है। एक एवं शून्य का जोड़ एक होता है जोकि अंक ज्योतिषानुसार आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य और शून्य को ब्रह्म या शिव माना गया है। इनके प्रभाववश आप अपने क्षेत्र में एक प्रभावशील व्यक्ति होंगे। सूर्य जिस तरह से प्रकाशित एवं अस्त होता है वैसे ही आपके जीवन में काफी ऐसे अवसर आयेंगे जिनमें आपको सफलताऐं प्राप्त होंगी। कभी–कभी अस्त सूर्य के समान असफलता का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आप असफलता से पीछे नहीं हटेंगे। कुछ दिन शिव की तरह शांत रहकर पुनः सफलता अर्जित करेंगे। संघर्ष, साहस, धैर्य एवं उच्च महत्वाकांक्षायें आप में अधिक रहेंगी।

आप स्थिरवादी, दृढ़ निश्चयी, वचनशील व्यक्ति रहेंगे। इन गुणों, वश मेहनत एवं ईमानदारी से सफलता अर्जित करेंगे। संघर्षों से पीछे नहीं हटेंगे। समाज में नाम तथा यश प्राप्त करेंगे। आप परोपकारवादी, बहुतों के पोषक बनेंगे। आर्थिक स्थिति आपकी मध्य अवस्था में काफी ठीक रहेगी। समाज में आपका अच्छा नाम होगा।

मानसिक स्थिति आपकी स्वतंत्र विचारधारा की रहेगी। इससे आपको पराधीन रहकर कार्य करना अच्छा नहीं लगेगा। आप किसी के आधीन कार्य करने की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग अधिक करेंगे। आप अपने कार्य करने के ढंग में स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अधिक पसन्द करेंगे।

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से आपका भाग्योदय स्व–बुद्धि विवेक द्वारा होगा। बुध वाणिज्य, व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यों में अच्छी प्रगति प्रदान करेगा। आपके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी विकसित होगी। वाक् पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत रहेगी। आप रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनायेंगे जो आपकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेंगी। वाणिज्य कला में आप काफी निपुण रहेंगे एवं रोजमर्रा के कार्यों को फुर्ती से पूर्ण करेंगे। दूसरों से कार्य निकलवाने में आप निपुण रहेंगे।

आपकी व्यवसायिक बुद्धि होने से धन संग्रह की ओर आप अधिक आकृष्ट रहेंगे एवं आवश्यकतानुसार वक्त–वे–वक्त के लिए धन एकत्रित करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आपकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की रहेगी। कानून का आपको ठीक ज्ञान रहने से आप कार्यक्षेत्र में सभी कार्यों को बखूबी निभायेंगे तथा सामने वाले आपके ज्ञान के आगे नत–मस्तक होंगे।

आपका मूलांक 1 तथा भाग्यांक 5 है। मूलांक 1 के स्वामी ग्रह सूर्य का भाग्यांक 5 के स्वामी ग्रह बुध से शत्रु संबंध होने के कारण आपको इन दोनों ही अंकों के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। सूर्य के प्रभाववश आपकी सामाजिक स्थिति जहां उच्च कोटि की होगी, वहीं भाग्यांक स्वामी बुध आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगा। आप ऐसा ही रोजगार–व्यापार पसंद करेंगे, जिसमें आपको नाम एवं धन दोंनो ही प्राप्त होंगे। आपका भाग्योदय कॉमर्शियल लाईन में श्रेष्ठ रहेगा। सूर्य के प्रभाववश रोजगार के क्षेत्र में आपकी अच्छी–खासी पहचान स्थापित होगी, वहीं बुध के प्रभाव से

प्रचुर मात्रा में धन संग्रह होगा। आपकी वाणी में गरिमा, ओज एवं चतुरता की स्पष्ट झलक दिखाई देगी। रोजगार–व्यापार के क्षेत्र में आप अपने बुद्धि–विवेक से उन्नति को प्राप्त करेंगे। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी में उच्च स्तर की रहेगी। आपका भाग्योदय युवावस्था से ही प्रारंभ हो जाएगा एवं 28 से 32 वर्ष की अवस्था के मध्य अच्छी प्रगति होगी। बुद्धि जनित कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी तथा बौद्धिक स्तर के व्यक्तियों से अच्छे संपर्क स्थापित करने में समर्थ रहेंगे।

आपका भाग्योदय 23 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 32 वर्ष की आयु पर विशेष उन्नति प्राप्त करेगा तथा 41 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 5 की मित्राता 3 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 5, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक–भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी–बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन घटित हुईं होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, मई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 5, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक एक के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहेगा। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन आपके लिये विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु आपको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः आप यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23, एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उक्त तरीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक होगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं आपकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उक्त मूलांक वाली महिलाओं से आप सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी

हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां आपके लिए सहायक एवं लाभ पूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्रवर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। आप यथासंभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में लें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो आप हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो आपका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

वास्तु एवं निवास

आपके ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। आपकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। आपके लिए पूर्वी क्षेत्र के व्यक्ति, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों का समावेश आपके कपड़ों में होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि आप पीला, सुनहरी या भूरा रखेंगे तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

शुभ वाहन नं

यदि आप वाहन आदि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा।

आपका मूलांक 1 है। अतः आपके लिए अंक 1,4,8, अच्छे रहेंगे। इसलिए आपके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा, जो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। आपकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4, या 8 हैं तो आपकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा आपके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

हृदय पक्ष आपका कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट आपको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा – कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे आप सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से आपको हर

समय सावधान रहना चाहिए। रोग, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन नमक रहित एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय

आपके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडिकल स्टोर, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार–व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

व्रतोपवास

आपको रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब आपको स्वयं अनुभव होगा कि आप विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां आपसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

माणिक आपका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप सूर्योपासना करें तथा उगते सूर्य का दर्शन करते हुए नित्य एक लोटा अर्घ्य (रोली, चावल जल में डाल कर) ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोंगो तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ी स्वर्ण अंगूठी के दर्शन कर लें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए, सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के

बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

सूर्य गायत्री मंत्र – आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

वनस्पति धारण

आप रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ लाकर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक रविवार को एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारु, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति दायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, इन सबको मिलाकर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

योग्य व्यक्ति के लिए सूर्य की शांति हेतु सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु सूर्य यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केसर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

अंक ज्योतिष फल

Model: 3-Platinum-Horoscope-Plan

SrNo: 112-114-105-1023 / 502 Date: 07/11/2019

नाम	Hritik Roshan
जन्म तिथि	10/01/1974
मूलांक	1
भाग्यांक	5
नामांक	2
मूलांक स्वामी	सूर्य
भाग्यांक स्वामी	बुध
नामांक स्वामी	चन्द्र
मित्र अंक	4, 8, 5
शत्रु अंक	6
सम अंक	2, 3, 7, 9
मुख्य वर्ष	1990,1999,2008,2017,2026,2035,2044,2053
शुभ आयु	16,25,34,43,52,61,70,79
शुभ वार	रवि, सोम
शुभ मास	जन, अप्रै, अग
शुभ तारीख	1, 10, 19, 28
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक,लाल तुर्मली
अनुकूल देव	सूर्य
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	लाल
मंत्र	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः
शुभ यंत्र	सूर्य यंत्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4

लग्न फल

ज्योतिषीय आकृति के अनुरूप आपका जन्म रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्म लग्नोदय काल मेदिनीय क्षितिज पर धनु राशि का नवमांश एवं कर्क राशीय द्रेष्काण भी उदित था। आपके जन्म की शुभ अनुकूलता मात्र प्रत्याशा पूर्वक विश्वास ही नहीं दिलाता है। बल्कि साथ–साथ आपके सांसारिक सुखों को स्वाभाविक रूप से धन लाभ से युक्त करा कर धार्मिक मानचित्र को उन्नतिशील कर रहा है।

मीन राशि आपको ज्ञात कराता है कि इस राशि के प्राणी मोक्ष प्राप्त कर उद्धार हो जाते हैं। आप अत्यंत मर्यादित एवं विश्वसनीय प्राणी है। क्योंकि आपका झुकाव धार्मिक है। आपको संतों की सेवा हेतु उत्सुक कर दिया है। आप सांसारिक सुखों में जिससे आप संबंधित हैं और उस अभिप्रायः में उन्नति कर सकते हैं। यह विषय चिंतनीय एवं निश्चित है कि आप अपने कार्य विषय में सुगमता पूर्वक लक्ष्य तक नहीं जा सकते। क्योंकि मीन राशि द्विस्वाभावात्मक स्वभाव के होते हैं जो आपके चरित्र को दो विपरीत दिशा में विभक्त करता है। आपका एक पक्ष तो यह है कि आपकी अभिरूचि धार्मिक दर्शन के पक्ष में है। अन्य दूसरा पक्ष आपको वासनात्मक प्रवृति की ओर अभिलाषित करता है। अतएव आप स्वच्छंदता पूर्वक यह धारण कर लें कि आपको कौन सा पथ चयन करना है। मिश्रित विचार के कारण दोनों दिशाओं में से कोई भी दिशा न यहां का रहने देगा और नहीं वहां का।

आप इन विचारों से उपर उठकर उत्सुकता पूर्वक सुनिश्चित करें कि क्या आपके घरेलू जीवन में वसना सर्वथा सहायक होगा। भविष्य में आप एक अच्छी पत्नी के पति होंगे तथा आपका एक प्रसन्नतम घर भी होगा। इसकी संपन्नता के संबंध में आपको विचार करना चाहिए कि पारिवारिक सुखद वातावरण के लिए अपनी भागीदारी प्रदान करना है।

आपके संबंध में कुछ और भी लाभ जनक बिंदु यह है कि आप शीघ्रतापूर्वक रूचि कर औपचारिकता यह निभाएं कि अकर्मणयता (नपुंसकता) त्याग कर स्नेहमय वातावरण का निर्णायक आप अन्य लोगों की मदद करें। परंतु आप एकाएक किसी भी विषय को प्रस्तुत नहीं करें। परिस्थिति वश किसी को भी दुःख नहीं पहुंचाएं। आप सामान्य लोगों का अपना प्रिय पात्र बनाएं। अतएव आप ऐसा अनुभव नहीं करे कि अधिक आयु के हो जाने पर आपको अपनी संतान पर निर्भर रहना पड़ेगा। आप अपनी अभिलाषा यह रखें कि अपने संभव कार्य कलाप द्वारा बाद की उसमें खर्च हेतु आय का कुछ अंश को सुरक्षित कर लें। आप इसी प्रकार के कार्य उद्देश्य रखें तथा कुशाग्र बुद्धिमत्ता पूर्वक अच्छी व्यवसाय करें। इसके पश्चात् प्रायः भाग्य आपका पक्षपाती नहीं होगा।

दूसरी दृष्टि से आपकी जन्मपत्रिका में तीन निराशात्मक महत्वपूर्ण बिंदु दृश्य हो रहे हैं जो कि आपकी आयु के 17 वें, 21 वें और 24 वें वर्ष आपके लिए बहुत अधिक अनुकूल प्रमाणित नहीं होंगे अर्थात् जीवन की उपरोक्त संबंधित आयु आपके लिए प्रतिकूल फलदायी होगा। आपके लिए यह अनुग्रहणीय है कि आप इस उम्र में सतर्कता पूर्वक अग्रसर होंवे।

आपके लिए अन्य आवश्यक सुझाव यह है कि आप अपने मित्रों से भी सावधान रहें। क्योंकि इनका हाव–भाव एक घनिष्ट मित्र के जैसा होगा। जो अविश्वसनीय प्रमाणित होगा। इसलिए आप इनका गहन अध्ययन कर अथवा गंभीरता पूर्वक विचार कर, इनको अपना बनावें।

आपके लिए रंगीन समय तब होगा जबकि आप अपने व्यवहारिक जीवन में रंग गुलाबी, नारंगी एवं पीले रंग के वस्त्रादि का व्यवहार करें। परंतु नीले रंग का परित्याग करें। मात्र नीला रंग आपके हित प्रतिकूल है।

आपके लिए अंको में अनुकूल अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक भाग्यशाली है। एवं अंक 8 आपके लिए निश्चित रूप से खराब है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में रविवार, मंगलवार एवं गुरुवार का दिन भाग्यशाली एवं महत्वपूर्ण कार्य हेतु अनुकूल है। इसके अतिरिक्त सप्ताह के शेष दिन सर्वथा त्याज्यनीय है।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक–प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध–प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी

सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ–पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दु:खी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक द्रश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीय होंगे। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपकी रूचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरूचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा

अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोंरजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्वान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे ।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शनि भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होगे परंतु इनको अर्जित करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। अतः आपको बुद्धिमता का परिचय देना चाहिए तथा स्थितियों का सामना करना चाहिए।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की भी न्यूनाधिक मात्रा में प्राप्ति होगी तथा किसी वृद्ध व्यक्ति से भी चल या अचल सम्पत्ति मिल सकती है। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से भी आप न्यूनाधिक मात्रा में धन सम्पत्ति अर्जित करेंगे। लेकिन विवाद युक्त सम्पत्ति की आपको हमेशा उपेक्षा करनी चाहिए तथा इससे किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपका आवास मध्यम ही होगा परंतु आधुनिक सुख सुविधाओं एवं आवश्यक भौतिक उपकरणों से युक्त होगा। साथ ही इसकी स्वच्छता बनाए रखने में आप व्यक्ति रूप से रूचिशील होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होगे तथा उनसे संबंधों में मधुरता कम ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यावस्था के बाद ही संतोषजनक होगा।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं व्यावहारिक महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी सदस्यों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी जिससे उन्हें यथोचित सम्मान एवं आदर प्राप्त होगा। आपके प्रति भी उनके में स्नेह का भाव विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों की बहुलता होगी जिससे यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तभी आप वांछित सफलताए अर्जित कर सकते है। स्नातक परीक्षा को पास करने में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा या अन्य शिक्षा ग्रहण करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही अच्छी सफलता मिल सकती है।

चतुर्थभाव में शनि के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आप रक्त चाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकते है। अतः खान–पान का प्रारंभ से ही विशेष ध्यान रखना चाहिए एवं तनाव से भी मुक्त रहना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे आपको उपरोक्त समस्याओं में कमी आएगी तथा समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा चन्द्रमा भी स्वगृही होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी तथा इससे अवसरानुकूल आप वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आसानी से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र के प्रति आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे एवं कुछ विशिष्ट कार्य भी सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक साहित्य, कविता, कला एवं संगीत में भी रुचि शील होंगे तथा लेखन कार्य करके समाजिक प्रभाव एवं अपनी विद्वता में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से प्रेम–प्रसंगों में आपकी रूचि होगी तथा इससे आपको आत्म सन्तुष्टि एवं मन में उत्साह की प्राप्ति होगी। भावुकता का भी आप यदा–कदा इसमें प्रदर्शन करेंगे। आप यद्यपि भावुक प्रवृति के होंगे परन्तु प्रेम के क्षेत्र में मर्यादा एवं नैतिकता का पालन करेंगे एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। जिससे आपके प्रेम–प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में हो सकती है। इससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

स्वगृही चन्द्रमा की संतति भाव में स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की अपेक्षा कन्या संतति अधिक हो सकती है। आपकी संतति विद्वान, बुद्धिमान एवं चतुर होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता–पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर तथा श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में वे सर्वदा तत्पर होंगे। वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को माता–पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों के मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के सहयोग से करना पसन्द करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे माता–पिता की तन–मन–धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से वांछित सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे एवं आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे। जिससे वे अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर अग्रसर होंगे साथ ही वे विनम्र स्वभाव, आकर्षक व्यक्तित्व, निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अपने उत्तम कार्य–कलापों से अन्य सामाजिक जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा उनसे उन्हें वांछित सम्मान, स्नेह एवं प्रोत्साहन की प्राप्ति होगी। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार बच्चों का आपको उत्तम सुख मिलेगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सवर्थवश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यो को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है सामान्यतया सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से जातक का सहयोगी प्रियवक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यशाली एवं विविध कार्यो में दक्ष होता है तथा वह शिक्षित विद्वान प्रसिद्ध सांसारिक कार्यो में दक्ष एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की विनम्र एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने संभाषण हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी साथ ही वह स्वच्छता प्रिय होंगी एवं सफाई के प्रति विशेष सजग होंगी सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी। साथ ही उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी होगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सडोलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा शरीर भी आकर्षक रहेगा। साहित्य संगीत एवं कला के प्रति भी उनकी रूचि होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में कन्या राशि के प्रभाव से आपका विवाह बंधु एवं संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में एक दूसरे के प्रति सम्मान आकर्षण एवं प्रेम की भावना होगी। सांसारिक महत्व के कार्यो को आप परस्पर सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगे जिससे आपस में विश्वास एवं समानता का भाव उत्पन्न होगा। इससे दाम्पत्यों संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा समाज में वे आदरणीय होंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह मिलेगा। साथ ही आप भी उन्हें पूर्ण सम्मान देंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी भी सलाह लेंगे जिससे आपस में विश्वसनीयता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का हार्दिक सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी माता पिता के समान सेवा करेंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी जिससे परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ होगा। यदि अपनी आयु से अधिक आयु के समीपस्थ संबंधी से साझेदारी की जाए तो इससे शुभ फल प्राप्त होंगे एवं परस्पर विश्वसनीयता भी बनी रहेगी ।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे ।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरूप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र संबंधी शास्त्रों में भी आपकी रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबंधी कार्यो तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य क्रमों को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रूचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबंधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबंधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई धार्मिक एवं पुण्य संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते है । ये यात्राएं शिक्षा संबंधी भी हो सकते है या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबंधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही राहु भी दशमभाव में स्थित है। धनुराशि अग्नितत्व एवं राहु वायुतत्व है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगी तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। इसके अतिरिक्त आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के भी इच्छुक होंगे। जिसमें आपको सफलता की प्राप्ति होगी।

दशमभाव में धनुराशिस्थ राहू के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पैट्रोलियम विभाग, ऊनी उद्योग या फैक्टरी कर्मचारी, संदेश वाहक, दूत कार्य, बैंक कर्मचारी या वित्तीय क्षेत्र राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए ।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहें का व्यापार फैक्टरी या लोहें के उपकरणों का उत्पादन, पेट्रोल पम्प, एयर ट्रैवल एजेंसी राजनीति एवं शराब का व्यापार शुभ एवं अनुकूल होगा तथा इससे प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति करके उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा नवीन आयाम स्थापित करेंगे। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार का आरम्भ करेंगे तो आपको इच्छित उन्नति की प्राप्ति होगी एवं अनावश्यक समस्याओं का सामना भी नहीं करना पड़ेगा।

दशमभाव में राहु के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा एवं आदर मिलेगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से उच्चाधिकार प्राप्त पद भी अर्जित करेंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक, राजनीतिक संस्था या क्लब आदि के पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते है। लेकिन इसमें आपको विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। अतः लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे। समाज में भी उनका प्रभाव रहेगा एवं उनसे वे वांछित मान एवं सम्मान अर्जित करेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा एवं उच्च शिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको एक योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र की प्रारंभिक उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आप भी स्वापरिश्रम एवं पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। परंतु आप लोगो के परस्पर संबंध मधुर ही होंगे तथा वैचारिक एवं सैद्वांतिक मतभेद बने रहेंगे।

इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आपसी सलाह एवं सहयोग से कम ही सम्पन्न करेंगे। अतः ऐसी परिस्थितियों की आप को उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराक्रमी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरूष भी होंगे तथा प्रसिद्ध धन–ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे । जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबंधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते है परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चो या किसी अन्य संबंधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धिमता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यो पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवयय करेंगे। साथ ही आवास संबंधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या धार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रूचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबंधी याात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

नक्षत्रफल

आप आश्लेषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग श्वान, नाडी अन्त्य तथा योनि मार्जार होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम "डु" या "डू" से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों में की जाती हैं। इसके द्वितीय चरण में उत्पन्न जातक पिता के धन का नाश करता हैं। अतः इस दोष के निवारणार्थ जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रोक्त विधि विधान से अवश्य ही शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा जब 27 दिन बाद पुनः यह नक्षत्र आवे तो उस दिन जपे मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इससे अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। यह कार्य किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए।

मंत्र – ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप भ्रमण तथा यात्राओं में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करने वाले होंगे। आपका स्वभाव उग्रता से परिपूर्ण रहेगा तथा आपकी उग्र चेष्टाओं से अन्य सामाजिक जन आपसे यदा कदा परेशान रहेंगे। आप धनार्जन अवश्य करेंगे परन्तु अर्जित धन को शीघ्र ही व्यय कर देंगे। आप विलासी प्रकृति के पुरूष होंगे विलासमय पदार्थो पर भी अधिक व्यय करेंगे। समाज के अन्य लोगों की वस्तुओं के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

शरीर से आप स्वस्थ रहेंगे तथा कृतज्ञता की अल्प भावना से युक्त रहेंगे तथा अन्य के द्वारा अपने ऊपर किए गये उपकार को अल्प ही मानेंगे। साथ ही आप पूर्व में ही किए गए कार्यों को पुनः करने वाले होंगे।

लुब्धः खञ्जः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगड़ा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यों को करने वाला होता है।

खान पान में आप कोई भेद नही रखेंगे। आप शाकाहारी तथा मांसाहारी आदि का उपभोग करने वाले होंगे। आपके अधिकांश कार्य कठोर होंगे। जिससे अन्य लोग हमेशा आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे। यदा कदा आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय लेंगे तथा यत्न पूर्वक अच्छे कार्यों को करने में भी तत्पर रहेंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यों को करने वाला होता है।

आप में बुद्धि तथा ज्ञान मध्यम रूप से रहेगा तथा कृतज्ञतायुक्त शब्दों के प्रयोग करने में आप कुशल होंगे। साथ ही आप क्रोधी प्रकृति के भी होंगे तथा आपका आचरण भी सामान्य रहेगा।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने सभी कार्यों को चतुराई तथा कुशलता से पूर्ण करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा अपने जीवन में अधिक मात्रा में धनार्जन करेंगे। जिससे समाज में धनाढ्य कहलांएगे। पराक्रम का आप में अभाव नहीं रहेगा। तथा धार्मिक भावना का समावेश भी आपके अर्न्तमन में रहेगा फलतः समस्त धार्मिक कार्य कलापों को विधि पूर्वक सम्पन्न करेंगे। अपने श्रेष्ठ तथा गुरूजनों के आप हमेशा प्रियवत्सल रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा स्नेह की प्राप्ति करेंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी भी होंगे। यदा कदा आप में क्रोध की भी अधिकता दृष्टिगोचर होगी तथा आप अत्यन्त दुःख का भी कभी अहसास करेंगे। आपके समस्त मित्रगण अच्छे तथा गुणवान होंगे। आप अन्य कार्य तथा कलाओं के भी विशेषज्ञ होंगे। शारीरिक बल आप में मध्यम ही रहेगा। तथा घर से दूर अन्यत्र भी आप निवास कर सकते हैं।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ से मिश्रित रहेगी। आप अत्यन्त सुन्दर एवं अलौकिक तेज से युक्त पुरूष होंगे तथा अपने परिश्रम से कमाए गए धन से आजीवन धन के स्वामी बनेंगे। देवताओं तथा ब्राहमणों के प्रति आप विशेष रूप से श्रद्धालु रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में सेवा भाव रहेगा तथा इनको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

आप वेदादिशात्रें के ज्ञान की प्राप्ति के लिए नित्य रूचिशील तथा यत्नशील रहेंगे एवं इस उद्धेश्य में सफलता भी प्राप्त करेंगे साथ ही कलाओं के विषय में भी आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। आचरण से आप उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेंगे। आप फूलों की सुगन्ध तथा जलक्रीड़ा करने में अत्यन्त आनन्द एवं हर्ष की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त अपनी बुद्धिमता से आप समाज में यशस्वी बनेंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपका गला स्थूल होगा तथा स्त्रीजाति से आप पूर्ण रूप से पराजित रहेंगे। आपके मित्र सुमित्र होंगे तथा जलविहार से आप आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे। आपके द्वारा बहुत से भवनों का निर्माण भी किया जाएगा अथवा आप बहुत से भवनों के स्वामी हो सकते हैं। कद में आप सामान्य होंगे तथा टेढ़ी चाल से शीघ्र चलना आपकी प्रवृति रहेगी इसके अतिरिक्त पुत्र भी आपके अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगे।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकर्ट्धिनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार की सम्पत्तियों तथा सुखों की प्राप्ति करेंगे। साथ ही आप ज्योतिषशास्त्र के भी जानने वाले होंगे। आपका सम्पूर्ण जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षय वृद्धि अर्थात् उतार चढ़ाव से युक्त रहेगा तथा आपको जीवन में बहुत संघर्ष करने पड़ेंगे। आप प्यार से वशीभूत हो सकते हैं। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी करवाना कठिन कार्य होगा। मित्रों को आप पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगे अतः मित्र मंडली में सबके प्रिय रहेंगे। आप सदैव जीवपालन, उद्यान बगीचे तथा जलाशयादि के निर्माण में तत्पर तथा रूचिशील रहेंगे।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाऽङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

सौभाग्य आजीवन आपकी उन्नति में महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होगा। आपके समस्त कार्य धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे शीघ्रता तथा उतावली का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। गृह से आप युक्त रहेंगे तथा आप अपना अधिकांश समय भ्रमण करने या यात्राओं आदि में व्यतीत करेंगे। सामाजिक जनों से आप अत्यन्त विनम्रता का व्यवहार रखेंगे। सैक्स की प्रबलता भी आप में विद्य मान रहेगी। साथ ही अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनको हार्दिक धन्यवाद प्रदान करेंगे। आप राज्य या सरकार में किसी ऊंचे पद को प्राप्त करने में भी सफलता प्राप्त कर सकेंगे। सत्य का अनुपालन आपके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहेगा तथा सत्य एवं प्रिय भाषण के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप नैसर्गिक रूप से अधिक बोलने वाली प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा आपके ह्दय में भी दया एवं करूणा के भाव भी अल्प ही रहेगा। आपके कार्य साहस के साथ सम्पन्न होंगे। अधिकतर आप साहसिक कार्यों को ही सम्पन्न करेंगे। आप शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएंगे तथा छोटी छोटी बातों पर क्रोधित होते रहेंगे। अपने कार्यसिद्धि के लिए आप किसी भी सीमा तक जा सकेंगे। आपमें शारीरिक बल की भी प्रधानता रहेगी तथा अन्य जनों से आप बात बात पर वाद विवाद करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इस प्रकार के कार्यों से समाज में यदा कदा लोगों से आपका वैमनस्य का भाव भी चलता रहेगा।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित रह सकते हैं। आपका चेहरा देखने में दीर्घ होगा तथा वाणी भी कभी कभी कठोरता से युक्त होगी जिसे श्रोता सुनना पसन्द नहीं करेंगे। अतः अपने सम्भाषण में प्रायः मधुर एवं सरल शब्दों का ही उपयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में पैदा होने के कारण आप स्वभाव से ही वीरता तथा साहस से सम्पन्न रहेंगे। आप अपने समस्त कार्यों को करने में निपुण रहेंगे। मीठा भोजन तथा मीठा पेय आपके प्रिय रहेंगे तथा इनके सेवन से आप अत्यन्त सन्तोष तथा आनन्द का अनुभव करेंगे। भय का आप में अभाव रहेगा तथा निर्भय होकर आप अपने जीवन पथ पर क्रमशः अग्रसर होते जाएंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में दुष्टता का आवागमन होगा फलतः आपकी बुद्धि कठोरकार्यों की ओर भी प्रवृत होगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार तृतीय प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक है। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए तथा नियमित रूप से

सोमवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही आपको श्रद्धापूर्वक श्वेतमोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, चावल इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फल भी प्राप्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र– ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

फलादेश - 2019

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति पंचम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय ज्ञानार्जन करने में आपकी रुचि रहेगी तथा विभिन्न विषयों का आप रुचि पूर्वक अध्ययन करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में आय होगी एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो प्रेमप्रसंग चलने की संभावना रहेगी। व्यापारिक क्षेत्र में तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय अनुकूल रहेगा। इस समय मंत्रीगण या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा उनसे आप वांछित मात्रा में लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। सन्तति पक्ष से इस समय आप निश्चिंत रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए उत्तम रहेगा।

इस वर्ष में शनि षष्ठ भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण होगा। इस समय आपकी महत्वपूर्ण यात्राएँ सम्पन्न होंगी तथा व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से भी आप सुदृढ़ रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में भी आप सफल होंगे। व्यापार में आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। शत्रु पक्ष आपसे भयभीत रहेगा तथा किसी प्रतियोगी परीक्षा या मुकदमे आदि में आपको सफलता मिलेगी। साथ ही अन्य गोचर एवं दशा फल भी शुभ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सर्वत्र आदर प्राप्त होगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आपकी लम्बी दूरी की यात्रा होगी या कोई विदेश यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप यात्राओं में अधिक व्यय करेंगे साथ ही मनोरंजन आदि में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। केतु के प्रभाव से आप शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। जिससे आपकी में प्रतिष्ठा बढेगी कार्यक्षेत्र में भी इस समय उन्नतिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त गोचर तथा दशा इस समय शुभ रहेगी। अतः समय अच्छा ही रहेगा।

चन्द्र की महादशा में चन्द्र का अंतर 22/06/2019 को समाप्त होगा। उसके बाद मंगल का अंतर प्रारंभ होगा। चन्द्र पंचम् भाव में कर्क राशि में स्थित हैं जबकि मंगल द्वितीय भाव में मेष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय आपको कई सुअवसरों की

प्राप्ति होगी तथा इच्छित सफलता अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे साथ ही बौद्धिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में आप पूर्ण रुचि लेंगे तथा इस क्षेत्र में कोई विशिष्ठ उपलब्धि प्राप्त करेंगे। इस समय प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बनेंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। मान सम्मान एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा आय स्रोतों में भी प्रगति होगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि के लिए समय उत्तम रहेगा एवं पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। परिवार में इस समय कोई वैवाहिक या बच्चे का जन्म संबधी मंगल कार्य भी सम्पन्न हो सकता है यात्राओं से आपको लाभ एवं भविष्य में नये आयाम स्थापित होंगे मित्र एवं बन्धुवर्ग से पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित तथा पभावित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी प्रतियोगी परीक्षा में भी सफलता मिलने की पूर्ण संभावना रहेगी।

यह समय आपके लिए उन्नति एवं लाभदायक रहेगा इस समय आपके उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यदा समय पूर्ण होंगे साथ ही प्रभावशाली व्यक्तियों से भी सम्पर्क स्थापित होंगे जिनसे भविष्य में लाभ होने की प्रबल संभावनाएं बनेंगी। आर्थिक दृष्टि से स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे ऐसे समय में आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन सांसारिक व्यय में भी वृद्धि होगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी परन्तु किसी पारिवारिक सदस्य का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मित्रवर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा यात्राओं से लाभ होगा व्यापार में इस समय विस्तार की संभावना रहेगी तथा नौकरी आदि के क्षेत्र में पदोन्नति के अवसर बनेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुवर्ग को भी पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे अतः ऐसे समय का आपको सदुपयोग करना चाहिए।

फलादेश - 2020

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा कोई अचानक सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही बेरोजगारों को रोजगार मिलने की भी प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। इस वर्ष अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। दाम्पत्य सुख इस वर्ष आपका उत्तम रहेगा तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धों में भी मधुरता रहेगी। समाज में इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी समय शुभ रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा एवं अतिरिक्त आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन व्यय भी यदा कदा अधिक ही होगा। इसके साथ ही अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी उत्तम रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण तथा भाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष गोचर वश शनि सप्तम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से वर्ष सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा नौकरी या राजनीति में भी आप सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। लेकिन माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही यदा कदा आप मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे परन्तु इसका सामान्य कार्य कलापों पर कोई प्रभाव नहीं होगा तथा उत्साह एवं पराक्रम से आप अपने कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा साथ ही किसी लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल आपके लिए अनुकूल रहेंगे अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको सफलता मिलेगी एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आवास या जायदाद संबंधी कोई कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। अतः वर्ष सामान्यतया शुभ फल ही प्रदान करेगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति द्वादश भाव में तथा केतु की स्थिति षष्ठ भाव में रहेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आपकी लम्बी दूरी की यात्रा होगी या कोई विदेश यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप यात्राओं में अधिक व्यय करेंगे साथ ही मनोरंजन आदि में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। आर्थिक स्थति भी इस वर्ष आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। केतु के प्रभाव से आप शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। जिससे आपकी में प्रतिष्ठा बढेगी कार्यक्षेत्र में भी इस समय उन्नतिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त गोचर तथा दशा इस समय शुभ रहेगी। अतः समय अच्छा ही रहेगा।

चन्द्र की महादशा में मंगल का अंतर 21/01/2020 को समाप्त होगा। उसके बाद

राहु का अंतर प्रारंभ होगा। मंगल द्वितीय भाव में मेष राशि में स्थित हैं जबकि राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा तथा अपनी बुद्धिमत्ता से आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे आर्थिक स्थिति इस समय सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुलकर रहेंगे लेकिन किसी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। इस समय विद्वान तथा प्रभावशाली व्यक्तियों से आपका सम्पर्क होगा तथा उनसे मित्रता पूर्ण संबध बनेंगे लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ तथा सम्मान प्राप्त होगा कार्य क्षेत्र में उन्नति संतोषप्रद रहेगी सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी आपसे पराजित होंगे तथा भाई बहिन अपने क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। अतः ऐसे समय का सदुपयोग करने के लिए तत्पर रहें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपके मन में आदर्श विचारों की उत्पति होगी तथा कुछ करने के लिए प्रवृत रहेंगे साथ ही कल्पनाशीलता से भी आपके विचारों में दृढता आएगी। अतः नौकरी या व्यापार में उचित क्षेत्र का चुनाव करें क्योकि ईश्वर की कृपा से सफलता का मार्ग आपके लिए खुला है पारिवारिक सुख शान्ति भी इस समय उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही घरेलू उपयोग की वस्तुओं पर प्रचुर मात्रा में व्यय होगा सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी इस समय वृद्धि होगी तथा दूर समीप की कुछ शुभ यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिससे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा एवं भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

फलादेश - 2021

इस वर्ष में बृहस्पति का गोचरीय भ्रमण अष्टम भाव में रहेगा। अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे परन्तु यदा कदा मानसिक तनाव से आपको किंचित मात्रा में परेशानी हो सकती है। इस समय सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही नौकरी राजनीति या व्यापारिक क्षेत्र में शत्रु तथा विरोधी पक्ष के द्वारा समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं जिससे उन्नति मार्ग में बाधाएं आएंगी लेकिन आप परिश्रम पूर्वक इनका समाधान करेंगे। इस वर्ष में आपका कोई मुकद्दमा भी प्रारंभ हो सकता है। आर्थिक स्थिति इस समय मध्यम रहेगी तथा आय के साथ साथ व्यय की भी अधिकता होगी परन्तु लाभमार्ग प्रशस्त करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। इस समय आपको किसी विशिष्ट लाभ की प्राप्ति की संभावना रहेगी साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं न्यूनाधिक ज्ञान भी अर्जित कर सकते है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सर्वत्र आप अतिरिक्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति के व्रत, पूजा तथा दानादि कार्य करना चाहिए।

गोचर वश शनि की स्थिति इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय व्यापार या कार्य क्षेत्र में आप पराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति करेंगे तथा नौकरी या राजनीति में भी कोई सफलता मिल सकती है। इस समय माता तथा पत्नी का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही यदा कदा दाम्पत्य संबंधों में भी तनाव की भी संभावना रहेगी। मानसिक रूप से आप परेशान से रहेंगे लेकिन अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें आपको न्यूनाधिक सफलता मिलती रहेगी। आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम रहेगी परन्तु भविष्य में लाभदायक स्रोतों में वृद्धि होगी साथ ही दूर समीप की कोई यात्रा भी होगी लेकिन इसमें व्यय अधिक तथा लाभ कम होगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे फलतः यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों में व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही आप आवास या जायदाद संबंधी कार्य के विषय में भी कोई योजना बना सकते है।

गोचरवश इस वर्ष में राहु की स्थिति एकादश भाव तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ फल प्रदान करेगा। यदा कदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप परिश्रम से सफलता प्राप्त करेंगे। लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में इस समय आपको किसी पद की प्राप्ति होगी जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आर्थिक

दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए शुभ ही रहेगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। लेकिन इस समय आप यदा कदा क्रोधाधिक्य का प्रदर्शन करेंगे। तथा सन्तति पक्ष से अप्रसन्न तथा असंतुष्ट रहेंगे। इस समय उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। साथ ही गोचरफल प्रतिकूल रहेंगे तथा दशा फल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप इस वर्ष शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

चन्द्र की महादशा में राहु का अंतर 22/07/2021 को समाप्त होगा। उसके बाद गुरु का अंतर प्रारंभ होगा। राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि गुरु एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ रहेगा इस समय आपमें साहस तथा आत्मविश्वास के भाव की अधिकता रहेगी तथा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होगी व्यापार में लाभ होगा एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे साथ ही ऐसे समय में कुछ महत्वपूर्ण सुअवसरों की भी प्राप्ति होगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की सम्भावना में वृद्धि होगी तथा अधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा एवं आयस्रतों में भी वृद्धि होगी परिवार के सदस्यों का आपके प्रति सहयोग का भाव रहेगा तथा आपस में सभी लोग मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरें को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय परिवार में भी कोई शुभ या मांगलिक उत्सव भी सम्पन्न होगा इसके अतिरिक्त सामजिक मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा दूर समीप की लाभ एवं सम्मानददायक यात्राएं भी सम्पन्न होंगी।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपकी इच्छाएँ तथा आकांक्षाएं पूर्ण होगी तथा व्यापार में सर्वत्र उन्नति एवं लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के प्रबल योग बनेंगे तथा अधिकारी वर्ग से मधुर सम्बंध रहेंगे तथा वे आपसे सन्तुष्ट एवं प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे यथोचित लाभ एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। आर्थिक स्थिति में इस समय सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं लाभदायक दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी। जिनसे आपको भविष्य में लाभ तथा आत्मसम्मान प्राप्त होगा मित्रवर्ग से भी सहयोग मिलता रहेगा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी साथ ही घरेलू महत्व की वस्तुओं पर भी व्यय करेंगे अतः समय का सदुपयोग करें।

फलादेश - 2022

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा अन्य जनों के परोपकार सम्बन्धी कार्य भी सम्पन्न करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण रुके हुए कार्य बन जाएँगे तथा व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी नवीन लाभदायक योजनाओं का प्रारम्भ होगा। साथ ही नौकरी या राजनैतिक क्षेत्र में भी आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी। समाज में इस समय आप एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में उभर सकेंगे तथा मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा फल शुभ रहेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्पता का आभास होगा परन्तु सामान्यतया परिणाम सुखद ही रहेंगे।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरीय परिभ्रमण के फलस्वरूप इस वर्ष राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव मे रहेगा इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपकी पदोन्नति की संभावना रहेगी समाज में आपका प्रभाव रहेगा। इस समय राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा भविष्य में उनसे लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदा कदा वे शारीरिक तथा मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। वाहन सुख में भी इस वर्ष अल्पता रहेगी। इस समय आयगोचरफल आपके लिए अशुभ रहेंगे परन्तु दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः आप अधिकांशतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे।

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

चन्द्र की महादशा में गुरु का अंतर 21/11/2022 को समाप्त होगा। उसके बाद शनि का अंतर प्रारंभ होगा। गुरु एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय सुअवसरों में न्यूनता आएगी जिससे लाभ एवं उन्नति मार्ग अवरुद्ध रहेंगे। मित्रवर्ग से ऐसे समय में कोई लाभ एवं सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में विश्वसनीयता के भाव में कमी आएगी व्यापार में लाभमार्ग प्रभावित होंगे तथा हानि की सम्भावना बनेगी यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति सम्बंधी व्यवधान आएंगे एवं अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव होगा। साथ ही ऐसं समय में किसी नवीन कार्य का आरम्भ नहीं करना चाहिए। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में न्यूनता आएगी एवं सदस्यों का आपस में मतभेद तथा तनाव रहेगा। आर्थिक स्थिति में भी विषमता रहेगी एवं आय स्रोतों में कमी आएगी लेकिन दूर समीप की यात्राओं से लाभ की प्रबल सम्भावना रहेगी। अतः सयमपूर्वक समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा इस समय आपको सन्तोषजनक परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी तथा समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा अतः अनुकूल फल प्राप्ति के लिए आपको अतिरिक्त परिश्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। साथ ही नवीन पूंजी निवेश या नवीन कार्य प्रारम्भ करने से हानि हो सकती है। पारिवारि सुख शान्ति में भी इस समय न्यूनता रहेगी। तथा सदस्यों का आपस में वैमनस्य एवं मतभेद का भाव रहेगा साथ ही किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। लेकिन प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में समर्थ रहेंगे तथा उनसे अवसरानुकूल लाभ भी मिलेगा। इसके अतिरिक्त पूराने ऋणों से मुक्ति मिलेगी तथा दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ होगा।

फलादेश - 2023

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति दशम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए काफी महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके मधुर सम्बन्ध बनेंगे। फलतः इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस वर्ष में आपको राज्यस्तर पर किसी सम्मान से सम्मानित भी किया जा सकता हैं। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा सभी लोग प्रेमपूर्वक रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। लेकिन इस समय विश्राम का अभाव रहेगा तथा सांसारिक कार्यों को संपन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस समय अन्य लोगो से आपको शालीनता का व्यवहार भी करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोचरफल अशुभ परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ रहेगा।

गोचर वश शनि की स्थिति इस समय अष्टम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य भी उत्साह एवं परिश्रम से ही सम्पन्न होंगे। पत्नी का स्वास्थ्य इस वर्ष प्रभावित रहेगा। फलतः दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी तथा संबंधों में भी यदा कदा तनाव रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय सामान्य रहेगा तथा धन एवं लाभार्जन आवश्यकता के अनुसार ही रहेगा तथा सन्तुष्टि अल्प ही रहेगी। आय स्रोतों की वृद्धि में भी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इस समय कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही न्यूनाधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशाफल अनुकूल नहीं रहेगी। अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा। साथ ही शनि की दशा का भी प्रभाव न्यूनाधिक रहेगा। अतः इसके लिए आपको शनि का नियमित पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शरीर की बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे एवं शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरीय परिभ्रमण के फलस्वरूप इस वर्ष राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव मे रहेगा इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपकी पदोन्नति की संभावना रहेगी समाज में आपका प्रभाव रहेगा। इस समय राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा भविष्य में उनसे लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदा कदा वे शारीरिक तथा मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। वाहन सुख में भी इस वर्ष अल्पता रहेगी। इस समय आयगोचरफल आपके लिए अशुभ रहेंगे परन्तु दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः आप अधिकांशतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में शनि का अंतर रहेगा। शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र पंचम् भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको इच्छित परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी तथा विगत सोची समझी योजनाओं में परिश्रम करने पर भी सफलता नहीं मिलेगी। व्यापार में भी आपको अनावश्यक समस्याओं तथा बाधाओं का सामना करना पड़ेगा आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको समय समय पर आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी न्यूनता रहेगी तथा सदस्यों का आपस में मतभेद तथा वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे एक दूसरे को सहयोग नहीं देंगे मित्रवर्ग से भी सहयोग में न्यूनता रहेगी। शत्रु वर्ग से भी परेशानी हो सकती है अतः सयंमपूर्वक कार्य करें।

फलादेश - 2024

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति अष्टम भाव में रहेगी। अतः सामान्य रूप से यह समय आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी इस समय ठीक ही रहेगा तथा दाम्पत्य सुख भी अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष अच्छा रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस समय पारिवारिक जनों बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे। साथ ही परिश्रम पूर्वक कार्य क्षेत्र की उन्नति भी होती रहेगी ।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभफलदायक रहेंगे अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होते रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि आपको प्राप्त होगी। लेकिन शनि की दशा का भी न्यूनाधिक प्रभाव दृष्टि गोचर होगा यद्यपि इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा तथापि इसको अनुकूल करने के लिए आपको शनि का पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे इसकी शुभता बनी रहेगी।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति नवम तथा केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे तथा भाग्यबल में भी प्रबलता रहेगी। शारीरिक स्वास्थ्य इस समय आपका अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में क्रोधकी प्रबलता रहेगी जिससे यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न होगी। केतु के प्रभाव से इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन ऐश्वर्य अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक एवं कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही आय गोचरफल एवं दशा भी इस समय अनुकूल रहेगी। अतः इस वर्ष में आपको शुभ फल ही

अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

चन्द्र की महादशा में शनि का अंतर 21/06/2024 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं जबकि बुध दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में न्यूनता रहेगी तथा सहयोग का अभाव रहेगा। व्यापार में आपको समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा अतः कोई भी पूंजी निवेश सोच समझकर सम्पन्न करें। नौकरी में भी पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब होंगे एवं अधिकारी वर्ग से म्बंधों में तनाव रहेगा तथा आपको अतिरिक्त कार्य भार भी वहन करना पड़ सकता है। मित्रवर्ग से भी कोई सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में विश्वसनीयता के भाव में कमी आएगी इसके अतिरिक्त शत्रुवर्ग से भी परेशानी होगी अतः इनसे आपको पूर्ण सावधान रहना चाहिए। साथ ही अपने स्यवास्थ्य के प्रति ध्यान देना चाहिए।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आत्मविश्वास तथा साहस के भाव में न्यूनता रहेगी जिससे उन्नति तथा लाभ मार्ग में समस्याएं उत्पन्न होगी साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में भी स्थिति प्रतिकूल रहेगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में अनावश्यक विलम्ब होगा एवं अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा पारिवारिक सुख शांति एवं समृद्धि में भी न्यूनता रहेगी तथा सदस्यों का परस्पर असहयोग एवं मतभेद रहेगा। सामजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा विशिष्ट उपलब्धि अर्जित करने में असमर्थ रहेंगे इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होगी लेकिन शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे अतः ऐसे समय को संयम एवं बुद्धिमत्ता पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2025

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी सामान्य रहेगी तथा व्यय अधिक होगा जिससे आप अल्प मात्रा में परेशानी की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए आपको अधिक पराक्रम एवं परिश्रम करना पड़ेगा तभी न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की कोई यात्रा सम्पन्न होगी साथ ही इसमें व्यय की भी अधिकता रहेगी जिससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी परन्तु भविष्य में आपकी लाभ की संभावनाएं बन सकती हैं।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यत्न पूर्वक आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति का पूजन व्रत तथा दानादि करना चाहिए।

गोचरवश इस वर्ष में शनि नवम भाव में संक्रमण करेगा अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा मैं वृद्धि होगी तथा एक प्रभावी व्यक्ति के रूप में आपका सम्मान करेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही धर्म एवं धार्मिक कृत्यों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा यत्नपूर्वक आप इनको करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं इच्छित मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति वर्ष भर होती रहेगी। परन्तु पिता का स्वास्थ्य इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा शारीरकि रूप से वे परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आय गोचर फल इस समय अशुभ रहेंगे। परन्तु दशाफल शुभ फल प्रदान करेगी। अतः यदा कदा आपको मानसिक या अन्य परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु सामान्य समय अच्छा ही व्यतीत होगा।

गोचर वश इस वर्ष राहु की स्थिति अष्टम तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी यदा कदा आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि इस समय मध्यम ही रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर मतभेद एवं तनाव रहेगा लेकिन यह अल्पकालीन होगा। आर्थिक स्थिति इस समय आपकी सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही व्यय भी अधिक होगा। इस वर्ष आप कोई विशिष्ट या अचानक लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। लाटरी जुए या सट्टे आदि से भी किंचित लाभ की संभावना रहेगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा तथा सामान्यतया परिश्रम एवं पराक्रम से सफलताएं मिलती रहेंगी।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी। अतः

सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा तथा आय स्रोतों की वृद्धि में भी विलम्ब होगा। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको राहु केतु की नियमित पूजा जप तथा दानादि कार्य सम्पन्न करने चाहिए।

चन्द्र की महादशा में बुध का अंतर 21/11/2025 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु का अंतर प्रारंभ होगा। बुध दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि केतु चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा इस समय बुध की केन्द्र में स्थिति होने के कारण अपनी सक्रियता तथा व्यावहारिकता से आप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे व्यापार में स्थिति संतोष प्रद रहेगी तथा उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे एवं अधिकारी तथा सहयोगियों से मधुर संबध रहेंगे साथ ही उन्नति कारक स्थानान्तरण की भी संभावना बनेगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि अनुकूल रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिल जुलकर रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे साथ ही कोई शुभ या मांगलिक उत्सव भी परिवार में सम्पन्न हो सकता है इसके अतिरिक्त प्रभावशाली लोगों से भी सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। अतः समय का सदुपयोग करें।

यह समय आपके लिए अनुकूल रहेगा तथा इच्छित परिणामों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे व्यापार में भी आपकी प्रगति सन्तोषजनक रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होगा इस समय आप नवीन पूंजी निवेश भी कर सकते है जिससे भविष्य में पूर्ण लाभ की ससम्भावना रहेगी आर्थिक दृष्टि से भी इस समय सुदृढ़ता रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। नौकरी में पदोन्नति के अवसर बनेंगे एवं अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में सम्बंधों में मधुरता रहेगी तथा कार्यस्तर में भी सुधार होगा। पारिवारिक सुख शान्ति में भी अनुकूलता रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे एवं एक दूसरें को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी आपको पूर्ण लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा तथा उतरार्ध के अन्तिम भाग में आपको विशेष सफलता मिलेगी।

फलादेश - 2026

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से इस समय आपके मानसिक शारीरिक एवं सामाजिक धरातल में महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे तथा कार्यक्षेत्र में आपको विशिष्ट उन्नति प्राप्त होगी। इस वर्ष में अविवाहितों के लिए विवाह का योग बनेगा। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा धार्मिक कार्य कलपों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि भी सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होकर प्रचुर मात्रा में धन लाभ होगा। आपके विगत रुके हुए शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होंगे। इस समय आप अपने को अनुभवी व्यक्ति समझेंगे परन्तु विश्राम का अभाव रहेगा तथा कार्य करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

इस वर्ष में गोचरवश शनि नवम भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को परास्त करने में आप सफल होंगे तथा समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी। धर्म एवं धार्मिक कर्मो के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं यत्नपूर्वक आप इनमें अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। परन्तु मानसिक स्थिति इस समय विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा अधिकांशतया आप किंकर्तव्यविमूढ़ से बने रहेंगे। अतः महत्वपूर्ण निर्णय लेने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। लेकिन इस वर्ष में पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता हैं अतः उनका पूर्ण ध्यान रखें। साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा फल भी शुभ फल प्रदान करेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए सौभाग्यपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम भाव तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में शान्ति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी समयानुकूल शुभ रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर स्नेह एवं सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इस वर्ष आपको विशिष्ट या आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। लाटरी सट्टे या जुए आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए समय उन्नतिशील रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आपके लाभ तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशा भी शुभ रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर सम्पन्न करेंगे तथा आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक ही अधिक रहेगा।

चन्द्र की महादशा में केतु का अंतर 22/06/2026 को समाप्त होगा। उसके बाद शुक्र का अंतर प्रारंभ होगा। केतु चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं जबकि शुक्र एकादश भाव

में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा इच्छित परिणामों को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। परिवार में इस समय सुख शान्ति बनी रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे एवं एक दूसरें को सहयोग प्रदान करेंगे। व्यापार में भी आपको सफलता मिलेगी एवं आप उन्नति मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही कुछ नवीन योजनाएं भी बनेंगी नौकरी में पदोन्नति के अवसरों में वृद्धि होगी तथा अधिकारी वर्ग आपसे संतुष्ट तथा प्रभावित रहेंगे। आर्थिक स्थिति में भी इस समय अनुकूलता रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होता रहेगा एवं आयसाधनों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी वांछित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा आपसी विश्वसनीयता के भाव में वृद्धि होगी। साथ ही अन्तमन से भी सहायता प्राप्त होगी। परन्तु यात्राओं से कोई लाभ नहीं होगा।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा इस समय आपकी महत्वकांशी योजनाएं सफल होंगी तथा व्यापार में भी कई सुअवसरो की की प्राप्ति होगी जिससे आपको वांछित लाभ मिलेगा। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी एवं वे आपसे प्रभावित रहेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही प्रभावशाली लोगों से आपके सम्बंध स्थापित होंगे तथा उनसे आपको भविष्य में लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा इसके अतिरिक्त शुभ एवं लाभदायक यात्राएं भी होंगी जिनसे भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे। अतः ऐसे समय का सदुपयोग करने के लिए तत्पर रहें।

फलादेश - 2027

इस वर्ष में बृहस्पति आपकी कुंडली में द्वितीय भाव में गोचरवश परिभ्रमण करेगा। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी स्थिति सुदृढ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस समय आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती हैं। परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण मानसिक असंतुष्टि रहेगी। इस वर्ष में सामाजिक क्षेत्र में आप की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपको इच्छित आदर प्रदान करेंगे। धर्म के प्रति भी इस समय आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा तथा धार्मिक कर्मों को सम्पन्न करने में आप रुचिशील रहेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद संबन्धी या व्यापारिक क्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा तभी भी ओजस्चिता युक्त रहेगी। फलतः सभी लोग आपकी वातों को ध्यान पूर्वक सुनेंगे। परन्तु अन्य गोचरफल तथा दशा फल अशुभ रहेंगे। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में न्यूनता रहेगी जिससे यदा कदा आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे तथा अत्यन्त परिश्रम तथा संघर्ष करेंगे।

इस वर्ष में शनि की स्थिति गोचरवश दशम भाव में रहेगी। अतः यह समय आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा। इस समय व्यापारिक क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन के विषय में भी आप सोच सकते हैं। राजनैतिक क्षेत्र में आपको किसी पद की प्राप्ति होगी या राजनैतिक लोगों से आपके सम्बन्ध बनेंगे। नौकरी या अन्य कार्य क्षेत्र में भी आपकी पदोन्नति के आसार बनेंगे। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। फलतः धनाभाव नहीं रहेगा परन्तु स्वास्थ्य के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए क्योंकि ऐसे समय में आप रक्तचाप संबन्धी कष्ट से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। इसके साथ ही गोचर फल एवं दशा फल आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेंगे। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता की अनुभूति हो सकती है। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि के लिए अत्यन्त ही संघर्ष एवं परिश्रम करना पड़सकता है।

इस वर्ष में गोचरीय भ्रमण के अनुसार राहु की स्थिति सप्तम तथा केतु की प्रथम में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा एवं यथा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी हो सकता है। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष से सम्पन्न होंगे। तभी किंचित लाभ एवं सुख की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक स्थिति भी इस समय सामान्य ही रहेगी एवं व्ययाधिक्य के कारण यदा कदा कोई परेशानी भी हो सकती है। व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस समय साझेदार या सहयोगियों से आपके लिए न्यूनाधिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है अतः इनसे इस समय पूर्ण सतर्क रहना चाहिए। इस समय आपको अपने समस्त सांसारिक कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करना चाहिए।

इसके साथ ही अन्य गोचर एवं दशा का प्रभाव भी शुभ नहीं रहेगा। जिससे कार्य या

व्यापार आदि में परेशानियां रहेंगी तथा आय स्रोतों में भी व्यवधान आएंगे। अतः शुभ फलों में वृद्धि तथा अशुभ फलों में न्यूनता करने के लिए आपको राहु केतु की नियमित पूजा जप तथा दानादि कार्य सम्पन्न करने चाहिए।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र पंचम् भाव में कर्क राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं उत्तम फलदायक रहेगा। इस समय व्यापार में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा कुछ महत्वकांक्षी योजनाए भी कार्यान्वित होंगी। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर मिलेंगे तथा अधिकारी वर्ग एवं वरिष्ट सहयोगियों से सम्बंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही बेरोजगारों को ऐसे समय में रोजगार की प्राप्ति हो सकती है। पारिवारिक सुख शान्ति भी इस समय उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में प्रेमपूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय परिवार में कोई शुभ या मांगलिक उत्सव सम्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लोगो से सम्पर्क स्थापित होंगे। तथा अवसरानुकूल उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग मिलेगा। अतः ऐसे समय का सदुपयोग करने के लिए तत्पर रहें।

फलादेश - 2028

बृहस्पति इस वर्ष आपकी कुंडली में द्वितीय भाव में प्रवेश करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन का लाभ प्राप्त करने आप समर्थ रहेंगे। पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। तथा लोग परस्पर प्रेमपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की भी प्राप्ति हो सकती है। लेकिन कभी कभी व्यय की भी अधिकता होगी जिससे आप का मन खिन्न रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष शुभ रहेगा तब समाज में एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आदरणीय समझे जाएंगे। धार्मिक कर्मो में भी आपको रुचि उत्पन्न होगी व वाणी में मधुरता तथा ओजस्विता का भाव आएगा एवं अन्य लोग आपकी वातो से प्रभावित होंगे। इस वर्ष में जायदाद या व्यापारिक क्षेत्र में भी आप इच्छित लाभ अर्जित करेंगे। परन्तु इस वर्ष में आय गोचरफल अधिक शुभ नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की समय समय पर प्राप्ति होगी परन्तु दशाफल अनुकूल फल प्रदान करेगी तथापि यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास अवश्य होगा। परन्तु शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक होगी यद्यपि इसके लिए आपको अतिरिक्त परिश्रम तथा संघर्ष करना पड़ेगा।

इस वर्ष में गोचरवश स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं उन्नतिकारक रहेगा। इस समय व्यापारिक क्षेत्र में आप उन्नति या कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकते हैं। साथ ही राजनीति में संलग्न हों तो उसमें आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से आपका संबन्ध बढ़ेगा। नौकरी या अन्य कार्य क्षेत्र में भी पदोन्नति की संभावनाएं प्रबल होंगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। इस समय रक्तचाप सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती हैं। इसके साथ ही आय गोचर फल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा विलम्ब तथा न्यूनता परिलक्षित होगी परन्तु अंतिम परिणाम सन्तोषजनक रहेगा।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतः इस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकददमें आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्धि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल

प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

इस वर्ष मंगल की महादशा प्रारंभ हो रही है। इससे विदित होता है इस समय आपकी जीवन शैली तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा। इस वर्ष का प्रारंभ चन्द्र की महादशा में शुक्र के अंतिम अंतर से हो रहा है और वर्ष की समाप्ति मंगल की महादशा में मंगल के प्रथम अंतर से होगी। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी द्वितीय भाव में मेष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं सम्मानवर्धक रहेगा। इस समय आपकी आकांक्षाएं तथा आशायें पूरी होंगी तथा व्यापार में इच्छित लाभ की प्राप्ति होगी। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति की सम्भावना प्रबल होगी तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में मधुरता रहेगी जिससे वे आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। परिवार के सदस्यों का आपके प्रति सहयोग का भाव रहेगा तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सदभाव की भावना रहेगी इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से आपको समयानुकूल इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा तथा आपस में विश्वसनीयता के भाव में भी वृद्धि होगी। अतः ऐसे समय का यत्नपूर्वक सदुपयोग करने के लिए तत्पर रहें।

यह समय आपके लिए उन्नति एवं लाभदायक रहेगा इस समय आपके उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यदा समय पूर्ण होंगे साथ ही प्रभावशाली व्यक्तियों से भी सम्पर्क स्थापित होंगे जिनसे भविष्य में लाभ होने की प्रबल संभावनाएं बनेंगी। आर्थिक दृष्टि से स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे ऐसे समय में आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन सांसारिक व्यय में भी वृद्धि होगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी परन्तु किसी पारिवारिक सदस्य का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मित्रवर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा यात्राओं से लाभ होगा व्यापार में इस समय विस्तार की संभावना रहेगी तथा नौकरी आदि के क्षेत्र में पदोन्नति के अवसर बनेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुवर्ग को भी पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे अतः ऐसे समय का आपको सदुपयोग करना चाहिए।

फलादेश - 2029

बृहस्पति का इस वर्ष में गोचरवश तृतीय भाव में परिभ्रमण होगा। अतः इसके प्रभाव से आप दूर समीप की यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको न्यूनाधिक लाभ की प्राप्ति होगी। साहित्य एवं दर्शन के प्रति इस समय आपके मन में अध्ययन की रुचि भी उत्पन्न हो सकती हैं। पुराने मित्रवर्ग से इस वर्ष आपको लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा अवीन नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी जिनसे भविष्य में आपको लाभ एवं सहयोग की संभावना रहेंगी। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशाल हृदयता का प्रदर्शन करेंगे। फलतः समाज में भी मान सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु आय गोचरफल इस समय अच्छा नहीं रहेगा लेकिन दशा फल शुभ रहेगा अतः उपर्युक्त शुभ फलों में आपको यदा कदा न्यूनता दृष्टिगोचर होगी परन्तु अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष से आप शुभ फल अर्जित कर सकेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश स्थिति दशम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं उन्नतिकारक रहेगा। इस समय व्यापारिक क्षेत्र में आप उन्नति या कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन कर सकते हैं। साथ ही राजनीति में संलग्न हों तो उसमें आप किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से आपका संबन्ध बढ़ेगा। नौकरी या अन्य कार्य क्षेत्र में भी पदोन्नति की संभावनाएं प्रबल होंगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। इस समय रक्तचाप सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती हैं। इसके साथ ही आय गोचर फल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा विलम्ब तथा न्यूनता परिलक्षित होगी परन्तु अंतिम परिणाम सन्तोषजनक रहेगा।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतः इस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकदद्में आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्धि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

मंगल की महादशा में मंगल का अंतर 17/01/2029 को समाप्त होगा। उसके बाद

राहु का अंतर प्रारंभ होगा। मंगल द्वितीय भाव में मेष राशि में स्थित हैं जबकि राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए उन्नति एवं लाभदायक रहेगा इस समय आपके उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यदा समय पूर्ण होंगे साथ ही प्रभावशाली व्यक्तियों से भी सम्पर्क स्थापित होंगे जिनसे भविष्य में लाभ होने की प्रबल संभावनाएं बनेंगी। आर्थिक दृष्टि से स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे ऐसे समय में आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन सांसारिक व्यय में भी वृद्धि होगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी परन्तु किसी पारिवारिक सदस्य का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मित्रवर्ग से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा यात्राओं से लाभ होगा व्यापार में इस समय विस्तार की संभावना रहेगी तथा नौकरी आदि के क्षेत्र में पदोन्नति के अवसर बनेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुवर्ग को भी पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे अतः ऐसे समय का आपको सदुपयोग करना चाहिए।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपके मन में आदर्श विचारों की उत्पति होगी तथा कुछ करने के लिए प्रवृत रहेंगे साथ ही कल्पनाशीलता से भी आपके विचारों में दृढता आएगी। अतः नौकरी या व्यापार में उचित क्षेत्र का चुनाव करें क्योकि ईश्वर की कृपा से सफलता का मार्ग आपके लिए खुला है पारिवारिक सुख शान्ति भी इस समय उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही घरेलू उपयोग की वस्तुओं पर प्रचुर मात्रा में व्यय होगा सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी इस समय वृद्धि होगी तथा दूर समीप की कुछ शुभ यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिससे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा एवं भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

फलादेश - 2030

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति का भ्रमण चतुर्थ भाव में रहेगा। अतःयह वर्ष आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस वर्ष आप शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग परस्पर स्नेहपूर्वक रहेंगे। इस वर्ष आपकी विगत सोचे हुए योजनाएँ तथा महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में भी इस समय आपकी उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। साथ ही समाज से आपको यथोचित मान सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आप आवास, जायदाद या वाहन संबन्धी सुख भी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस वर्ष माता तथा ससुराल से भी लाभ के योग बनेंगे। साथ ही इस वर्ष में आयगोचरफल तथा दशा भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में शनि गोचरवश एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके व्यापारिक, राजनैतिक या अन्य कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी तथा इसमे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में सर्वत्र वृद्धि होगी तथा प्रचुरमात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी समाज में आपकी कीर्ति बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं प्रतिभा के अनुरूप ही आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस समय आपके समस्त प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इनमें उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे परन्तु सन्तति पक्ष एवं स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए साथ ही आय गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं भाग्यशाली सिद्ध होगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु पंचम तथा केतु एकादश भाव में भ्रमण करेगा। इनके प्रभाव से इस वर्ष आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा मन में अनावश्यक चिन्ता तथा परेशानियों का अभाव रहेगा। इस समय आपके प्रेम प्रसंग स्थापित होने की संभावना रहेगी। साथ ही सन्तति पक्ष से आपको संतुष्टि मिलेगी तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही अनायास ही धन या लाभ प्राप्ति के योग भी बनेंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय उन्नति होती रहेगी एवं किसी राजनैतिक महत्व के व्यक्ति या उच्चाधिकारी वर्ग से आपका सम्बन्ध होगा जिससे भविष्य में आपको इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आय गोचरफल तथा दशाफल भी शुभ ही रहेंगे। अतः वर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

मंगल की महादशा में राहु का अंतर 05/02/2030 को समाप्त होगा। उसके बाद गुरु का अंतर प्रारंभ होगा। राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि गुरु एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आपमें साहस तथा आत्मविश्वास की कमी रहेगी जिससे सांसारिक महत्व के कार्यों में को पूर्ण करने में असमर्थ रहेंगे तथा सुअवसरों की न्यूनता रहेगी जिससे उन्नति एवं लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा जिससे वे आपके लिए परेशानियां उत्पन्न कर सकते है परिवार के सदस्यों से भी वांछित लाभ एवं सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में स्नेह एवं सहयोग के भाव में कमी रहेगी। इसके अतिरिक्त सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता आएगी परन्तु दूर समीप की यात्राओं से लाभ एवं सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगे।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा इस समय आपकी महत्वकांक्षा पूर्ण नहीं होगी तथा आर्थिक दृटि से परेशानी का सामना करना पड़ेगा साथ ही लाभ मार्ग भी अवरुद्ध होंगें। व्यापार में उन्नति के मार्ग में बाधाएं आएंगी तथा सन्तोषजनक परिणाम नहीं मिलेंगे यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति में विलम्ब तथा व्यवधान उत्पन्न होगा। तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा। तथा वे आपसे असन्तुष्ट तथा अप्रसन्न रहेंगे धन की कमी के कारण घरेलू उपयोग के उपकरणों का क्रय भी नहीं होगा साथ ही महत्वपूर्ण सम्बंधों में भी न्यूनता आएगी इसके अतिरिक्त अनावश्यक तथा व्यर्थ की यात्राएं भी होंगी लेकिन मित्रवर्ग से सहयोग मिलता रहेगा। अतः धैर्यपूवक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

फलादेश - 2031

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति पंचम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय ज्ञानार्जन करने में आपकी रुचि रहेगी तथा विभिन्न विषयों का आप रुचि पूर्वक अध्ययन करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में आय होगी एवं आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो प्रेमप्रसंग चलने की संभावना रहेगी। व्यापारिक क्षेत्र में तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय अनुकूल रहेगा। इस समय मंत्रीगण या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा उनसे आप वांछित मात्रा में लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। सन्तति पक्ष से इस समय आप निश्चिंत रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके साथ ही इस वर्ष में आय गोचरफल तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी अतः समय शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए उत्तम रहेगा।

इस वर्ष में शनि गोचरवश एकादश भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके व्यापारिक, राजनैतिक या अन्य कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी तथा इसमे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में सर्वत्र वृद्धि होगी तथा प्रचुरमात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपकी समाज में आपकी कीर्ति बढेगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं प्रतिभा के अनुरूप ही आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इस समय आपके समस्त प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इनमें उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे परन्तु सन्तति पक्ष एवं स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति आपको सतर्क रहना चाहिए साथ ही आय गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं भाग्यशाली सिद्ध होगा।

इस वर्ष में गोचरवश राहु पंचम तथा केतु एकादश भाव में भ्रमण करेगा। इनके प्रभाव से इस वर्ष आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा मन में अनावश्यक चिन्ता तथा परेशानियों का अभाव रहेगा। इस समय आपके प्रेम प्रसंग स्थापित होने की संभावना रहेगी। साथ ही सन्तति पक्ष से आपको संतुष्टि मिलेगी तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही अनायास ही धन या लाभ प्राप्ति के योग भी बनेंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय उन्नति होती रहेगी एवं किसी राजनैतिक महत्व के व्यक्ति या उच्चाधिकारी वर्ग से आपका सम्बन्ध होगा जिससे भविष्य में आपको इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आय गोचरफल तथा दशाफल भी शुभ ही रहेंगे। अतः वर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

मंगल की महादशा में गुरु का अंतर 12/01/2031 को समाप्त होगा। उसके बाद शनि का अंतर प्रारंभ होगा। गुरु एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आपको कुछ सुअवसरों की प्राप्ति होगी। जिनका सदुपयोग करके आप उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। मित्रवर्ग से भी पूर्ण लाभ तथा सहयोग मिलेगा तथा आपस में विश्वास का भाव भी विद्यमान रहेगा व्यापार के लिए समय लाभदायक रहेगा परन्तु नवीन कार्य प्रारम्भ करने की उपेक्षा करें। यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति के योग बनेंगे एवं अधिकारी वर्ग भी आपसे सन्तुष्ट तथा प्रभावित रहेगा। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी उत्तम रहेगा तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही ऐसे समय में अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राएं लाभदायक होने की सम्भावना बनेगी। अतः समय का सदुपयोग करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपको सन्तोषजनक परिणामों की प्राप्ति होगी तथा समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करने में सफल रहेंगे। व्यापार में आपको अल्पपरिश्रम से ही वांछित लाभ तथा सफलता मिलेगी साथ ही नवीन पूंजीनिवेश या कार्य के प्रारम्भ होने की सम्भावना रहेगी आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा। पारिवारिक सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय आपके लाभदायक सम्पर्क भी स्थापित भी होंगे तथा पुराने ऋण को भी चुकाने में सफल रहेंगे। लेकिन दूर समीप की यात्राओं से कोई विशेष लाभ या उन्नति नहीं होगी अतः यात्राओं की इस समय उपेक्षा करें।

फलादेश - 2032

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी अतः यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में आपकी उन्नति होगी तथा अनायास ही किसी सफलता के योग बनेंगे। इस समय वेरोजगारो के रोजगार मिलने के भी अवसर आएंगे। इस समय अविवाहितों का विवाह भी सम्पन्न हो सकता है। स्त्री से आप इस वर्ष पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धो में भी मधुरता रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय समाज में आपके प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे। परन्तु यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आय गोचरफल अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशाफल शुभ रहेगा। अतः शुभ फलों की अधिकता रहेगी परन्तु यदा कदा अशुभ फल भी घटित होंगे।

इस वर्ष शनि का भ्रमण द्वादश भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी साथ ही कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी होने की संभावना रहेगी। इस समय आप अपने स्तर पर योजनाएं तैयार करेंगे तथा उनको पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। परन्तु ऐसे समय में आप शारीरिक दृष्टि से या मानसिक दृष्टि से परेशानी भी होगी तथा कभी कभी अत्यन्त ही उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही समाज में अन्य जनों से यदा कदा वाद विवाद भी हो सकता है। इस वर्ष में आप अपने बन्धु, मित्र तथा अन्य शुभ चिन्तकों से कोई विशेष सहयोग या सहायता पाने में असफल रहेंगे तथा अपने ही बल पर अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आय गोचर फल आपको अशुभ फल प्रदान करेंगे लेकिन दशा फल शुभ फल प्रदन करेगी। अतः उपर्युक्त फलों न्यूनाधिक अशुभ फल समय समय पर प्रदर्शित होते रहेंगे। अतः यदा कदा आप मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे। अतः अनुकूल एवं शुभ फलो की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए।

गोचरवश इस वर्ष में आपकी कुळँली में राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से इस समय आप प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपने समय को व्यतीत करेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद सम्बन्धी कोई क्रय विक्रय कर सकते हैं या वाहन आदि के भी क्रय विक्रय की भी संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में परिश्रमपूर्वक सफल रहेंगे। आपके आय स्रोतों में भी इस समय वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप सामान्यतया उन्नतिशील रहेंगे एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ समय समय पर हो सकती हैं। लेकिन गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथापि दशा शुभ फल प्रदान करेगी । अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भी आभास होगा

परन्तु अन्ततोगत्वा शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

मंगल की महादशा में शनि का अंतर 21/02/2032 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं जबकि बुध दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको इच्छित परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी तथा विगत सोची समझी योजनाओं में परिश्रम करने पर भी सफलता नहीं मिलेगी। व्यापार में भी आपको अनावश्यक समस्याओं तथा बाधाओं का सामना करना पड़ेगा आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको समय समय पर आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी न्यूनता रहेगी तथा सदस्यों का आपस में मतभेद तथा वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे एक दूसरे को सहयोग नहीं देंगे मित्रवर्ग से भी सहयोग में न्यूनता रहेगी। शत्रु वर्ग से भी परेशानी हो सकती है अतः सयंमपूर्वक कार्य करें।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आत्मविश्वास तथा साहस के भाव में न्यूनता रहेगी जिससे उन्नति तथा लाभ मार्ग में समस्याएं उत्पन्न होगी साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में भी स्थिति प्रतिकूल रहेगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में अनावश्यक विलम्ब होगा एवं अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा पारिवारिक सुख शांति एवं समृद्धि में भी न्यूनता रहेगी तथा सदस्यों का परस्पर असहयोग एवं मतभेद रहेगा। सामजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा विशिष्ट उपलब्धि अर्जित करने में असमर्थ रहेंगे इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होगी लेकिन शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे अतः ऐसे समय को संयम एवं बुद्धिमत्ता पूर्वक व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2033

इस वर्ष गोचरवश बृहस्पति अष्टम भाव में भ्रमण करेगा इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप अशान्ति एवं असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे तथा क्रोध की भी प्रबलता रहेगी। अतः आपके सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत पराक्रम एवं परिश्रम से सफल होंगे तथा संघर्ष से ही आपको इच्छित सम्मान एवं सुख प्राप्त होगा व्यापार नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में इस समय व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु इनका सामना करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आपका कोई मुकद्दमा भी प्रारंभ हो सकता है। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय की भी अधिकता रहेगी। परन्तु आय स्रोतों में वृद्धि करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस वर्ष ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा इनका ज्ञानार्जन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे।

इसके साथ ही अन्य गोचर तथा दशाफल भी विशेष शुभ नहीं रहेंगे अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान आएंगे तथा परिश्रम पूर्वक ही आप समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। अतः बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभाव में वृद्धि करने के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति के व्रत, पूजन तथा दान आदि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष में गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी तथा कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी हो सकती है। इस समय आप अपने स्तर पर किसी बडी योजना का कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं। इस वर्ष आपको अपने कार्यों को पूर्ण करने में कई प्रकार की बाधाओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से वाद विवाद आदि के भी योग बनेंगे। मित्र बन्धुओं तथा अन्य शुभचिन्तकों से भी आपको इस समय कोई विशेष सहयोग नहीं मिलेगा एवं स्वपरिश्रम तथा बुद्धिबल से ही आप अपने कार्यों को पूर्ण करने में सफल हो सकते हैं। इसके साथ ही आपकी मानसिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं रहेगी तथा मन में उद्विग्नता तथा अशान्ति बनी रहेगी। इस वर्ष में आपके आय गोचरफल तथा दशाभी अशुभ फल ही प्रदान करेंगी। अतः यह समय आपके लिए काफी संघर्षपूर्ण रहेगा। शनि की साढेसाती के प्रभाव को दूर करने के लिए आपको शनि का पूजन एवं दान करना चाहिए। इससे आपको अशुभ फलों में निश्चित रूप से न्यूनता की अनुभूति होगी।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति तृतीय तथा केतु की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा। इस समय आपके पराक्रम एवं मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी आपसे पराजित होंगे। मानसिक रूप से आप इस समय सामान्यतया प्रसन्न तथा निश्चिन्त रहेंगे एवं शान्तिपूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके आप आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से कार्यक्षेत्र में भी आप

उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में मित्रों से आपको पूर्ण लाभ तथा सुख मिलेगा परन्तु बन्धुवर्ग से यदा कदा कोई परेशानी हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में गोचर तथा दशाफल अशुभ फल प्रदान करेंगे। अतः उपर्युक्त अशुभ फलों में यदा कदा न्यूनता रहेगी। इसलिए अपने समस्त कार्यों को संयम एवं बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करें।

इस वर्ष मंगल की महादशा में तीन ग्रहों की अंतर्दशा रहेगी। इस वर्ष बुध का अंतर 17/02/2033 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु अंतर्दशा प्रारंभ होगी तथा 16/07/2033 तक चलेगी। इस वर्ष का अंत शुक्र की अंतर्दशा में होगा। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी द्वितीय भाव में मेष राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अनुकूल नहीं रहेगा इस समय बिना योजना बनाए कार्य को प्रारंभ करने से आपको इच्छित परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी। व्यापार में लाभ एवं उन्नति मार्ग अवरुद्ध रहेंगे तथा हानि की भी संभावना रहेगी साथ ही नवीन कार्य या योजना का भी ऐसे समय में विस्तार नहीं होगा। नौकरी के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा पदोन्नति संबधी व्यवधान तथा विलम्ब उत्पन्न होंगे साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी संबधों में तनाव रहेगा। बेरोजगारों को भी ऐसे समय रोजगार की प्राप्ति नहीं होगी पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में अल्पता रहेगी तथा परस्पर सहयोग के भाव का अभाव रहेगा। लेकिन प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके स्म्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः धैर्य पूर्वक समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा इस समय सन्तोषजनक परिणाम अर्जित करने में आप असमर्थ रहेंगे अतः इच्छित फलों की प्राप्ति के लिए आपको अतिरिक्त परिश्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। व्यापार में भी आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे उन्नति तथा लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे इस समय कोई नवीन पूंजी नहीं करना चाहिए। यदि नौकरी में है तो पदन्नति में विलम्ब होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव के कारण वे आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति भी अच्छी नहीं रहेगी तथा सदस्यों का आपस में मतभेद रहेगा तथा आपसी समझबूझ के कारण अनावश्यक दिक्कत होती रहेंगी इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से सहयोग में कमी आएगी तथा विश्वसनीयता भी प्रभावित होगी।

यह समय आपके लिए शुभ फलदायक नहीं रहेगा इस समय आपकी कोई भी योजना कार्यान्वित नहीं होगी तथा सुअवसरों में प्रायः न्यूनता रहेगी साथ ही व्यापार में भी अनावश्यक परेशानी तथा समस्याओं का कामना करना पड़ेगा। यदि नौकरी में है तो अधिकार वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा साथ ही पदोन्नति सम्बंधी व्यवधान तथा विलम्ब होगा। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं आय स्रोतों की कमी के कारण आपको समय समय पर धनाभाव सम्बंधी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे समय में महत्वपूर्ण सम्पर्कों में न्यूनता आएगी। अतः समय धैर्यपूर्वक व्यतीत करें परन्तु लाभदायक एवं सम्मानवर्धक यात्राएं होगी। जिनसे भविष्य के लिए नवीन योजनाएं स्थापित होंगी।

फलादेश - 2034

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा अन्य जनों के परोपकार सम्बन्धी कार्य भी सम्पन्न करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण रुके हुए कार्य बन जाएँगे तथा व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी नवीन लाभदायक योजनाओं का प्रारम्भ होगा। साथ ही नौकरी या राजनैतिक क्षेत्र में भी आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति होगी। समाज में इस समय आप एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में उभर सकेंगे तथा मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि में भी वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष शुभ रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। गोचरफल इस वर्ष अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा फल शुभ रहेगी अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्पता का आभास होगा परन्तु सामान्यतया परिणाम सुखद ही रहेंगे।

इस वर्ष शनि का भ्रमण द्वादश भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अधिक होंगी साथ ही कोई विदेश सम्बन्धी यात्रा भी होने की संभावना रहेगी। इस समय आप अपने स्तर पर योजनाएं तैयार करेंगे तथा उनको पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। परन्तु ऐसे समय में आप शारीरिक दृष्टि से या मानसिक दृष्टि से परेशानी भी होगी तथा कभी कभी अत्यन्त ही उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही समाज में अन्य जनों से यदा कदा वाद विवाद भी हो सकता है। इस वर्ष में आप अपने बन्धु, मित्र तथा अन्य शुभ चिन्तकों से कोई विशेष सहयोग या सहायता पाने में असफल रहेंगे तथा अपने ही बल पर अपने कार्यों को पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आय गोचर फल आपको अशुभ फल प्रदान करेंगे लेकिन दशा फल शुभ फल प्रदन करेगी। अतः उपर्युक्त फलों न्यूनाधिक अशुभ फल समय समय पर प्रदर्शित होते रहेंगे। अतः यदा कदा आप मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति करेंगे। अतः अनुकूल एवं शुभ फलो की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए।

गोचरवश इस वर्ष राहु की स्थिति तृतीय तथा केतु की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपके पराक्रम एवं मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी पराजित होंगे वे आपका प्रभाव स्वीकार करेंगे। मानसिक स्थिति इस वर्ष में अच्छी रहेगी तथा निश्चिन्त एवं शान्त होकर आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। इस समय आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी आप परिश्रम पूर्वक स्वपराक्रम से किसी विशिष्ट उन्नति या सफलता को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। मित्रवर्ग से इस समय आपको इच्छित सहयोग मिलेगा परन्तु बन्धुवर्ग से कोई चिन्ता हो सकती है। इसके साथ ही अन्य गोचरफल अशुभ रहेंगे परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः इस वर्ष में उपर्युक्त शुभ फलों की ही अधिकता रहेगी तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में यदा कदा ही प्राप्त होंगे।

मंगल की महादशा में शुक्र का अंतर 15/09/2034 को समाप्त होगा। उसके बाद सूर्य का अंतर प्रारंभ होगा। शुक्र एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि सूर्य दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय व्यापार में आपको विशेष सफलता नहीं मिलेगी तथा अन्यत्र भी महत्वपूर्ण योजनाएं सफल नहीं होंगी। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से सम्बधों में तनाव रहेगा बेरोजगारों को भी उचित रोजगार प्राप्त नहीं होगा। आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा आय स्रोतों में कमी के कारण यदा कदा आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। साथ ही परिवार में अशांति का वातावरण बना रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति सहयोग के भाव की कमी रहेगी। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण सम्पर्कों में भी न्यूनता रहेगी। लेकिन भविष्य के लिए आशाचित रहें।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा। इस समय आपमें साहस तथा आत्मविश्वास के भाव में न्यूनता रहेगी। साथ ही व्यापार या अन्य कार्यों में उत्तम योजना के अभाव में सफलता अल्प मात्रा में प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति अच्छी नहीं होगी तथा धनार्जन में न्यूनता आएगी एंव लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे। इस समय समाज या जनता से आपको उपेक्षा का भाव भी मिल सकता है। मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी वांछित सहयोग अल्प ही मिलेगा तथा पारिवारिक शांति तथा समृद्धि में भी अल्पता का भाव रहेगा। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से इस समय आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा तथा मुकद्दमे आदि में भी हार हो सकती है। लेकिन दशा के अंतिम चरण में आप उपरोक्त समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में समर्थ हो सकते है।

फलादेश - 2035

गोचरवश इस वर्ष में बृहस्पति दशम भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए काफी महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग या राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके मधुर सम्बन्ध बनेंगे। फलतः इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। इस वर्ष में आपको राज्यस्तर पर किसी सम्मान से सम्मानित भी किया जा सकता हैं। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा सभी लोग प्रेमपूर्वक रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। लेकिन इस समय विश्राम का अभाव रहेगा तथा सांसारिक कार्यों को संपन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस समय अन्य लोगो से आपको शालीनता का व्यवहार भी करना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोचरफल अशुभ परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष सामान्यतया शुभ रहेगा।

गोचरवश शनि की स्थिति इस समय आपकी राशि में रहेंगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति तथा असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी शनि के विशेष अनुकूल न होने के कारण परिश्रम एवं संघर्ष से ही सम्पन्न होंगे तथा इसमें आपको आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्त्री का स्वास्थ्य भी इस समय मध्यम रहेगा परन्तु संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति भी मध्यम रहेगी परन्तु कार्य क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक सफलता मिल सकेगी। नौकरी या राजनीति में आपकी पदोन्नति में विलम्ब की भी संभावना रहेगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी इस समय मध्यम ही रहेगी।

इसके साथ ही अन्य दशा एवं गोचर फल भी सामान्य फलदायक रहेंगे अतः इच्छित सफलता अर्जित करने के लिए आपको परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। साथ ही शनि के साढ़ेसाती के प्रभाव को भी अल्प करने के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करें तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करें। इससे आप मानसिक शान्ति तथा अन्यत्र सफलता अर्जित करने में सफल रहेंगे।

इस वर्ष में राहु की स्थिति गोचर वश द्वितीय तथा केतु की अष्टम भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता भी उत्पन्न होगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी सामान्य ही रहेगी परन्तु पारिवारिक जनों के परस्पर संबंधों में यदा कदा मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा न्यूनाधिक सफलता भी आपको प्राप्त होगी। साथ ही आर्थिक स्थिति भी मध्यम रहेगी तथा आवश्यक धनार्जन होता रहेगा परन्तु व्यय भी अधिक होगा लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प रहेगा। इसके अतिरिक्त इस वर्ष में आप जायदाद संबंधी लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं ।

इस समय आपके लिए अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः कार्य क्षेत्र की उन्नति में समस्याएं आएंगी परन्तु आप अपने पराक्रम एवं परिश्रम से उनका समाधान करने में समर्थ हो सकेंगे। साथ ही अधिक मात्रा में शुभ फल की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से राहु एवं केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष राहु की महादशा प्रारंभ हो रही है। इससे विदित होता है इस समय आपकी जीवन शैली तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा। इस वर्ष का प्रारंभ मंगल की महादशा में सूर्य के अंतिम अंतर से हो रहा है और वर्ष की समाप्ति राहु की महादशा में राहु के प्रथम अंतर से होगी। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। सूर्य की स्थिति केन्द्र में होने के कारण आपमें आत्मविश्वास तथा साहस की अल्पता रहेगी फलस्वरूप शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होगी। साथ ही सोचे हुए कार्य एवं आकाक्षांएं भी अपूर्ण रहेंगी। सामाजिक एवं कार्य क्षेत्र में भी आपकी उन्नति या स्तर की संभावना अल्प ही रहेगी तथा किसी उल्लेखनीय परिवर्तन की कोई संभावना नहीं होगी। इस समय प्रभावशाली लोगों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा उनसे इच्छित सहयोग में न्यूनता आयेगी मित्र एवं शुभ चिन्तकों से भी ऐसे समय में साहस तथा सहानुभूति कम ही मिलेगी। यदि आप सतर्क नहीं रहेंगे तो शत्रु या प्रतिद्वन्दियों से आपको परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि में कमी रहेगी तथा लोगों के परस्पर तनाव तथा मतभेद रहेंगे। लेकिन दशा के उत्तरार्द्ध में उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा स्वपरिश्रम से आप किंचित शुभ फल प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

यह समय आपके लिए विशेष अनुकूल नहीं रहेगा किसी भी प्रकार की विशिष्ट उपलब्धि सम्भव नहीं हो सकेगी साथ ही दूर दृष्टि के अभाव में सांसारिक महत्व के कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी व्यापार में भी आपको असफता ही मिलेगी तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेंगा जिससे कार्य क्षेत्र में पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा वे भी आपसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। परिवार में भी सुख शान्ति का अभाव रहेगा तथा सदस्यों का आपस में तनाव तथा मतभेद रहेंगा घरेलू व्यय में भी न्यूनता आएगी तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी कमी आएगी इसके अतिरिक्त अनिच्छत तथा व्यर्थ की यात्राएं होंगी परन्तु मित्रवर्ग से सहयोग मिलता रहेगा।

फलादेश - 2036

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि का परिभ्रमण आपकी राशि में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह पराक्रम तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा उनमें आपको सफलता भी समय समय पर मिलती रहेगी। इस समय आपका दाम्पत्य जीवन भी सामान्य रूप से सुखी रहेगा तथा संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा नौकरी एवं राजनीति आदि के क्षेत्र में पदोन्नति की संभावना रहेगी साथ ही आर्थिक स्थिति भी अच्छी रहेगी एवं पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे।

साथ ही अन्य गोचर एवं दशाफल भी इस समय शुभ फलदायक रहेंगे। अतः वर्ष में सांसारिक कार्यों में आप सामान्य रूप से सफलता अर्जित करेंगे। लेकिन शनि की साढ़ेसाती होने के कारण अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करें एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करें इससे आपको सर्वत्र सफलता प्राप्त होंगी ।

गोचर वश इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में रहेगी अतः इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। इस समय आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम रहेगा यदा कदा मानसिक उद्विग्नता हो सकती है। इस समय आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी लेकिन स्त्री का स्वास्थ्य न्यूनाधिक रूप से प्रभावित रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। कार्य क्षेत्र में भी आपको सफलता मिलती रहेगी। साथ ही मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी। इस समय आपके पुराने सम्पर्कों में कमी आएगी तथा नवीन सर्म्पकों में वृद्धि होगी जिससे आपको भविष्य में लाभ होगा। इसके साथ ही अन्य गोचर तथा दशाफल अनुकूल रहेंगे अतः आपके सांसारिक महत्व के शुभ कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः वर्ष सामान्यतया शुभ

ही रहेगा।

महादशा एवं अंर्तदशा स्वामी दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

फलादेश - 2037

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी सामान्य रहेगी तथा व्यय अधिक होगा जिससे आप अल्प मात्रा में परेशानी की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए आपको अधिक पराक्रम एवं परिश्रम करना पड़ेगा तभी न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की कोई यात्रा सम्पन्न होगी साथ ही इसमें व्यय की भी अधिकता रहेगी जिससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी परन्तु भविष्य में आपकी लाभ की संभावनाएं बन सकती हैं।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यत्न पूर्वक आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति का पूजन व्रत तथा दानादि करना चाहिए।

इस वर्ष में शनि गोचर वश द्वितीय भाव में स्थित रहेगा। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी परन्तु पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। भौतिक एवं आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। मानसिक रूप से भी आप शान्त रहेंगे एवं शान्ति पूर्वक सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इस समय विरोधी के निर्बल होने के कारण व्यापार या नौकरी आदि में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा सामान्य रहेगी। साथ ही शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम दशा का भी प्रभाव रहेगा जिससे यदा कदा आपको उन्नति में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका आप पराक्रम एवं परिश्रम से समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन करना चाहिए तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपके शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष राहु की स्थिति राशि तथा केतु की सप्तम भाव में गोचर वश रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा साथ ही मानसिक रूप से भी यदा कदा आपको परेशानी रहेगी। पति पत्नी के संबंध सामान्य ही रहेंगे तथापि यदा कदा इसमें मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आर्थिक स्थिति इस वर्ष सामान्य रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा आप आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करेंगे लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता की दृष्टि से वर्ष संघर्ष पूर्ण रहेगा तथा परिश्रम से ही आप उन्नति मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। इस समय आपके

पुराने सम्पर्कों में कमी होगी तथा नवीन सम्पर्क स्थापित होंगे जिससे भविष्य में आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल अनुकूल परन्तु दशा फल मध्यम रहेगा। अतः आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा। अतः अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलों में वृद्धि के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन, जप एवं दान करने चाहिए।

महादशा एवं अंर्तदशा स्वामी दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

फलादेश - 2038

बृहस्पति इस वर्ष में गोचरवश प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपको किंचित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इस वर्ष व्यापार या अन्य कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय अविवाहितों के विवाह की भी संभावना बढ़ेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। एवं यत्नपूर्वक आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। साथ ही विगत रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको सफलता मिलेगी। आप स्वतन्त्र प्रवृति का अनुपालन करेंगे एवं अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझने लगेंगे। अतः यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण परन्तु विश्रामरहित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल अशुभ होने से परन्तु दशा फल अनुकूल रहने से उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता का आभास होगा। परन्तु परिश्रम करने के उपरान्त आप सकरात्मक फल प्राप्त करने में सफल होंगे।

इस वर्ष में शनि गोचर वश द्वितीय भाव में स्थित रहेगा। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी परन्तु पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। भौतिक एवं आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। मानसिक रूप से भी आप शान्त रहेंगे एवं शान्ति पूर्वक सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इस समय विरोधी के निर्बल होने के कारण व्यापार या नौकरी आदि में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा सामान्य रहेगी। साथ ही शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम दशा का भी प्रभाव रहेगा जिससे यदा कदा आपको उन्नति में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका आप पराक्रम एवं परिश्रम से समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन करना चाहिए तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपके शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

इस वर्ष में राहु को गोचरीय भ्रमण द्वादश भाव में तथा केतु का षष्ठ भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभाशुभ फल प्रदान करेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक रूप से भी आप या कदा अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपकी लम्बी दूरी की यात्राएँ तथा विदेश सम्बन्धी कोई यात्रा हो सकती है। इनमें आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही मनोरंजन सम्बन्धी कार्यों में भी आप अधिक व्यय करेंगे। फलतः इस वर्ष में आपको यदा कदा आर्थिक परेशानी हो सकती है। लेकिन षष्ठ भाव में स्थित केतु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। फलतः सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इस समय शत्रु तथा प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में आपको सफलता प्राप्त

होगी। लेकिन इस समय आप नेत्र सम्बन्धी कष्ट से परेशान हो सकते हैं। साथ ही इस वर्ष में गोचरफल अशुभ रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा अल्प मात्रा में प्राप्त होंगे परन्तु अशुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे।

राहु की महादशा में राहु का अंतर 04/05/2038 को समाप्त होगा। उसके बाद गुरु का अंतर प्रारंभ होगा। राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं जबकि गुरु एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपके मन में आदर्श विचारों की उत्पति होगी तथा कुछ करने के लिए प्रवृत रहेंगे साथ ही कल्पनाशीलता से भी आपके विचारों में दृढता आएगी। अतः नौकरी या व्यापार में उचित क्षेत्र का चुनाव करें क्योकि ईश्वर की कृपा से सफलता का मार्ग आपके लिए खुला है पारिवारिक सुख शान्ति भी इस समय उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही घरेलू उपयोग की वस्तुओं पर प्रचुर मात्रा में व्यय होगा सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी इस समय वृद्धि होगी तथा दूर समीप की कुछ शुभ यात्राएं भी सम्पन्न होंगी जिससे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा एवं भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आपकी इच्छाएँ तथा आकांक्षाएं पूर्ण होगी तथा व्यापार में सर्वत्र उन्नति एवं लाभमार्ग प्रशस्त रहेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के प्रबल योग बनेंगे तथा अधिकारी वर्ग से मधुर सम्बंध रहेंगे तथा वे आपसे सन्तुष्ट एवं प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे तथा उनसे यथोचित लाभ एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। आर्थिक स्थिति में इस समय सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं लाभदायक दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी। जिनसे आपको भविष्य में लाभ तथा आत्मसम्मान प्राप्त होगा मित्रवर्ग से भी सहयोग मिलता रहेगा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी साथ ही घरेलू महत्व की वस्तुओं पर भी व्यय करेंगे अतः समय का सदुपयोग करें।

फलादेश - 2039

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति आपकी कुँडली में द्वितीय भाव में संक्रमण करेगा।अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी पारिवारिक शान्ति एवं समृद्धि बनी रहेगी तथा पुत्र संतति की भी प्राप्ति की संभावना रहेगी। परन्तु यदा कदा व्यय की अधिकता से मन में उद्विग्नता उत्पन्न होगी तथा समाज में आपकी इस समय मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में आप समाज में आदरणीय समझे जाएंगे। इस समय धर्म सम्बन्धी कर्मो में भी आप रुचिशील रहेंगे। साथ ही वाणी की ओजस्विता में भी वृद्धि होगी तथा लोग आपकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। इसके साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में आपके उत्तम संयोग बनेंगे। साथ ही गोचरफल तथा दशाफल भी अनुकूल फल प्रदान करेगी अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रूके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति एकादश तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक दृष्टि से तथा कार्यक्षेत्र की दृष्टि से इस समय आपको इच्छित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। वांछित लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी इस समय आपकी पदोन्नति होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इस समय आपका यश भी दूर दूर तक फैलेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय उत्तम रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे इच्छित मात्रा में लाभ होगा तथा आर्थिक सुदृढता होगी। इस समय आपके स्वभाव में यदा कदा क्रोध सन्तति पक्ष से आप सन्तुष्ट रहेंगे तथा अपने क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही यदा कदा व्यय भी अधिक होगा परन्तु इस समय अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा में गुरु का अंतर रहेगा। गुरु एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। इस समय आपको कुछ सुअवसरों

की प्राप्ति होगी। जिनका सदुपयोग करके आप उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। मित्रवर्ग से भी पूर्ण लाभ तथा सहयोग मिलेगा तथा आपस में विश्वास का भाव भी विद्यमान रहेगा व्यापार के लिए समय लाभदायक रहेगा परन्तु नवीन कार्य प्रारम्भ करने की उपेक्षा करें। यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति के योग बनेंगे एवं अधिकारी वर्ग भी आपसे सन्तुष्ट तथा प्रभावित रहेगा। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि भी उत्तम रहेगा तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही ऐसे समय में अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त दूर समीप की यात्राएं लाभदायक होने की सम्भावना बनेगी। अतः समय का सदुपयोग करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

फलादेश - 2040

इस वर्ष में बृहस्पति तृतीय भाव में गोचरवश भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी दूर समीप की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी। इससे आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस समय साहित्य और दर्शन की ओर आपकी रुचि उत्पन्न होगी। पुराने मित्रों से इस वर्ष में आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी। साथ ही मित्रवर्ग के द्वारा भविष्य में लाभ के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतया अच्छा रहेगा एवं कार्यक्षेत्र में भी उन्नति करते रहेंगे। साथ ही इस समय मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशालहृदयी के रूप में अन्य जनों के सम्मुख अपने आप को प्रस्तुत करेंगे। अतःसमाज से आप को इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस समय आय गोचर तथा दशा फल भी अनुकूल रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रूके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु की स्थिति एकादश तथा केतु की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक दृष्टि से तथा कार्यक्षेत्र की दृष्टि से इस समय आपको इच्छित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। वांछित लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी इस समय आपकी पदोन्नति होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इस समय आपका यश भी दूर दूर तक फैलेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय उत्तम रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी जिससे इच्छित मात्रा में लाभ होगा तथा आर्थिक सुदृढता होगी। इस समय आपके स्वभाव में यदा कदा क्रोध सन्तति पक्ष से आप सन्तुष्ट रहेंगे तथा अपने क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही यदा कदा व्यय भी अधिक होगा परन्तु इस समय अन्य गोचर तथा दशा भी शुभ फल प्रदान करेगी। अतः आप शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

राहु की महादशा में गुरु का अंतर 27/09/2040 को समाप्त होगा। उसके बाद शनि का अंतर प्रारंभ होगा। गुरु एकादश भाव में मकर राशि में स्थित हैं जबकि शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी इच्छाएं तथा

महत्वकांक्षाए पूर्ण होंगी एवं अन्यत्र भी लाभ एवं उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे साथ ही प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण लोगों से आपके सम्बंध स्थापित होंगे जिससे आपको भविष्य में लाभ होगा। व्यापार के लिए यह समय शुभ रहेगा तथा किसी नवीन साझेदारी या से आप सम्पर्क स्थापित करेंगे। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति होगी एवं वरिष्ठ सहयोगी तथा अधिकारियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही ऐसे समय में दूर समीप लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी जिनसे भविष्य में लाभ होगा। परिवार के लोगो से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा आपस में स्नेह एवं सहयोग का भाव बना रहेगा साथ ही घरेलू उपयोग की वस्तुओं पर भी व्यय होगा। इसे अतिरिक्त शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों से आपको सावधान रहना चाहिए।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आपको सन्तोषजनक परिणामों की प्राप्ति होगी तथा समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करने में सफल रहेंगे। व्यापार में आपको अल्पपरिश्रम से ही वांछित लाभ तथा सफलता मिलेगी साथ ही नवीन पूंजीनिवेश या कार्य के प्रारम्भ होने की सम्भावना रहेगी आर्थिक दृष्टि से भी स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा। पारिवारिक सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय आपके लाभदायक सम्पर्क भी स्थापित भी होंगे तथा पुराने ऋण को भी चुकाने में सफल रहेंगे। लेकिन दूर समीप की यात्राओं से कोई विशेष लाभ या उन्नति नहीं होगी अतः यात्राओं की इस समय उपेक्षा करें।

फलादेश - 2041

इस वर्ष में बृहस्पति तृतीय भाव में गोचरवश भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी दूर समीप की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी। इससे आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस समय साहित्य और दर्शन की ओर आपकी रुचि उत्पन्न होगी। पुराने मित्रों से इस वर्ष में आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी। साथ ही मित्रवर्ग के द्वारा भविष्य में लाभ के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतया अच्छा रहेगा एवं कार्यक्षेत्र में भी उन्नति करते रहेंगे। साथ ही इस समय मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशालहृदयी के रूप में अन्य जनों के सम्मुख अपने आप को प्रस्तुत करेंगे। अतःसमाज से आप को इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस समय आय गोचर तथा दशा फल भी अनुकूल रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रूके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपको वांछित सफलता मिलेगी तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में भी इस समय आप किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति कर सकते हैं। इस समय राजनैतिक व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा उनसे आप इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। सामाजिक रूप से इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका यथोचित सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आय गोचरफल तथा दशा फल की अनुकूलता के कारण इस वर्ष में आपको शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा में शनि का अंतर रहेगा। शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं जबकि राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए शुभ एवं उत्तम रहेगा तथा सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके सोचे हुए कार्य तथा योजनाएं भी सफल होंगी। व्यापार के लिए भी

समय शुभ रहेगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से समय शुभ रहेगा एवं आय स्रोतों में वृद्धि करके प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति भी अच्छी रहेगी तथा सभी सदस्य आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे ऐसे समय में परिवार में कोई मांगलिक उत्सव भी हो सकता है। मित्रवर्ग से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शत्रु वर्ग को पराजित तथा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें।

फलादेश - 2042

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रसंशा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

गोचरीय परिभ्रमण के फलस्वरूप इस वर्ष राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव मे रहेगा इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सफल करने में आप समर्थ रहेंगे। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपकी पदोन्नति की संभावना रहेगी समाज में आपका प्रभाव रहेगा। इस समय राजनैतिक महत्व के व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा भविष्य में उनसे लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस वर्ष अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदा कदा वे शारीरिक तथा मानसिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। वाहन सुख

में भी इस वर्ष अल्पता रहेगी। इस समय आयगोचरफल आपके लिए अशुभ रहेंगे परन्तु दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः आप अधिकांशतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे।

इस वर्ष राहु की महादशा में शनि का अंतर रहेगा। शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं जबकि राहु दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में न्यूनता रहेगी तथा सहयोग का अभाव रहेगा। व्यापार में आपको समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा अतः कोई भी पूंजी निवेश सोच समझकर सम्पन्न करें। नौकरी में भी पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब होंगे एवं अधिकारी वर्ग से म्बंधों में तनाव रहेगा तथा आपको अतिरिक्त कार्य भार भी वहन करना पड़ सकता है। मित्रवर्ग से भी कोई सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में विश्वसनीयता के भाव में कमी आएगी इसके अतिरिक्त शत्रुवर्ग से भी परेशानी होगी अतः इनसे आपको पूर्ण सावधान रहना चाहिए। साथ ही अपने स्यवास्थ्य के प्रति ध्यान देना चाहिए।

फलादेश - 2043

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

गोचरीय भ्रमण के अनुसार इस वर्ष में राहु की स्थिति नवम एवं केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी इसके प्रभाव से यह वर्ष अधिकांशतया शुभ ही रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आप इनमें सफलता प्राप्त करेंगे साथ ही भाग्य बल में अल्पता होने से मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। परिवारिक वातावरण में भी इस समय शान्ति

तथा सदभावना कम ही दृष्टिगोचर होगी। लेकिन केतु के प्रभाव से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस समय कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही इस समय गोचरफल अशुभ एवं दशा फल शुभ रहेगा। अतः इस वर्ष में अशुभ फलों के साथ सामान्यतया शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी।

राहु की महादशा में शनि का अंतर 04/08/2043 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि चतुर्थ भाव में मिथुन राशि में स्थित हैं जबकि बुध दशम् भाव में धनु राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए सामान्य फलदायक रहेंगा इस समय आपके रुके हुए कार्य भी सिद्ध होंगे जिससे आपमें नवीन आशाओं का संचार होगा। वयापार में इचिछत उन्नति तथा सफलता मिलेगी एवं इसमें वृद्धि की भी सम्भावना रहेगी आर्थिक स्थिति से भी स्थिति में सुदृढ़ता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे तथा अधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न रहेगा। परिवार में सुख शान्ति भी उत्तम रहेगी तथा सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस समय परिवार में कोई मांगलिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग से भी पूर्ण लाभ तथा सहयोग मिलेगा तथा परस्पर विश्वसनीयता की भावना बनी रहेगी साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा अतः समय का सदुपयोग करें।

यह समय आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा इस समय आप में प्रबल आत्मविश्वास तथा सहयोग के भाव की उत्पत्ति होगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण योजनाओं में वांछित सफलता मिलेगी व्यापार में इच्छित लाभ तथा उन्नति के योग बनेंगे यदि नौकरी में है तो पदोन्नति होगी तथा अधिकारी एवं वरिष्ठ सहयोगियों से मधुर संबध स्थापित होंगे। पारिवारिक सुख शांति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा सभी सदस्य परस्पर स्नेह तथा सम्मान पूर्वक रहेंगे एवं एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश में भी अभिवृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे इसके अतिरिक्त शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित तथा प्रभावित करने में भी समर्थ रहेंगे साथ ही ऐसे समय में लाभ दायक यात्राएं होंगी तथा भविष्य के लिए नवीन आयाम स्थापित होंगे। अतः ऐसे समय का आपको यत्नपूर्वक सदुपयोग करना चाहिए।

दशा विश्लेषण

महादशा :– चन्द्र
(22/08/2018 - 21/08/2028)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्षों की है। आपकी कुण्डली में यह 22/08/2018 को आरम्भ और 21/08/2028 को समाप्त होगी।

चंद्र पंचम भाव में अवस्थित है। पंचम भाव संपत्ति, आनन्द, मनोरंजन, मनोविनोद, विश्राम, वर्ग पहेली, जुआबाजी आदि प्रतियोगी गतिविधियों, लॉटरी प्रेम, उच्च शिक्षा और ज्ञान, अकूत सम्पत्ति तथा आध्यात्मिक गतिविधियों का द्योतक है। अतः यह अवधि आपके लिये आनंद दायक होगी और आपको समृद्धि तथा शांति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी की त्रिकोण में स्थिति के कारण आपका जीवन उत्तम होगा। इस अवधि में किसी बड़े रोग अथवा दुर्घटना की सम्भावना नहीं है और आप सामान्य जीवन का आनन्द लेने में सक्षम होंगे तथा अपने दैनिक कर्त्तव्यों का नियमित रूप से बिना किसी रुकावट के सम्पादन करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा अनुकूल होगी जब पंचम भाव में अवस्थित महादशा के स्वामी की एकादश भाव पर दृष्टि होगी। इस अवधि में आपकी चल–अचल सम्पत्ति में वृद्धि होने की संभावना है। आपकी आय में वृद्धि होगी और आप सुख–साधनों पर व्यय करने की स्थिति को प्राप्त करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

व्यवसाय :

आप निष्कपट, सत्यवादी, भद्र तथा ईश्वर से भयभीत रहने वाले हैं इसलिए आपको सरकारी पद, राज्य की सेवा के अवसर की प्राप्ति होगी। आपकी प्रतिष्ठा और स्थिति से समाज के अन्य लोगों को ईर्ष्या होगी और आपका कोई शत्रु नहीं होगा। सट्टे की ओर प्रवृत्ति के संकेत भी हैं जिसमें आपको लाभ मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण और आनन्ददायक होगा। आपके जीवन साथी सहयोगी और सहायक होंगे तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। संभव है आपका कोई बेटा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध होगा और परिवार को प्रसिद्धि दिलाएगा। आपका मस्तिष्क साफ रहेगा और बच्चों से आपको सुख की प्राप्ति होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धर्मग्रन्थों और अन्य पुराणों के अध्ययन में आपकी प्रवृत्ति होगी।

अंर्तदशा :– चन्द्र – चन्द्र
(22/08/2018 - 22/06/2019)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 22/08/2018 को प्रारंभ होकर 21/08/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/08/2018 को प्रारंभ होकर 22/06/2019 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर–सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे–बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर चंद्रमा की एकादश भाव पर दृष्टि है। आप जीवन हंसी–खुशी से बिताएंगे, मनोरंजन में समय व्यतीत करेंगे, संतान से प्रेम बढ़ेगा, लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेंगी, धर्म में रुचि होगी; आत्मा और मष्तिष्क का उत्थान होगा।

प्रतिस्पर्धा और सट्टे में लाभ संभव है। शुभत्व और सकारात्मक विचारों में वृद्धि के लिए चंद्र गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – मंगल
(22/06/2019 - 21/01/2020)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 22/08/2018 को प्रारंभ होकर 21/08/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 22/06/2019 को प्रारंभ होकर 21/01/2020 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ–हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। मंगल ऊर्जा का कारक है और द्वितीय भाव में स्थित होकर कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय उत्तम रहेगी, मगर कंजूसी बढ़ सकती है। धन संचित होगा। वाक्शक्ति उत्तम होगी। कंजूसी के कारण घर में कलह हो सकती है। नेत्रों की देखभाल करें, वाणी पर नियंत्रण रखें और कटुता से बचें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – राहु
(21/01/2020 - 22/07/2021)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 22/08/2018 को प्रारंभ हुई और 21/08/2028 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 21/01/2020 को प्रारंभ होकर 22/07/2021 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता,

सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप अपने कार्य में प्रवीण होंगे, खूब यात्राएं करेंगे। विश्व के कार्यकलापों का ज्ञान बढ़ेगा, प्रसिद्धि मिलेगी। साहस जरुरत से अधिक बढ़ सकता है। वासना में वृद्धि के कारण अवांछित कार्य कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :— चन्द्र — गुरु
(22/07/2021 - 21/11/2022)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 22/08/2018 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 22/07/2021 को प्रारंभ होकर 21/11/2022 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर गुरु कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है। इस अवधि में आप साहसी होंगे। धन, बुद्धि और ज्ञान की वृद्धि होगी। संपदा संचित करेंगे, प्रसिद्धि प्राप्त होगी, बहुत से मित्र होंगे। आपके लिए ज्ञानी व्यक्तियों की सेवा करना और धार्मिक, सामाजिक सेवा करना उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए पीपल को गुरुवार के दिन गुरुमंत्र का उच्चारण करते हुए जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :— चन्द्र — शनि
(21/11/2022 - 21/06/2024)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 22/08/2018 को प्रारंभ हुई और 21/08/2028 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 21/11/2022 को प्रारंभ होकर 21/06/2024 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग—बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शनि आपकी राशि के 6, 10 और लग्न भावों पर दृष्टि डाल रहा हैं

इस अवधि में आप बीमार और अप्रसन्न हो सकते हैं। वात और कफ संबंधी शिकायतों से सावधान रहें। सुस्ती और संवेदनशीलता से बचें। घरेलू मामलों में कष्ट हो सकता है। संबंधी भी आलोचना करेंगे। नकारात्मक विचारों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन दायें हाथ की मध्यमा उंगली में शिव की आराधना करने के बाद शनि का वैदिक मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – बुध
(21/06/2024 - 21/11/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 22/08/2018 को प्रारंभ हुई थी और 21/08/2028 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 21/06/2024 को प्रारंभ होकर 21/11/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप शिक्षा–दीक्षा में उत्तम प्रगति करेंगे। आपको प्रसिद्धि और प्रसन्नता प्राप्त होंगी। दान–धर्म में रुचि होगी। व्यापार में उन्नति होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी बढ़ेगी। हर कार्य में सफलता मिलेगी। नेत्रों के रोगों से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – केतु
(21/11/2025 - 22/06/2026)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 22/08/2018 को प्रारंभ हुई ओर 21/08/2028 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 21/11/2025 को प्रारंभ होकर 22/06/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग–बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में अचानक कई परिवर्तन हो सकते हैं। जायदाद आदि में

हानि हो सकती है; सुख–चैन में कमी संभव है। माता को भी कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की पूजा करें। प्रतिदिन हनुमान चालीसा का जाप करें। मंगलवार और शनिवार को व्रत करें। व्रत के दिन नमक न लें। इसके अतिरिक्त कुत्तों को भोजन दें और भूरा कुत्ता पालें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – शुक्र
(22/06/2026 - 21/02/2028)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 22/08/2018 को प्रारंभ होकर 21/08/2028 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 22/06/2026 को प्रारंभ होकर 21/02/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

इस अवधि में आपकी सैलानी प्रवृत्ति प्रबल रहेगी। इससे बहुत से मित्र बनेंगे और लोकप्रियता बढ़ेगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से भी संबंध प्रगाढ़ होंगे। सुख–सुविधाएं भरपूर रहेंगी। धन का लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – सूर्य
(21/02/2028 - 21/08/2028)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 22/08/2018 को प्रारंभ होगी और 21/08/2028 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 21/02/2028 से प्रारंभ होकर 21/08/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का

परिचायक है। सूर्य एक शक्तिशाली ग्रह है और पिता व आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सभी कार्यों में सफल रहेंगे। धन और विद्या का आगमन और संचय होगा। आप बली और प्रसन्न होंगे। वाहन सुख रहेगा, बुद्धि बलवती होगी, उच्चपद की प्राप्ति होगी। पुरखों की जायदाद भी मिल सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, संगीत में रुचि होगी और लोकप्रियता बढ़ेगी।

सूर्य के शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र का जाप प्रातःकाल, अगर संभव हो तो सूर्यादय काल में करें।

महादशा :– मंगल
(21/08/2028 - 22/08/2035)

मंगल की महादशा 21/08/2028 को आरम्भ और 22/08/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल द्वितीय भाव में अवस्थित है। इसके पूर्व आपकी चन्द्रदशा चल रही थी जिसकी अवधि 10 वर्ष की थी। मंगल के पंचम भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको बच्चों से सुख, उत्तम शिक्षा और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल की इस दशा में आपको धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा–काल में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में आत्मविश्वास तथा पहल–शक्ति होगी और आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। कुछ मौसमी बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सरदर्द, ज्वर, संक्रमण, ताप संबंधी बीमारियों आदि की सम्भावना है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धन–संपत्ति का संचय करेंगे। आपको पिता से लाभ होगा। आपको कुछ–पैतृक–सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। व्यवसाय और जीवन–वृत्ति से उपार्जन में भी वृद्धि होगी। मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। अपनी जीविका के लिये सैन्य सेवा, सर्जरी तथा चिकित्सा कार्य, दन्तचिकित्सा, भूगर्भ–विज्ञानी अथवा रसायनज्ञ के कार्यों का चयन कर सकते हैं। आप असैनिक तथा यांत्रिक अभियंत्रण और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अच्छा करेंगे। लौह–इस्पात, खेल के सामानों, ताम्बे, खनिज पदार्थों आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के लिये दशा उत्तम रहेगी। आपकी आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों के लिये समय समृद्धिशाली रहेगा। आय तथा गतिविधियों में वृद्धि होगी। व्यापार का विस्तार हो सकता है और व्यापार से जुड़े लोग व्यस्त रहेंगे। आर्थिक सफलता के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन के सुख मिलेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन की प्राप्ति होगी। मंगल तथा बुध की अन्तर्दशा में जमीन–जायदाद के मामले लाभदायक होंगे। यह अवधि सभी आर्थिक कारोबार के लिए उत्तम है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी तथा शनि और मंगल की अन्तर्दशाओं लम्बी यात्राएँ होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। गणित, विज्ञान तथा प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन लाभदायक होगा। आप परीक्षाओं में सफल होंगे। इस अवधि में आप उच्च शिक्षा भी आरम्भ कर सकते हैं। आप अपने स्वभावगत नेतृत्व तथा बैद्धिक गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके संबंध मधुर रहेंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेंगे और आपको उनसे बहुत सुख प्राप्त होगा। वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ मिल सकता है। सद्भावपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के लिए कटु भाषा का प्रयोग न करें। आपकी माता को इस अवधि में लाभ प्राप्त होगा और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता को उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके छोटे भाई–बहनों का शुभ उद्देश्यों के लिए व्यय होगा और उनकी यात्रा होगी तथा आपके बड़े भाई–बहनों को यश, ख्याति, आय, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी जिनसे आपको लाभ मिलेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको पिता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी। इसके पश्चात् आरम्भ होनेवाली राहु की अन्तर्दशा के कारण समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के कारण आपकी शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सुख में वृद्धि होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के कारण आय–व्यय समान होंगे और आपकी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह हो सकता है और साझेदारों से लाभ और सुख की प्राप्ति हो सकती है जबकि केतु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन और छोटी यात्राओं की प्राप्ति हो सकती है जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सन्तान से सुख और निवेश तथा सट्टे में लाभ होगा।

अंर्तदशा :– मंगल – मंगल
(21/08/2028 - 17/01/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2028 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 21/08/2028 को प्रारंभ होकर 17/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धन कमाएंगे; व्यापार में सफलता मिलेगी। धन का उपयोग सोच समझकर करना श्रेयस्कर रहेगा। लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा धन कमाने की प्रवृत्ति हो सकती है। विरासत में या जीवनसाथी के माध्यम से धन मिल सकता है। समृद्धि बढ़ेगी, निवेश से लाभ होगा, संतान से खुशी मिलेगी। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। मंगल की नवम भाव पर दृष्टि के कारण सर्जनात्मक कार्यों में मन लगेगा, किस्मत चमकेगी। कोई यात्रा हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को विरासत में या क्रय से जायदाद मिल सकती है। उनके निवेश लाभकारी रहेंगे। आपके पिता को मामूली चोट लग रही है या बीमारी हो सकती है। उन्हें उच्चपद प्राप्त हो सकता है, धनी बन सकते हैं, यात्रा पर जा सकते हैं। माता के लिए निवेश लाभकारी रहेंगे। आपको उनके साथ मधुर संबंध बनाकर रखने चाहिएं। आपके बड़े भाई–बहन जायदाद प्राप्त कर सकते हैं। छोटे भाई–बहनों को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपकी संतान की सक्रियता बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त होगी। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों के लिए निवेश लाभदायक रहेंगे।

गले, आंख और दांतों के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए तांबा, लाल चप्पल और लाल वस्त्र दान करें।

अंर्तदशा :– मंगल – राहु
(17/01/2029 - 05/02/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 17/01/2029 को प्रारंभ होकर 05/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित घटनाएं आपको सुर्खियों में रखेंगी। समाजसेवा में मन लगेगा। परिश्रम और दक्षता द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, सुख–सुविधाएं बढ़ेंगी। माता से लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। निवास में परिवर्तन या सुधार संभव है। भूमि से खूब लाभ हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता खूब धन कमाएंगे। उनके जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। आपकी माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई–बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें उपहार आदि से लाभ होगा, उनके खर्चे बढ़ेंगे, नेत्रों की देखभाल करनी चाहिए।

आपकी संतान शारीरिक कार्य जैसे खेलकूद आदि में उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अचल संपत्ति में निवेश करने से भविष्य में लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों या पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरवजी के रूप में पूजा करें।

अंर्तदशा :– मंगल – गुरु
(05/02/2030 - 12/01/2031)

आपकी मंगल की महादशा 21/08/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 05/02/2030 को प्रारंभ होकर 12/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और धनी होंगे। धन का संचय होगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। कोई पुरस्कार मिल सकता है। प्रभावशाली लोगों से मित्रता हो सकती है, उनसे लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। घर में कोई उत्सव हो सकता है। आयु में बड़े लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। विवाह हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा, कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी; शत्रु परास्त होंगे। आपके पिता की समस्याएं सुलझेंगी; उच्च पद और शांति की प्राप्ति होगी। माता को अचानक धन या अचल संपत्ति मिल सकते हैं। भाई–बहन धनी बनेंगे, यात्राएं होंगी, उच्च पद मिलेगा, समाज में उन्नति होगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर कान और पैरों की व्याधियों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – शनि
(12/01/2031 - 21/02/2032)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2028 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/01/2031 को प्रारंभ होकर 21/02/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धनी बनने का संकेत है। सब सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। घर में सुख–शांति आपके प्रयास से बनी रहेगी। जायदाद से किराये आदि की आमदनी बढ़ेगी। विदेश की यात्रा कर सकते हैं, वहां से लाभ होगा। तबादले और प्रोन्नति का संकेत है। सम्मान और धन में वृद्धि होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति मौजूद रहेगी।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकता है। उनका जनसंपर्क बढ़ेगा। आपके भाई–बहनों की आय में वृद्धि होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी, विरोधियों को परास्त करने की क्षमता रहेगी।

आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे। उनके जीवन में कुछ परिवर्तन और यात्रा हो सकते हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता उच्चपद प्राप्त करेंगे। व्यापारी अपने कार्य का विस्तार करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए पंचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

अंर्तदशा :– मंगल – बुध
(21/02/2032 - 17/02/2033)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2028 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 21/02/2032 को प्रारंभ होकर 17/02/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में बहुत उन्नति करेंगे। विज्ञान, संचार माध्यम और व्यापार में लाभ होगा। उच्चाधिकारी आपके कार्य की प्रशंसा करेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। अचल संपत्ति मिल सकती है, निवास सुविधाजनक होगा। पराविद्य ा में रुचि होगी। बहुत से मित्र होंगे, समाज में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को सब सुख उपलब्ध रहेंगे। पिता धन कमाएंगे; घर पर सुविधाएं

रहेंगी, साहित्य से जुड़ सकते हैं। माता को भागीदारी में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं। भाई–बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी; शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता खूब उन्नति करेंगे। व्यापारियों को निवेश करना पड़ सकता है।

स्नायुतंत्र और त्वचा के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – केतु
(17/02/2033 - 16/07/2033)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/02/2033 को प्रारंभ होकर 16/07/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। कभी–कभी कार्यवश घर से दूर जा सकते हैं। आपके बहुत से मित्र होंगे जो आपकी मदद करेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यापार में लाभ होगा; चुनाव में जीत होगी, शत्रुओं पर विजय की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को धन का लाभ और संचय होगा। माता का व्यक्तित्व चमकेगा। भाई–बहनों के लिए धनार्जन का संकेत है, प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, मामापक्ष से लाभ होगा।

आपकी संतान की शिक्षा में बाधाएं आ सकती हैं। उन्हें ऊर्जा के अपव्यय से बचना चाहिए, बिना लाभ की गतिविधियों से दूर रहें। अगर से कार्यरत हैं तो कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ हो सकता है, जबकि व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; छाती में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – शुक्र
(16/07/2033 - 15/09/2034)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 16/07/2033 को प्रारंभ होकर 15/09/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। निवेश से लाभ होगा। नये मित्र बनेंगे जो लाभप्रद होंगे। सब सुख–सुविधाएं उपलब्ध होंगी। संतान से संबंध मधुर होंगे। कला में रुचि से खुशी मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। कोई मंत्री या पार्षद आदि बन सकते हैं। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी समृद्ध होंगे। आपके पिता का उत्साह उत्तम होगा। माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, पति से धन का लाभ होगा, अध्यात्म में रुचि लेंगी। आपके भाई–बहन समृद्ध होंगे; विवाह हो सकता है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो भागीदार से लाभ होगा, व्यापार में फ़ायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए स्त्रियों के कल्याण की संस्थाओं में दान दें।

अंर्तदशा :– मंगल – सूर्य
(15/09/2034 - 21/01/2035)

आपकी मंगल की महादशा 21/08/2028 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 15/09/2034 को प्रारंभ होकर 21/01/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे, साख उत्तम रहेगी। लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेंगी। उच्चपद प्राप्त होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धियों और शत्रुओं पर विजयी होंगे। धन प्राप्त होगा। घरेलू सुख, भूमि–भवन आदि क्रय का योग है। पैतृक संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है, धन का निवेश कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सरकार से लाभ होगा। माता को व्यापार और यात्रा

महादशा :– राहु
(22/08/2035 - 22/08/2053)

राहु की अन्तर्दशा 22/08/2035 को आरम्भ और 22/08/2053 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु–दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि–चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुज्न्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार–व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलैंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन–जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य–व्यापार, भोजन, प्रोद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई–बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य–समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वद्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन–वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी।

अंतर्दशा :– राहु – राहु
(22/08/2035 - 04/05/2038)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/08/2035 को प्रारंभ होकर 22/08/2053 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 22/08/2035 को प्रारंभ होकर 04/05/2038 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, साहस में वृद्धि होगी, लेखक, चित्रकार आदि हो सकते हैं। साहस की अधिकता के कारण पापपथ पर चल सकते हैं। इस संबंध में सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

अंतर्दशा :– राहु – गुरु
(04/05/2038 - 27/09/2040)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/08/2035 को प्रारंभ होकर 22/08/2053 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 04/05/2038 को प्रारंभ होकर 27/09/2040 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, ज्ञानवान, धनी और बुद्धिमान बनेंगे। पर्याप्त संख्या में उत्तम मित्र होंगे। जरुरतमंदों की मदद करेंगे। इस अवधि में विकसित गुणों का समुचित उपयोग भविष्य तक लाभकारी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू – स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दि खाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ – 2019

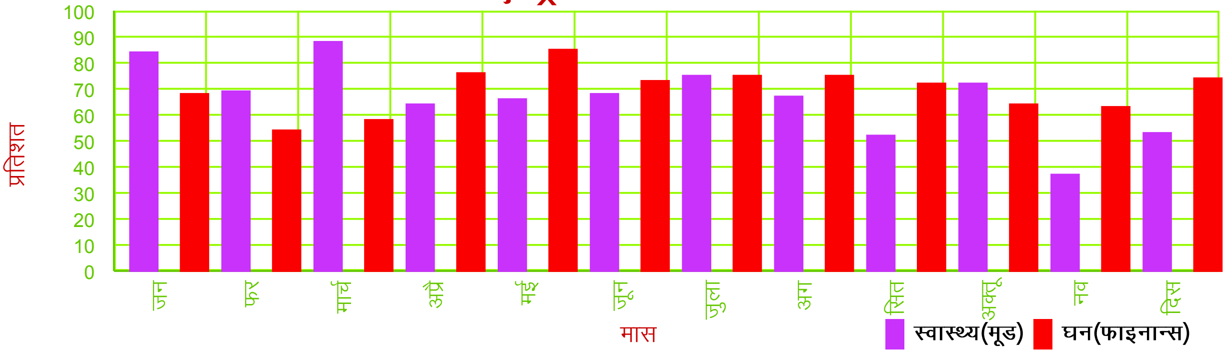

एस्ट्रोग्राफ – 2020

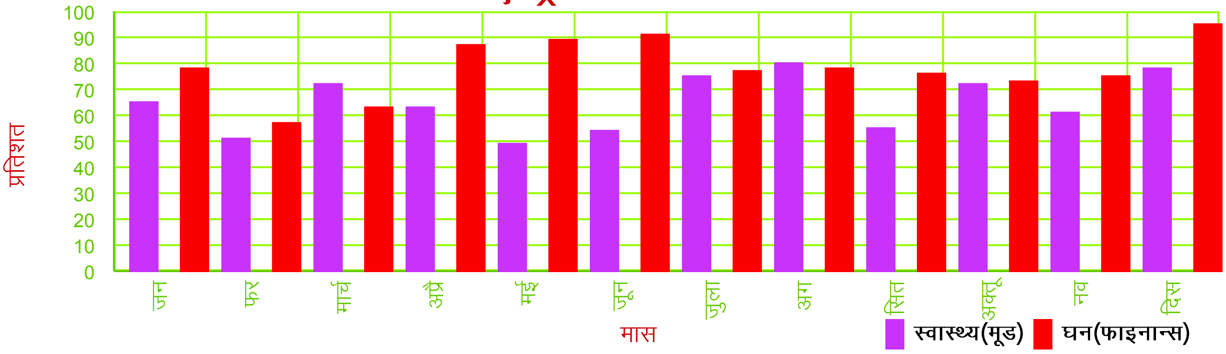

एस्ट्रोग्राफ – 2021

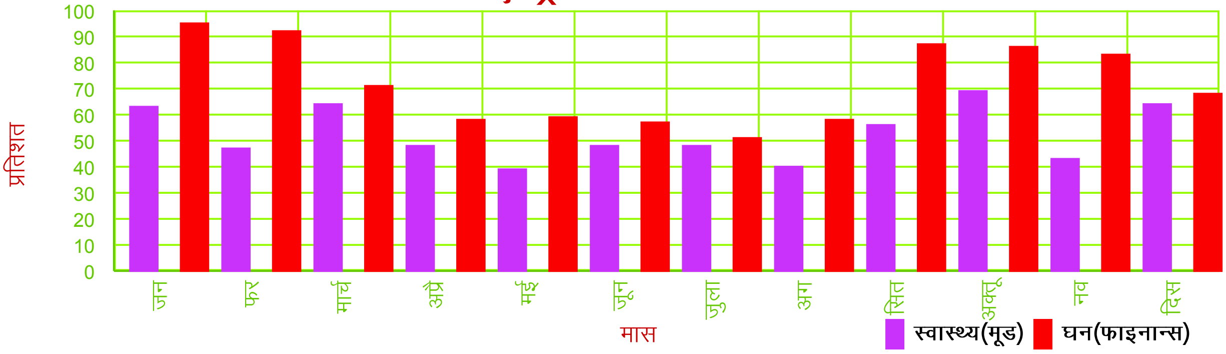

एस्ट्रोग्राफ – 2022

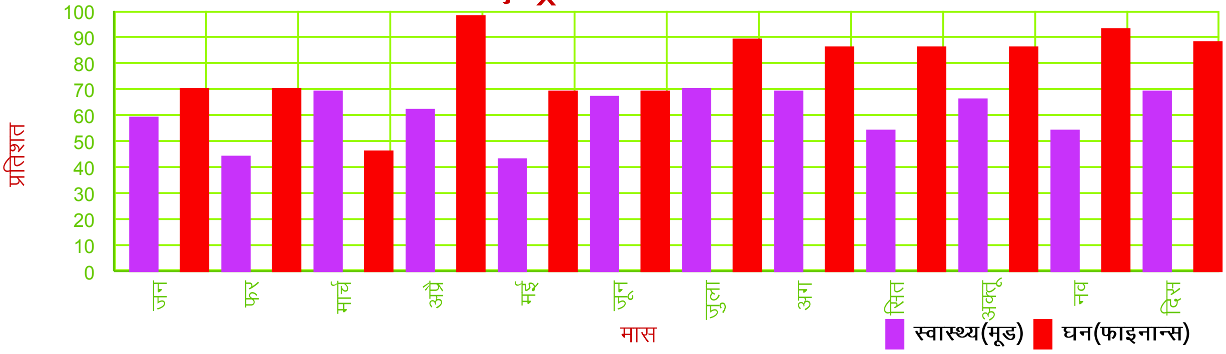

एस्ट्रोग्राफ – 2023

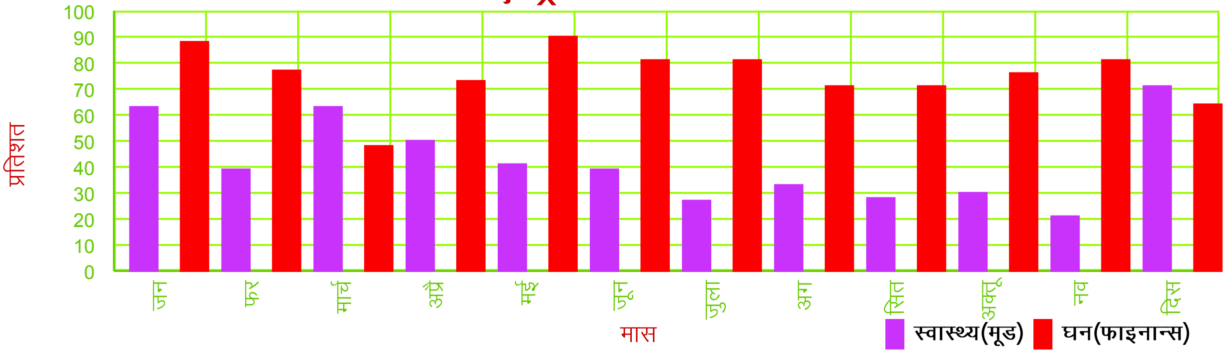

एस्ट्रोग्राफ – 2024

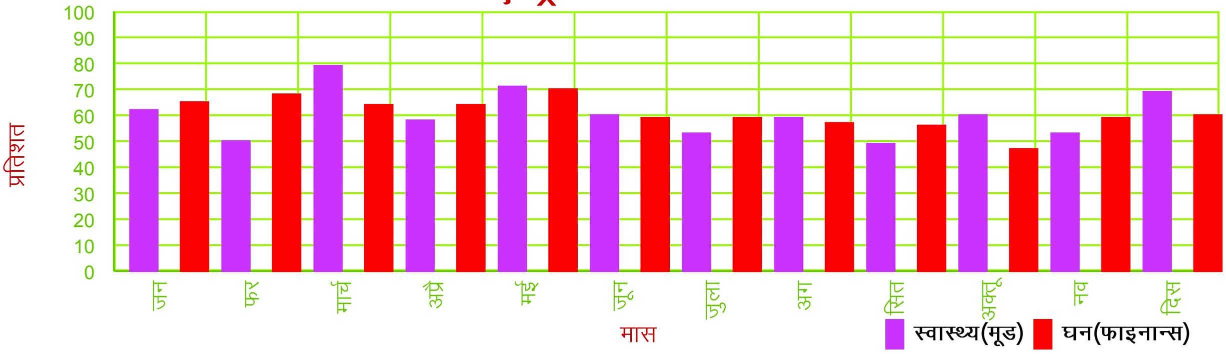

एस्ट्रोग्राफ – 2025

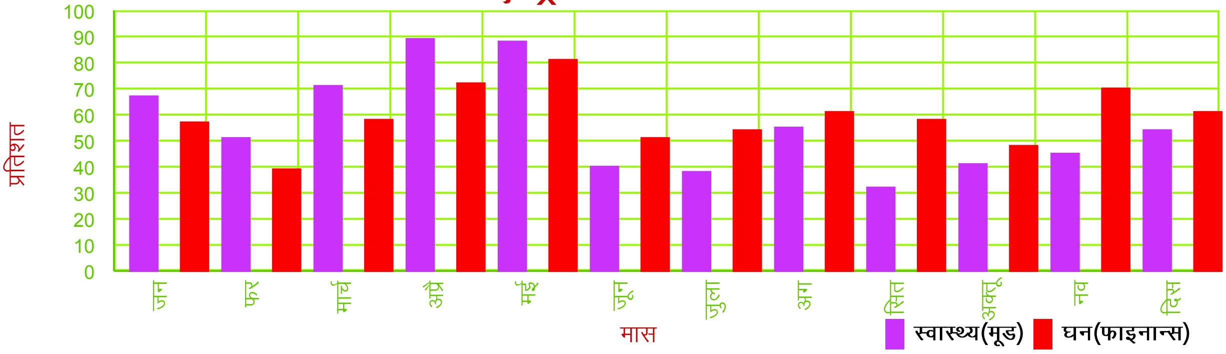

एस्ट्रोग्राफ – 2026

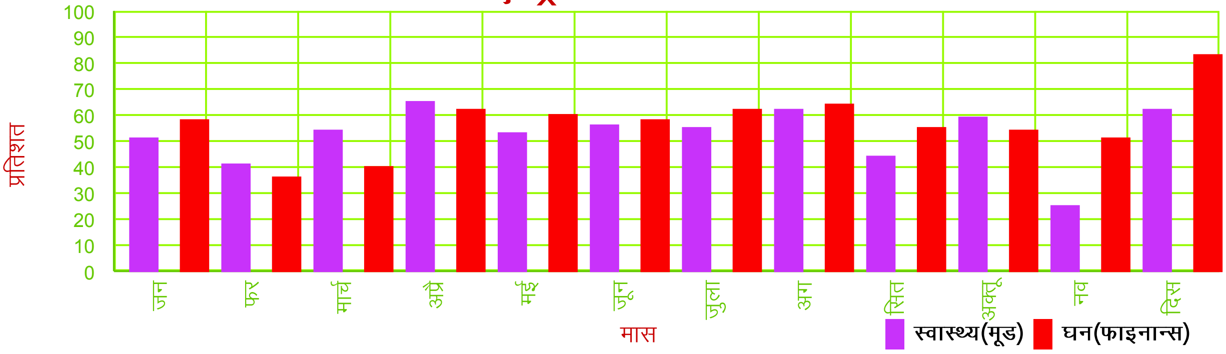

एस्ट्रोग्राफ – 2027

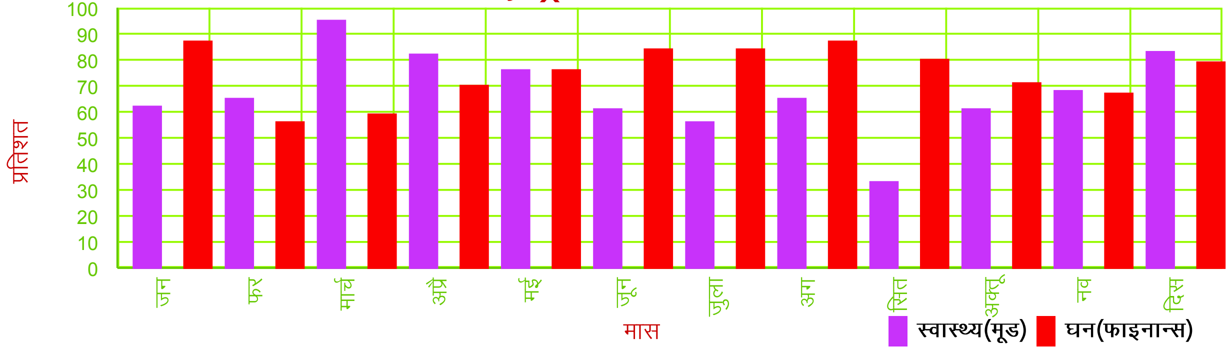

एस्ट्रोग्राफ – 2028

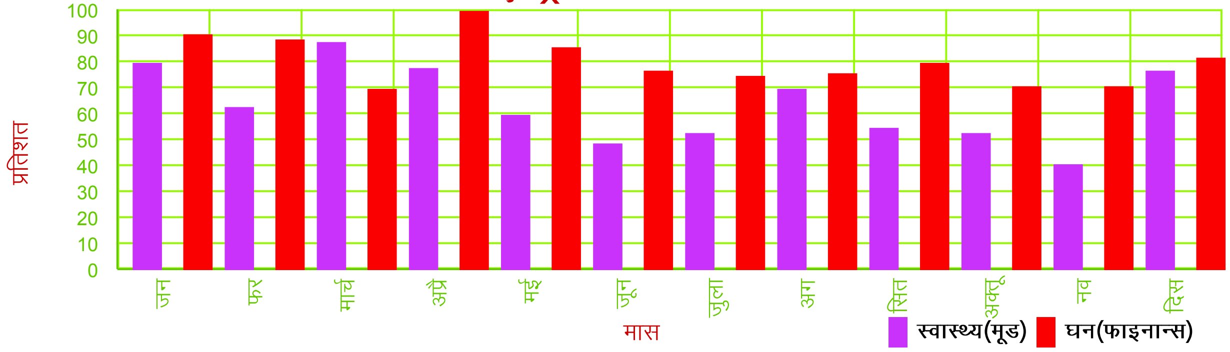

एस्ट्रोग्राफ – 2029

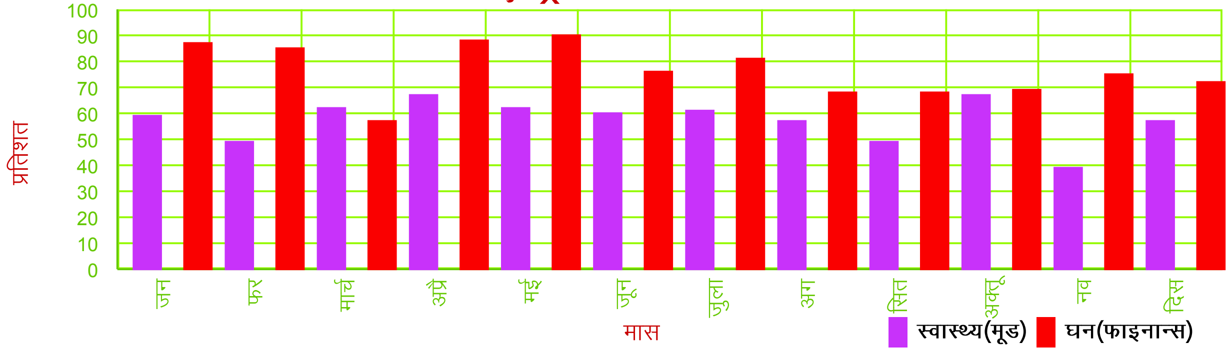

एस्ट्रोग्राफ – 2030

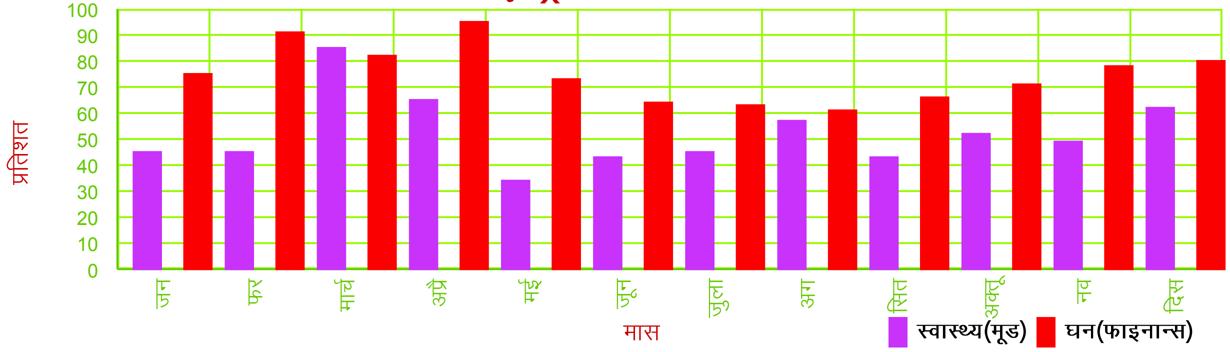

एस्ट्रोग्राफ – 2031

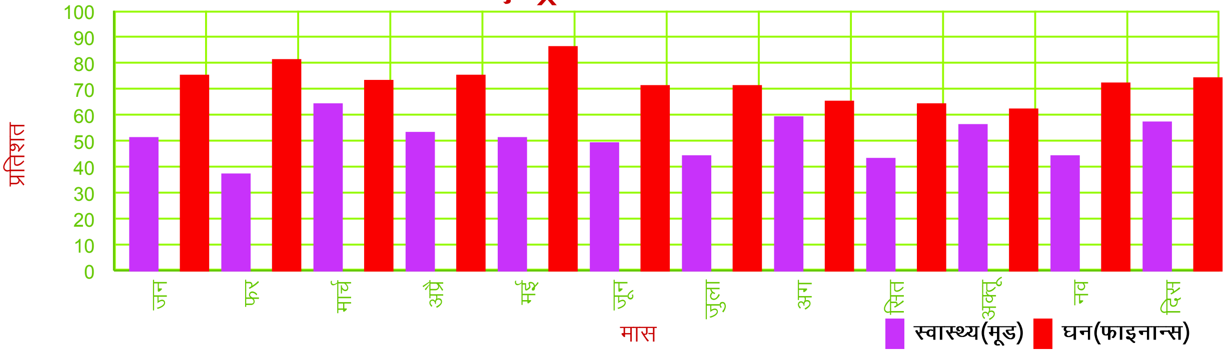

एस्ट्रोग्राफ – 2032

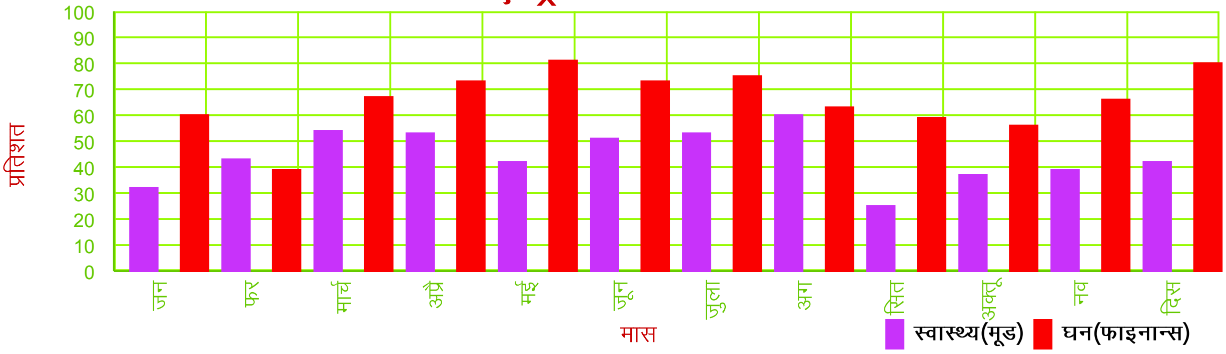

एस्ट्रोग्राफ – 2033

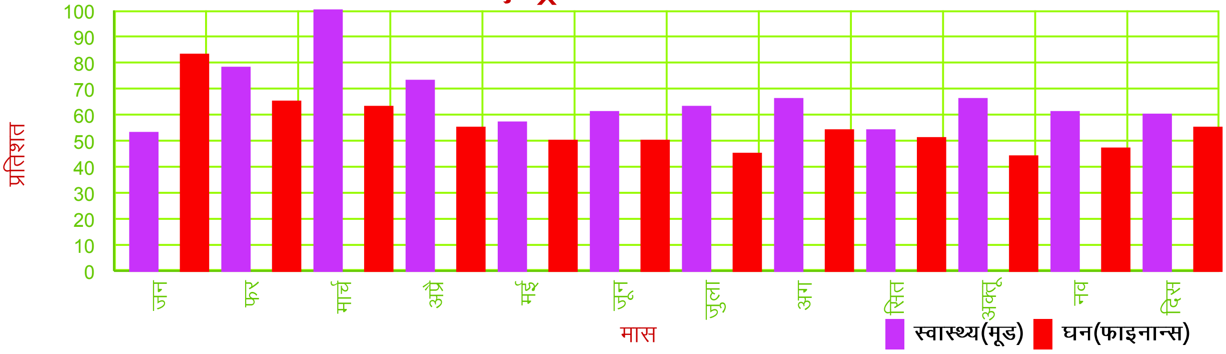

एस्ट्रोग्राफ – 2034

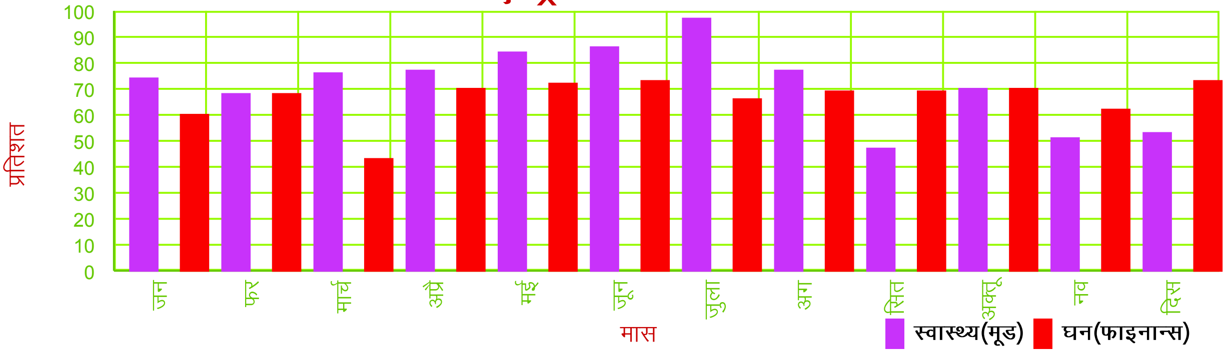

एस्ट्रोग्राफ – 2035

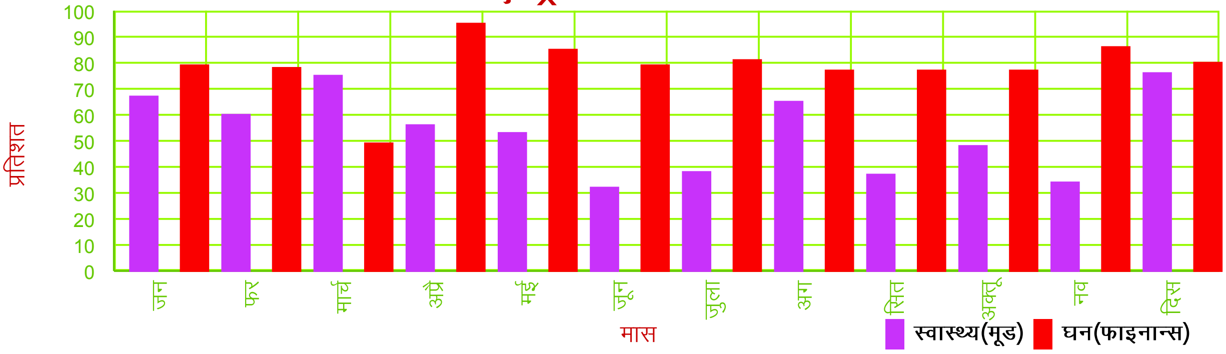

एस्ट्रोग्राफ – 2036

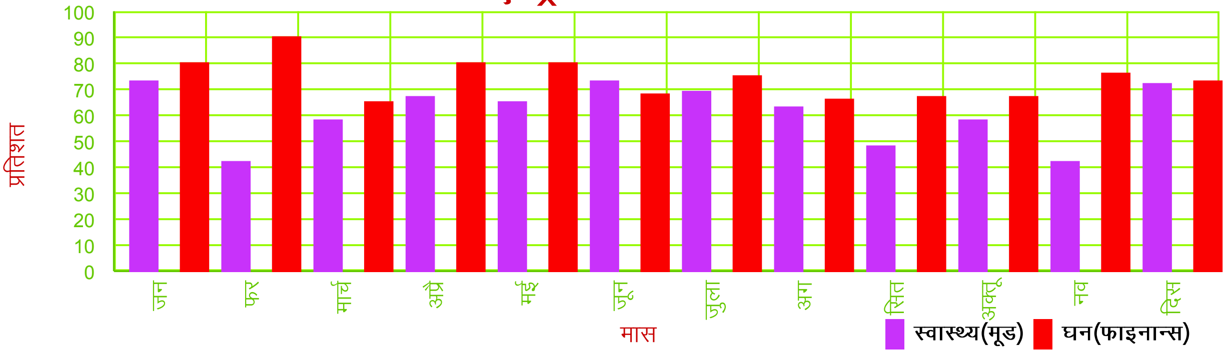

एस्ट्रोग्राफ – 2037

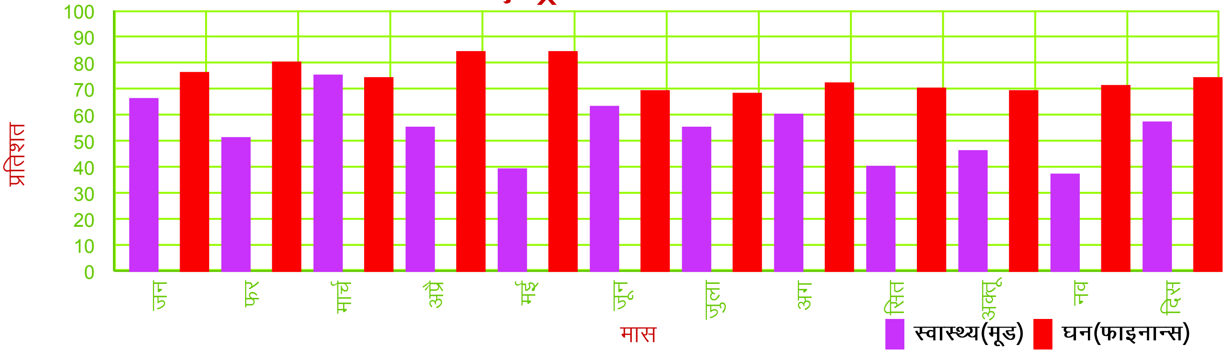

एस्ट्रोग्राफ – 2038

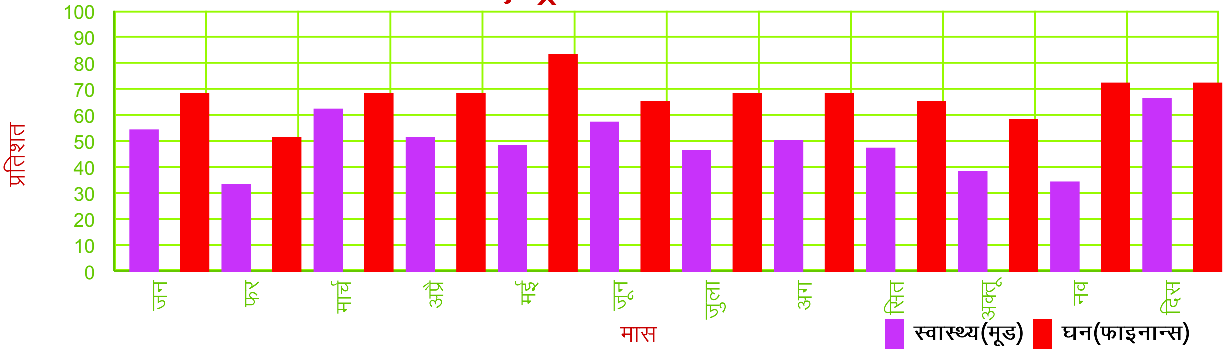

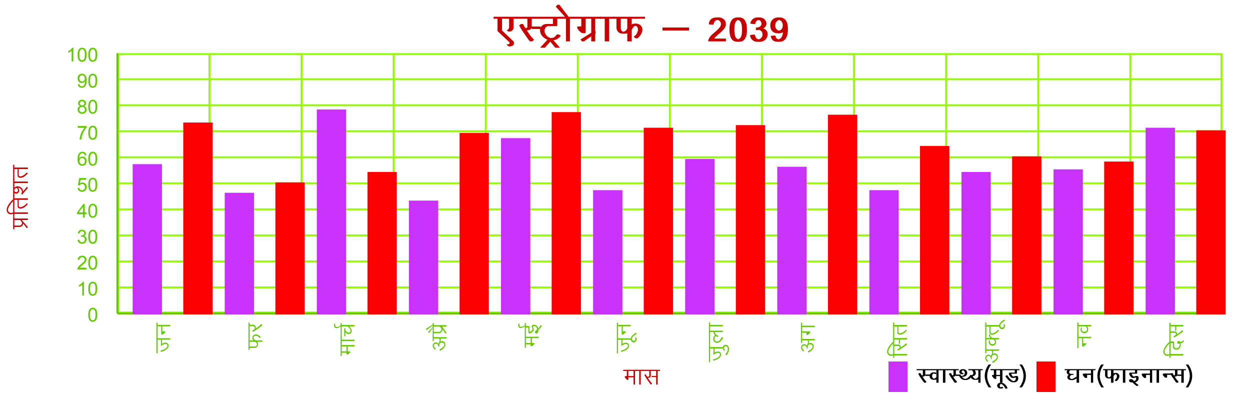
एस्ट्रोग्राफ – 2039
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
प्रतिशत
जन
फर
मार्च
अप्रै
मई
जून
जुला
अग
सित
अक्टू
नव
दिस
मास
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

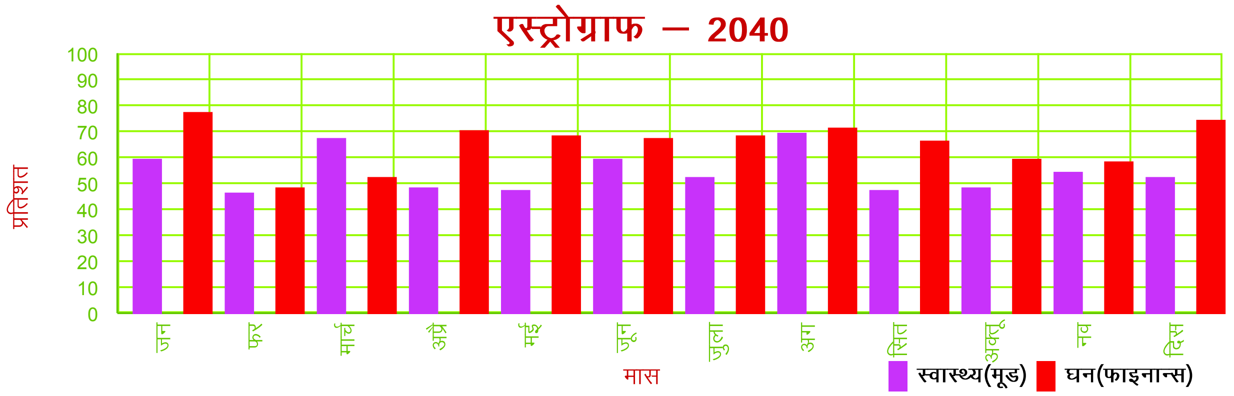
एस्ट्रोग्राफ – 2040
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
प्रतिशत
जन
फर
मार्च
अप्रै
मई
जून
जुला
अग
सित
अक्टू
नव
दिस
मास
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

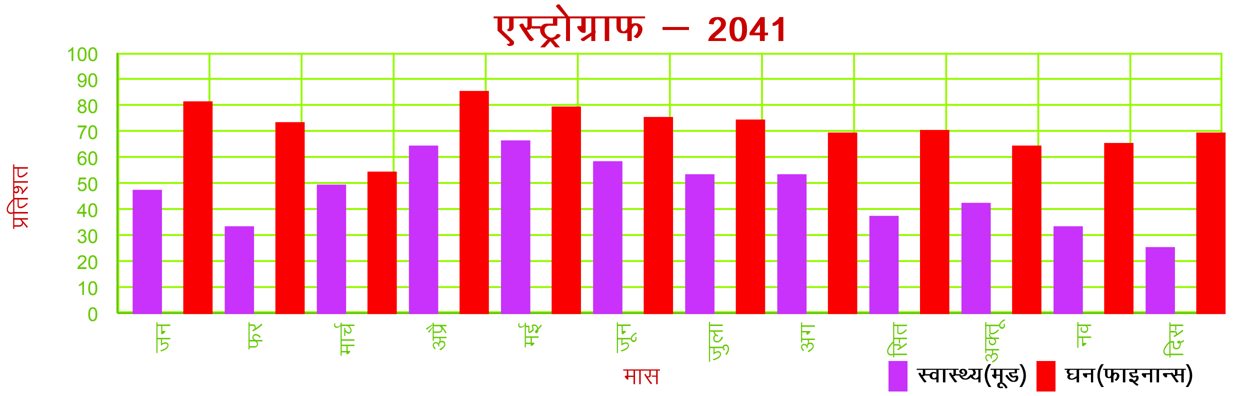
एस्ट्रोग्राफ – 2041
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
प्रतिशत
जन
फर
मार्च
अप्रै
मई
जून
जुला
अग
सित
अक्टू
नव
दिस
मास
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

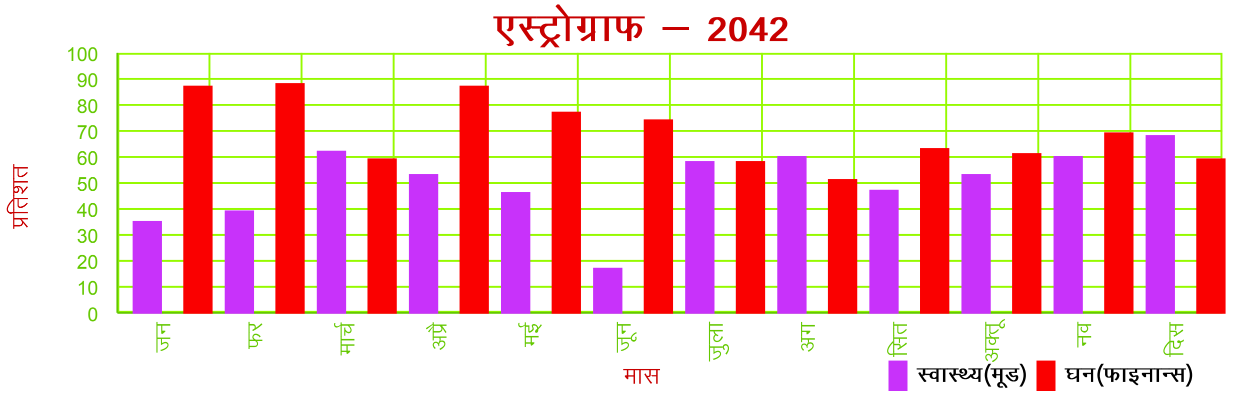
एस्ट्रोग्राफ – 2042
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
प्रतिशत
जन
फर
मार्च
अप्रै
मई
जून
जुला
अग
सित
अक्टू
नव
दिस
मास
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

एस्ट्रोग्राफ – 2043

एस्ट्रोग्राफ – 2044

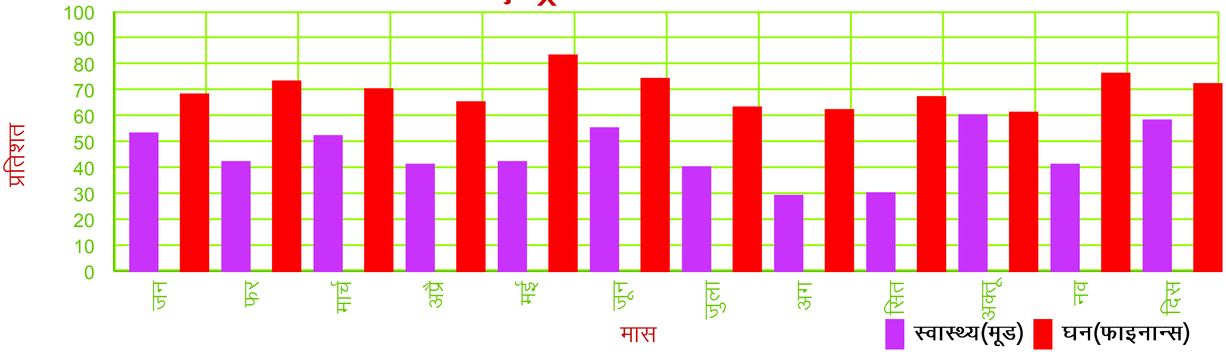

एस्ट्रोग्राफ – 2045

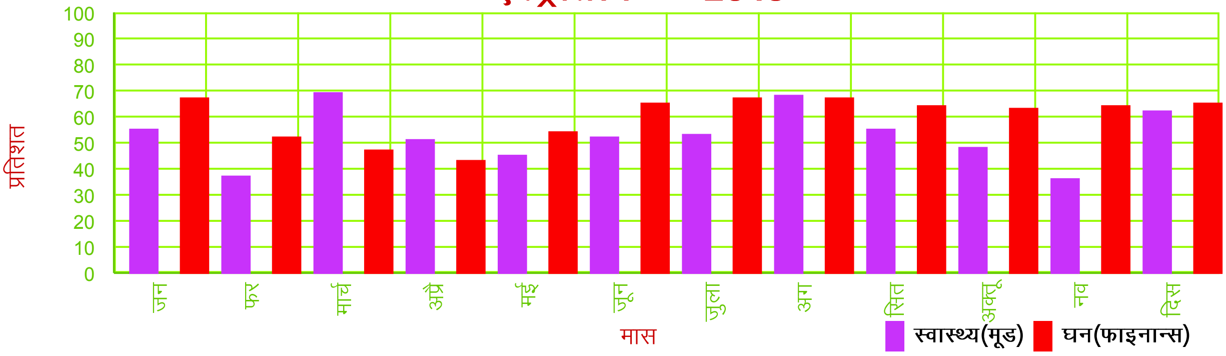

एस्ट्रोग्राफ – 2046

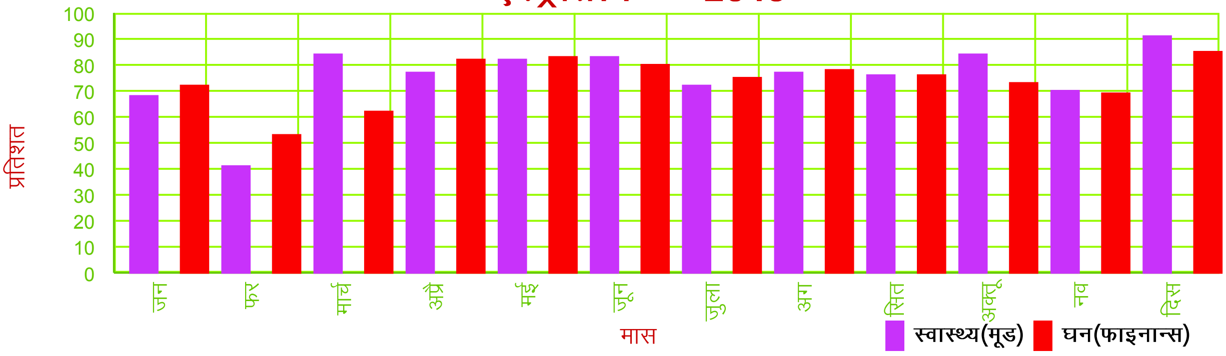

एस्ट्रोग्राफ – 2047

एस्ट्रोग्राफ – 2048

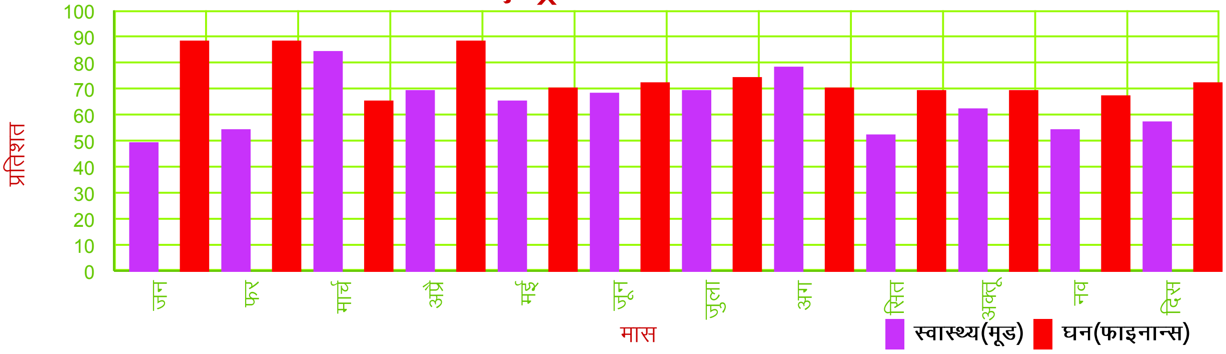

एस्ट्रोग्राफ – 2049

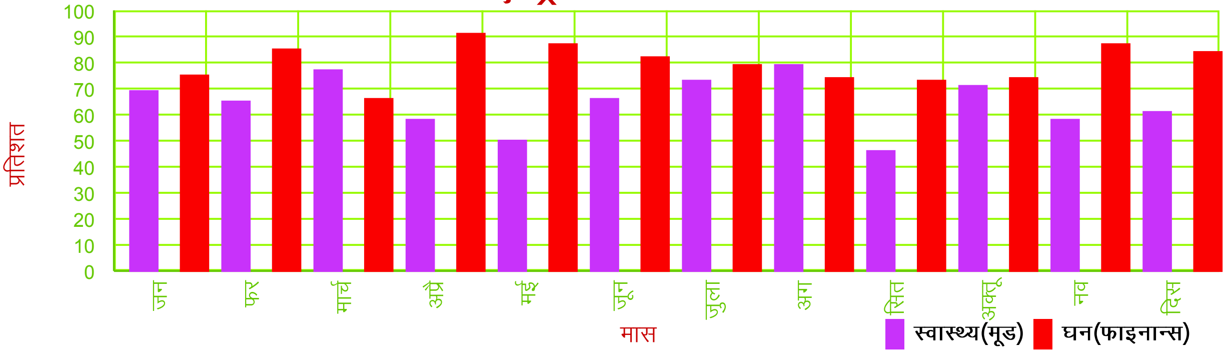

एस्ट्रोग्राफ – 2050

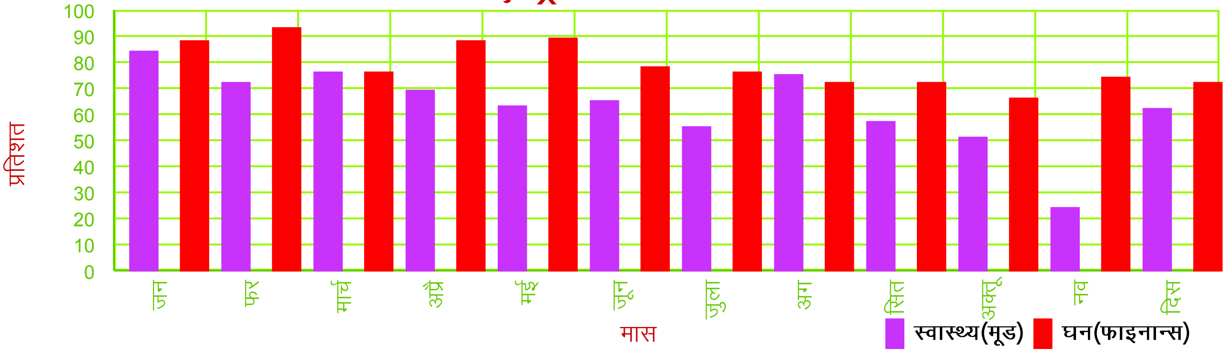

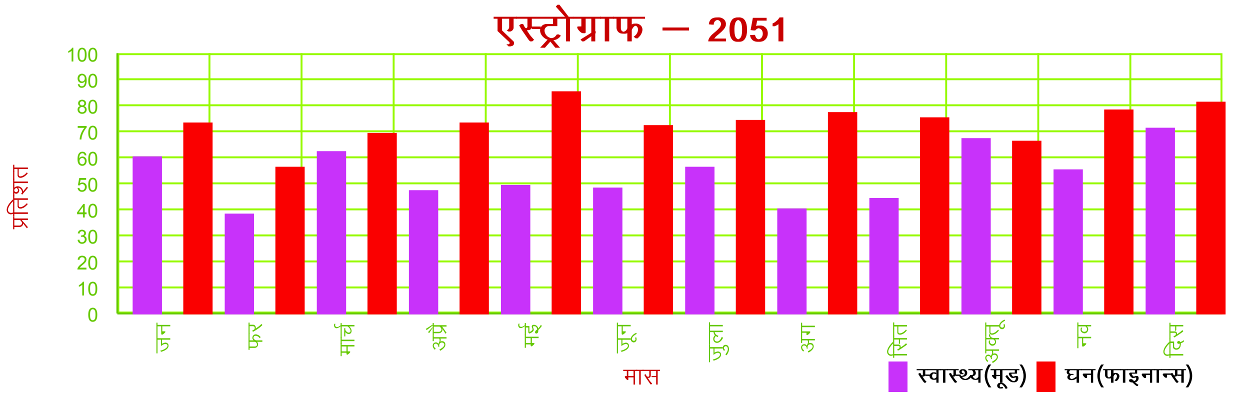
एस्ट्रोग्राफ – 2051
प्रतिशत
मास
जन
फर
मार्च
अप्रै
मई
जून
जुला
अग
सित
अक्टू
नव
दिस
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

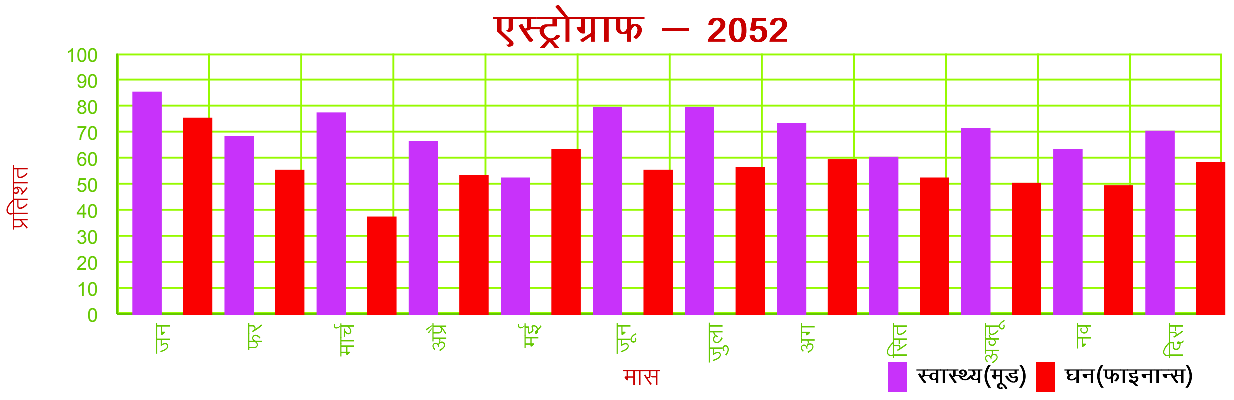
एस्ट्रोग्राफ – 2052
प्रतिशत
मास
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

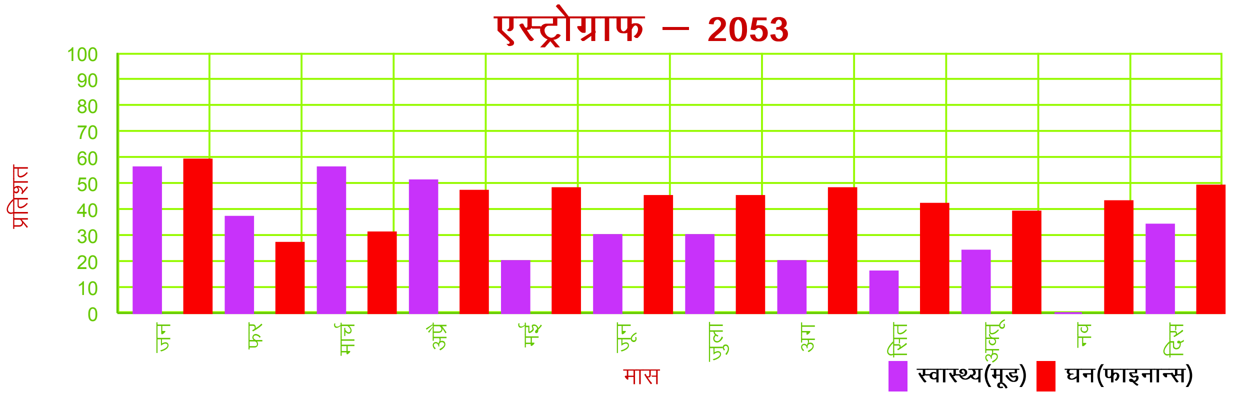
एस्ट्रोग्राफ – 2053
प्रतिशत
मास
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

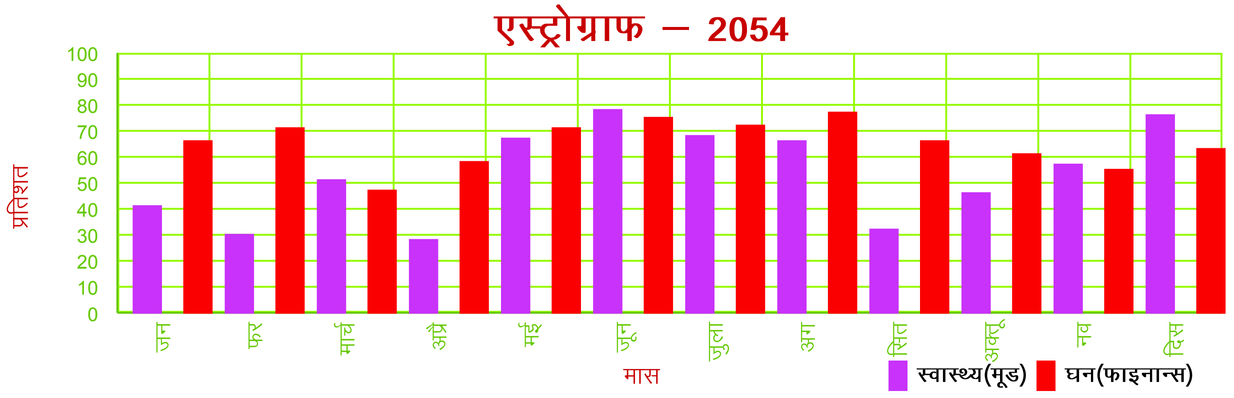
एस्ट्रोग्राफ – 2054
प्रतिशत
मास
स्वास्थ्य(मूड)
धन(फाइनान्स)

एस्ट्रोग्राफ – 2055

एस्ट्रोग्राफ – 2056

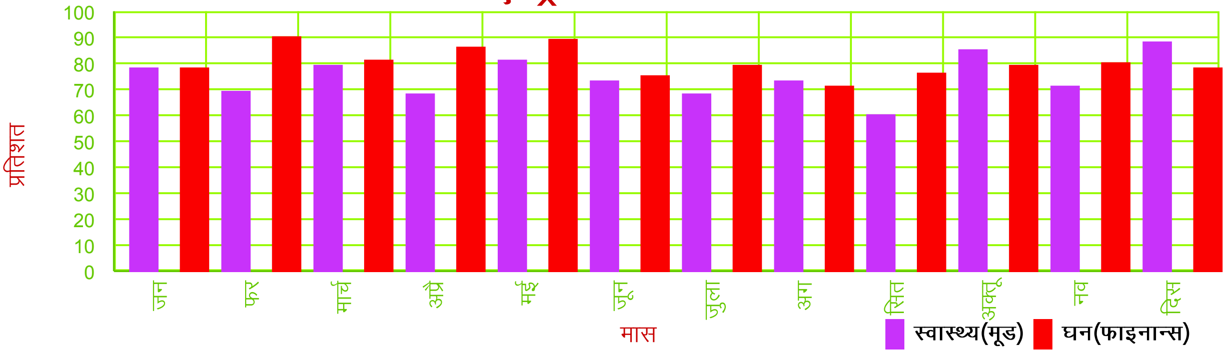

एस्ट्रोग्राफ – 2057

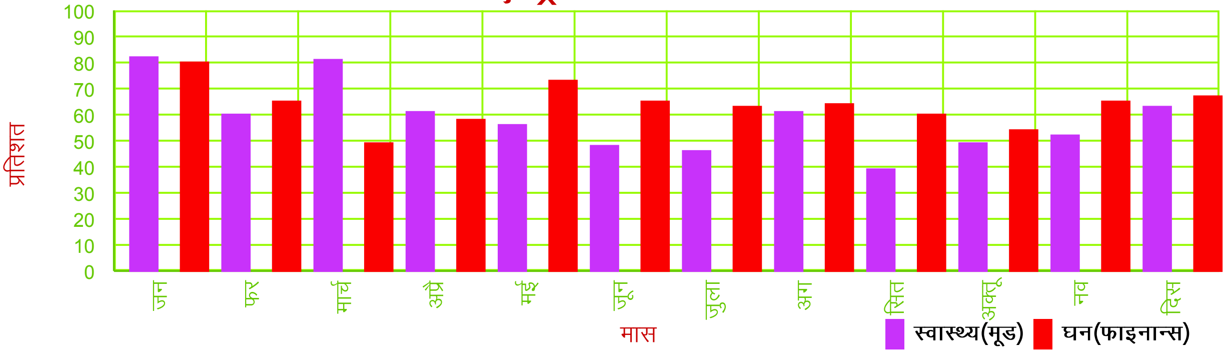

एस्ट्रोग्राफ – 2058

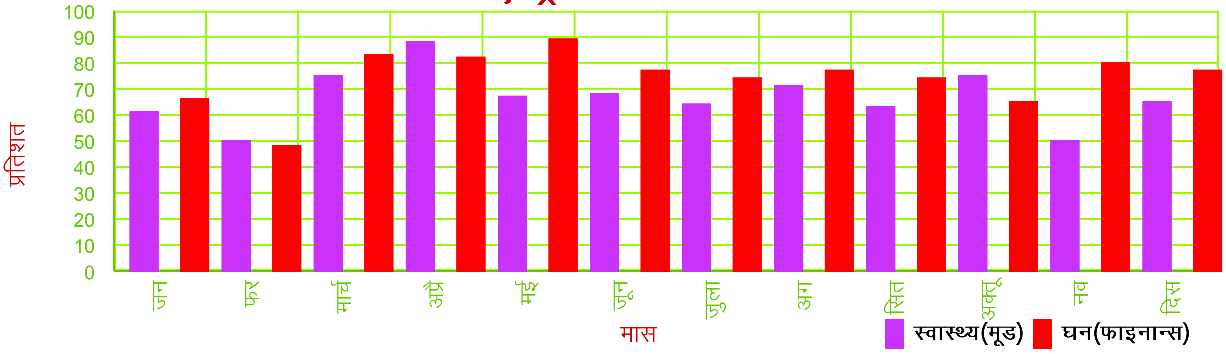

योग

अमलयोग

चन्द्राव्द्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19–20

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

गौरी योग

स्वर्क्षोच्चे यदि कोणकण्टकयुतौ हिमकरे गौरीति जीवेक्षिते।
सुन्दरगात्रः श्लाघितगोत्रः पार्थिवमित्रः सद्गुणपुत्रः।
पङ्कजवक्त्रः संस्तुतजैत्रो राजति गौरीयोगसमुत्थः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 21, 25

यदि चंद्रमा अपनी राशि उच्च राशि का होकर लग्न से केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो और गुरु की दृष्टि उन पर पड़ रही हो तो गौरीयोग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में गौरीयोग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुंदर, राजमित्र, सद्गुणी, संतानवान, शत्रुजीत, प्रशंसित, प्रसन्नचित्तमुखाकृति के होंगे।

छत्रयोग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः
स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे।।
।। फलदीपिका ।। अ. 4/श्लोक 44, 49

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र   योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–41 ।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरू से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र   योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–35

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि   योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.–10

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र,बुध,गुरु   योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.– 293 ।।

यदि जन्मपत्रिका में संतान भाव में वृष, कर्क और तुला में से कोई राशि हो, पंचम भाव में शुक्र या चंद्रमा स्थित हों अथवा इनकी दृष्टि पंचम भाव पर हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र   योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अनेक

पुत्रों के सुख प्राप्त करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

पुत्रेश्वरे दारपतौ बलाढ्ये दृष्टे युते वा त्वरिनायकेन जातोऽनपत्यः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ–6/श्लो.–7।।

यदि जन्मकुण्डली में पंचमेश एवं सप्तमेश बलिष्ठ होकर षष्ठेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को पुत्र नहीं होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,सूर्य — योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। अतः आप पुत्रहीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–14।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–15

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.–6/श्लो.–62

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षत हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग

रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें खाने में बैठा है। इसकी वजह से आप किसी संस्था के प्रधान, जज, सरपंच, नेता भी हो सकते हैं। आप किसी से धोखा–फरेब नहीं करेंगे। सरकारी विभाग, नौकरी–व्यापार में धन–लाभ, मान–सम्मान मिलेगा। नौकर–चाकरों का अच्छा सुख मिलेगा। राज्य पक्ष से लाभान्वित होंगे। आप बहुत वहम करेंगे। संतान पक्ष कमजोर रहेगा। 19 वर्ष की उम्र के लगभग पिता से दूर होना पड़ सकता है। आपको इज्जत, सेहत और दौलत का सुख मिलेगा। परिवार में कोई व्यक्ति उच्चपद पर संस्था प्रधान या सरकार द्वारा सम्मानित होगा।

यदि आपके मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, नंगा सिर रखने की आदत रही, अपना भेद दूसरों को बताया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। आप मशीनरी या लकड़ी से संबंधित नौकरी–व्यापार करेंगे तो हानि होगी। खानदानी विरासत और पिता का सुख कम मिलेगा। लकड़ी, लोहा, भैंसों से संबंधित व्यापार या काली चीजों के व्यापार से नुकसान होगा। आपके घुटने में दर्द हो सकता है। आपकी आंखों की नजर और उम्र पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। ससुराल में रहना ससुराल पक्ष वालों के साथ कोयले, बिजली का धंधा करने से हानि होगी। सत्ता से परेशानियां भी रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपना भेद किसी को भी न देवें।
2. सूर्य की रोशनी नंगे सिर पर न पड़े।

उपाय :

1. सिर पर सफेद या शरबती पगड़ी या टोपी पहनें।
2. बुजुर्गी मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में चंद्रमा है। इसकी वजह से हीरे–जवाहरात से संबंधित नौकरी–व्यापार लाभ देगा। कन्या सन्तान अधिक होने का योग है। आपको सुख के सभी साधन मिलेंगे। वन विभाग के अधिकारी हो सकते हैं। आप 9 वर्ष जीवन में यात्रा करेंगे। विदेश यात्रा से लाभ संभावित है। आपकी संतान की उम्दा परवरिश होगी। धार्मिक विचार रखने से आपके धन–दौलत की बरकत होगी। आप किसी के भी सामने नहीं झुकेंगे। आप दूसरों का इन्साफ करने में आगे रहेंगे। आप रहम दिल इंसान होंगे और किसी से बेइंसाफी नहीं करेंगे। लड़ाई–झगड़े

में आप जिसका भी साथ देंगे वह जरूर जीतेगा। सरकारी काम शुभ फल देने वाला होगा। आप सामाजिक कार्य करें तो आपकी औलाद के लिए अच्छा होगा। यात्रा का फल शुभ होगा। आपकी कभी भी बर्बादी नहीं होगी। आपको अपने जीवन की सभी मशहूर बातें हमेशा याद रखनी चाहिए।

यदि आपने धर्म विरोधी कार्य किये, गुप्त पाप किया, चकोर पक्षी का शिकार किया, अपना भेद किसी को बताया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी विद्या में विघ्न, संतान द्वारा विरोध होगा। आपका अपना भेदी तबाही कर सकता है। लालच और खुदगर्जी से नुकसान होगा। आपकी आदत हरेक को गुमराह करने वाली होगी। आपको नौकरी–व्यापार से अच्छा लाभ नहीं हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आप अपनी मर्जी से कोई कार्य न करें, किसी की सलाह जरुर लेवें।
2. किसी भी पाप कार्य में दखल न देवें।

उपाय :

1. धार्मिक कार्य में बढ़–चढ़ कर भाग लेवें।
2. कभी–कभी पहाड़ की यात्रा करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दयालु, रक्षक, भाई और मित्रों के पालनहार, आप दूसरों की जरूरत हमेशा पूरी करेंगे। आप किसी संस्था के प्रधान भी हो सकते हैं। आप बहुत लोगों को सहारा देने वाले होंगे। आप दूसरों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे। आपको ससुराल से सहायता मिलेगी। आप छोटे भाई से पुत्र जैसा प्यार करेंगे और उसे सहायता देंगे। छोटे भाई की सहायता से आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सहायता करते रहेंगे। इस वजह से आप भी भरपूर रहेंगे। आपको दूसरों की भलाई के लिए धन–संपत्ति मिलती रहेगी। आप दूसरों के लिए लंगर लगाएंगे। आप नेक और पक्के इरादे के हैं। आप परिश्रम से धनी होंगे। आपको खुराक, पोशाक तथा अन्य जीवन के सुख प्राप्त होंगे। जरूरत पड़ने पर खुद ब खुद पैसे मिल जाएंगे। आपको भगवान की कृपा से बहुत धन मिलेगा। आप अधिकारी बन कर हुकूमत करेंगे। आप तीर्थ यात्रा करने से शुभ फल को प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी दौलत में बढ़ोत्तरी होगी। ससुराल पक्ष से सुखी रहेंगे।

यदि आपने दूसरों के धन–स्त्री पर बुरी नजर रखी, बुरी आदतों के शिकार हुए या छल–कपट करके भाई–बंधुओं, मित्रों के साथ ठगी की तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से अगर विद्या में रुकावट, जरूरत पड़ने पर आपको धन मिलता रहेगा। नौकरी–व्यापार में बार–बार हानि हो सकती है। 28

वर्ष से पहले बड़े भाई को शरीर कष्ट संतान की चिंता, धन हानि होगी। यदि आपका बड़ा भाई है तो उसका सुख आपको नहीं मिलेगा या वह आपसे हालत में कमजोर होगा या आप और आपका भाई निःसंतान भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. लड़ाई–झगड़े से दूर रहें।
2. मेहमानों की सेवा से मुंह न फेरें।

उपाय :

1. बच्चों को दोपहर के समय गुड़–गेहूं बांटें।
2. नाश्ते में मीठा भोजन करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप अपने विभाग में अधिकारी के प्रिय रहेंगे। आप व्यवहार कुशल, ठीक से जीवन निर्वाह करने वाले होंगे। आप खुशामदी और नीतिशास्त्र में निपुण होंगे। आप लेखक–संपादक, अनेक विद्याओं के जानने वाले हो सकते हैं। ठेकेदारी के काम से धन कमाने वाले होंगे। आप पूरा धन कमाने वाले हैं। आप अव्वल दर्जे के खुशामदी होंगे। आप अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से स्वार्थ सिद्ध करेंगे। आप समुद्री यात्रा या विदेश की यात्रा अवश्य करेंगे। आप शरारती और मतलब परस्त होंगे। परंतु दूसरों के हां में हां मिलाने या खुशामद करने में माहिर होंगे। आप मीठी–मीठी बातें करके सबको मोहित कर लिया करेंगे। व्यापार करने से घर के लोगों को भी बरकत होगी। आप हुनरमंद और बेशर्म स्वभाव के है। 50 वर्ष की उम्र के बाद आपका अच्छा जीवन बीतेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाएगा।

यदि आपने मादक चीजों–द्रव्यों का प्रयोग किया, हरे रंग की बोतल में विदेशी शराब या परफ्यूम अपने घर में रखा, मछली का शिकार किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से शराब–पीना और मांस खाना आपके लिए नुकसानदेह है। आपको अपनी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है। आप दूसरों के लिए बेवकूफ दोस्त के समान होंगे। आपकी दूसरों के साथ चालबाजी की आदत रहेगी। 48 वर्ष की आयु तक पिता के सुख में अभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

1. चौड़े पत्तों का वृक्ष, तुलसी–मनीप्लांट न लगावें।
2. शराब–मछली का सेवन न करें।
3. मछली का शिकार न करें या मछली न पकड़ें।

उपाय :
1. मजदूर पेशा व्यक्ति की सेवा करें।
2. मछलियों को भोजन का हिस्सा खिलायें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पिता का सहयोग प्राप्त होगा। भाई आपके मददगार हो सकते हैं और उनसे लाभ भी होगा। कारोबार में भाई का साथ भाग्य जगाता है। आपके जीवन के 16 वर्ष से 28 वर्ष तक का समय भाग्य आपका खूब साथ देगा। आपके भाग्य से ससुराल वालों को बहुत लाभ होगा आपको धन–संपदा प्राप्त होगी। आप गरीबों की मदद करेंगे तथा धर्म में विश्वास रखेंगे, तो आपका भला होगा। पिता की उम्र तक आपकी हालात अच्छी रहेगी। आपको लाभ तो होगा परंतु आप कर्जदारी में भी रहेंगे। सरकारी कामों से संबंधित कमाये धन में बहुत बरकत होगी। आपके जीवन में आमदनी के और भी कई रास्ते हो सकते हैं। आप दूसरों के मददगार होंगे आप अपनी आमदनी का अपव्यय भी कर सकते हैं या आप अपने धन को संभाल कर नहीं रख सकेंगे। आपकी दोस्ती से दूसरों को लाभ मिलेगा। आप अपने भाई–बंधुओं, दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार रखेगें। आप अपनी किस्मत पर भरोसा नही करेंगे।

यदि आपने पूजा स्थान घर में रखा, चाल–चलन खराब किया, घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से परंतु पिता की मृत्यु के बाद कोई सहायता नहीं करेगा। आप परिवार के साथ रह कर सुखी परंतु अकेले रहने में दुःखी रहेंगे। आप की आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। बुढ़ापे में आपकी किस्मत ढीली हो जाएगी। परिवार कितना बड़ा हो मगर कफन पराया मिले ऐसा शक है। आप शराब–बीयर आदि न पीएं वरना आपके पास धन नहीं टिकेगा। पिता की मौत के बाद आपके भाग्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपकी मौत शान और सम्मान से होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. अण्डे न खावें।
2. पूजा स्थान घर में न रखें। धर्म मंदिर में पूजा करें।

उपाय :

1. पीला रुमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली–भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल–चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य /हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें वैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल–चलन शक्की होगा। आप यदा–कदा मूर्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी–व्यापार बार–बार न बदलें।

उपाय :
1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में शनि पड़ा है, जिसकी वजह से आपका जीवन सुखी रहेगा। आप स्त्री और प्रेम संबंधों से घिरे रहेंगे, परंतु जवानी के बाद कामवासना से परहेज और धार्मिक विचारों की प्रवृत्ति हो जाएगी। सेहत खराब के समय शराब दवा के रूप में काम करेगी। आपके रिश्तेदार आपकी सहायता करेंगे। माता या पिता में से एक का सुख बहुत लंबे

समय तक मिलेगा। दूसरी औरतों के आगे–पीछे भागना, आपकी अपनी पत्नी के लिए बुरा असर करेगा। घर से दूर विद्या पढ़े तो अधिक लाभ होगा।

यदि आपने किराये के मकान में रिहाईश की, मकान में काले कीड़े निकले, सांप का तेल बेचना शुरु किया, मादक चीजें बेचीं तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप क्रोधी, धूर्त, पानी के सांप जैसे स्वभाव के होंगे, आपको मकान–जायदाद का सुख कम ही मिलेगा। कभी बीमारी के चक्कर में पड़ जाएं तो शनि की चीजों का प्रयोग करें। माता दुःखी रहेंगी या माता के लिए कष्टकारक समय होगा। विधवा स्त्री से अनैतिक संबंध रखने पर या खर्च करने से कंगाल हो जाएंगे। शराब पीने से शुभ प्रभाव नष्ट हो जाएगा। पेट में खराबी, विकार रहेंगे। आपकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो सकता है और आप पर लांछन लगेगा। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी रह सकती है या आपको पत्नी सुख में कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हरा रंग हानिकारक है।
2. काला कपड़ा न पहनें।

उपाय :

1. कुएं में दूध डालें।
2. मछली–भैंस–कौवे को भोजन का हिस्सा खिलायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप शील संपन्न, अच्छे स्वभाव के, शूरवीर, साहसी होंगे। आपका हर काम सराहनीय होगा। आपके उच्च विचार होंगे। आपको सबसे यथोचित सम्मान मिलेगा। आप बड़े कारखाने के मालिक होकर या उच्च पद पर रह कर बहुत बड़ी संपत्ति कमाएंगे। आपके जीवन में राजयोग रहेगा और अच्छा सुख प्राप्त होने की उम्मीद है। आप निश्चित ही बड़े व्यापारी और धनवान होंगे। फिजूल के खर्चों से सावधान रहें। धन–दौलत का अच्छा असर रहेगा। सिर के बाल जल्दी सफेद हो जाएंगे मगर उनको डाई न करें। आपका चरित्र बहुत ऊंचा होगा।

यदि आपने अपना सिर नंगा रखा अर्थात् सिर पर टोपी/पगड़ी न रखी, मौके के आफिसर से झगड़ा किया, अपने परिवार को तोड़ा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से माता–पिता को कष्ट की आशंका है। शरीर में कोई विकार उत्पन्न होगा। धन–संपत्ति का नुकसान हो सकता है। आपमें कोई न कोई व्यसन विद्यमान हो सकता है, सावधान रहें। आप अपने हाथों संपत्ति को बेच भी सकते हैं। आपकी

तंगदिली से दूसरों के साथ बैर पैदा हो सकता है। परिवार के लोगों से अनबन रहेगी। माता के लिए कष्टकारक समय भी आ सकता है। आंखों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। सिर दर्द से आपकी परेशानी बढ़ सकती है। कोई काला आदमी आपकी धन–संपत्ति का नाश कर सकता है। ऊंची जगह से गिरने का भय, सरकारी अधिकारी से झगड़ा करने पर जुर्माने आदि का भय, बीमारी पर धन का खर्च हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सिर पर सूर्य की रोशनी न पड़े अर्थात् नंगा सिर न रखें।
2. मौके के अधिकारी से झगड़ा न करें।

उपाय :

1. सिर पर सफेद टोपी या शरबती पगड़ी टोपी जरूर पहनें।
2. जौ अंधेरी जगह में बोझ के नीचे दबायें।
3. मीठा भोजन अंधों को बांटें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के चाथे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप पूर्ण आस्तिक होंगे। हर काम धीरज के साथ करेंगे। सभी के साथ आपका व्यवहार सौहार्दपूर्ण रहेगा। आप आशावान, गुरु और पिता की सेवा में संलग्न, चरित्रवान और जो मिले उसी में संतोष प्राप्त करने वाले होंगे। आपकी कन्या भाग्यवान और आपके लिए लक्ष्मी स्वरूपा होगी। कन्या के जन्म के बाद आपका घर धन–धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा। आपको पिता का लम्बे समय तक सुख मिलेगा। आप पिता और गुरु की भक्ति करने वाले होंगे। आपको जायदाद संबंधी कानूनी समस्या खड़ी हो सकती है। आप स्वयं एवं आपके पुत्र दीर्घायु होंगे। आपको अच्छा भवन और उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा।

यदि आपने कुत्ते को मारा या किसी दूसरे से मरवाया, कुत्ता पानी में गिराया, कुल पुरोहित से झगड़ा किया या उससे नाता तोड़ा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो देर से संतान पैदा होगी या संतान सुख में कमी बताता है। पुत्र संतान की अपेक्षा कन्या संतान अधिक होंगी, ऐसी आशंका है। पुत्र जन्म के बाद माता को कष्ट की आशंका है। मधुमेह रोग की आशंका है। रीढ़ की हड्डी, पेशाब की बिमारी होगी ऐसी आशंका है। दुर्घटना या ऊपर से गिरने का भय है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. कुत्ते को चोट न मारें।
2. माता से दूर न रहें।

उपाय :

1. चने की दाल, केसर धर्मस्थान में देवें।
2. कुल गुरु या कुल पुरोहित का आशीर्वाद प्राप्त करें।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति–रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख–दुःख का

ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी–नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री मातृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर वजन में चांदी लेकर उसी दिन दरिया में बहा देवे।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू–टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने–जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने–बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि

काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन–दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल–ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल

चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई का परिवार चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन लेकर सौ अलग–अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो

आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों–करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी–ठगी–गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा–मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी–व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

टेवे की श्रेणी

रतांध ग्रह/अंधा टेवा

लाल किताब के अनुसार रतांध ग्रह को नहोराता के ग्रह भी कहते हैं। ये ग्रह दिन में देखते हैं, परंतु यही ग्रह रात्रि में अंधे हो जाते हैं। ये ग्रह अर्द्ध–अंधे कहे जाते हैं अर्थात् चौथे खाने में सूर्य और सातवें खाने में शनि हो तो वह टेवा आधा अंधा टेवा कहलाएगा।

इस प्रकार का टेवा जातक के व्यावसायिक जीवन में, मन की शांति के लिए और गृहस्थ सुख के लिए काफी हद तक अशुभ असर पड़ता है। सातवें खाने में बैठा शनि बहुत शक्तिशाली हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सप्तम खाने के शनि को दिग्बल प्राप्त हो जाता है। इस भाव का शनि अपनी दसवीं संपूर्ण दृष्टि से सुख स्थान में स्थित सभी ग्रहों को प्रभावित करता है। शत्रु दृष्टि से सूर्य के शुभ फल अशुभता में परिणत हो जाएगा। चतुर्थ स्थान से सूर्य की सप्तम दृष्टि कर्म भाव पर पड़ कर कर्म फल को अशुभ कर देगा। सभी प्रकार की मन की शांति को पूर्ण रूपेण कम कर सभी प्रकार के सुखों को नष्ट कर देगा। कुंडली पर अशुभ प्रभाव देने वाला शनि और उसकी दृष्टि है। अतः सूर्य के उपाय की उपयोगिता नहीं। मात्र शनि की अशुभता नष्ट करने के लिए शनि का उपाय करना चाहिए।

निष्कर्ष

आपकी पत्री रतांध ग्रह से प्रभावित नहीं है।

धर्मी टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ धर्मी टेवा होते हैं। धर्मी टेवा के अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है। जिस टेवा में बृहस्पति के साथ शनि किसी भी घर में अर्थात् शुभ घर में स्थित हो तो ऐसा टेवा धर्मी टेवा हो जाता है। धर्मी टेवा वाला जातक मुश्किल या कष्ट के समय, जब उसकी सभी राहें अवरुद्ध हो जाती हैं उस समय ईश्वर अपने हाथों से उसकी सहायता करते हैं। शनि ग्रह मुश्किलों का एवं हमारे भाग्य का कारक भी लाल किताब के अनुसार होता है। टेवा में बृहस्पति के साथ अथवा बृहस्पति की राशि में शनि बैठ जाए तो शनि के स्वभाव में शुभता आ जाती है। बृहस्पति और शनि का संबंध बहुत से दोषों को दूर कर देता है। 6ठें, 9वें, 11वें एवं 12वें घरों में शनि बृहस्पति का संयोग होना बड़ी समस्याओं का शमन एवं जीवन के उतार–चढ़ाव को नियंत्रित कर देता है। इसके प्रभाव से (कुंडली) टेवा की अशुभता समाप्त और सारी विपदाओं का अंत हो जाता है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री धर्मी टेवा नहीं है।

नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ हालातों में बारह साल की आयु तक कुछ नाबालिग टेवे होते हैं। उस दशा में बारह साल तक के बालक की कुंडली का प्रभाव नहीं उसके पिछले जन्म के भाग्य का असर ही प्रभावी रहता है। नाबालिग टेवा उसको कहते हैं जबकि टेवा 1, 4, 7 और 10 खाने अर्थात् केंद्र स्थान खाली हो अथवा सिर्फ पापी ग्रह शनि, राहु और केतु ही हो या अकेला बुध ही हो तो वह नाबालिग ग्रहों का टेवा होगा।

उसकी किस्मत का हाल 12 साल तक शक्की होगा।

लाल किताब के अनुसार नाबालिग टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक–एक ग्रह का प्रभाव निम्नरूपेण पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1. उम्र के पहले साल में सातवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
2. उम्र के दूसरे साल में चौथे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
3. उम्र के तीसरे साल में नौवे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
4. उम्र के चौथे साल में दसवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
5. उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
6. उम्र के छठे साल में तीसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
7. उम्र के सातवें साल में दूसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
8. उम्र के आठवें साल में पांचवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
9. उम्र के नवमें साल में छठे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
10. उम्र के दसवें साल में बारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
11. उम्र के ग्यारहवें साल में पहले घर के ग्रह का असर पड़ता है।
12. उम्र के बारहवें साल में आठवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री नाबालिग ग्रहों का टेवा नहीं है।

लाल किताब वर्षफल 2019-2020

वर्त्तमान आयु - 46
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	––	––	––	मन्दा
चंद्र	––	––	––	नेक
मंगल	––	––	––	नेक
बुध	––	––	––	मन्दा
गुरु	––	––	––	मन्दा
शुक्र	––	––	––	मन्दा
शनि	––	––	––	नेक
राहु	––	––	––	मन्दा
केतु	––	––	––	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	––	हाँ	हाँ	––	हाँ	––	––	––	हाँ	हाँ	––

वर्ष कुंडली 2019 – 2020

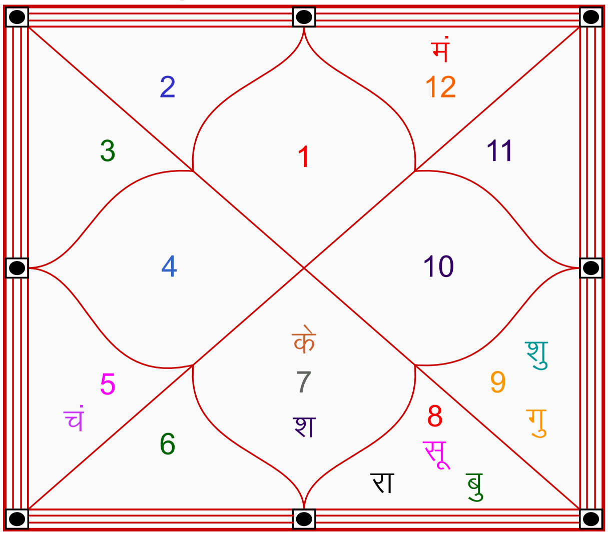

वर्ष चन्द्र कुंडली 2019 – 2020

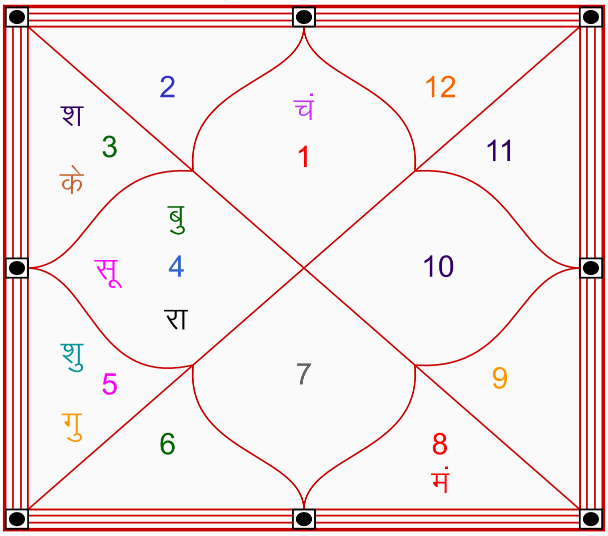

लाल किताब वर्षफल 2019-2020

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष चाल–चलन खराब हुआ तो गुप्त रोग से दुःखी हो सकते हैं। गंदी सोहबत से आपके सम्मान पर धब्बा लगेगा और धन नष्ट हो, ऐसी आंशका है। अतः आपको इन बातों से बचना होगा। जहरीले कीट–पंतगे के काटने का भय है। टैक्स विभाग की चिंता रहेगी। चोरी–ठगी भी हो सकती है सतर्क रहें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. बड़े भाई की सेवा करें या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार वालों को सोने–चांदी का लाभ होगा, विद्या का लाभ होगा, आप दूसरों के कष्ट अपने पर झेलेंगे, दूसरों पर परोपकार करेंगे, लड़ाई–झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे उस व्यक्ति की जीत होगी। आपकी बहुत प्रसिद्धि होगी और समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हर कार्य में किसी की सलाह जरूर लेवें।
2. पाप के कामों में अपना हस्तोप न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी समाज में आवाज बुलन्द रहेगी, शत्रु मुंह की मार खायेंगे, मुसीबतें टल जाएगी, गुरु निर्धन–ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहेंगे, आप अपनी मनमर्जी के अनुसार कार्य करेंगे, किसी से दब कर नहीं रहेंगे। मीठा–भोजन या मिठाई आपको अधिक पसन्द रहेगी। मुकददमे में जीत या सरकारी विभाग से लाभ से लाभ हो सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।

2. लोग आपका नमक खाकर नमक–हरामी करेंगे, सतर्क रहे।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू–टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल–चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष नास्तिक प्रवृत्ति बन सकती है जो आपके लिए शुभ नहीं है। बुजुर्गों से विरोध या झगड़ा आपको नहीं करना चाहिए। परिवार में किसी को दिल से संबंधित बीमारी हो सकती है। सोना बिक जाये या गिरवी पड़े या गुम हो जाए ऐसी संभावना है। किसी को दिया हुआ वायदा आप पूरा नहीं करेंगे तो हानि होगी।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंगा स्नान करें 9 बार (दो महीने लगातार या महीने में एक बार या 9 दिन लगातार)
2. वचन और धर्म की पालना करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग करेंगे तो वह आपको हानिकारक हो सकते है। मादक द्रव्यों और चीजों का कुसंगति के कारण प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं इससे बच कर रहें। स्त्री, धन, संतान पर समय मध्यम रहेगा। चाल–चलन ठीक रखें कारण गुप्त रोग का भय है। भाई–बंधुओं से सावधान रहें।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान बनाएं तो नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. नीम के पेड़ के तने में चांदी के 9 चौरस टुकड़े दबायें (अगर आपके पुत्र संतान है तो)।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष परोपकार करने से धन लाभ पाएंगे। यह लाभ 7 गुणा तक हो सकता है। मकान बनेगा और बुजुर्गों से जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा। आपको गांव/शहर या किसी संस्था में पद मिल सकता है। पिता/ससुर और पत्नी के लिये समय शुभ रहेगा। चाल–चलन खराब रखने से धन हानि होगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. डाक्टर/कैमिस्ट का साथ न रखें।
2. चोर–डाकू से संबंध न रखें।
3. बुजुर्गी मकान के मुख्य द्वार की दहलीज ठीक रखें उसके दोनों तरफ सूर्योदय से पहले सरसों का तेल डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अंगहीन, निःसंतान, काने, गंजे व्यक्ति से दूर रहें। जन्म दिन के बाद आठवें मास से उलझनें बढ़ सकती हैं। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर–नीचे होता रहेगा, बिजली विभाग, जंगल विभाग, पुलिस विभाग से संबंधित कामों में परेशानी या धन और समय नाश हो सकता है। बंधन और कैद में न रहेंगे।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के (औफदप) के टुकड़े जल प्रवाह करें।
3. जिस दिन इस वर्ष का 8वां मास शुरू हो उस दिन 43–43 बादाम मंदिर में ले जाकर वहां रखें, उसमें से 43 बादाम उठा कर घर पर लाकर सफेद थैली में रख लें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिनों–दिन आपके धन की बढ़ोत्तरी होती रहेगी, ऐसी संभावना है। आजीविका के नये साधन बनेंगे। आप अपनी धुन के पक्के रहेंगे। जिसके कारण आप बड़े से बड़े व्यक्ति के सामने अपना झंडा गाड़

लेंगे। आपकी संतान आपकी सहायता में रहेगी और संतान मुसीबत में दुश्मन को मार आयेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का काम न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• सिक्के के (औफदप) 8 पीस चौरस जल प्रवाह करें या चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2020-2021

वर्त्तमान आयु - 47
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	हाँ	——	नेक
बुध	——	——	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	हाँ	हाँ	हाँ	——	——	हाँ	हाँ	——	हाँ	हाँ

वर्ष कुंडली 2020 – 2021

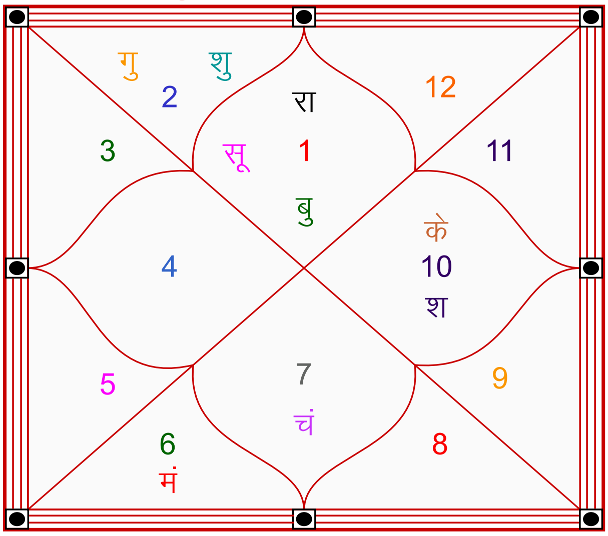

वर्ष चन्द्र कुंडली 2020 – 2021

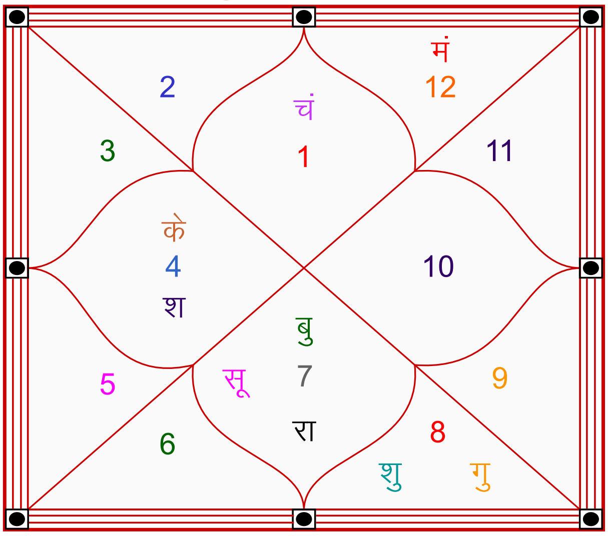

लाल किताब वर्षफल 2020-2021

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मकान में अंधेरा कमरा है तो उसे रोशनी में बदलने से, माया का सांप, दौलत का हाथी आपके घर से चला जाएगा अर्थात् धन की कमी या हानि होगी, हड्डी संबंधित चोट/रोग का भय, दिल की धड़कन बढ़ जाना, रक्त चाप घट या बढ़ जाये, ऐसी आशंका है, मान–सम्मान की हानि भी हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य का अर्घ्य देवें।
2. बन्दरों को गुड़/केला खिलायें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके माता–पिता को अधिक धन लाभ होगा। आपको किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। ज्योतिष विद्या, योगाभ्यास तथा शायरी में आपका शौक रहेगा। जल से संबंधित कामों से लाभ होगा। नये विषयों की खोज भी कर सकते हैं, विदेश यात्रा या विदेश से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूध–पानी का व्यापार न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में खुशी का योग बनेगा, छोटे भाई की मदद करेंगे, शत्रुओं में कमी होगी या शत्रु दबे रहेंगे, साहुकारा (लिखा–पढ़ी करके ब्याज पर रुपया–पैसा देना) करने से लाभ होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे और दूसरों को भी प्रसन्न रखेंगे। साधू–संन्यासी की तरह जीवन व्यतीत करेंगे और जनता की सेवा करेंगे। परिवार व समाज में सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. भाई से झगड़ा न करें।

2. पुत्र का जन्म हो तो जन्म पर मीठा या मिठाई न बांटे यदि मिठाई बांटनी हो तो मिठाई के साथ नमकीन चीज जरूर देवें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ हो सकता है। आपके मुंह से निकली हुई बात में दम होगा, आप दूसरों की परवाह नहीं करेंगे। मधुर भाषा बोलेंगे, कल्पनाशील विचार होंगे। आप पर दूसरे लोगों का प्रभाव रहेगा। आप परिवार के झगड़ों में सुलह करने में भूमिका निभाएंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अण्डा–पेस्ट्री आदि अण्डे से बनी चीजें न खावें।
2. शराब–बीयर न पियें, मांस–मछली का भोजन न करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके पिता को कष्ट, सर्राफी/जौहरी के कामों अर्थात् अधिक लागत के कामों से हानि मिलेगी और मिट्टी के कामों अर्थात् कम लागत के कामों से अधिक लाभ होगा। दूसरों के झगड़े में पड़ कर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, सावधान रहें। आपमें कुछ बेरहमीपन भी आ सकता है जिसके कारण आप दुःखी रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें या फूलों वाले गमले लगावें।
2. केसर या हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है। जिससे दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होगी। ईश्वर पर भरोसा रहेगा जिससे आपके सभी काम पूर्ण होंगे। साधू वेश में आशिकाना ख्याल रहेंगे। चरित्र सुधार कर रखेंगे। प्रेम संबंधों में धोखा हो सकता है इसलिये प्रेम संबंध के चक्कर से बचें।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पशुओं पर जुल्म न करें।

2. शेर मुंह मकान में रिहाइश न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी विभाग या सरकार द्वारा लाभ मिलेगा। इस वर्ष का हर दसवां दिन और दसवां महीना आपके लिये शुभ और लाभकारी है। धर्मात्मा होना आपके लिये ठीक नहीं रहेगा। स्थायी कामों अर्थात एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से मान–सम्मान बढ़ेगा और अधिक धन लाभ मिलेगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मादक द्रव्यों/चीजों का प्रयोग न करें और मछली न खायें।
2. भाग–दौड़ के काम न करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी कुछ अदला–बदली का योग है। किस्मत का असर स्थिर नहीं रहेगा। आपका शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव हो सकता है। कुछ बनते कामों में रूकावट भी आ सकती है। आपको नीला–काला कपड़ा पहनना हानिकारक हो सकता है। सरकारी विभाग द्वारा रिश्वत या गबन का केस बन सकता है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़–गेहूँ दान देवें।
2. दूध शरीर पर मल कर स्नान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मिट्टी के कामों से सोना बनेगा, शहर/गोव/देश/विश्व प्रसिद्ध हो सकते हैं। समाज में आपकी ख्याति बढ़ेगी, धन का अभाव नहीं रहेगा। आपका स्वभाव कुछ शक्की बन सकता है। संतान सुख का योग भी इस वर्ष है मगर माता को कष्ट हो सकता है सास/माता की सेहत खराब या उनसे जुदाई हो सकती है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन खराब या अनैतिक संबंध न रखें।

2. कुत्तों से नफरत न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

- 43 दिन सूर्य को चीनी डाल कर अर्घ्य देवे।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2021-2022

वर्त्तमान आयु - 48
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	नेक
मंगल	——	——	——	मन्दा
बुध	——	हाँ	——	नेक
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	नेक
शनि	——	——	हाँ	नेक
राहु	——	हाँ	हाँ	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	हाँ	——	हाँ	——	——	——	हाँ	——	——	——

वर्ष कुंडली 2021 – 2022

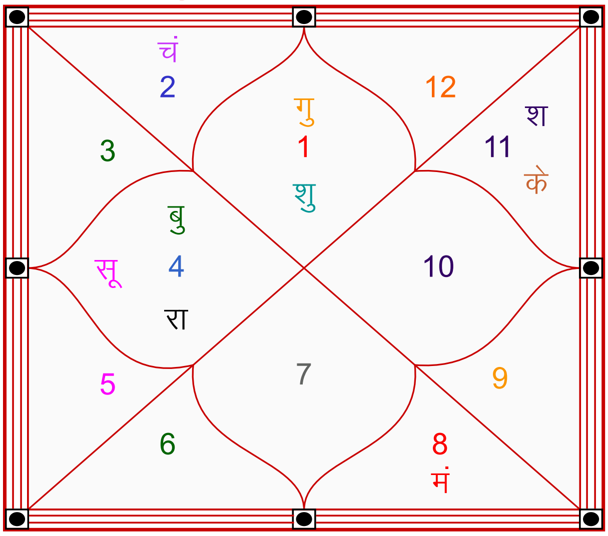

वर्ष चन्द्र कुंडली 2021 – 2022

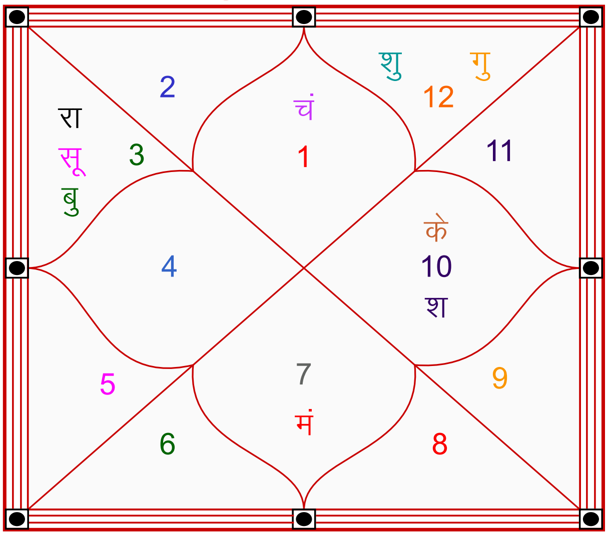

लाल किताब वर्षफल 2021-2022

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 4 में है तो जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता और सुख की हानि होगी, माता से दूर रहे तो विद्या से लाभ होगा। मन अशांत रह सकता है और स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ सकता है। कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। कुछ लोग आपके काम बिगाड़ सकते हैं सतर्क रहें। पैतृक कार्य बदलने का विचार रहेगा। माता से झगड़ा रहेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. अन्धे व्यक्ति को भोजन खिलाएं।
2. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सुख और सुख के साधन मिलेंगे, जददी विरास्त से जायदाद का हिस्सा या लाभ मिलेगा। सफेद चीजों के कारोबार से अधिक लाभ मिलेगा। भाई–बंधुओं का सुख अवश्य मिलेगा। विद्या संबंधी कामों में सफलता मिलेगी। यात्रा करने या पहाड़ी प्रदेश से लाभ मिलेगा। चाल–चलन ठीक रखें।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. घर में मूर्तियां न रखें और घंटी, घड़ियाल आदि न बजायें (संतान सुख हेतु)। परंतु दीवार पर तस्वीरें लगाकर पूजा–पाठ कर सकते हैं।
2. शराब आदि मादक वस्तुओं का इस्तेमाल न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री से झगड़ा नहीं करना चाहिये। वैवाहिक समस्याएं या परिवार में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। छोटे भाई अगर हों तो उस के लिये समय ठीक नहीं। आपकी जुबान से निकला अपशब्द लड़ाई–झगड़े का कारण होगा। आपको गुस्सा करना नुकसानदेह है, समय धैर्य से निकालें।

मंगल की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री को उपहार देकर चरण स्पर्श कर आर्शीवाद लेवें।
2. तन्दूर में मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलायें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष धन लाभ, परिवार में सभी सुखी और सुख के साधन मिलेंगे। कुल मिला कर राजयोग का समय है, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ प्राप्त हो ऐसा योग है। बहन–बेटी, बुआ–साली से भी लाभ हो सकता है। माता से धन–जायदाद का लाभ होगा मगर मातृ सुख में कमी की आंशका रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बेटी–बहन, बुआ–साली से झगड़ा न करें।
2. विधवा स्त्री से सम्बन्ध न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। पिता–दादा की चिंता, परिवार में किसी को दिल का या मानसिक रोग की आशंका है। बुजुर्गो को दमा–सांस की बीमारी हो सकती है। शराब–बीयर आपकी बुद्धि को भ्रष्ट कर सकती है अतः इसका सेवन आपको वर्जित है। लोगों की निन्दा न करें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, सुंदर बनना, संवराना आपकी आदत बन जायेगी, आशिकाना मिजाज भी हो सकता है। अपनी आयु के लोगों में आप प्रधान बन सकते हैं। धार्मिक होते हुए भी आप में इश्क की हवस रहेगी। उत्तम भवन व वाहन का सुख प्राप्त हो सकता है। लोगों से मार्ग दर्शन लेंगे।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन खराब न करें और अनैतिक संबंध न रखें।

2. धर्म–कर्म में रूचि रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष धर्म पर अड़िग और पक्के रहेंगे। धर्म पर कायम रहेंगे तो मिट्टी के काम से सोना बनेगा। प्राण जाय पर वचन न जायें वाली कहावत आप पर चरितार्थ होगी। लोहा, कोयला, रबड़ आदि के कामों से लाभ हो सकता है। व्यसनों से दूर रहेंगे तो बहुत लाभ होगा। इन्साफ पसंद वृत्ति रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किराये के मकान में रिहाइश न करें।
2. ठगी–धोखे से धन न कमाएं।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता समान स्त्री से अवैध संबंध रखना हानिकारक है या खराब चाल–चलन आपके धन को नष्ट कर देंगे। मकान में लैट्रिन की जगह बदली तो कोर्ट केस का भय होगा। आप दिन में भी ख्वाब देखें मगर वह ख्वाब लाभ न देकर अवनति करायेंगे। दिमाग सोया सा रहेगा या बुद्धि कोई काम न करेगी।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2. सूखा धनिया (मसाला) जल प्रवाह करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कभी हिम्मत नहीं हारेगें। भाग्य आपका साथ देगा। धन–दौलत का अधिक लाभ होगा। आपको पुत्र संतान का सुख मिलेगा तो माता/सास को शारीरिक कष्ट हो सकता है खासकर आंखों में। चाल–चलन ठीक रखें वरना शारीरिक कमजोरी हो सकती है। आने वाले समय की अधिक सोच रहेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय कोई पीछे से आवाज दे तो काम पर न जायें क्योकि आगे काम नहीं

बनेगा।
2. व्यतीत समय की बातें करके को याद कर लोगों को न सुनायें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• शरीर पर शुद्ध सोना धारण करें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2022-2023

वर्त्तमान आयु - 49
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	मन्दा
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	मन्दा
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	मन्दा
शनि	——	हाँ	——	मन्दा
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	हाँ	——	हाँ	हाँ	——	——	हाँ	——	हाँ	——	——

वर्ष कुंडली 2022 – 2023

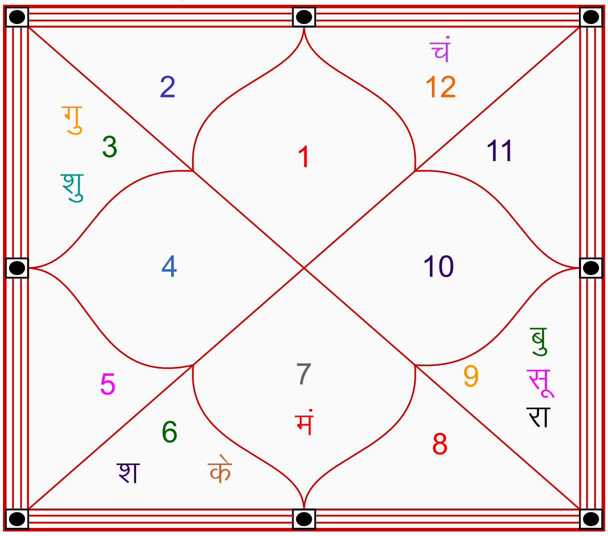

वर्ष चन्द्र कुंडली 2022 – 2023

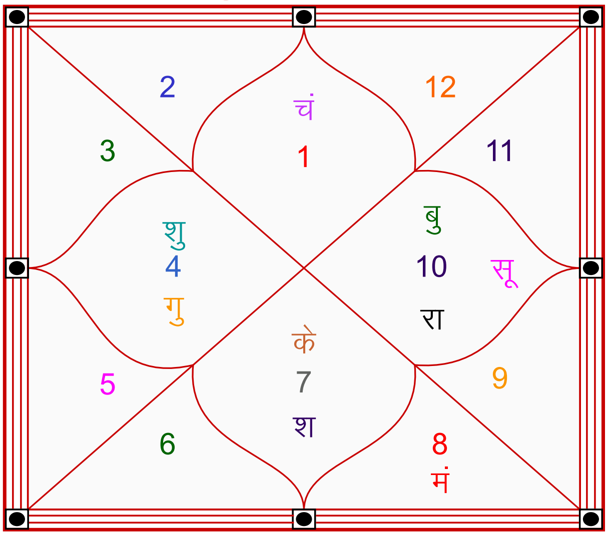

लाल किताब वर्षफल 2022-2023

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको बिना मेहनत का माल/गिफ्ट आदि नहीं लेना चाहिए, यात्रा में हर समय सतर्क रहें क्योकि यात्रा में चोट लगने या हानि होने का भय है। सरकारी विभाग से परेशानी हो सकती है नेकी का बदला बुराई में मिल सकता है। आपके विरोधी आपको अपनी गुप्त चाल से नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर में पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सूर्य ग्रहण के मध्य काल में 4 सूखे नारियल (बजने वाले) जल प्रवाह करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके सभी काम तरस–तरस कर बनेंगे, विद्या संबंधी कामों में रूकावट हो सकती है, आपकी बात बदलने की आदत बनेगी, व्यतीत समय की बातें लोगों को सुना कर अपनी बढ़ाई करेंगे। 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' जैसी कहावत आप पर चरितार्थ हो सकती है। मुकददमें में हार का भय रहेगा।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर में रखें या आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में कायम करें।
2. 16 लीटर वर्षा का पानी कनस्तर में भरकर 4 शुद्ध चांदी के चौरस टुकड़े डाल कर रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार की तरक्की और वृद्धि होगी। रोते हुए व्यक्ति को हंसाना और उसको ढांढस देकर मदद करना अपना कर्त्तव्य समझेंगे, इन्साफ पसन्द, ज्योतिष विद्या में रुचि रहेगी, विष्णु भगवान की तरह संसार के पालक सिद्ध हो सकते हैं। जज, सरपंच, नेता जैसे आदि पद का अधिकार भी मिल सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक सम्बन्ध न रखें।
2. घर में बेलदार पौधे या बेलें न लगावें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता से दूरी या पिता की चिंता रहेगी, पिता का धन नाश हो सकता है । आपको जुबान से सम्बन्धित बीमारी हो ऐसी आशंका है। गृहस्थ और संतान के सम्बन्ध में कुछ खराबियां भी हो सकती हैं। हर काम में कदम–कदम पर आपको विचार करके चलना चाहिये। यात्रा से हानि का भय है, सर्तक रहें।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गऊ ग्रास देवें।
2. लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष धर्म के विरुद्ध कार्य नहीं करने चाहिये। धन बुरे तरीकों से कमाने की नीयत रहेगी, बेमतलब गाली–गलौज, बकवासबाजी आप को समाज में अपमानित कर सकती है। पीपल का पेड़ काटना आप की संतान को कष्ट देगा। जिस पर आप बिगड़ेंगे उसका नाश कर देंगे। अपवित्र धर्म स्थान घर में होगा।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दुर्गा पाठ या कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों की सेवा करें)
2. केसर या हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष राग–रंग में आपकी रूचि आपके लिये ठीक नहीं रहेगी। पत्नी का क्रोध बढ़ सकता है। खराब चाल–चलन सें हानि का भय और मान–सम्मान को धक्का लगेगा। संतान की चिंता या संतान को शरीर कष्ट भी भोगना पड़ सकता है। दूसरे के घर में भी आपका निवास हो सकता है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पत्नी या स्त्रियों की सेवा करें।
2. मंगल की चीजों का प्रयोग करें।

शनि

आपकी वर्ष कुडली में शनि खाना नं. 6 में अशुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष पूर्णिमा के दिन कोई नया काम न शुरू करें। कारण, इस दिन शुरू नये काम से लाभ न होगा। चमड़े का समान मुफ्त/गिफ्ट न लें इससे आपका मान–सम्मान कम होगा या अकारण बेइज्जती का कारण बनेंगे। परिवार में किसी को गुर्दे या पथरी रोग का भय रहेगा।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काले कुत्ते की सेवा/पालन करें।
2. नया जूता किसी को पहनाकर पहनें या खरीदने के 6 दिन बाद पहनें।
3. बादाम गंदे नाले में डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पुलिस/कोर्ट का भय या चोरी का माल खरीदने का लांछन लग सकता है। पिता और ससुर को कष्ट या उनके द्वारा आपको हानि का भय है। साधू–फकीर का साथ फिजूल खर्ची ही बढ़ायेगा। तीर्थ यात्रा में रूकावट आ सकती है। धार्मिक कामों में रूचि रहेगी जो आपके लिये ठीक नहीं।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।
2. धर्म मंदिर में सिर झुकावें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष सोना न बिके और न ही गुम हो, खासकर विवाह समय मिली सोने की अंगूठी। यात्रा से हानि हो ऐसी आंशका है। चमड़ी, पांव में कष्ट हो सकता है। फिजूल खर्च बढ़ने की संभावना है। मामा को कष्ट का भय, संतान सुख की चिंता। शत्रु अकारण उभरेंगे और उनसे हानि का भय रहेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बांये हाथ की अनामिका अंगुली में पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

• शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2023-2024

वर्त्तमान आयु - 50
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	––	––	––	मन्दा
चंद्र	––	हाँ	––	मन्दा
मंगल	––	––	––	नेक
बुध	––	––	––	नेक
गुरु	––	––	––	मन्दा
शुक्र	––	––	––	नेक
शनि	––	हाँ	––	नेक
राहु	––	––	––	मन्दा
केतु	––	हाँ	––	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	––	हाँ	––	हाँ	हाँ	––	––	हाँ	––	––	––	हाँ

वर्ष कुंडली 2023 – 2024

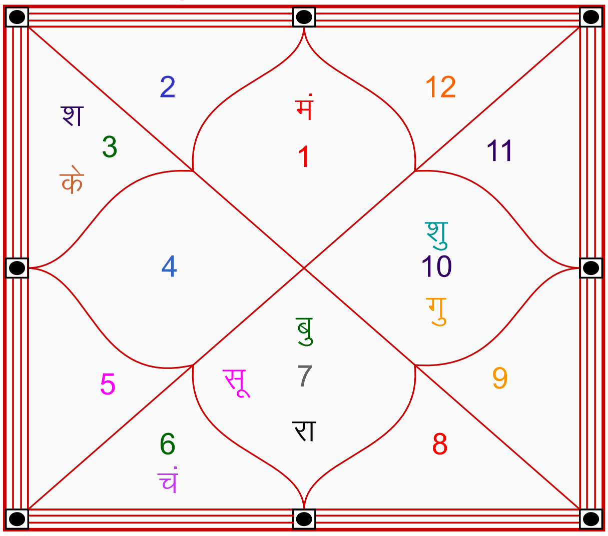

वर्ष चन्द्र कुंडली 2023 – 2024

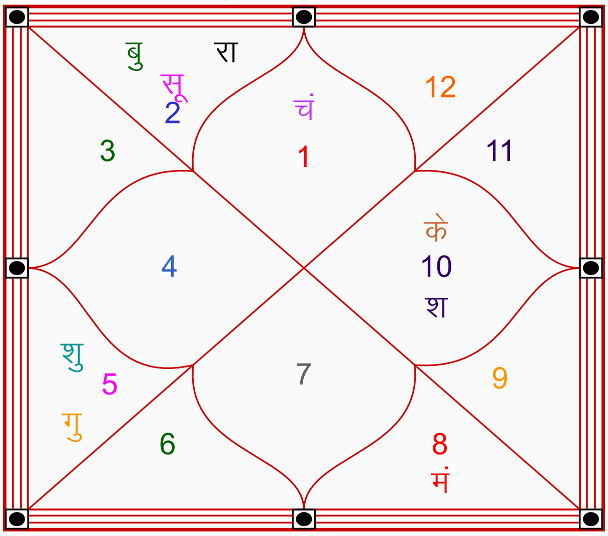

लाल किताब वर्षफल 2023-2024

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी विभाग से परेशानी होगी तथा गृहस्थ जीवन में कुछ क्लेश का अनुभव करेंगे। अधिक गुस्सा करना, खुदगर्जी, खुशामद करवाना आपके पतन का कारण बन सकता है, भागीदार से विरोध या झगड़ा हो सकता है। आप दुकानदार या प्राइवेट नौकरी करते हैं तो नर्म स्वभाव रखें, सरकारी अधिकारी हैं तो गर्म स्वभाव रखना चाहिए।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. रात्रि समय खाना बनाने के बाद गैस चूल्हा या चूल्हा/अंगीठी आदि की आग को कच्चे दूध के छींटे देकर बुझाएं। वह बुझा हुआ गैस चूल्हा या अंगीठी/चूल्हा सूर्योदय से पहले न जलावें।
2. कार्य पर जाने से पहने चीनी खा कर पानी पी कर जावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी माता को शरीर कष्ट रहेगा। आप के परिवार को माता की चिंता रहेगी या विद्या संबंधी परेशानी भी आ सकती है। आम जनता के लिये पानी पिलाने का पानी का स्रोत लगाना, आपको और आपकी संतान को कष्ट तथा परेशानी ही देगा। बिना सोचे–समझे किये गये कामों में आपको परेशानी उठानी पड़ सकती है, समझदारी से काम लें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. चंद्र ग्रहण के मध्य काल में 4 सूखे नारियल (बजने वाले) जल प्रवाह करें।
2. माता को कष्ट हो तो खरगोश पालें।
3. नाश्ते में कच्चा पनीर खायें। रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पीयें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष साहसी और शूरवीर बनेंगे, बुरे व्यक्ति के साथ भी नेकी का सलूक करेंगे, बड़े बहन–भाई से लाभ मिल सकता है। दूसरे व्यक्ति द्वारा की गई नेकी को सदा याद रखेंगे। परिवार और समाज को सच्चाई और नेकी की राह पर चलने की सलाह देंगे, लोहा/लकड़ी, मशीनरी आदि के कामों से लाभ मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. बिना मेहनत का माल, दान या गिफ्ट न लेवें।
2. हाथी दांत कायम करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में सम्मान मिलेगा, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ का योग है। स्त्रियों से सम्बन्धित कामों से या पत्नी से लाभ मिलेगा। कपड़े, डाक्टरी के कामों से अधिक लाभ मिल सकता हैं। आपकी कलम में तलवार से भी अधिक ताकत होगी। बेटी–बहन, बुआ–साली से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. बिना सींग वाली गाय या बकरी घर में न रखें।
2. हरी घास घर में न लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से अधिक लाभ नहीं होगा। ख्वाबों के महल बनाना आपकी आदत बनेगी। ख्वाबी महल न बना कर आप समय का सदुपयोग करें। साधू को कष्ट दिया, पीपल का वृक्ष उजाड़ा से तो आपको हानि का मुंह देखना पड़ेगा। संतान की चिंता, पिता–दादा का स्वास्थ्य भी खराब रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. गुरु/साधू की सेवा करें या पीपल के वृक्ष को पानी से सींचें (रविवार को छोड़कर) ।
2. तांबे का पैसा 43 दिन लगातार बहते पानी में डालें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 10 में शुभ हैं जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष कामशक्ति की अधिकता होगी। पत्नी के साथ रहते कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी और आपको किसी प्रकार का दुःख नहीं झेलना पड़ेगा। पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। आपमें लोभ और शक करने की भावना बढ़ सकती है। दस्तकारी के कामों से अधिक लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब–बीयर न पियें, मछली न खावें।
2. आशिक मिजाज न बनें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके हाथों से खर्च अधिक होगा या धन की कमी रहेगी। आप सबकी मदद करेंगे मगर लोग आपका कार्य बिगाड़ सकते हैं। लोहा, मशीनरी से संबंधित कार्यों से लाभ होगा। आप साहसपूर्ण कार्य करेंगे जिसके कारण आपको जोखिम भी उठाना पड़ सकता है।

शनि की शुभता बढ़ाने निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मछली का शिकार न करें, मछली न खायें। शराब न पिये।
2. कीकर या बेरी का वृक्ष घर में न लगायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बिजली या पुलिस विभाग से संबंधित कामों में हानि का भय, ट्रांसपोर्ट का काम करने से हानि या आयु शक्की हो सकती है। साझेदारों से झगड़ा। कारोबार में उथल–पुथल भी हो सकती है। पत्नी को सिर दर्द का रोग हो सकता है। पत्नी से तनाव या पत्नी से जुदाई भी हो सकती है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नारियल का दान करें।
2. शुद्ध चांदी की दो ईंटे घर में कायम करें।
3. प्लास्टिक की डिब्बी में शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष दूसरों की सलाह लेना आपके लिये हानिकारक हैं। आवारा घूमना या भाई से दूर प्रदेश में जीवन व्यतीत करना ठीक नहीं, शरीर पर फोड़े–फुंसी की शिकायत भी हो सकती है। किसी के किये पेशाब पर पेशाब करना आप को गुप्तांग में रोग और शरीर कष्ट देगा या संतान सुख की चिंता रहे ऐसा भी संभव है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. कानों में शुद्ध सोने की ननतियां पहनें।
2. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 6 दिन नाश्ते में कच्चा पनीर खावें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2024-2025

वर्त्तमान आयु - 51
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	हाँ	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	मन्दा
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	हाँ	——	——	नेक
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	नेक
शनि	——	हाँ	——	नेक
राहु	हाँ	——	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	——	हाँ	——	——	——	हाँ	——	——	——	हाँ	——

वर्ष कुंडली 2024 – 2025

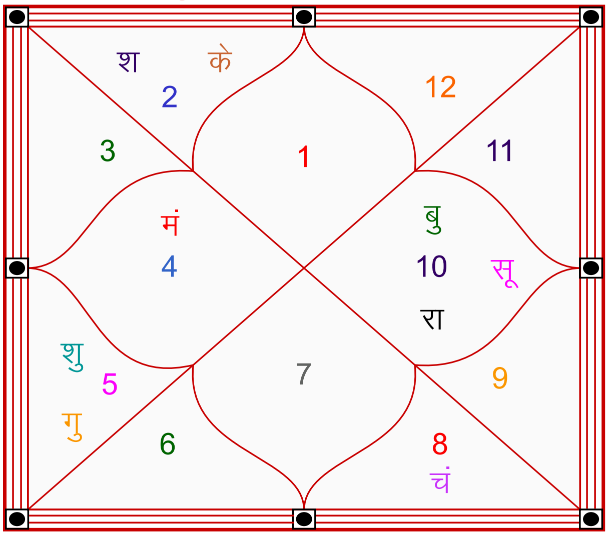

वर्ष चन्द्र कुंडली 2024 – 2025

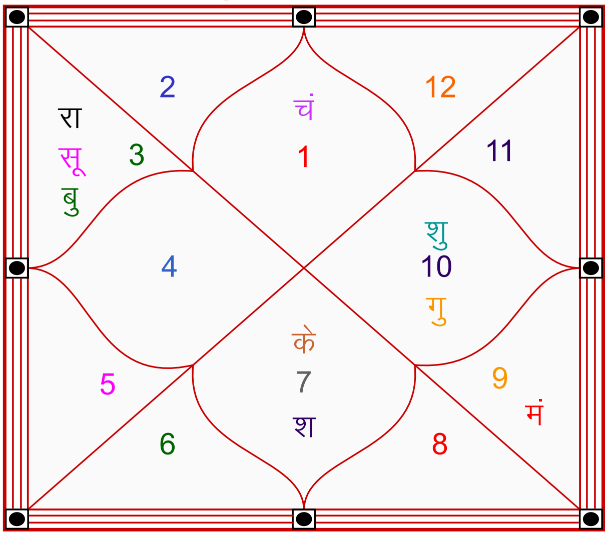

लाल किताब वर्षफल 2024-2025

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अपना भेद किसी को न बतायें आपका भेदी ही आपको तबाह करने की कोशिश कर सकता है, मशीनरी, लकड़ी के कामों में हानि हो सकती है। कोयला–बिजली के कामों में अधिक लाभ नहीं मिलेगा। पिता का सुख कम या पिता से लाभ न मिलेगा। आंखों में कष्ट का भय है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पैतृक मकान में हैंड पंप लगावें।
2. सिर पर सफेद–शरबती, टोपी पहनें या पगड़ी/स्कार्फ बांधें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता–पिता का सुख कम मिलेगा। जौहरी–जुएं के कामों में हानि होगी। ननिहाल को कष्ट या उनसे झगड़ा होगा। मन की शक्ति क्षीण, विद्या में रुकावट या माता का सुख मिले, घर से दूर भी रहना पड़ सकता है। सर्दी–जुकाम और पानी से कष्ट का भय, हृदय रोग का भय रहेगा। बुजुर्गों को सांस–दमा रोग की आशंका है।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मीठा भोजन या केसर–दाल चना या गुड़–गंदम धर्म स्थान में देवें।
2. अमावस्या के दिन दूध–चावल धर्म स्थान में देवें।
3. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सुख के साधनों से सुख नहीं मिलेगा। माता, नानी–सास और पत्नी से लाभ मिलेगा, गृहस्थ जीवन सुखमयी व्यतीत होगा, संतान की चिंता रहेगी, मेहमानों का आपके घर में आना–जाना लगा रहेगा। मकान/वाहन का सुख मिलेगा। दूसरों को नसीहत दे कर उनको सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रत्यनशील रहेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार के मकान में रिहाईश न करें।
2. काले–काने, अंगहीन, निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ मिलेगा, बुआ,बेटी,,साली,बहन की तरफ से खुशी मिलेगी। आप लोगों से व्यवहार कुशल, खुशामद और नीति के द्वारा सब काम निकलेंगे, अनेक विद्याओं में रुचि, आपके परिवार की और आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. हरा रंग निषेध
2. तुलसी, मनी प्लांट आदि चौड़े पत्तों के पेड़–पौधे घर पर न लगावें।
3. शराब आदि न पियें। मछली न खायें और मछली का शिकार न करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मुफ्त लंगर खाना या दान लेना हानिकारक है जो आपकी बुद्धि भ्रष्ट कर सकता है। गुरु–साधु से गाली–गलौज करना आपके लिये हानिकारक है। मांसाहारी होने से संतान को कष्ट होगा। आलस्य तरक्की में रुकावट बनेगा। नाव से नदी/समुद्र पार न जाए आशंका है आपका जीवन संकट में पड़ सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. साधू–महात्मा की सेवा करें।
2. धर्म मन्दिर की सफाई करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सफेद वस्तुओं से अधिक प्रेम रहेगा। आप अपने देश और जाति से प्रेम करेंगे, माता–पिता का कहना मानेंगे। दुनियावी बातों से अपने को मुक्त रखेंगे। पत्नी वफादार होगी, पत्नी के साथ अच्छे संबंध रखेंगे परंतु किसी चीज का अभाव नहीं होगा और कारोबार में रूकावट नहीं आयेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. स्त्रियों के रसिया न बनें।
2. प्रेम विवाह या अंतर्जातीय विवाह या माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष ईश्वर भक्ति में आपका विश्वास बढ़ेगा। पिता/ससुराल से धन–संपति का लाभ होगा। कोयला, चमड़ा, मशीनरी के कामों से लाभ होगा। मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अक्ल की बारीकी से उलझनों को सुलझा लेंगे। बने बनाये मकान का लाभ मिल सकता है। धन की कमी नहीं रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. माथे पर सरसों का तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मौके के ऑफिसर से झगड़ा नहीं करना चाहिए। परिवार वालों से नेक संबंध बनाये रखने में आपका भला है। परिवार से अलग रहना हानि देगा। पिता–ससुर को कष्ट की आशंका है। कारोबार में परेशानी का योग है आप अपनी संपत्ति बेच सकते हैं। बिना कारण जुर्माना/दंड का भय रहेगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. सिर पर सफेद या शरबती टोपी पहनें–पगड़ी बांधे या स्कार्फ बांधें।
2. अंधे व्यक्तियों को स्वादिष्ट भोजन खिलायें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष यात्रा करने से धन लाभ व मान–सम्मान बढ़ेगा, दलाली या कमीशन एजेंट के कार्य से लाभ होगा। आई–चलाई चाहे लाखों–करोड़ों रूपयों की हो मगर हिस्से में दलाल की दलाली की तरह धन लाभ होगा। सरकार से वजीफा या सरकारी विभाग से धन लाभ हो सकता है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चान चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. नकली सोना न पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन सिर पर सफेद–शरबती टोपी/पगड़ी/रूमाल/स्कार्फ से ढाप कर रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2025-2026

वर्त्तमान आयु - 52
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	हाँ	——	मन्दा
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	नेक
शनि	——	हाँ	——	नेक
राहु	——	हाँ	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	हाँ	हाँ	हाँ	——	——	——	——	हाँ	——	——

वर्ष कुंडली 2025 – 2026

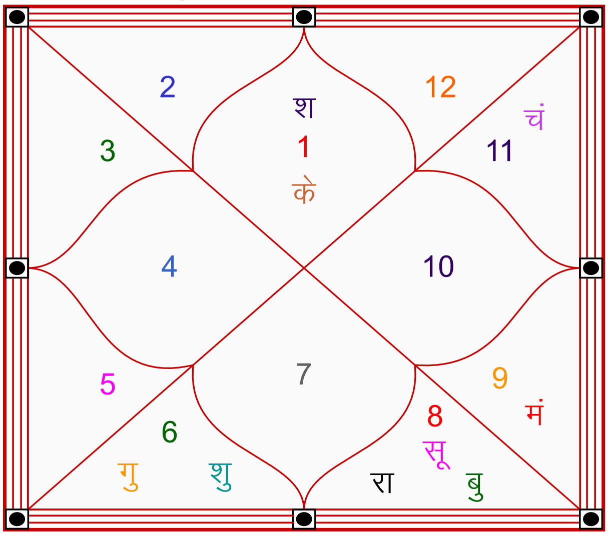

वर्ष चन्द्र कुंडली 2025 – 2026

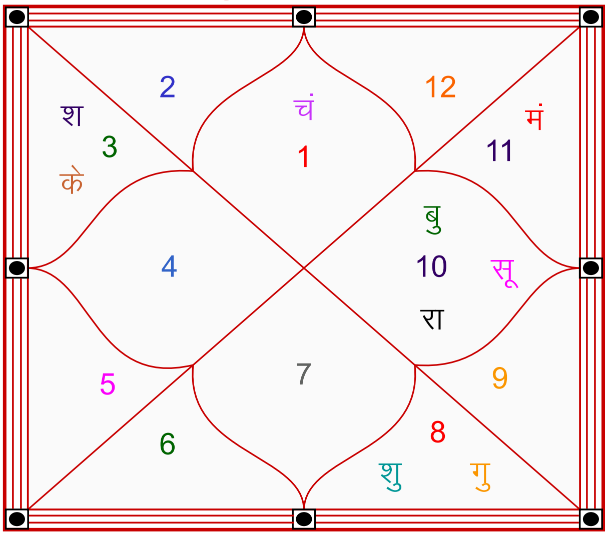

लाल किताब वर्षफल 2025-2026

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष चाल–चलन खराब हुआ तो गुप्त रोग से दुःखी हो सकते हैं। गंदी सोहबत से आपके सम्मान पर धब्बा लगेगा और धन नष्ट हो, ऐसी आंशका है। अतः आपको इन बातों से बचना होगा। जहरीले कीट–पंतगे के काटने का भय है। टैक्स विभाग की चिंता रहेगी। चोरी–ठगी भी हो सकती है सतर्क रहें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. बड़े भाई की सेवा करें या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से लाभ होगा, सुख के साधन मिलेगें, आपको स्त्रियों द्वारा सहयोग प्राप्त होगा, माता–संतान का सुख मिलेगा, कोर्ट, इंजीनियरिंग, डाक्टरी से संबंधित कामों से लाभ मिलेगा, कारोबार में बरकत होगी। रात्रि समय विद्या पढ़ने या रात्रि समय विद्या से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. विद्या पढ़ने में अरूचि न रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति में वृद्धि और उसका लाभ मिलेगा, परिवार में धार्मिक उत्सव भी हो सकता है। नौकरी–व्यापार में अधिक धन लाभ मिलेगा। विवाहित भाई के साथ रहेंगे या उसकी पत्नी की सेवा करेंगे तो आप समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की हैसियत से उभरेंगे और आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परदेश में रिहाईश न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू–टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल–चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मामा की चिंता रहेगी, किसी से भी कोई चीज मांगने पर भी न मिलेगी, आवारा घूमने की आदत आपको हर जगह तिरस्कृत करेगी। मामा/ताऊ/चाचा से झगड़ा आपको हानि देगा। कर्ज लेना, दान/भिाा मांगना, आने वाले समय को खराब कर सकता है। शत्रु पैदा होंगे मगर शत्रु अपने–आप मरते रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. धर्म मन्दिर के पुजारी को वस्त्र दान देवे।
2. शुद्ध सोना, केसर, चना दाल आदि पीली चीज़ें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कामपूर्त्ति के लिए स्त्री की प्रशंसा करेंगे और स्त्री की गुलामी भी करनी पड़ सकती है। धन का लाभ बहुत होगा। पुत्र संतान की बजाय कन्या संतान का सुख मिलने की आशंका है। जन्मदिन के बाद धन वृद्धि भी होगी। मान–सम्मान बढ़ेगा और वाहन सुख प्राप्त हो सकता है।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. स्त्री जाति का अपमान न करें।
2. पत्नी नंगे पैर ज़मीन पर न चले।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कैमिस्ट या डाक्टर, इंजीनियरिंग, से संबंधित कामों से लाभ हो सकता है। लोहा–लकड़ी के काम भी लाभ देंगे, माता–पिता के पास धन की बढ़ोत्तरी होगी। आपकी जायदाद बढ़ने की आशा है। सरकारी विभाग से लाभ मिलेगा और उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध बनेंगे।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. परिवार में कोई खुशी का समय हो तो बाजे न बजवायें।
2. शराब आदि पीना, मांस–मछली खाने और इश्कबाजी से दूर रहें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अंगहीन, निःसंतान, काने, गंजे व्यक्ति से दूर रहें। जन्म दिन के बाद आठवें मास से उलझनें बढ़ सकती हैं। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर–नीचे होता रहेगा, बिजली विभाग, जंगल विभाग, पुलिस विभाग से संबंधित कामों में परेशानी या धन और समय नाश हो सकता है। बंधन और कैद में न रहेंगे।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के (औफदप) के टुकड़े जल प्रवाह करें।
3. जिस दिन इस वर्ष का 8वां मास शुरू हो उस दिन 43–43 बादाम मंदिर में ले जाकर वहां रखें, उसमें से 43 बादाम उठा कर घर पर लाकर सफेद थैली में रख लें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष तरक्की का योग है। मगर तबदीली का योग कम ही है। यात्रा के आदेश पत्र के बावजूद यात्रा न होगी या बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ेगा। पिता–गुरु की सेवा में रूचि रहेगी। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग हो तो उसे पुत्र लाभ हो सकता है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. बकरी न पालें और बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिर के मकान में रिहाइश न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• सिक्के के (औफदप) 8 पीस चौरस जल प्रवाह करें या चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2026-2027

वर्त्तमान आयु - 53
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	हाँ	——	नेक
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	मन्दा
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	हाँ	——	मन्दा
केतु	——	——	हाँ	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	हाँ	——	——	हाँ	——	——	——	——	हाँ	——

वर्ष कुंडली 2026 – 2027

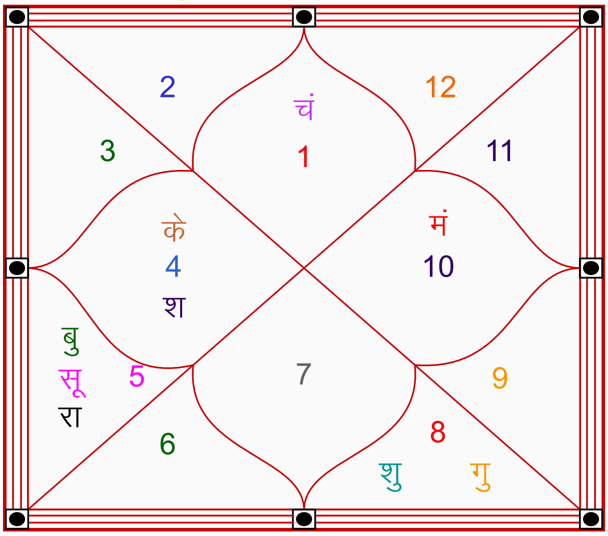

वर्ष चन्द्र कुंडली 2026 – 2027

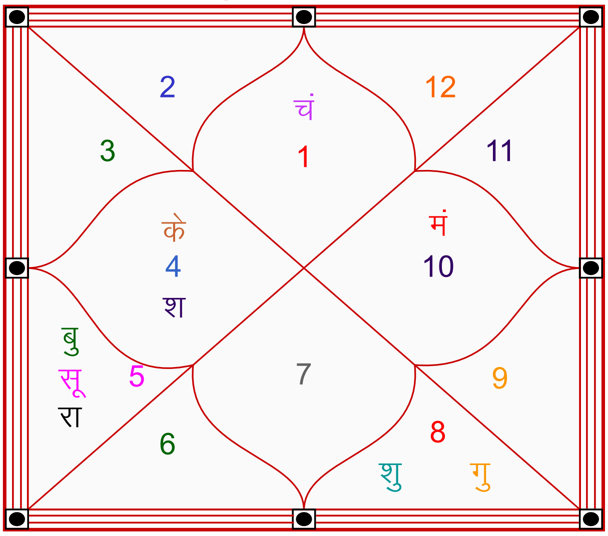

लाल किताब वर्षफल 2026-2027

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार में अगर झूठ और बेईमानी का धन आना शुरू हुआ तो वह धन रोग में नष्ट होगा, पैर में खराबी, संतान तथा आर्थिक स्थिति का आपको विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। पत्नी की तरफ से चिंता रहेगी। आपको सब के साथ मिल–जुल कर कार्य करना चाहिए। राजा और साधू से नेक संबंध रखें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बुजुर्गों के रीति–रिवाज जरूर मानें।
2. साला, जीजा, दोहता/भांजे की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सुंदर और सफेद कपड़े पहनने का शौक रहेगा, विद्या से लाभ, किसी की अमानत आपके पास रह सकती है माता–पिता की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, कभी यात्रा पर जायें तो यात्रा से वापस आकर माता के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेने से लाभ होगा। परिवार में बहुत देर बाद किसी के पुत्र संतान होगी।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक और अनैतिक संबंध न रखें।
2. माता या माता समान स्त्री से झगड़ा न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप की गिनती उच्च/प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी। आपका मान–सम्मान बढ़ेगा। कोई सरकारी विभाग या पुलिस/सेना विभाग में कार्यरत है तो तरक्की मिलेगी नौकरी व्यापार में अधिक धन लाभ होगा। आप राजसी समय व्यतीत करेंगे। अच्छे या बुरे तरीके से आप धन कमाएंगे, जायदाद और वाहन का सुख होगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सोना न बेचे न गिरवी रखें।

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

2. दूध उबाल कर रसोई में गैस चूल्हे/ अंगीठी /चूल्हे आदि पर गिर कर न जले इसका विशेष ध्यान रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अचानक धन लाभ होगा और सुख के साधन मिलेंगे, ज्योतिष विद्या और धर्म–अध्यात्म के प्रति रुचि, आप जो बात मुंह से कहेंगे वह सच हो सकती है अर्थात् आपके मुंह से निकला वाक्य ठीक वाक्य माना जा सकता है। अचानक धन लाभ होगा और बहुत अच्छे दिन देखने को मिलेंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. गऊ मुख घर में रिहाईश न करें।
2. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक सम्बन्ध न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अफवाहों का शिकार हो सकते हैं, पेशाब का रोग होने की संभावना है। आपको इस समय आलस्य त्याग कर भाग–दौड़ से अपने कामों को करना चाहिए और कोई ऐसा काम न करें जो आगे आने वाले समय में आपके लिए मुसीबत का कारण बने। आपका मन उदासी भरा भी रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।
2. दही, आलू, देशी घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गुप्त रोग का भय है। चाल–चलन ठीक रखें वरना पत्नी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है। पत्नी से झगड़ा करना आपके लिये हार और हानि का कारण होगा। पत्नी की हर बात में हां में हां जरूर मिलायें मगर करें अपने मन की। आपके द्वारा दी गई जमानत आपको भरनी पड़ सकती है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्म स्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष घर से दूर विद्या अध्ययन करने या कारोबार करने से लाभ होगा। विदेश संबंधित काम या विदेश यात्रा भी हो सकती है। नौकरी–व्यापार में बदली, चाल–चलन ठीक रखेंगे। खराब स्वास्थ्य के समय अल्कोहल से लाभ होगा मगर ठीक स्वास्थ्य के समय अल्कोहल का प्रयोग हानिकारक है।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब न पियें, मछली न खावें
2. काला कपड़ा न पहनें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों में परेशानी, पत्नी से झगड़ा–तलाक या जुदाई तक हो सकती है जो आगे चल कर आपको कष्टकारी बनेगी। दूसरी पत्नी से संतान सुख नहीं मिलेगा इसलिये पत्नी से संबंध विच्छेद न करें। पहली संतान (लड़के) का सुख शक्की है, भाई अमीर निःसंतान या उसे संतान की चिंता रहेगी।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी चांदी की प्लेट पर खड़ा करके घर में रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।
3. अपनी पत्नी से दो बार विवाह (फेरे) करें (पुत्र सुख के लिए)

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष रीड़ की हड्डी या जोड़ों का दर्द, शुगर/पेशाब का रोग हो सकता है। माता की चिंता हो सकती है या माता को कष्ट हो सकता है। हृदय रोग के प्रति आलस्य न बरतें। पुत्र संतान के सुख की चिंता रहेगी। कुल पुरोहित से संबंध ठीक रखे तो पुत्र चिंता दूर होगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। यात्रा में रूकावट आयेगी या यात्रा में हानि हो सकती है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चने की दाल और केसर धर्म स्थान में देवें।
2. कुल पुरोहित को धन वस्त्र आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करें। अगर कुल पुरोहित न हो तो 4

किलो चने की दाल महीने दो महीने में धर्म स्थान में देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• शुद्ध चांदी का ठोस हाथी चांदी की प्लेट में रखकर घर में स्थापित करें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2027-2028

वर्त्तमान आयु - 54
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	मन्दा
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	हाँ	हाँ	——	हाँ	हाँ	——	हाँ	——	——	——	——

वर्ष कुंडली 2027 – 2028

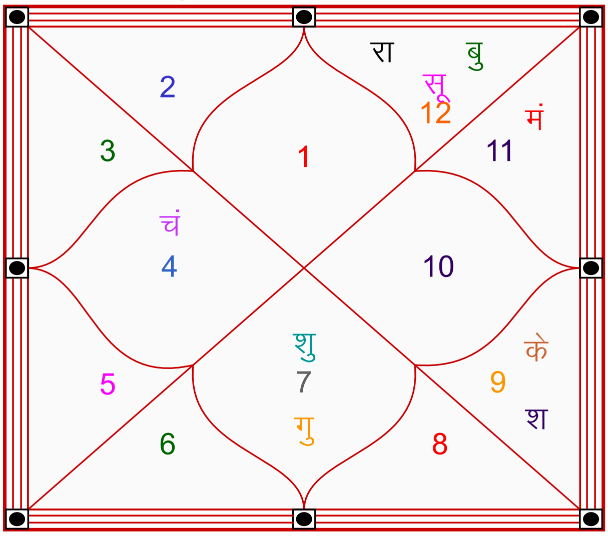

वर्ष चन्द्र कुंडली 2027 – 2028

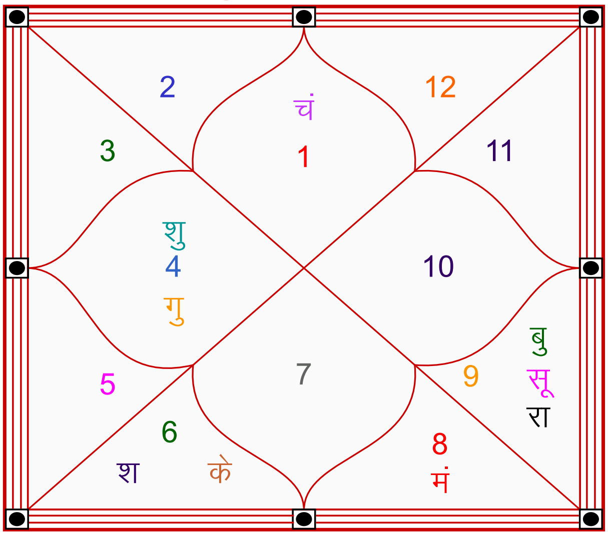

लाल किताब वर्षफल 2027-2028

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष आंखों में कष्ट का भय है। नीच या विधवा स्त्री से संबंध आपको हानि होगी, बिजली का सामान मुफ्त या गिफ्ट न लेवें। किसी की अमानत में ख्यानत न करें आप भी ख्याल रखें कि आपकी अमानत में ख्यानत न हो। मकानों से संबंधित और मैकेनिकल काम में हानि हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. जल में चीनी डाल कर सूर्य को अर्ध्य देवें।
2. भूरी चीटियों को सूर्यास्त के समय त्रिचौली (शक्कर–तिल–चावल का टुकड़ा) डालें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप राजसी ठाट–बाट भोगेंगे या समय सूखपूर्वक गुजरेगा, समुद्री सफर या समुद्र से संबंधित कामों से लाभ होगा। कार्य करने से पहले किसी व्यक्ति की सलाह लेकर कार्य शुरू करना शुभ रहेगा। कोई अमानत आपके पास रख कर जाएगा वह उसे वापिस लेने नहीं आयेगा या अचानक धन–लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता या माता समान स्त्री से झगड़ा न करें।
2. दूध–पानी का व्यापार न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वभाव न्यायप्रिय रहेगा, अपनी किस्मत स्वयं अपने हाथों से बनाएगें, कारोबार में तरक्की होगी, जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा और इस वर्ष आपको सभी सुख–सुविधाएं मिलेंगी। पुत्र–पौत्र का सुख मिलेगा, आपको शत्रुओं से कोई भय नहीं रहेगा या शत्रु भी मित्र बन जायेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किसी पर भी भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष मादक द्रव्यों या चीज़ों का प्रयोग आपको बदजुबान बना सकता है जो आपके लिये हानिकारक होगा, ख्याली कारोबार (सोच–विचार कर करने वाले काम) या सट्टा/जुआं, लाटरी, शेयर आदि आपके लिये अनुकूल नहीं है। भ्रम या अज्ञानता के कारण आपका नुकसान हो सकता है।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. स्टील की बेजोड़ अंगूठी बांये हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा अंगुली में पहनें।
2. खाली घड़ा ढक्कन लगाकर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष घर में मंदिर बना कर पूजा करना धन–परिवार के लिये अशुभ होगा। घर में मंदिर हानिकारक मगर दीवार पर तस्वीरें लगा कर पूजा–पाठ कर सकते हैं। घूमने–फिरने वाले साधू की संगत से भाग्य खराब हो जाएगा और जीवन में उतार–चढ़ाव देखना पड़ेगा। मामा को संतान की चिंता रहेगी। बुरे लोगों की संगति से बचे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध सोना और रत्तियां पीले कपड़े में बांध कर रखें।
2. आप विवाहित हैं तो स्त्री मायके से कुछ न कुछ सामान लावें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मकान–वाहन का सुख मिलेगा। काले रंग की स्त्री का साथ, आपका भाग्य को जगाने और आपकी तरक्की में सहायक हो सकती है। विवाह से संबंधित चीजों के कारोबार से लाभ मिले। जददी घर से दूर जाना पड़ सकता है। पत्नी–माता में मां–बेटी जैसा संबंध रहेगा। पत्नी सुशीला और सेवा करेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सफेद गाय की पालना या सेवा न करें।
2. बिल्ली की जेर चमड़े के पर्स में न रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना रहेगी, भाई–बंधुओं का सहयोग मिलेगा। कर्ज का बोझ आप में नहीं रहेगा। पैसे के प्रति आप की दौड़ नहीं रहेगी। पत्नी के नाम पर काम शुरू करने से लाभ होगा, मकान–वाहन का सुख मिलेगा। तीसरा रिहाइशी मकान न बनावें वरना स्वास्थ्य को खतरा होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न रखें।
2. घर की छत पर ईंधन–चौगाठ आदि न रखें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष बिना सोचे समझे या शेख चिल्ली की तरह कार्य करेंगे तो आपको हानि होगी, दीवानी या फौजदारी मुकददमें में न उलझें। रात्रि समय नींद का सुख कम मिलेगा। बिना सोचे समझे कोई कार्य न करें। परिवार का अतिरिक्त बोझ आप पर हो सकता है। धन का व्यय परिवार की बेहतरी या शुभ कामों पर होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी (चांदी की प्लेट पर खड़ा करके) घर में रखें।
3. शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा में सूराख करके सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष प्रगति मिले ऐसी संभावना है। तबदीली का चांस कम है। यात्रा से लाभ होगा। प्रदेश में भी कुछ समय व्यतीत हो सकता है। अपनी संतान के साथ या उसकी सलाह से कोई काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ होगा। आप जिसको पुत्र होने का आशीर्वाद देंगे उसके घर पुत्र पैदा होगा।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोर–डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारे।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• शुद्ध सोना पीले कपड़े में बांध कर रखें/धारण करें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2028-2029

वर्त्तमान आयु - 55
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	नेक
मंगल	——	हाँ	——	नेक
बुध	——	हाँ	——	नेक
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	नेक
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	हाँ	हाँ	मन्दा
केतु	——	——	——	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	——	——	——	——	——	हाँ	——	——	——	——	——

वर्ष कुंडली 2028 – 2029

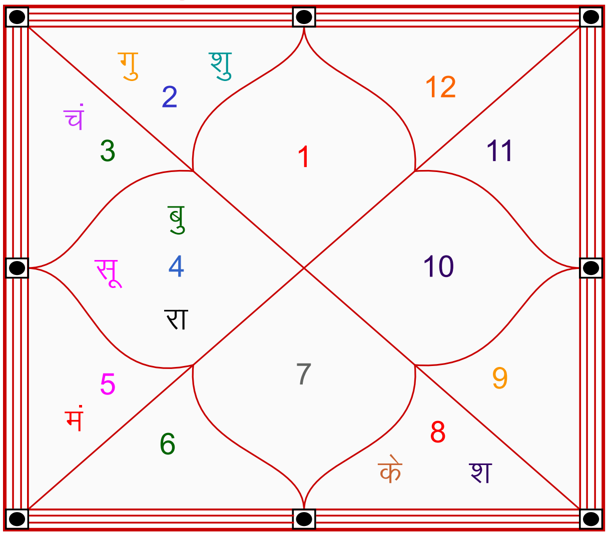

वर्ष चन्द्र कुंडली 2028 – 2029

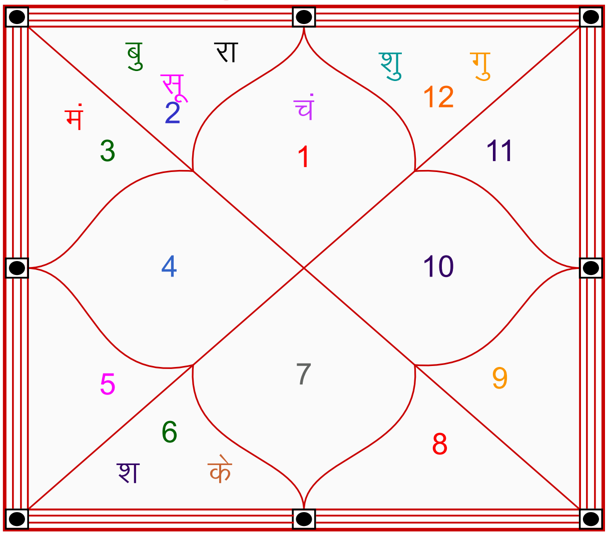

लाल किताब वर्षफल 2028-2029

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 4 में है तो जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता और सुख की हानि होगी, माता से दूर रहे तो विद्या से लाभ होगा। मन अशांत रह सकता है और स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ सकता है। कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। कुछ लोग आपके काम बिगाड़ सकते हैं सतर्क रहें। पैतृक कार्य बदलने का विचार रहेगा। माता से झगड़ा रहेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. अन्धे व्यक्ति को भोजन खिलाएं।
2. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 3 शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चरित्र सुधरेगा और पराक्रम बढ़ेगा, चोरी से बचाव होगा। विद्या अच्छी रहेगी। 3, 6, 8, 12वां मास अधिक लाभदायक होगा, कुदरत खुद आपकी किस्मत बनाने में सहायक होगी, गरीबों से आपकी हमदर्दी रहेगी, किसी अंतर्राष्ट्रीय खेल में आपकी रूचि रहेगी या खुद भी उस खेल में हिस्सा ले सकते हैं।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बहन–भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों के लिये मिला सामान हड़प न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 5 में शुभ है। जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गृहस्थ/संतान का सुख मिलेगा, परिवार में उन्नति होगी, यात्रा बहुत होगी। इस जन्म दिन के बाद धन दिनों–दिन बढ़ता जाएगा, पिता–दादा की हैसियत भी बढ़ेगी, चाल–चलन आपको उम्दा रखना होगा, शत्रु को भी मित्र बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे और शत्रु आपका सहायक बन जाएगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।

2. शराब–बीयर न पिये, मांस–मछली का भोजन न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष धन लाभ, परिवार में सभी सुखी और सुख के साधन मिलेंगे। कुल मिला कर राजयोग का समय है, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ प्राप्त हो ऐसा योग है। बहन–बेटी, बुआ–साली से भी लाभ हो सकता है। माता से धन–जायदाद का लाभ होगा मगर मातृ सुख में कमी की आंशका रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बेटी–बहन, बुआ–साली से झगड़ा न करें।
2. विधवा स्त्री से सम्बन्ध न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके पिता को कष्ट, सर्राफी/जौहरी के कामों अर्थात् अधिक लागत के कामों से हानि मिलेगी और मिट्टी के कामों अर्थात् कम लागत के कामों से अधिक लाभ होगा। दूसरों के झगड़े में पड़ कर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, सावधान रहें। आपमें कुछ बेरहमीपन भी आ सकता है जिसके कारण आप दु:खी रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें या फूलों वाले गमले लगावें।
2. केसर या हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है। जिससे दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होगी। ईश्वर पर भरोसा रहेगा जिससे आपके सभी काम पूर्ण होंगे। साधू वेश में आशिकाना ख्याल रहेंगे। चरित्र सुधार कर रखेंगे। प्रेम संबंधों में धोखा हो सकता है इसलिये प्रेम संबंध के चक्कर से बचें।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पशुओं पर जुल्म न करें।
2. शेर मुंह मकान में रिहाइश न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका मनमौजी स्वभाव रहेगा। एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से लाभ होगा। भाग–दौड़ के काम न करें। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। पुत्र संतान की खुशी मिले, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आपके मकान के साथ बंद गली हो उस मकान में आप रिहाइश नहीं रखेंगे तो लाभ होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अपने नाम पर मकान न खरीदें।
2. सांप न मारें।
3. मकान के मुख्य द्वार की दहलीज की पूजा करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता समान स्त्री से अवैध संबंध रखना हानिकारक है या खराब चाल–चलन आपके धन को नष्ट कर देंगे। मकान में लैट्रिन की जगह बदली तो कोर्ट केस का भय होगा। आप दिन में भी ख्वाब देखें मगर वह ख्वाब लाभ न देकर अवनति करायेंगे। दिमाग सोया सा रहेगा या बुद्धि कोई काम न करेगी।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2. सूखा धनिया (मसाला) जल प्रवाह करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपके लिए इस वर्ष शराब–मीट का सेवन हानिकारक है। खराब चाल चलन या अनैतिक संबंध गुप्त रोग देगा। संतान सुख चाहते हैं तो चाल–चलन ठीक रखें। संतान की चिंता रहे ऐसी आशंका है। कारोबार में हानि और यात्रा में परेशानी या अपव्यय होगा। किसी को अपना भेद न बतायें, कारण आपका भेदी तबाह करेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काले–सफेद कंबल धर्म स्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिए)।
2. काले–सफेद कंबल के टुकड़े में केतु के साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें

(जब बच्चे जीवित न रहते हों)।
(1) सूर्य–गेहूँ, (2) चंद्र–चावल, (3) मंगल–दाल मसूर, (4) बुध–मूंग, (5) गुरू–चने की दाल, (6) शुक्र–चरी, (7) शनि–काली उड़द, (8) राहु–जौं, (9) केतु–काले–सफेद तिल।
3. कुत्ते को भोजन का हिस्सा देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• शरीर पर शुद्ध सोना धारण करें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2029-2030

वर्त्तमान आयु - 56

वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	हाँ	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	——	हाँ	नेक
राहु	——	हाँ	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	हाँ	——	हाँ	हाँ	——	हाँ	हाँ	——	हाँ	——	——

वर्ष कुंडली 2029 – 2030

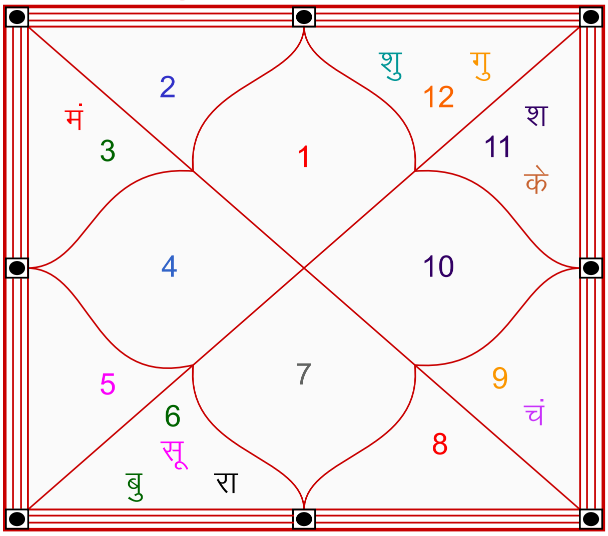

वर्ष चन्द्र कुंडली 2029 – 2030

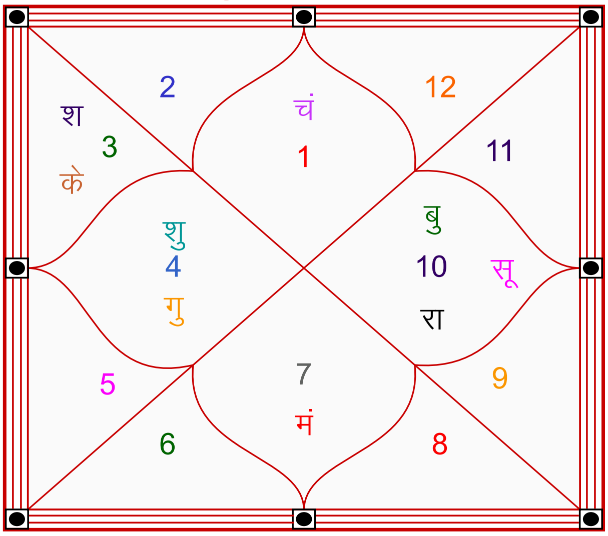

लाल किताब वर्षफल 2029-2030

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 6 में है, जिसकी वजह से इस वर्ष आपको अधिक गुस्सा आना आपके लिये हानिकारक है, रक्तचाप घट/बढ़ जाये ऐसी आशंका है, आप आपने पिता या पुत्र के साथ एक ही शहर/गांव/ऑफिस में इकटठे काम नहीं कर सकते। हर समय दूसरों के सहारे या दूसरों के धन पर आस न लगाएं ऐसा करने से आपको लाभ नहीं होगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी या गंगा जल घर पर रखें।
2. बंदरों को गुड़ या भुने हुए गेहूँ को गुड़ लगा कर खिलाएं।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष समाज के लोगों से हमर्ददी होगी। आपको पैतृक जायदाद का लाभ मिलेगा। तीर्थ यात्रा का अच्छा फल मिलेगा। आपकी संगीत विद्या में रूचि, धार्मिक विचार या धर्म–कर्म में रूचि अधिक रहेगी। आपको विनम्र स्वभाव रखना ही शुभ है जिससे आप तरक्की के शिखर पर पहुंच जाएंगे, धन–दौलत में बरकत होगी।

चंद्र की शुभा बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. झूठ न बोलें, झूठा भोजन न खिलाये और न खायें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष दूसरों की सहायता कर के प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर जरूरी नहीं कि दूसरों की सहायता के बदले में आपको सम्मान मिलेगा, आपको कसरत करने या जिम आदि जाने का शौक रहेगा, मुकाबले की विद्या (प्रतियोगी परीक्षा) में आपकी जीत होगी, नर्म स्वभाव रखेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। धन–परिवार/संतान का सुख मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पेट का विशेष ध्यान रखें।

2. हाथी दांत न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिमागी कार्यों से लाभ मिलेगा, विदेश भ्रमण की इच्छा भी रहेगी, समुद्री यात्रा से लाभ मिलेगा, कृषि से संबंधित कार्यों से लाभ मिलेगा। वक्तव्य देना, एकाउटेंट/चार्टर्ड एकाउंटेंट, लेखन, प्रिंटिंग से संबंधित कामों से लाभ होगा। मुंह से निकली बात शत प्रतिशत सही हो सकती है। ननिहाल से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़की/बहन का विवाह अपने रिहाइशी मकान की उत्तर दिशा में न करें।
2. सेवक/नौकरों पर हमेशा नज़र रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष किसी से धोखा–फरेब कर सकते हैं जो आपके लिये आगे आने वाले समय के लिए ठीक नहीं रहेगा, झूठी गवाही देना और गबन करना भी आपके लिये हितकर नहीं है। धन का अपव्यय या धन बुरे कामों में बर्बाद हो सकता है। आप समय को व्यर्थ न गवां कर हित और शुभ कामों में लगावें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें।
2. पीपल के वृक्ष को जल से सीचें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष ज्योतिष विद्या और गुप्त विद्याओं में रूचि रह सकती है, परिवार का पालन–पोषण करने में आपका अधिक ध्यान रहेगा। पत्नी की किस्मत आप के आड़े समय में साथ देगी, ऐशो आराम के साधन मिलेंगे। चित्रकला–गायन का शौक भी हो सकता है। आपका मान–सम्मान बरकरार रहेगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष धर्म पर अड़िग और पक्के रहेंगे। धर्म पर कायम रहेंगे तो मिट्टी के काम से सोना बनेगा। प्राण जाय पर वचन न जायें वाली कहावत आप पर चरितार्थ होगी। लोहा, कोयला, रबड़ आदि के कामों से लाभ हो सकता है। व्यसनों से दूर रहेंगे तो बहुत लाभ होगा। इन्साफ पसंद वृत्ति रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किराये के मकान में रिहाइश न करें।
2. ठगी–धोखे से धन न कमाएं।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष शस्त्र भय है, बिना लाइसेंस का हथियार रखने से आपको दण्ड/जुंर्माने का भय है। चाचा से झगड़ा करने पर आपको हानि होगी। निम्न स्तर के लोगों के साथ मित्रता से हानि होगी। आप पर चोरी का लांछन भी लग सकता है। साहूकारी करना या लिखा–पढ़ी के बिना किये कार्यों से लाभ न होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के (औफदप) की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कभी हिम्मत नहीं हारेगें। भाग्य आपका साथ देगा। धन–दौलत का अधिक लाभ होगा। आपको पुत्र संतान का सुख मिलेगा तो माता/सास को शारीरिक कष्ट हो सकता है खासकर आंखों में। चाल–चलन ठीक रखें वरना शारीरिक कमजोरी हो सकती है। आने वाले समय की अधिक सोच रहेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय कोई पीछे से आवाज दे तो काम पर न जायें क्योकि आगे काम नहीं बनेगा।
2. व्यतीत समय की बातें करके को याद कर लोगों को न सुनायें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• बंदर को गेंहूँ को भुन कर गुड़ लगा कर खिलायें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2030-2031

वर्त्तमान आयु - 57
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	मन्दा
मंगल	——	हाँ	——	नेक
बुध	——	——	——	नेक
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	मन्दा
शनि	——	हाँ	——	मन्दा
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	हाँ	हाँ	——	——	——	हाँ	——	——	——	हाँ

वर्ष कुंडली 2030 – 2031

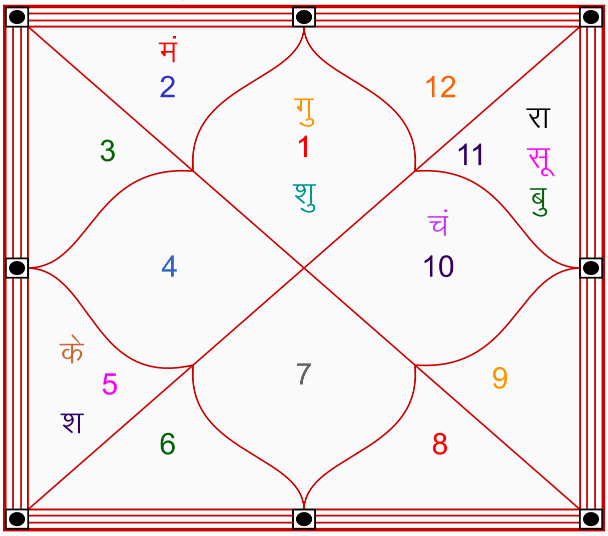

वर्ष चन्द्र कुंडली 2030 – 2031

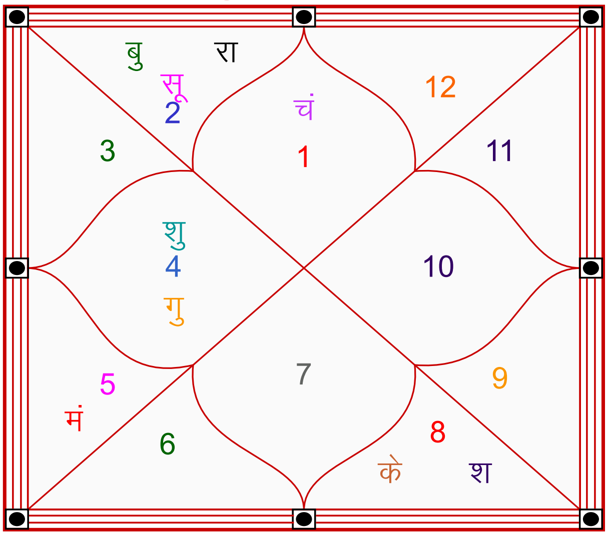

लाल किताब वर्षफल 2030-2031

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष सुस्ती और लापरवाही से जीवन में तरक्की के कई अवसर खो सकते हैं। मांस–शराब के इस्तेमाल करना संतान को कष्ट होगा या संतान सुख की चिंता रहेगी। दूसरे लोगों को गाली देना, झूठी गवाही देना, लड़ाई–झगड़ा करना आपके लिये ठीक नहीं है इन बातों से बचें। सरकारी विभाग द्वारा दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. झूठ न बोलें, जूठा भोजन न खावें और न खिलावें।
2. मांस–मछली न खावें और शराब आदि न पिये मादक चीजों का सेवन न करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष खराब स्वास्थ्य के समय या वैसे ही रात के समय लिक्वड दवाई का प्रयोग आपके लिए हानिकारक है। विद्या संबंधी कामों में भी परेशानी आ सकती है। चोरों–जुआरियों, शराबी लोगों द्वारा आपका नुकसान होगा। किसी स्त्री या प्रेमिका द्वारा गलत सलाह से आपका धन–सम्मान नष्ट हो सकता है, सतर्क रहें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दूध को फाड़ कर उसका पानी पीयें अर्थात पनीर का पानी पियें (स्वास्थ्य खराब के समय)
2. 10 दिन सुबह नाश्ते में कच्चा पनीर खावें।
3. रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पिये।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष आपके परिवार में अन्न–धन की कोई कमी नहीं रहेगी। आप भाई–बंधुओं के दु:ख में हर समय साथ देगें, आप नेक और इरादे के पक्के रहेंगे जो बात ठान ली वह पूरी कर दिखायेंगे। अगर बड़ा भाई जीवित हो तो उससे अधिक धन, मान आपको मिलेगा। परिवार के लोगों से भी लाभ मिलेगा।

मंगल की शुभता हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़ाई–झगड़ों से दूर रहें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा में कमी न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष हर बुधवार का दिन और दोपहर (3 से 5 बजे) का समय शुभ रहेगा। आपका भाग्योदय होगा या तरक्की होगी, आलस्य से दूर रहें। आप अपनी बुद्धि के द्वारा अधिक लाभ अर्जित करेंगे। आपकी मान–सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पैतृक सम्पति का लाभ मिलेगा। आपकी मित्रता से सबको लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. मनी प्लांट, रबर प्लांट आदि चौड़े पत्तों के पेड़–पौधे घर पर न लगावें।
2. पीतल के खाली बर्तन बन्द या उल्टे न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। पिता–दादा की चिंता, परिवार में किसी को दिल का या मानसिक रोग की आशंका है। बुजुर्गो को दमा–सांस की बीमारी हो सकती है। शराब–बीयर आपकी बुद्धि को भ्रष्ट कर सकती है अतः इसका सेवन आपको वर्जित है। लोगों की निन्दा न करें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको, परिवार का मुखिया बनना अवनति का कारण बनेगा। चाल–चलन खराब हुआ तो उसका असर कारोबार या विद्या आदि पर पड़ सकता है। आपके कुछ काम अधूरे रह सकते हैं। मान–सम्मान या उच्च पद नष्ट हो सकता है। पत्नी की किस्मत न साथ देगी और संतान की चिंता रह सकती है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. जौ या सरसों या चरी दान करें।

2. गाय, कौवे और कुत्ते को भोजन का हिस्सा देवें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 5 मे है जिसकी वजह से इस वर्ष आप भाई–बंधुओं के साथ लड़ाई–झगड़ा या धोखा न करें। मांस–मदिरा का सेवन करना आपको हार और हानि देगा। परिवार में समस्याएं बढ़ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें विशेष कर पेट/गुर्दे में पथरी का। आपके नाम पर अगर मकान बनेगा तो पुत्र सुख में बाधा आ सकती है।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध सोना या केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता की चिंता रहेगी, पिता से दूरी या जुदाई हो सकती है। समय कुछ गरीबी में कट सकता है। मौके के ऑफिसर से झगड़ा करना आपको नुकसान पहुंचा सकता है। लॉकर/ दराज खाली न रखें उनमें कुछ धन रखें। परिवार पर गोली चलने का भय, नीला नग–नीलम और नीला–काला कपड़ा पहनना हानिकारक है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. सिर पर चोटी रखें या सिर सफेद–शरबती टोपी पहनें या पगड़ी बांधे।
2. 4 किलो सिक्का (औफदप टुकड़ा और) चौरस, 4 नारियल सूखे (बजने वाले) जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाईप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष गुरु भक्ति में रूचि रहेगी। चाल–चलन ठीक रहेगा। धर्म–ईमान की स्थिति शुभ होने के कारण संतान का सुख मिलेगा। पुत्र के द्वारा आपका भाग्योदय होगा और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग है तो पुत्र लाभ होगा। यात्रा से तरक्की होगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बुरे चलन के लोगों की संगति न करें।

2. लोहे के संदूक/ट्रंक/अलमारी को हमेशा ताला न लगा रहें। ताले को कभी–कभी खोलते रहें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन रेत का तकिया बना कर रात को सिर के नीचे रख कर सोये।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2031-2032

वर्त्तमान आयु - 58
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	मन्दा
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	हाँ	हाँ	हाँ	——	हाँ	——	हाँ	——	हाँ	हाँ	——

वर्ष कुंडली 2031 – 2032

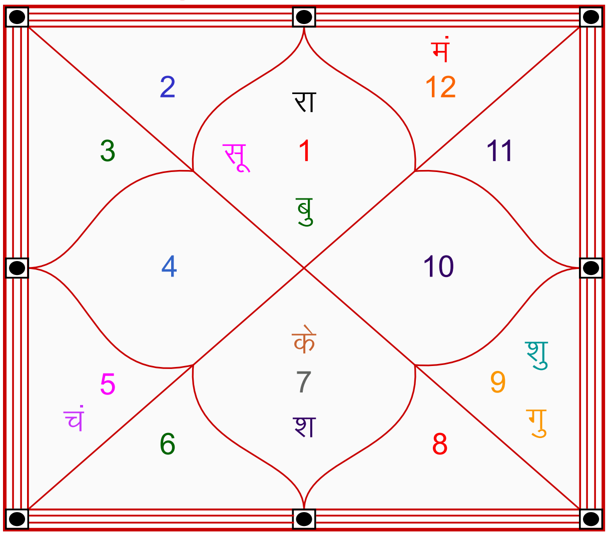

वर्ष चन्द्र कुंडली 2031 – 2032

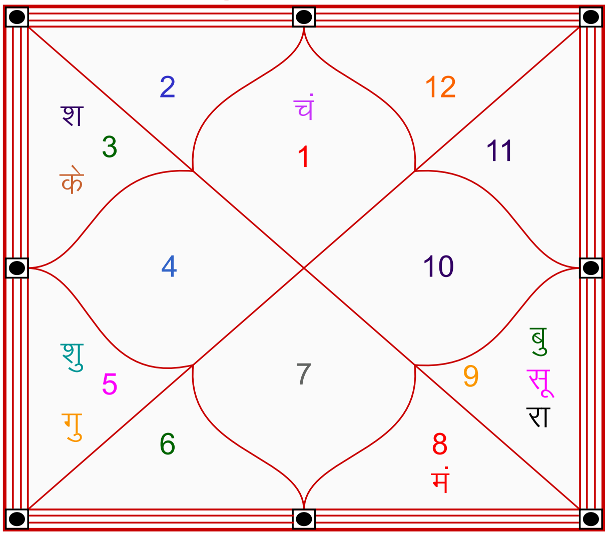

लाल किताब वर्षफल 2031-2032

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मकान में अंधेरा कमरा है तो उसे रोशनी में बदलने से, माया का सांप, दौलत का हाथी आपके घर से चला जाएगा अर्थात् धन की कमी या हानि होगी, हड्डी संबंधित चोट/रोग का भय, दिल की धड़कन बढ़ जाना, रक्त चाप घट या बढ़ जाये, ऐसी आशंका है, मान–सम्मान की हानि भी हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य का अर्घ्य देवें।
2. बन्दरों को गुड़/केला खिलायें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार वालों को सोने–चांदी का लाभ होगा, विद्या का लाभ होगा, आप दूसरों के कष्ट अपने पर झेलेंगे, दूसरों पर परोपकार करेंगे, लड़ाई–झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे उस व्यक्ति की जीत होगी। आपकी बहुत प्रसिद्धि होगी और समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हर कार्य में किसी की सलाह जरूर लेवें।
2. पाप के कामों में अपना हस्तोप न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी समाज में आवाज बुलन्द रहेगी, शत्रु मुंह की मार खायेंगे, मुसीबतें टल जाएगी, गुरु निर्धन–ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहेंगे, आप अपनी मनमर्जी के अनुसार कार्य करेंगे, किसी से दब कर नहीं रहेंगे। मीठा–भोजन या मिठाई आपको अधिक पसन्द रहेगी। मुकददमे में जीत या सरकारी विभाग से लाभ से लाभ हो सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।

2. लोग आपका नमक खाकर नमक–हरामी करेंगे, सतर्क रहे।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ हो सकता है। आपके मुंह से निकली हुई बात में दम होगा, आप दूसरों की परवाह नहीं करेंगे। मधुर भाषा बोलेंगे, कल्पनाशील विचार होंगे। आप पर दूसरे लोगों का प्रभाव रहेगा। आप परिवार के झगड़ों में सुलह करने में भूमिका निभाएंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अण्डा–पेस्ट्री आदि अण्डे से बनी चीजें न खावें।
2. शराब–बीयर न पियें, मांस–मछली का भोजन न करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष नास्तिक प्रवृत्ति बन सकती है जो आपके लिए शुभ नहीं है। बुजुर्गों से विरोध या झगड़ा आपको नहीं करना चाहिए। परिवार में किसी को दिल से संबंधित बीमारी हो सकती है। सोना बिक जाये या गिरवी पड़े या गुम हो जाए ऐसी संभावना है। किसी को दिया हुआ वायदा आप पूरा नहीं करेंगे तो हानि होगी।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंगा स्नान करें 9 बार (दो महीने लगातार या महीने में एक बार या 9 दिन लगातार)
2. वचन और धर्म की पालना करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग करेंगे तो वह आपको हानिकारक हो सकते है। मादक द्रव्यों और चीजों का कुसंगति के कारण प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं इससे बच कर रहें। स्त्री, धन, संतान पर समय मध्यम रहेगा। चाल–चलन ठीक रखें कारण गुप्त रोग का भय है। भाई–बंधुओं से सावधान रहें।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान बनाएं तो नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

2. नीम के पेड़ के तने में चांदी के 9 चौरस टुकड़े दबायें (अगर आपके पुत्र संतान है तो)।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष परोपकार करने से धन लाभ पाएंगे। यह लाभ 7 गुणा तक हो सकता है। मकान बनेगा और बुजुर्गों से जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा। आपको गांव/शहर या किसी संस्था में पद मिल सकता है। पिता/ससुर और पत्नी के लिये समय शुभ रहेगा। चाल–चलन खराब रखने से धन हानि होगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. डाक्टर/कैमिस्ट का साथ न रखें।
2. चोर–डाकू से संबंध न रखें।
3. बुजुर्गी मकान के मुख्य द्वार की दहलीज ठीक रखें उसके दोनों तरफ सूर्योदय से पहले सरसों का तेल डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी कुछ अदला–बदली का योग है। किस्मत का असर स्थिर नहीं रहेगा। आपका शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव हो सकता है। कुछ बनते कामों में रूकावट भी आ सकती है। आपको नीला–काला कपड़ा पहनना हानिकारक हो सकता है। सरकारी विभाग द्वारा रिश्वत या गबन का केस बन सकता है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़–गेहूँ दान देवें।
2. दूध शरीर पर मल कर स्नान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिनों–दिन आपके धन की बढ़ोत्तरी होती रहेगी, ऐसी संभावना है। आजीविका के नये साधन बनेंगे। आप अपनी धुन के पक्के रहेंगे। जिसके कारण आप बड़े से बड़े व्यक्ति के सामने अपना झंडा गाड़ लेंगे। आपकी संतान आपकी सहायता में रहेगी और संतान मुसीबत में दुश्मन को मार आयेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का काम न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन सूर्य को चीनी डाल कर अर्घ्य देवे।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2032-2033

वर्त्तमान आयु - 59
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	हाँ	——	नेक
बुध	——	——	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	——	हाँ	——	हाँ	——	——	हाँ	हाँ	——	हाँ	हाँ

वर्ष कुंडली 2032 – 2033

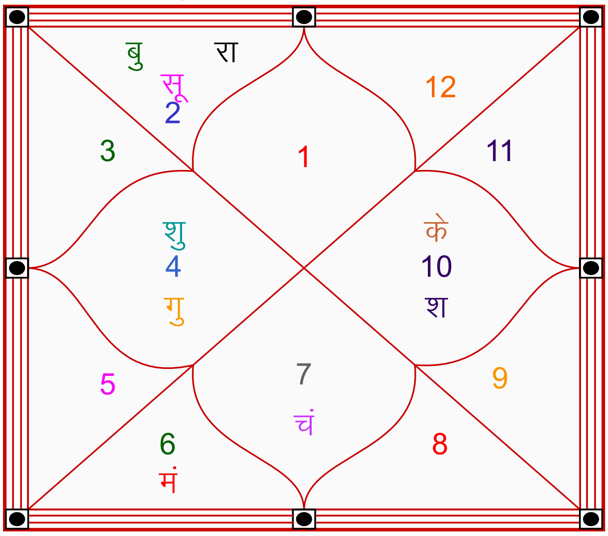

वर्ष चन्द्र कुंडली 2032 – 2033

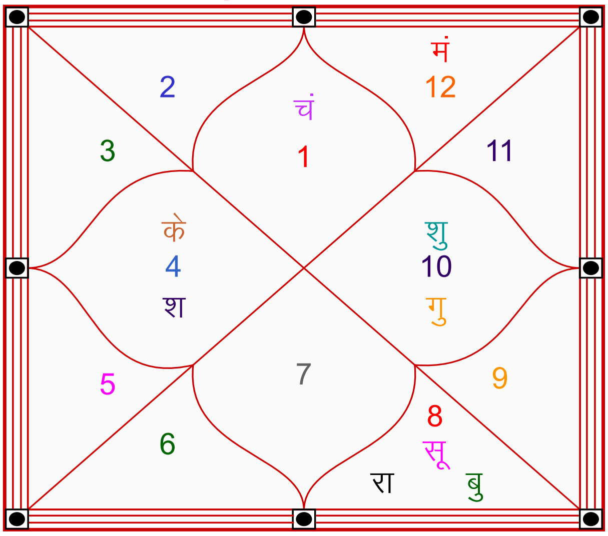

लाल किताब वर्षफल 2032-2033

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष किसी की अमानत को हड़प करने से आपका आने वाला समय खराब हो सकता है, किसी से दूध, चावल, चांदी आदि मुफ्त या दान न लेवें। चाल–चलन खराब या अनैतिक रखने से आप की अवनति हो सकती है। धन/जमीन/स्त्री के झगड़े मे न पड़ें इससे धन–मान की हानि हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. बादाम, नारियल या सरसों का तेल धर्म स्थान में देवें।
2. पैतृक मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके माता–पिता को अधिक धन लाभ होगा। आपको किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। ज्योतिष विद्या, योगाभ्यास तथा शायरी में आपका शौक रहेगा। जल से संबंधित कामों से लाभ होगा। नये विषयों की खोज भी कर सकते हैं, विदेश यात्रा या विदेश से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूध–पानी का व्यापार न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में खुशी का योग बनेगा, छोटे भाई की मदद करेंगे, शत्रुओं में कमी होगी या शत्रु दबे रहेंगे, साहुकारा (लिखा–पढ़ी करके ब्याज पर रुपया–पैसा देना) करने से लाभ होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे और दूसरों को भी प्रसन्न रखेंगे। साधू–संन्यासी की तरह जीवन व्यतीत करेंगे और जनता की सेवा करेंगे। परिवार व समाज में सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. भाई से झगड़ा न करें।
2. पुत्र का जन्म हो तो जन्म पर मीठा या मिठाई न बांटे यदि मिठाई बांटनी हो तो मिठाई के साथ

नमकीन चीज जरूर देवें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता–दादा से धन लाभ होगा, आपको ज्ञान की बातों में अधिक रुचि रहेगी, बातें करते–करते बात बदलना आप की आदत हो सकती है। अपने भाग्य को चमकाने के लिये आपको अधिक मेहनत भी करनी पड़ सकती है। इस वर्ष हाजिर जबावी की कला आप में विद्यमान रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हरा रंग निषेध।
2. धागा–ताबीज, जल, भभूतियों से दूर रहें।
3. तोता, भेड़–बकरी न पाले।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से इस वर्ष शराब–बीयर पीने से विद्या या विद्या सम्बन्धी कामों में परेशानी हो सकती है। चाल–चलन खराब या दूसरा विवाह आपको संतान सुख न देगा। आपको जमीन–जायदाद की चिंता रहेगी। पिता–दादा से दूरी हो सकती है। माता से जुदाई या माता पर कष्ट आ सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म मन्दिर में हर रोज सिर झुकाएं।
2. कुल पुरोहित का धन वस्त्र आदि देकर आर्शीवाद लेवें। अगर कुल पुरोहित न हो तो महीने दो–महीने बाद 4 किलो चने की दाल धर्म स्थान में देते रहें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप में काम वासना की अधिकता के लक्षण है। दूसरी स्त्री आप पर मोहित हो सकते हैं। मामा–मौसी से लाभ मिलेगा, उत्तम भवन–वाहन का सुख मिलेगा, उत्तम भोजन–शयन का शौक रहेगा। आप अपने परिवार या शहर/गांव/देश में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, यात्रा अधिक होगी और यात्रा से लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।

2. बुजुर्गी मकान की दहलीज ठीक रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी विभाग या सरकार द्वारा लाभ मिलेगा। इस वर्ष का हर दसवां दिन और दसवां महीना आपके लिये शुभ और लाभकारी है। धर्मात्मा होना आपके लिये ठीक नहीं रहेगा। स्थायी कामों अर्थात एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से मान–सम्मान बढ़ेगा और अधिक धन लाभ मिलेगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मादक द्रव्यों/चीजों का प्रयोग न करें और मछली न खायें।
2. भाग–दौड़ के काम न करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जुआ–सट्टा आदि का व्यापार हानिकारक है। ससुराल और साले का विरोध किया तो हानि होगी, धर्म स्थान में आपके ऊपर चोरी आदि लांछन लग सकता है। फौजदारी मुकददमे में हानि का भय, मुफ्त अन्न या दान का अन्न न खायें इससे जीवन नष्ट होगा। चाल–चलन खराब हो तो दंड का भय रहेगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चांदी की ठोस गोली सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।
2. माथे पर केसर/हल्दी का तिलक करें या शुद्ध सोना पहनें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मिट्टी के कामों से सोना बनेगा, शहर/गोव/देश/विश्व प्रसिद्ध हो सकते हैं। समाज में आपकी ख्याति बढ़ेगी, धन का अभाव नहीं रहेगा। आपका स्वभाव कुछ शक्की बन सकता है। संतान सुख का योग भी इस वर्ष है मगर माता को कष्ट हो सकता है सास/माता की सेहत खराब या उनसे जुदाई हो सकती है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन खराब या अनैतिक संबंध न रखें।

2. कुत्तों से नफरत न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• नारियल या तेल या बादाम धर्म स्थान में देवे।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

लाल किताब वर्षफल 2033-2034

वर्त्तमान आयु - 60
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	––	––	––	मन्दा
चंद्र	––	हाँ	––	नेक
मंगल	––	––	––	मन्दा
बुध	––	––	––	मन्दा
गुरु	––	––	––	मन्दा
शुक्र	––	––	––	नेक
शनि	––	––	––	नेक
राहु	––	––	––	मन्दा
केतु	––	––	––	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	––	––	हाँ	हाँ	––	हाँ	––	––	हाँ	––	––

वर्ष कुंडली 2033 – 2034

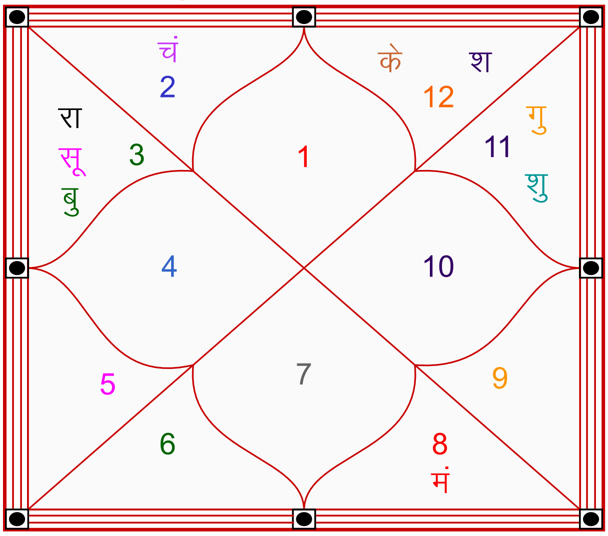

वर्ष चन्द्र कुंडली 2033 – 2034

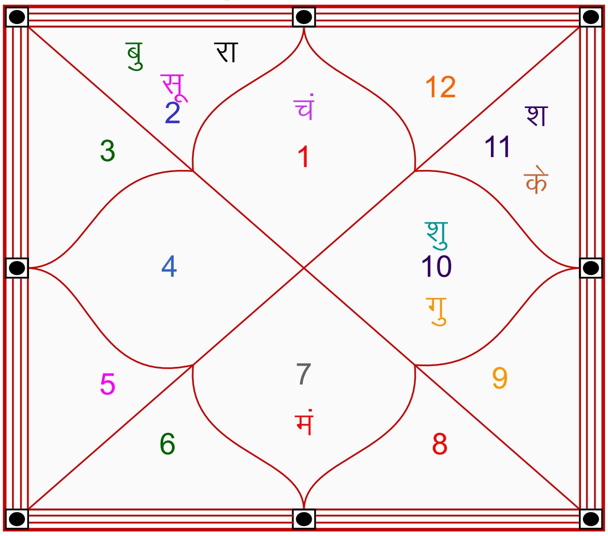

लाल किताब वर्षफल 2033-2034

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी किस्मत में कुछ उतार–चढ़ाव आ सकता है, परिवार में बीमारी पर धन का अपव्यय होगा। गुप्त शत्रु दबे रहेंगे, धन आपकी आंखों के सामने चोरी हो सकता है। ननिहाल पर कुछ समय अशुभ रहेगा। भाई–बंधुओं से धोखा हो सकता है सतर्क रहें। अधिक मेहनत करने से लाभ मिलेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. माता या माता समान स्त्री के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें।
2. परस्त्री से शारीरिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सुख और सुख के साधन मिलेंगे, जददी विरास्त से जायदाद का हिस्सा या लाभ मिलेगा। सफेद चीजों के कारोबार से अधिक लाभ मिलेगा। भाई–बंधुओं का सुख अवश्य मिलेगा। विद्या संबंधी कामों में सफलता मिलेगी। यात्रा करने या पहाड़ी प्रदेश से लाभ मिलेगा। चाल–चलन ठीक रखें।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. घर में मूर्तियां न रखें और घंटी, घड़ियाल आदि न बजायें (संतान सुख हेतु)। परंतु दीवार पर तस्वीरें लगाकर पूजा–पाठ कर सकते हैं।
2. शराब आदि मादक वस्तुओं का इस्तेमाल न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री से झगड़ा नहीं करना चाहिये। वैवाहिक समस्याएं या परिवार में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। छोटे भाई अगर हों तो उस के लिये समय ठीक नहीं। आपकी जुबान से निकला अपशब्द लड़ाई–झगड़े का कारण होगा। आपको गुस्सा करना नुकसानदेह है, समय धैर्य से निकालें।

मंगल की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री को उपहार देकर चरण स्पर्श कर आर्शीवाद लेवें।
2. तन्दूर में मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलायें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बहन–लड़की, साली–बुआ से धन लेकर कोई कार्य किया तो कार्य में हानि हो सकती है। आपके भाग्योदय में रूकावट आ सकती है या आप कर्जदार हो सकते हैं। जबान के रोग होने का भय है। भाई–बहन की चिंता या उनसे झगड़ा करने पर हानि हो सकती है। नाड़ियों चमड़ी रोग का भय रहेगा।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. दूर्गा पूजन या कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा करें।
2. तोता पाले या तोते को चूरी खिलायें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चाल–चलन खराब हो सकता है। चाल–चलन संभालना आप के लिये एक जरूरी चीज़ है। दादा–पिता को कष्ट, सोने के आभूषणों की हानि, आंखों की नजर कमज़ोर हो सकती है। किस्मत का फल कुछ मध्यम रहेगा। परिवार के लोगों की हिफाजत करना आपके लिए एक जरूरी कर्म होगा।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. पीला रूमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कन्या संतान का सुख मिल सकता है। आप अकारण पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आपमें अच्छे गुण बढ़ेंगे मगर आपकी गुप्त कार्य करने की आदत हो जाएगी। विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे, ससुराल पा के लोग सहायक होंगे। बहन–साली से भी लाभ मिलेगा स्त्री आपके कार्यों में साथ निभायेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता/पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी–व्यापार में बार–बार बदला–बदली न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष धन व्यय अधिक होगा और वह भी परिवार के शुभ कामों पर, सरकारी विभाग और मुकददमें में जीत होगी। आपको रात्रि का पूरा आराम मिलेगा। साधना या अध्यात्म में आपकी रूचि रहेगी तो वह आपको हानिकारक हो सकती है। शराब पीना, मांस–मछली खाना आपके लिये हानिकारक है।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. दूसरों के माल पर नजर न रखें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष यदि आपने बहन–बेटी, साली–बुआ का धन उपभोग किया तो आपकी हानि हो सकती है। आपके भाई–बंधु धोखे से आपका धन हड़प कर सकते हैं सावधान रहें। कर्ज का बोझ बढ़ सकता है मगर आप बुद्धिमत्ता से कर्ज मुक्त हो जायेंगे। बदनीयती करना आपके लिये हानिकारक है।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

उपाय :

1. ठोस चांदी घर में रखें।
2. कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा या दुर्गा पाठ करें या कन्यादान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष तबदीली और तरक्की संभव है। आपका अय्याशी स्वभाव होगा तो आपको लाभ होगा। पुत्र संतान का सुख मिलेगा। अध्यात्मिक विचार रहेंगे, लोक–परलोक में होने वाली बातें आपके दिमाग में पहले से आयेंगी। दोहता/भांजा, जमाई/साले, जीजा से आपके नेक संबंध रहेंगे।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. कुत्तों को चोट न मारें।

2. ठगी–धोखेबाजी से दूर रहें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• पीला रूमाल पास रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2034-2035

वर्त्तमान आयु - 61
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	मन्दा
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	मन्दा
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	मन्दा
शनि	——	हाँ	——	मन्दा
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	हाँ	हाँ	हाँ	——	——	हाँ	हाँ	——	हाँ	——	——

वर्ष कुंडली 2034 – 2035

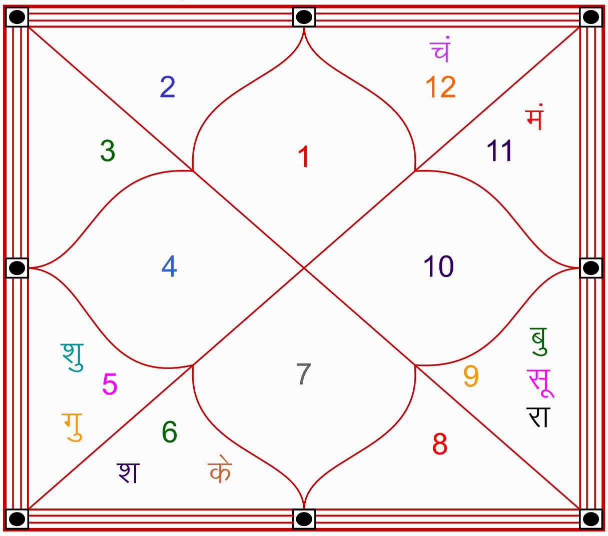

वर्ष चन्द्र कुंडली 2034 – 2035

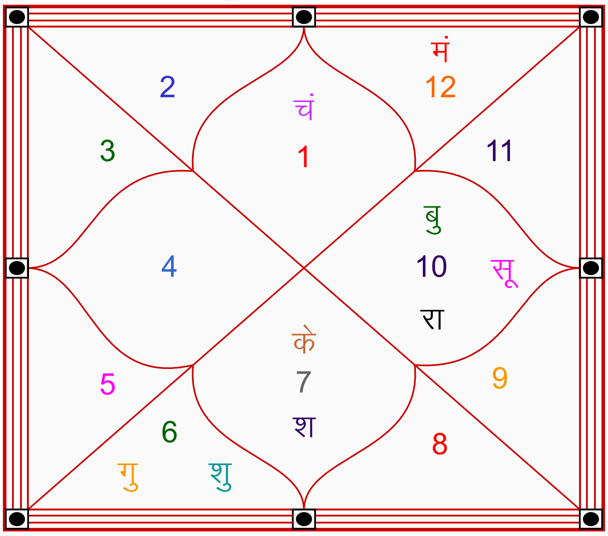

लाल किताब वर्षफल 2034-2035

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको बिना मेहनत का माल/गिफ्ट आदि नहीं लेना चाहिए, यात्रा में हर समय सतर्क रहें क्योंकि यात्रा में चोट लगने या हानि होने का भय है। सरकारी विभाग से परेशानी हो सकती है नेकी का बदला बुराई में मिल सकता है। आपके विरोधी आपको अपनी गुप्त चाल से नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर में पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सूर्य ग्रहण के मध्य काल में 4 सूखे नारियल (बजने वाले) जल प्रवाह करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके सभी काम तरस–तरस कर बनेंगे, विद्या संबंधी कामों में रूकावट हो सकती है, आपकी बात बदलने की आदत बनेगी, व्यतीत समय की बातें लोगों को सुना कर अपनी बढ़ाई करेंगे। 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' जैसी कहावत आप पर चरितार्थ हो सकती है। मुकददमें में हार का भय रहेगा।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नीम के वृक्ष का पानी घर में रखें या आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में कायम करें।
2. 16 लीटर वर्षा का पानी कनस्तर में भरकर 4 शुद्ध चांदी के चौरस टुकड़े डाल कर रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका स्वभाव न्यायप्रिय रहेगा, अपनी किस्मत स्वयं अपने हाथों से बनाएगें, कारोबार में तरक्की होगी, जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा और इस वर्ष आपको सभी सुख–सुविधाएं मिलेंगी। पुत्र–पौत्र का सुख मिलेगा, आपको शत्रुओं से कोई भय नहीं रहेगा या शत्रु भी मित्र बन जायेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. किसी पर भी भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता से दूरी या पिता की चिंता रहेगी, पिता का धन नाश हो सकता है । आपको जुबान से सम्बन्धित बीमारी हो ऐसी आशंका है। गृहस्थ और संतान के सम्बन्ध में कुछ खराबियां भी हो सकती हैं। हर काम में कदम–कदम पर आपको विचार करके चलना चाहिये। यात्रा से हानि का भय है, सर्तक रहें।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गऊ ग्रास देवें।
2. लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मुफ्त लंगर खाना या दान लेना हानिकारक है जो आपकी बुद्धि भ्रष्ट कर सकता है। गुरु–साधु से गाली–गलौज करना आपके लिये हानिकारक है। मांसाहारी होने से संतान को कष्ट होगा। आलस्य तरक्की में रुकावट बनेगा। नाव से नदी/समुद्र पार न जाए आशंका है आपका जीवन संकट में पड़ सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. साधू–महात्मा की सेवा करें।
2. धर्म मन्दिर की सफाई करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपका मिजाज आशिकाना और आप परस्त्री पर कामुक हो सकते हैं। इस वर्ष यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का योग बनेगा। अंर्तजातीय या माता–पिता की इच्छा के विरूद्ध विवाह न करें वरना संतान सुख खराब हो सकता है। स्त्री के गर्भपात का भय रहेगा। बुआ–बेटी, बहन–साली के धन का आपके हाथों नुकसान हो सकता है।

शुक्र की अशुभता दूर करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुप्तांग दूध या दही से साफ करें।
2. गायों को चारा खिलाये।

शनि

आपकी वर्ष कुडली में शनि खाना नं. 6 में अशुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष पूर्णिमा के दिन कोई नया काम न शुरू करें। कारण, इस दिन शुरू नये काम से लाभ न होगा। चमड़े का समान मुफ्त/गिफ्ट न लें इससे आपका मान–सम्मान कम होगा या अकारण बेइज्जती का कारण बनेंगे। परिवार में किसी को गुर्दे या पथरी रोग का भय रहेगा।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काले कुत्ते की सेवा/पालन करें।
2. नया जूता किसी को पहनाकर पहनें या खरीदने के 6 दिन बाद पहनें।
3. बादाम गंदे नाले में डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पुलिस/कोर्ट का भय या चोरी का माल खरीदने का लांछन लग सकता है। पिता और ससुर को कष्ट या उनके द्वारा आपको हानि का भय है। साधू–फकीर का साथ फिजूल खर्ची ही बढ़ायेगा। तीर्थ यात्रा में रूकावट आ सकती है। धार्मिक कामों में रूचि रहेगी जो आपके लिये ठीक नहीं।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।
2. धर्म मंदिर में सिर झुकावें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष सोना न बिके और न ही गुम हो, खासकर विवाह समय मिली सोने की अंगूठी। यात्रा से हानि हो ऐसी आंशका है। चमड़ी, पांव में कष्ट हो सकता है। फिजूल खर्च बढ़ने की संभावना है। मामा को कष्ट का भय, संतान सुख की चिंता। शत्रु अकारण उभरेंगे और उनसे हानि का भय रहेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. शुद्ध सोने की अंगूठी बांये हाथ की अनामिका अंगुली में पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

• शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2035-2036

वर्त्तमान आयु - 62
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	हाँ	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	हाँ	——	नेक
राहु	——	हाँ	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	——	हाँ	——	हाँ	——	——	——	हाँ	——	——

वर्ष कुंडली 2035 – 2036

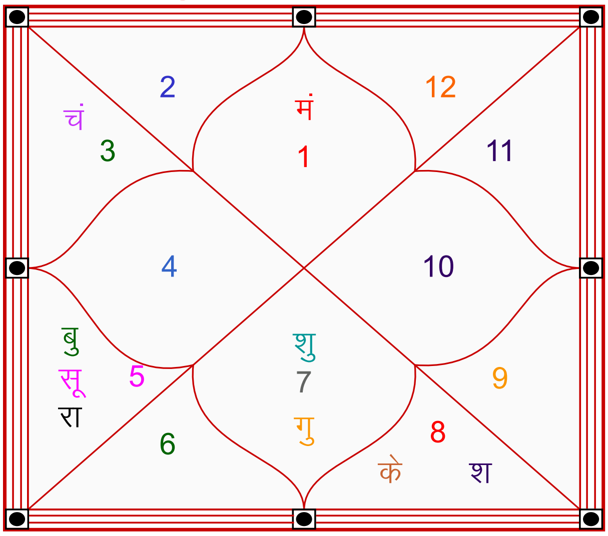

वर्ष चन्द्र कुंडली 2035 – 2036

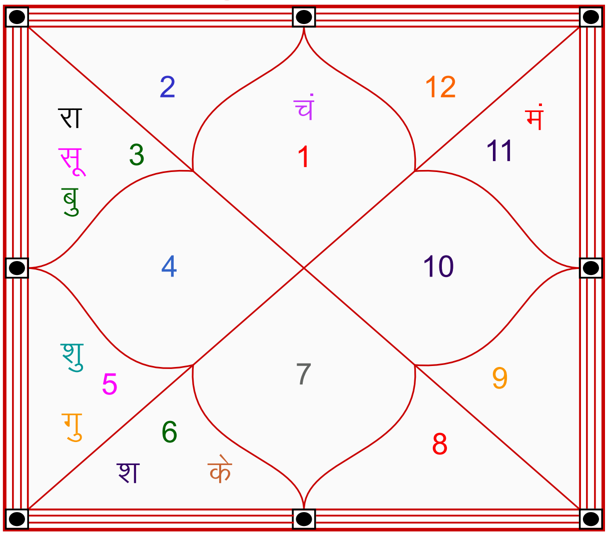

लाल किताब वर्षफल 2035-2036

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार में अगर झूठ और बेईमानी का धन आना शुरू हुआ तो वह धन रोग में नष्ट होगा, पैर में खराबी, संतान तथा आर्थिक स्थिति का आपको विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। पत्नी की तरफ से चिंता रहेगी। आपको सब के साथ मिल–जुल कर कार्य करना चाहिए। राजा और साधू से नेक संबंध रखें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बुजुर्गों के रीति–रिवाज जरूर मानें।
2. साला, जीजा, दोहता/भांजे की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 3 शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चरित्र सुधरेगा और पराक्रम बढ़ेगा, चोरी से बचाव होगा। विद्या अच्छी रहेगी। 3, 6, 8, 12वां मास अधिक लाभदायक होगा, कुदरत खुद आपकी किस्मत बनाने में सहायक होगी, गरीबों से आपकी हमदर्दी रहेगी, किसी अंतर्राष्ट्रीय खेल में आपकी रूचि रहेगी या खुद भी उस खेल में हिस्सा ले सकते हैं।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बहन–भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों के लिये मिला सामान हड़प न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष साहसी और शूरवीर बनेंगे, बुरे व्यक्ति के साथ भी नेकी का सलूक करेंगे, बड़े बहन–भाई से लाभ मिल सकता है। दूसरे व्यक्ति द्वारा की गई नेकी को सदा याद रखेंगे। परिवार और समाज को सच्चाई और नेकी की राह पर चलने की सलाह देंगे, लोहा/लकड़ी, मशीनरी आदि के कामों से लाभ मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बिना मेहनत का माल, दान या गिफ्ट न लेवें।

2. हाथी दांत कायम करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष अचानक धन लाभ होगा और सुख के साधन मिलेंगे, ज्योतिष विद्या और धर्म–अध्यात्म के प्रति रुचि, आप जो बात मुंह से कहेंगे वह सच हो सकती है अर्थात् आपके मुंह से निकला वाक्य ठीक वाक्य माना जा सकता है। अचानक धन लाभ होगा और बहुत अच्छे दिन देखने को मिलेंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. गऊ मुख घर में रिहाईश न करें।
2. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक सम्बन्ध न रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष घर में मंदिर बना कर पूजा करना धन–परिवार के लिये अशुभ होगा। घर में मंदिर हानिकारक मगर दीवार पर तस्वीरें लगा कर पूजा–पाठ कर सकते हैं। घूमने–फिरने वाले साधू की संगत से भाग्य खराब हो जाएगा और जीवन में उतार–चढ़ाव देखना पड़ेगा। मामा को संतान की चिंता रहेगी। बुरे लोगों की संगति से बचे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध सोना और रत्तियां पीले कपड़े में बांध कर रखें।
2. आप विवाहित हैं तो स्त्री मायके से कुछ न कुछ सामान लावें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मकान–वाहन का सुख मिलेगा। काले रंग की स्त्री का साथ, आपका भाग्य को जगाने और आपकी तरक्की में सहायक हो सकती है। विवाह से संबंधित चीजों के कारोबार से लाभ मिले। जददी घर से दूर जाना पड़ सकता है। पत्नी–माता में मां–बेटी जैसा संबंध रहेगा। पत्नी सुशीला और सेवा करेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सफेद गाय की पालना या सेवा न करें।

2. बिल्ली की जेर चमड़े के पर्स में न रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 8 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका मनमौजी स्वभाव रहेगा। एक जगह बैठ कर करने वाले कामों से लाभ होगा। भाग–दौड़ के काम न करें। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। पुत्र संतान की खुशी मिले, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आपके मकान के साथ बंद गली हो उस मकान में आप रिहाइश नहीं रखेंगे तो लाभ होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अपने नाम पर मकान न खरीदें।
2. सांप न मारें।
3. मकान के मुख्य द्वार की दहलीज की पूजा करें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 5 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों में परेशानी, पत्नी से झगड़ा–तलाक या जुदाई तक हो सकती है जो आगे चल कर आपको कष्टकारी बनेगी। दूसरी पत्नी से संतान सुख नहीं मिलेगा इसलिये पत्नी से संबंध विच्छेद न करें। पहली संतान (लड़के) का सुख शक्की है, भाई अमीर निःसंतान या उसे संतान की चिंता रहेगी।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी चांदी की प्लेट पर खड़ा करके घर में रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।
3. अपनी पत्नी से दो बार विवाह (फेरे) करें (पुत्र सुख के लिए)

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपके लिए इस वर्ष शराब–मीट का सेवन हानिकारक है। खराब चाल चलन या अनैतिक संबंध गुप्त रोग देगा। संतान सुख चाहते हैं तो चाल–चलन ठीक रखें। संतान की चिंता रहे ऐसी आशंका है। कारोबार में हानि और यात्रा में परेशानी या अपव्यय होगा। किसी को अपना भेद न बतायें, कारण आपका भेदी तबाह करेगा।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काले–सफेद कंबल धर्म स्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिए)।

2. काले–सफेद कंबल के टुकड़े में केतु के साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें (जब बच्चे जीवित न रहते हों)।

(1) सूर्य–गेहूँ, (2) चंद्र–चावल, (3) मंगल–दाल मसूर, (4) बुध–मूंग, (5) गुरू–चने की दाल, (6) शुक्र–चरी, (7) शनि–काली उड़द, (8) राहु–जौं, (9) केतु–काले–सफेद तिल।

3. कुत्ते को भोजन का हिस्सा देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• शुद्ध सोना पीले कपड़े में बांध कर रखें/धारण करें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2036-2037

वर्त्तमान आयु - 63
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	मन्दा
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	हाँ	——	मन्दा
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	हाँ	——	नेक
राहु	——	हाँ	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	——	——	——	हाँ	——	हाँ	——	——	——	——	——

वर्ष कुंडली 2036 – 2037

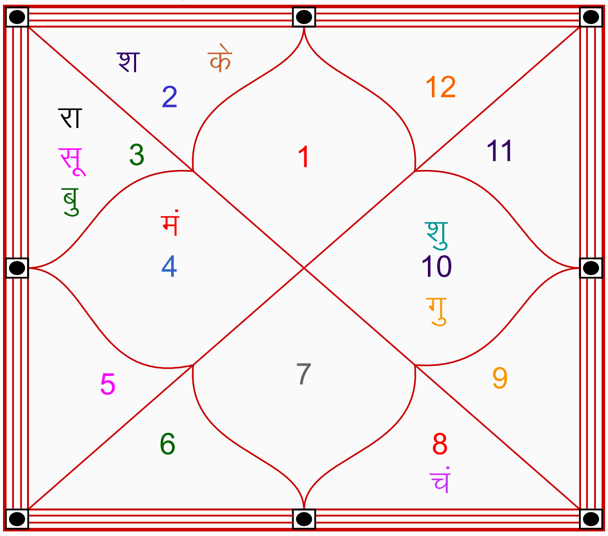

वर्ष चन्द्र कुंडली 2036 – 2037

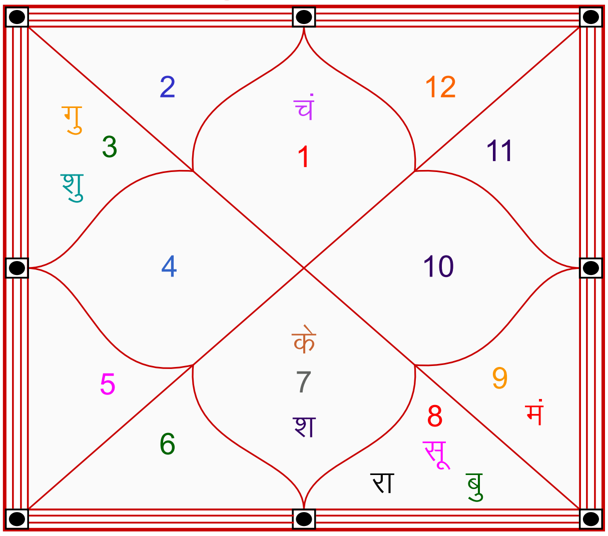

लाल किताब वर्षफल 2036-2037

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी किस्मत में कुछ उतार–चढ़ाव आ सकता है, परिवार में बीमारी पर धन का अपव्यय होगा। गुप्त शत्रु दबे रहेंगे, धन आपकी आंखों के सामने चोरी हो सकता है। ननिहाल पर कुछ समय अशुभ रहेगा। भाई–बंधुओं से धोखा हो सकता है सतर्क रहें। अधिक मेहनत करने से लाभ मिलेगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. माता या माता समान स्त्री के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें।
2. परस्त्री से शारीरिक संबंध न रखें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष माता–पिता का सुख कम मिलेगा। जौहरी–जुएं के कामों में हानि होगी। ननिहाल को कष्ट या उनसे झगड़ा होगा। मन की शक्ति क्षीण, विद्या में रुकावट या माता का सुख मिले, घर से दूर भी रहना पड़ सकता है। सर्दी–जुकाम और पानी से कष्ट का भय, हृदय रोग का भय रहेगा। बुजुर्गों को सांस–दमा रोग की आशंका है।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मीठा भोजन या केसर–दाल चना या गुड़–गंदम धर्म स्थान में देवें।
2. अमावस्या के दिन दूध–चावल धर्म स्थान में देवें।
3. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सुख के साधनों से सुख नहीं मिलेगा। माता, नानी–सास और पत्नी से लाभ मिलेगा, गृहस्थ जीवन सुखमयी व्यतीत होगा, संतान की चिंता रहेगी, मेहमानों का आपके घर में आना–जाना लगा रहेगा। मकान/वाहन का सुख मिलेगा। दूसरों को नसीहत दे कर उनको सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रत्यनशील रहेंगे।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार के मकान में रिहाईश न करें।
2. काले–काने, अंगहीन, निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बहन–लड़की, साली–बुआ से धन लेकर कोई कार्य किया तो कार्य में हानि हो सकती है। आपके भाग्योदय में रूकावट आ सकती है या आप कर्जदार हो सकते हैं। जबान के रोग होने का भय है। भाई–बहन की चिंता या उनसे झगड़ा करने पर हानि हो सकती है। नाड़ियों चमड़ी रोग का भय रहेगा।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दूर्गा पूजन या कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा करें।
2. तोता पाले या तोते को चूरी खिलायें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से अधिक लाभ नहीं होगा। ख्वाबों के महल बनाना आपकी आदत बनेगी। ख्वाबी महल न बना कर आप समय का सदुपयोग करें। साधू को कष्ट दिया, पीपल का वृक्ष उजाड़ा से तो आपको हानि का मुंह देखना पड़ेगा। संतान की चिंता, पिता–दादा का स्वास्थ्य भी खराब रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें या पीपल के वृक्ष को पानी से सींचें (रविवार को छोड़कर) ।
2. तांबे का पैसा 43 दिन लगातार बहते पानी में डालें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 10 में शुभ हैं जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष कामशक्ति की अधिकता होगी। पत्नी के साथ रहते कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी और आपको किसी प्रकार का दुःख नहीं झेलना पड़ेगा। पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। आपमें लोभ और शक करने की भावना बढ़ सकती है। दस्तकारी के कामों से अधिक लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब–बीयर न पियें, मछली न खावें।
2. आशिक मिजाज न बनें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष ईश्वर भक्ति में आपका विश्वास बढ़ेगा। पिता/ससुराल से धन–संपति का लाभ होगा। कोयला, चमड़ा, मशीनरी के कामों से लाभ होगा। मान–प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अक्ल की बारीकी से उलझनों को सुलझा लेंगे। बने बनाये मकान का लाभ मिल सकता है। धन की कमी नहीं रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. माथे पर सरसों का तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष यदि आपने बहन–बेटी, साली–बुआ का धन उपभोग किया तो आपकी हानि हो सकती है। आपके भाई–बंधु धोखे से आपका धन हड़प कर सकते हैं सावधान रहें। कर्ज का बोझ बढ़ सकता है मगर आप बुद्धिमत्ता से कर्ज मुक्त हो जायेंगे। बदनीयती करना आपके लिये हानिकारक है।

राहु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

उपाय :
1. ठोस चांदी घर में रखें।
2. कन्याओं (9 वर्ष से छोटी लड़कियों) की सेवा या दुर्गा पाठ करें या कन्यादान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष यात्रा करने से धन लाभ व मान–सम्मान बढ़ेगा, दलाली या कमीशन एजेंट के कार्य से लाभ होगा। आई–चलाई चाहे लाखों–करोड़ों रूपयों की हो मगर हिस्से में दलाल की दलाली की तरह धन लाभ होगा। सरकार से वजीफा या सरकारी विभाग से धन लाभ हो सकता है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चान चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. नकली सोना न पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 8 दिन नाश्ते में पनीर खावे या पनीर का बचा शेष पानी पिये।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2037-2038

वर्त्तमान आयु - 64
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	मन्दा
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	हाँ	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	हाँ	हाँ	हाँ	——	——	हाँ	——	हाँ	——	हाँ

वर्ष कुंडली 2037 – 2038

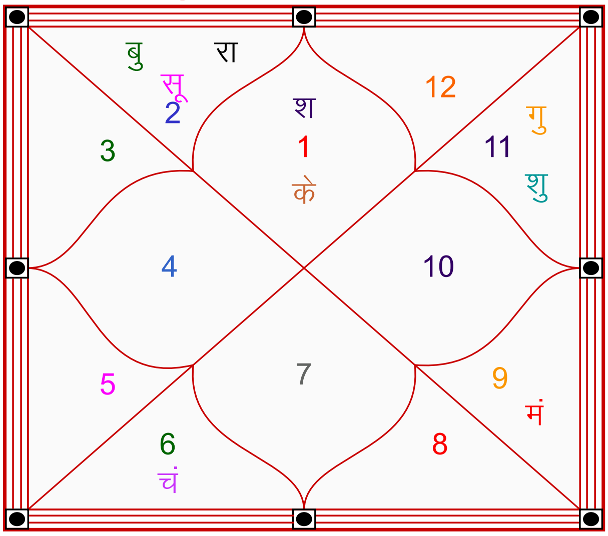

वर्ष चन्द्र कुंडली 2037 – 2038

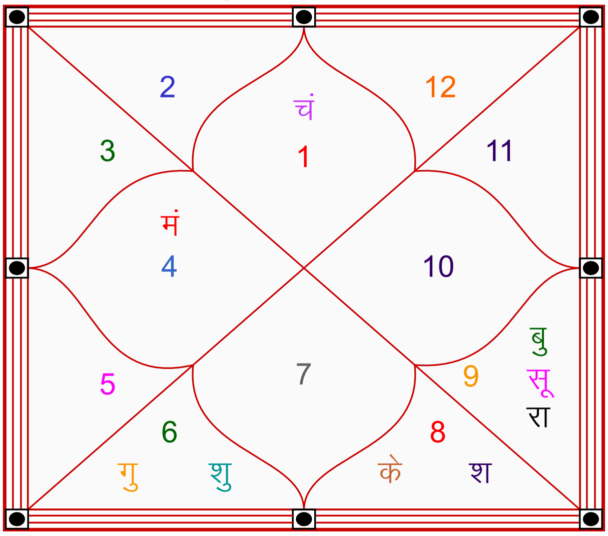

लाल किताब वर्षफल 2037-2038

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष किसी की अमानत को हड़प करने से आपका आने वाला समय खराब हो सकता है, किसी से दूध, चावल, चांदी आदि मुफ्त या दान न लेवें। चाल–चलन खराब या अनैतिक रखने से आप की अवनति हो सकती है। धन/जमीन/स्त्री के झगड़े मे न पड़ें इससे धन–मान की हानि हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. बादाम, नारियल या सरसों का तेल धर्म स्थान में देवें।
2. पैतृक मकान में हैंड पंप लगावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी माता को शरीर कष्ट रहेगा। आप के परिवार को माता की चिंता रहेगी या विद्या संबंधी परेशानी भी आ सकती है। आम जनता के लिये पानी पिलाने का पानी का स्रोत लगाना, आपको और आपकी संतान को कष्ट तथा परेशानी ही देगा। बिना सोचे–समझे किये गये कामों में आपको परेशानी उठानी पड़ सकती है, समझदारी से काम लें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चंद्र ग्रहण के मध्य काल में 4 सूखे नारियल (बजने वाले) जल प्रवाह करें।
2. माता को कष्ट हो तो खरगोश पालें।
3. नाश्ते में कच्चा पनीर खायें। रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पीयें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति में वृद्धि और उसका लाभ मिलेगा, परिवार में धार्मिक उत्सव भी हो सकता है। नौकरी–व्यापार में अधिक धन लाभ मिलेगा। विवाहित भाई के साथ रहेंगे या उसकी पत्नी की सेवा करेंगे तो आप समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की हैसियत से उभरेंगे और आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परदेश में रिहाईश न करें।
2. भाई से झगड़ा न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पिता–दादा से धन लाभ होगा, आपको ज्ञान की बातों में अधिक रुचि रहेगी, बातें करते–करते बात बदलना आप की आदत हो सकती है। अपने भाग्य को चमकाने के लिये आपको अधिक मेहनत भी करनी पड़ सकती है। इस वर्ष हाजिर जबावी की कला आप में विद्यमान रहेगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हरा रंग निषेध।
2. धागा–ताबीज, जल, भभूतियों से दूर रहें।
3. तोता, भेड़–बकरी न पाले।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 11 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपका चाल–चलन खराब हो सकता है। चाल–चलन संभालना आप के लिये एक जरूरी चीज़ है। दादा–पिता को कष्ट, सोने के आभूषणों की हानि, आंखों की नजर कमज़ोर हो सकती है। किस्मत का फल कुछ मध्यम रहेगा। परिवार के लोगों की हिफाजत करना आपके लिए एक जरूरी कर्म होगा।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पीला रूमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कन्या संतान का सुख मिल सकता है। आप अकारण पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आपमें अच्छे गुण बढ़ेंगे मगर आपकी गुप्त कार्य करने की आदत हो जाएगी। विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे, ससुराल पा के लोग सहायक होंगे। बहन–साली से भी लाभ मिलेगा स्त्री आपके कार्यों में साथ निभायेगी।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. माता/पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी–व्यापार में बार–बार बदला–बदली न करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष कैमिस्ट या डाक्टर, इंजीनियरिंग, से संबंधित कामों से लाभ हो सकता है। लोहा–लकड़ी के काम भी लाभ देंगे, माता–पिता के पास धन की बढ़ोत्तरी होगी। आपकी जायदाद बढ़ने की आशा है। सरकारी विभाग से लाभ मिलेगा और उच्चाधिकारियों से अच्छे संबंध बनेंगे।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. परिवार में कोई खुशी का समय हो तो बाजे न बजवायें।
2. शराब आदि पीना, मांस–मछली खाने और इश्कबाजी से दूर रहें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जुआ–सट्टा आदि का व्यापार हानिकारक है। ससुराल और साले का विरोध किया तो हानि होगी, धर्म स्थान में आपके ऊपर चोरी आदि लांछन लग सकता है। फौजदारी मुकददमे में हानि का भय, मुफ्त अन्न या दान का अन्न न खायें इससे जीवन नष्ट होगा। चाल–चलन खराब हो तो दंड का भय रहेगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चांदी की ठोस गोली सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।
2. माथे पर केसर/हल्दी का तिलक करें या शुद्ध सोना पहनें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष तरक्की का योग है। मगर तबदीली का योग कम ही है। यात्रा के आदेश पत्र के बावजूद यात्रा न होगी या बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ेगा। पिता–गुरु की सेवा में रूचि रहेगी। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग हो तो उसे पुत्र लाभ हो सकता है।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बकरी न पालें और बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिर के मकान में रिहाइश न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 6 दिन नाश्ते में कच्चा पनीर खावें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2038-2039

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष आंखों में कष्ट का भय है। नीच या विधवा स्त्री से संबंध आपको हानि होगी, बिजली का सामान मुफ्त या गिफ्ट न लेवें। किसी की अमानत में ख्यानत न करें आप भी ख्याल रखें कि आपकी अमानत में ख्यानत न हो। मकानों से संबंधित और मैकेनिकल काम में हानि हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. जल में चीनी डाल कर सूर्य को अर्ध्य देवें।
2. भूरी चीटियों को सूर्यास्त के समय त्रिचौली (शक्कर–तिल–चावल का टुकड़ा) डालें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सुंदर और सफेद कपड़े पहनने का शौक रहेगा, विद्या से लाभ, किसी की अमानत आपके पास रह सकती है माता–पिता की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, कभी यात्रा पर जायें तो यात्रा से वापस आकर माता के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेने से लाभ होगा। परिवार में बहुत देर बाद किसी के पुत्र संतान होगी।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक और अनैतिक संबंध न रखें।
2. माता या माता समान स्त्री से झगड़ा न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष आपके परिवार में अन्न–धन की कोई कमी नहीं रहेगी। आप भाई–बंधुओं के दुःख में हर समय साथ देगें, आप नेक और इरादे के पक्के रहेंगे जो बात ठान ली वह पूरी कर दिखायेंगे। अगर बड़ा भाई जीवित हो तो उससे अधिक धन, मान आपको मिलेगा। परिवार के लोगों से भी लाभ मिलेगा।

मंगल की शुभता हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़ाई–झगड़ों से दूर रहें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा में कमी न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से इस वर्ष मादक द्रव्यों या चीज़ों का प्रयोग आपको बदज़ुबान बना सकता है जो आपके लिये हानिकारक होगा, ख्याली कारोबार (सोच–विचार कर करने वाले काम) या सट्टा/जुआं, लाटरी, शेयर आदि आपके लिये अनुकूल नहीं है। भ्रम या अज्ञानता के कारण आपका नुकसान हो सकता है।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. स्टील की बेजोड़ अंगूठी बांये हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा अंगुली में पहनें।
2. खाली घड़ा ढक्कन लगाकर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मामा की चिंता रहेगी, किसी से भी कोई चीज मांगने पर भी न मिलेगी, आवारा घूमने की आदत आपको हर जगह तिरस्कृत करेगी। मामा/ताऊ/चाचा से झगड़ा आपको हानि देगा। कर्ज लेना, दान/भिाा मांगना, आने वाले समय को खराब कर सकता है। शत्रु पैदा होंगे मगर शत्रु अपने–आप मरते रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म मन्दिर के पुजारी को वस्त्र दान देवे।
2. शुद्ध सोना, केसर, चना दाल आदि पीली चीज़ें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कामपूर्ति के लिए स्त्री की प्रशंसा करेंगे और स्त्री की गुलामी भी करनी पड़ सकती है। धन का लाभ बहुत होगा। पुत्र संतान की बजाय कन्या संतान का सुख मिलने की आशंका है। जन्मदिन के बाद धन वृद्धि भी होगी। मान–सम्मान बढ़ेगा और वाहन सुख प्राप्त हो सकता है।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. स्त्री जाति का अपमान न करें।
2. पत्नी नंगे पैर ज़मीन पर न चले।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष घर से दूर विद्या अध्ययन करने या कारोबार करने से लाभ होगा। विदेश संबंधित काम या विदेश यात्रा भी हो सकती है। नौकरी–व्यापार में बदली, चाल–चलन ठीक रखेंगे। खराब स्वास्थ्य के समय अल्कोहल से लाभ होगा मगर ठीक स्वास्थ्य के समय अल्कोहल का प्रयोग हानिकारक है।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शराब न पियें, मछली न खावें
2. काला कपड़ा न पहनें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष बिना सोचे समझे या शेख चिल्ली की तरह कार्य करेंगे तो आपको हानि होगी, दीवानी या फौजदारी मुकददमें में न उलझें। रात्रि समय नींद का सुख कम मिलेगा। बिना सोचे समझे कोई कार्य न करें। परिवार का अतिरिक्त बोझ आप पर हो सकता है। धन का व्यय परिवार की बेहतरी या शुभ कामों पर होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. घर के आखिर में अंधेरी कोठरी बनावें।
2. शुद्ध चांदी का ठोस हाथी (चांदी की प्लेट पर खड़ा करके) घर में रखें।
3. शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा में सूराख करके सफेद धागे में पिरो कर गले में पहनें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष रीढ़ की हड्डी या जोड़ों का दर्द, शुगर/पेशाब का रोग हो सकता है। माता की चिंता हो सकती है या माता को कष्ट हो सकता है। हृदय रोग के प्रति आलस्य न बरतें। पुत्र संतान के सुख की चिंता रहेगी। कुल पुरोहित से संबंध ठीक रखे तो पुत्र चिंता दूर होगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। यात्रा में रूकावट आयेगी या यात्रा में हानि हो सकती है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. चने की दाल और केसर धर्म स्थान में देवें।
2. कुल पुरोहित को धन वस्त्र आदि देकर आशीर्वाद प्राप्त करें। अगर कुल पुरोहित न हो तो 4

किलो चने की दाल महीने दो महीने में धर्म स्थान में देवें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• भूरी चींटियों को 430ग्राम त्रिचौली (टुकड़ा चावल, शक्कर, तिल) डाले।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2038-2039

वर्त्तमान आयु - 65
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	मन्दा
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	नेक
शनि	——	हाँ	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	हाँ	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	——	हाँ	——	हाँ	——	——	हाँ	हाँ	——	हाँ	——

वर्ष कुंडली 2038 – 2039

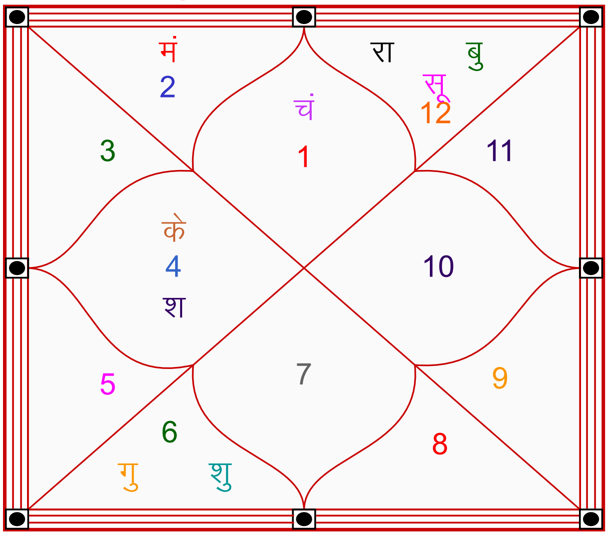

वर्ष चन्द्र कुंडली 2038 – 2039

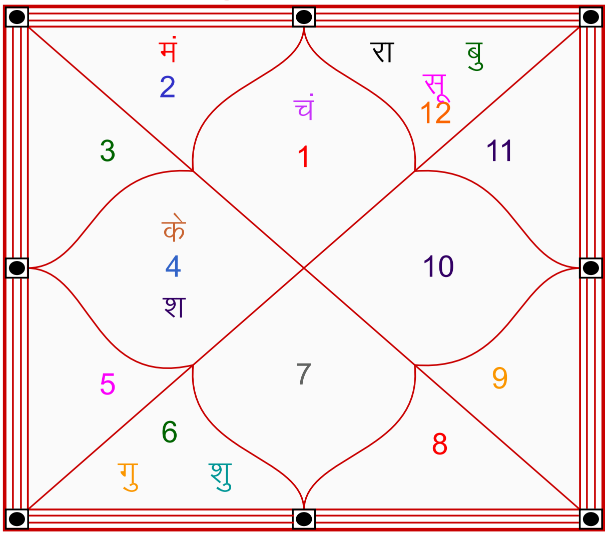

लाल किताब वर्षफल 2039-2040

वर्त्तमान आयु - 66
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	हाँ	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	नेक
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	——	हाँ	हाँ	हाँ	——	——	हाँ	——	——	हाँ	——

वर्ष कुंडली 2039 – 2040

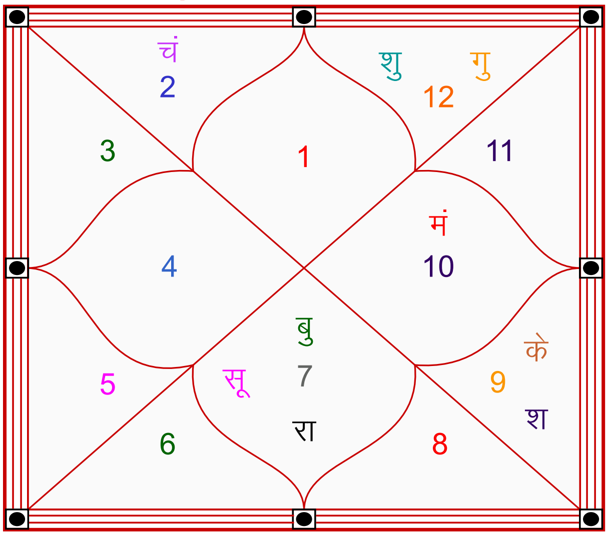

वर्ष चन्द्र कुंडली 2039 – 2040

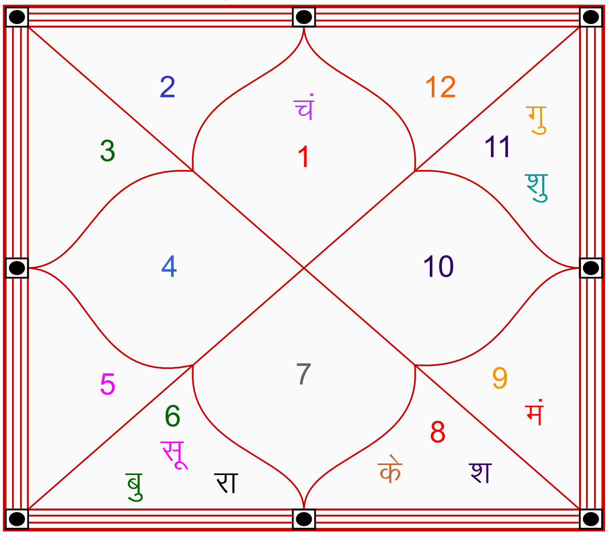

लाल किताब वर्षफल 2039-2040

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष सरकारी विभाग से परेशानी होगी तथा गृहस्थ जीवन में कुछ क्लेश का अनुभव करेंगे। अधिक गुस्सा करना, खुदगर्जी, खुशामद करवाना आपके पतन का कारण बन सकता है, भागीदार से विरोध या झगड़ा हो सकता है। आप दुकानदार या प्राइवेट नौकरी करते हैं तो नर्म स्वभाव रखें, सरकारी अधिकारी हैं तो गर्म स्वभाव रखना चाहिए।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. रात्रि समय खाना बनाने के बाद गैस चूल्हा या चूल्हा/अंगीठी आदि की आग को कच्चे दूध के छींटे देकर बुझाएं। वह बुझा हुआ गैस चूल्हा या अंगीठी/चूल्हा सूर्योदय से पहले न जलावें।
2. कार्य पर जाने से पहने चीनी खा कर पानी पी कर जावें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 2 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष पैतृक सुख और सुख के साधन मिलेंगे, जददी विरास्त से जायदाद का हिस्सा या लाभ मिलेगा। सफेद चीजों के कारोबार से अधिक लाभ मिलेगा। भाई–बंधुओं का सुख अवश्य मिलेगा। विद्या संबंधी कामों में सफलता मिलेगी। यात्रा करने या पहाड़ी प्रदेश से लाभ मिलेगा। चाल–चलन ठीक रखें।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. घर में मूर्तियां न रखें और घंटी, घड़ियाल आदि न बजायें (संतान सुख हेतु)। परंतु दीवार पर तस्वीरें लगाकर पूजा–पाठ कर सकते हैं।
2. शराब आदि मादक वस्तुओं का इस्तेमाल न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप की गिनती उच्च/प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी। आपका मान–सम्मान बढ़ेगा। कोई सरकारी विभाग या पुलिस/सेना विभाग में कार्यरत है तो तरक्की मिलेगी नौकरी व्यापार में अधिक धन लाभ होगा। आप राजसी समय व्यतीत करेंगे। अच्छे या बुरे तरीके से आप धन कमाएंगे, जायदाद और वाहन का सुख होगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. सोना न बेचे न गिरवी रखें।
2. दूध उबाल कर रसोई में गैस चूल्हे/ अंगीठी /चूल्हे आदि पर गिर कर न जले इसका विशेष ध्यान रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष परिवार में सम्मान मिलेगा, विदेश यात्रा या विदेश से लाभ का योग है। स्त्रियों से सम्बन्धित कामों से या पत्नी से लाभ मिलेगा। कपड़े, डाक्टरी के कामों से अधिक लाभ मिल सकता हैं। आपकी कलम में तलवार से भी अधिक ताकत होगी। बेटी–बहन, बुआ–साली से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. बिना सींग वाली गाय या बकरी घर में न रखें।
2. हरी घास घर में न लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 12 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष किसी से धोखा–फरेब कर सकते हैं जो आपके लिये आगे आने वाले समय के लिए ठीक नहीं रहेगा, झूठी गवाही देना और गबन करना भी आपके लिये हितकर नहीं है। धन का अपव्यय या धन बुरे कामों में बर्बाद हो सकता है। आप समय को व्यर्थ न गवां कर हित और शुभ कामों में लगावें।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गुरु/साधू की सेवा करें।
2. पीपल के वृक्ष को जल से सीचें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से आपकी इस वर्ष ज्योतिष विद्या और गुप्त विद्याओं में रूचि रह सकती है, परिवार का पालन–पोषण करने में आपका अधिक ध्यान रहेगा। पत्नी की किस्मत आप के आड़े समय में साथ देगी, ऐशो आराम के साधन मिलेंगे। चित्रकला–गायन का शौक भी हो सकता है। आपका मान–सम्मान बरकरार रहेगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मन में परोपकार की भावना रहेगी, भाई–बंधुओं का सहयोग मिलेगा। कर्ज का बोझ आप में नहीं रहेगा। पैसे के प्रति आप की दौड़ नहीं रहेगी। पत्नी के नाम पर काम शुरू करने से लाभ होगा, मकान–वाहन का सुख मिलेगा। तीसरा रिहाइशी मकान न बनावें वरना स्वास्थ्य को खतरा होगा।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. दूसरों के माल पर बदनीयत न रखें।
2. घर की छत पर ईंधन–चौगाठ आदि न रखें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 7 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष बिजली या पुलिस विभाग से संबंधित कामों में हानि का भय, ट्रांसपोर्ट का काम करने से हानि या आयु शक्की हो सकती है। साझेदारों से झगड़ा। कारोबार में उथल–पुथल भी हो सकती है। पत्नी को सिर दर्द का रोग हो सकता है। पत्नी से तनाव या पत्नी से जुदाई भी हो सकती है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. नारियल का दान करें।
2. शुद्ध चांदी की दो ईंटे घर में कायम करें।
3. प्लास्टिक की डिब्बी में शुद्ध चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष प्रगति मिले ऐसी संभावना है। तबदीली का चांस कम है। यात्रा से लाभ होगा। प्रदेश में भी कुछ समय व्यतीत हो सकता है। अपनी संतान के साथ या उसकी सलाह से कोई काम करेंगे तो आपको अधिक लाभ होगा। आप जिसको पुत्र होने का आशीर्वाद देंगे उसके घर पुत्र पैदा होगा।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चोर–डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारे।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• शुद्ध चांदी की 2 ईंटे घर में लाकर रखें या प्लास्टिक की डिब्बी में 4 ग्राम चांदी का चौरस टुकड़ा रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2040-2041

वर्त्तमान आयु - 67
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	––	हाँ	––	मन्दा
चंद्र	––	––	––	मन्दा
मंगल	––	हाँ	––	नेक
बुध	––	हाँ	––	नेक
गुरु	––	हाँ	––	मन्दा
शुक्र	––	हाँ	––	मन्दा
शनि	––	हाँ	––	नेक
राहु	––	हाँ	––	मन्दा
केतु	––	हाँ	––	मन्दा

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	––	––	हाँ	––	––	हाँ	––	––	––	––	––

वर्ष कुंडली 2040 – 2041

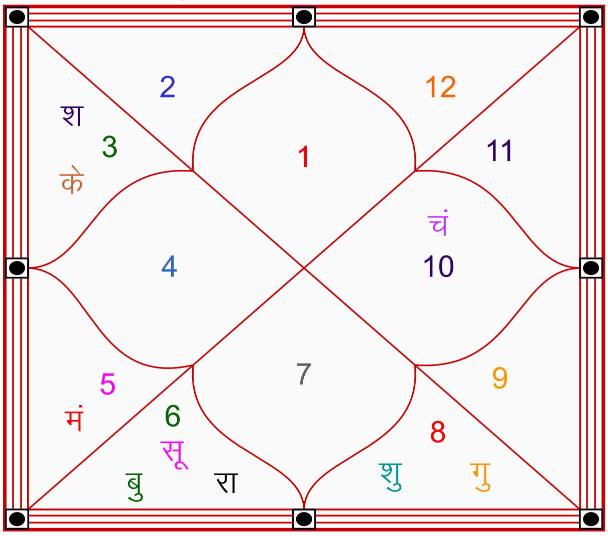

वर्ष चन्द्र कुंडली 2040 – 2041

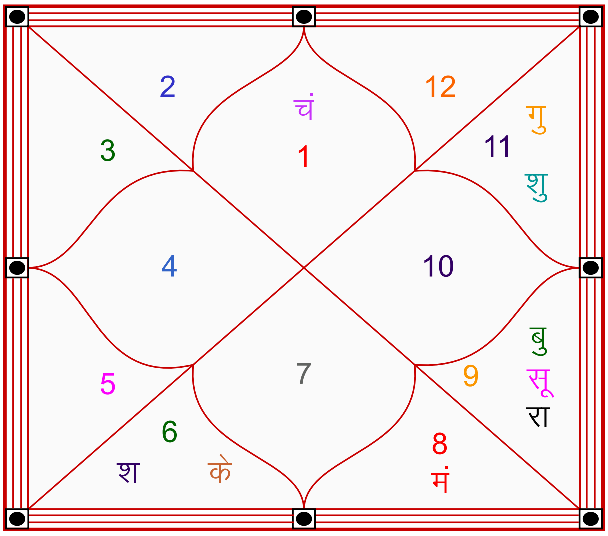

लाल किताब वर्षफल 2040-2041

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 6 में है, जिसकी वजह से इस वर्ष आपको अधिक गुस्सा आना आपके लिये हानिकारक है, रक्तचाप घट/बढ़ जाये ऐसी आशंका है, आप आपने पिता या पुत्र के साथ एक ही शहर/गांव/ऑफिस में इकटठे काम नहीं कर सकते। हर समय दूसरों के सहारे या दूसरों के धन पर आस न लगाएं ऐसा करने से आपको लाभ नहीं होगा।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शुद्ध चांदी या गंगा जल घर पर रखें।
2. बंदरों को गुड़ या भुने हुए गेहूँ को गुड़ लगा कर खिलाएं।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष खराब स्वास्थ्य के समय या वैसे ही रात के समय लिक्वड दवाई का प्रयोग आपके लिए हानिकारक है। विद्या संबंधी कामों में भी परेशानी आ सकती है। चोरों–जुआरियों, शराबी लोगों द्वारा आपका नुकसान होगा। किसी स्त्री या प्रेमिका द्वारा गलत सलाह से आपका धन–सम्मान नष्ट हो सकता है, सतर्क रहें।

चंद्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. दूध को फाड़ कर उसका पानी पीयें अर्थात पनीर का पानी पियें (स्वास्थ्य खराब के समय)
2. 10 दिन सुबह नाश्ते में कच्चा पनीर खावें।
3. रात्रि समय (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) दूध न पिये।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 5 में शुभ है। जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गृहस्थ/संतान का सुख मिलेगा, परिवार में उन्नति होगी, यात्रा बहुत होगी। इस जन्म दिन के बाद धन दिनों–दिन बढ़ता जाएगा, पिता–दादा की हैसियत भी बढ़ेगी, चाल–चलन आपको उम्दा रखना होगा, शत्रु को भी मित्र बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे और शत्रु आपका सहायक बन जाएगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल–चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।

2. शराब–बीयर न पिये, मांस–मछली का भोजन न करें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 6 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिमागी कार्यों से लाभ मिलेगा, विदेश भ्रमण की इच्छा भी रहेगी, समुद्री यात्रा से लाभ मिलेगा, कृषि से संबंधित कार्यों से लाभ मिलेगा। वक्तव्य देना, एकाउटेंट/चार्टर्ड एकाउंटेंट, लेखन, प्रिंटिंग से संबंधित कामों से लाभ होगा। मुंह से निकली बात शत प्रतिशत सही हो सकती है। ननिहाल से लाभ मिलेगा।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. लड़की/बहन का विवाह अपने रिहाइशी मकान की उत्तर दिशा में न करें।
2. सेवक/नौकरों पर हमेशा नज़र रखें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अफवाहों का शिकार हो सकते हैं, पेशाब का रोग होने की संभावना है। आपको इस समय आलस्य त्याग कर भाग–दौड़ से अपने कामों को करना चाहिए और कोई ऐसा काम न करें जो आगे आने वाले समय में आपके लिए मुसीबत का कारण बने। आपका मन उदासी भरा भी रह सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. शरीर पर शुद्ध सोना कायम करें।
2. दही, आलू, देशी घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष गुप्त रोग का भय है। चाल–चलन ठीक रखें वरना पत्नी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है। पत्नी से झगड़ा करना आपके लिये हार और हानि का कारण होगा। पत्नी की हर बात में हां में हां जरूर मिलायें मगर करें अपने मन की। आपके द्वारा दी गई जमानत आपको भरनी पड़ सकती है।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंदे नाले में तांबे का पैसा या फूल डालें।
2. धर्म स्थान में सिर झुकाएं।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके हाथों से खर्च अधिक होगा या धन की कमी रहेगी। आप सबकी मदद करेंगे मगर लोग आपका कार्य बिगाड़ सकते हैं। लोहा, मशीनरी से संबंधित कार्यों से लाभ होगा। आप साहसपूर्ण कार्य करेंगे जिसके कारण आपको जोखिम भी उठाना पड़ सकता है।

शनि की शुभता बढ़ाने निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. मछली का शिकार न करें, मछली न खायें। शराब न पिये।
2. कीकर या बेरी का वृक्ष घर में न लगायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 6 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष शस्त्र भय है, बिना लाइसेंस का हथियार रखने से आपको दण्ड/जुंर्माने का भय है। चाचा से झगड़ा करने पर आपको हानि होगी। निम्न स्तर के लोगों के साथ मित्रता से हानि होगी। आप पर चोरी का लांछन भी लग सकता है। साहूकारी करना या लिखा–पढ़ी के बिना किये कार्यों से लाभ न होगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता पालें या काले कुत्ते को भोजन का हिस्सा खिलायें।
2. 6 सिक्के (औफदप) की गोलियां पास रखें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 3 में है जिसकी वजह से इस वर्ष दूसरों की सलाह लेना आपके लिये हानिकारक हैं। आवारा घूमना या भाई से दूर प्रदेश में जीवन व्यतीत करना ठीक नहीं, शरीर पर फोड़े–फुंसी की शिकायत भी हो सकती है। किसी के किये पेशाब पर पेशाब करना आप को गुप्तांग में रोग और शरीर कष्ट देगा या संतान सुख की चिंता रहे ऐसा भी संभव है।

केतु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. कानों में शुद्ध सोने की ननतियां पहनें।
2. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• बंदर को गेंहूँ को भुन कर गुड़ लगा कर खिलायें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

Phone: +91-70351-70351
Email: care@pandit.com

लाल किताब वर्षफल 2041-2042

वर्तमान आयु - 68
वर्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	हाँ	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	हाँ	——	मन्दा
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	नेक
शनि	——	——	हाँ	नेक
राहु	——	हाँ	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	——	——	——	हाँ	हाँ	हाँ	——	——	——	——	——

वर्ष कुंडली 2041 – 2042

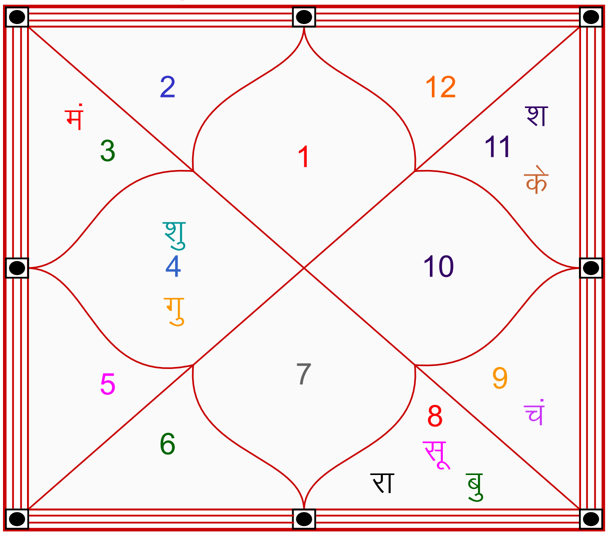

वर्ष चन्द्र कुंडली 2041 – 2042

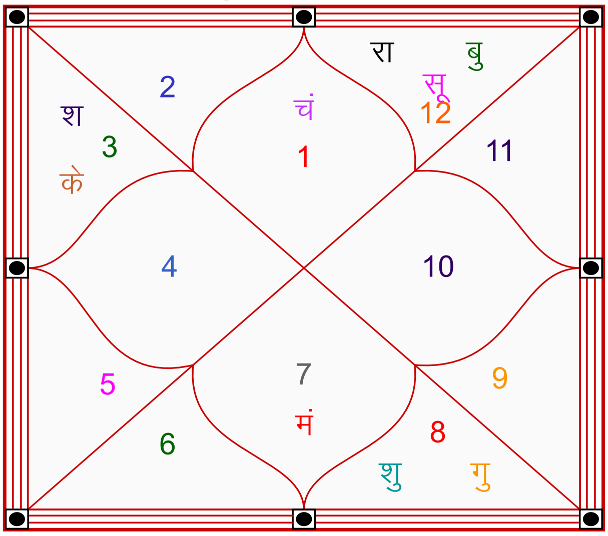

लाल किताब वर्षफल 2041-2042

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष चाल–चलन खराब हुआ तो गुप्त रोग से दुःखी हो सकते हैं। गंदी सोहबत से आपके सम्मान पर धब्बा लगेगा और धन नष्ट हो, ऐसी आंशका है। अतः आपको इन बातों से बचना होगा। जहरीले कीट–पंतगे के काटने का भय है। टैक्स विभाग की चिंता रहेगी। चोरी–ठगी भी हो सकती है सतर्क रहें।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. बड़े भाई की सेवा करें या गाय की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 9 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष समाज के लोगों से हमर्ददी होगी। आपको पैतृक जायदाद का लाभ मिलेगा। तीर्थ यात्रा का अच्छा फल मिलेगा। आपकी संगीत विद्या में रूचि, धार्मिक विचार या धर्म–कर्म में रूचि अधिक रहेगी। आपको विनम्र स्वभाव रखना ही शुभ है जिससे आप तरक्की के शिखर पर पहुंच जाएंगे, धन–दौलत में बरकत होगी।

चंद्र की शुभा बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. झूठ न बोलें, झूठा भोजन न खिलाये और न खायें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 3 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष दूसरों की सहायता कर के प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर जरूरी नहीं कि दूसरों की सहायता के बदले में आपको सम्मान मिलेगा, आपको कसरत करने या जिम आदि जाने का शौक रहेगा, मुकाबले की विद्या (प्रतियोगी परीक्षा) में आपकी जीत होगी, नर्म स्वभाव रखेंगे तो आपको लाभ मिलेगा। धन–परिवार/संतान का सुख मिलेगा।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. पेट का विशेष ध्यान रखें।
2. हाथी दांत न रखें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष जादू–टोना आदि विद्याओं में रुचि या इनका प्रभाव रहेगा जो आपको लाभ न देगी। अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से आपको शरीर कष्ट या धन हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। गृहस्थ में कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आलस्य आपके पतन का कारण बनेगा। खराब चाल–चलन और अनैतिक संबंध हार और हानि देंगे।

बुध की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. वर्षा का पानी छत पर रखें।
2. इस वर्ष विवाह हो तो तांबे का बर्तन (गागर) मूंग साबित भरकर संकल्प करके पति/पत्नी दोनों जल प्रवाह करें। यदि विवाह हो चुका हो तो भी यह उपाय करना लाभ देगा।
3. गुदा पर सुरमा लगावें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 4 में है जिसकी वजह से इस वर्ष शराब–बीयर पीने से विद्या या विद्या सम्बन्धी कामों में परेशानी हो सकती है। चाल–चलन खराब या दूसरा विवाह आपको संतान सुख न देगा। आपको जमीन–जायदाद की चिंता रहेगी। पिता–दादा से दूरी हो सकती है। माता से जुदाई या माता पर कष्ट आ सकता है।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. धर्म मन्दिर में हर रोज सिर झुकाएं।
2. कुल पुरोहित का धन वस्त्र आदि देकर आर्शीवाद लेवें। अगर कुल पुरोहित न हो तो महीने दो–महीने बाद 4 किलो चने की दाल धर्म स्थान में देते रहें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 4 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आप में काम वासना की अधिकता के लक्षण है। दूसरी स्त्री आप पर मोहित हो सकते हैं। मामा–मौसी से लाभ मिलेगा, उत्तम भवन–वाहन का सुख मिलेगा, उत्तम भोजन–शयन का शौक रहेगा। आप अपने परिवार या शहर/गांव/देश में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, यात्रा अधिक होगी और यात्रा से लाभ होगा।

शुक्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. चाल–चलन ठीक रखें, अनैतिक संबंध न रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज ठीक रखें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष धर्म पर अड़िग और पक्के रहेंगे। धर्म पर कायम रहेंगे तो मिट्टी के काम से सोना बनेगा। प्राण जाय पर वचन न जायें वाली कहावत आप पर चरितार्थ होगी। लोहा, कोयला, रबड़ आदि के कामों से लाभ हो सकता है। व्यसनों से दूर रहेंगे तो बहुत लाभ होगा। इन्साफ पसंद वृत्ति रहेगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. किराये के मकान में रिहाइश न करें।
2. ठगी–धोखे से धन न कमाएं।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष अंगहीन, निःसंतान, काने, गंजे व्यक्ति से दूर रहें। जन्म दिन के बाद आठवें मास से उलझनें बढ़ सकती हैं। किस्मत का असर झूले की तरह ऊपर–नीचे होता रहेगा, बिजली विभाग, जंगल विभाग, पुलिस विभाग से संबंधित कामों में परेशानी या धन और समय नाश हो सकता है। बंधन और कैद में न रहेंगे।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 चौरस सिक्के (औफदप) के टुकड़े जल प्रवाह करें।
3. जिस दिन इस वर्ष का 8वां मास शुरू हो उस दिन 43–43 बादाम मंदिर में ले जाकर वहां रखें, उसमें से 43 बादाम उठा कर घर पर लाकर सफेद थैली में रख लें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष कभी हिम्मत नहीं हारेगें। भाग्य आपका साथ देगा। धन–दौलत का अधिक लाभ होगा। आपको पुत्र संतान का सुख मिलेगा तो माता/सास को शारीरिक कष्ट हो सकता है खासकर आंखों में। चाल–चलन ठीक रखें वरना शारीरिक कमजोरी हो सकती है। आने वाले समय की अधिक सोच रहेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय कोई पीछे से आवाज दे तो काम पर न जायें क्योकि आगे काम नहीं बनेगा।

2. व्यतीत समय की बातें करके को याद कर लोगों को न सुनायें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• सिक्के के (औफदप) 8 पीस चौरस जल प्रवाह करें या चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2042-2043

वर्त्तमान आयु - 69
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	हाँ	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	——	——	मन्दा
बुध	हाँ	——	——	नेक
गुरु	——	हाँ	——	मन्दा
शुक्र	——	हाँ	——	मन्दा
शनि	——	हाँ	——	मन्दा
राहु	हाँ	——	——	मन्दा
केतु	——	हाँ	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	हाँ	——	हाँ	हाँ	——	——	हाँ	——	——	——	——	——

वर्ष कुंडली 2042 – 2043

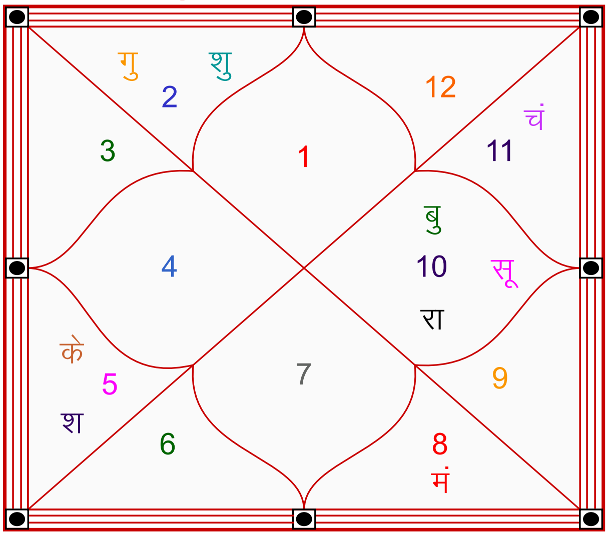

वर्ष चन्द्र कुंडली 2042 – 2043

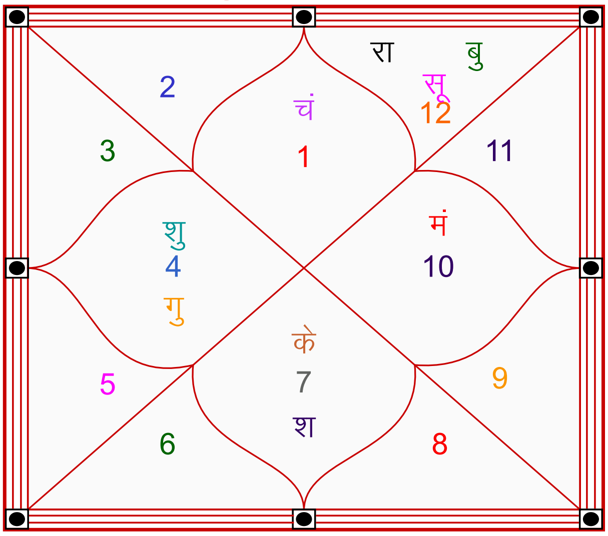

लाल किताब वर्षफल 2042-2043

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आप अपना भेद किसी को न बतायें आपका भेदी ही आपको तबाह करने की कोशिश कर सकता है, मशीनरी, लकड़ी के कामों में हानि हो सकती है। कोयला–बिजली के कामों में अधिक लाभ नहीं मिलेगा। पिता का सुख कम या पिता से लाभ न मिलेगा। आंखों में कष्ट का भय है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. पैतृक मकान में हैंड पंप लगावें।
2. सिर पर सफेद–शरबती, टोपी पहनें या पगड़ी/स्कार्फ बांधें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 11 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विद्या संबंधी कामों से लाभ होगा, सुख के साधन मिलेगें, आपको स्त्रियों द्वारा सहयोग प्राप्त होगा, माता–संतान का सुख मिलेगा, कोर्ट, इंजीनियरिंग, डाक्टरी से संबंधित कामों से लाभ मिलेगा, कारोबार में बरकत होगी। रात्रि समय विद्या पढ़ने या रात्रि समय विद्या से संबंधित कामों से लाभ होगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. विद्या पढ़ने में अरूचि न रखें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 8 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपको किसी विधवा स्त्री से झगड़ा नहीं करना चाहिये। वैवाहिक समस्याएं या परिवार में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। छोटे भाई अगर हों तो उस के लिये समय ठीक नहीं। आपकी जुबान से निकला अपशब्द लड़ाई–झगड़े का कारण होगा। आपको गुस्सा करना नुकसानदेह है, समय धैर्य से निकालें।

मंगल की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. विधवा स्त्री को उपहार देकर चरण स्पर्श कर आर्शीवाद लेवें।

2. तन्दूर में मीठी रोटियां लगवा कर कुत्तों को खिलायें।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 10 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ मिलेगा, बुआ,बेटी,,साली,बहन की तरफ से खुशी मिलेगी। आप लोगों से व्यवहार कुशल, खुशामद और नीति के द्वारा सब काम निकलेंगे, अनेक विद्याओं में रुचि, आपके परिवार की और आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. हरा रंग निषेध
2. तुलसी, मनी प्लांट आदि चौड़े पत्तों के पेड़–पौधे घर पर न लगावें।
3. शराब आदि न पियें। मछली न खायें और मछली का शिकार न करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके पिता को कष्ट, सर्राफी/जौहरी के कामों अर्थात् अधिक लागत के कामों से हानि मिलेगी और मिट्टी के कामों अर्थात् कम लागत के कामों से अधिक लाभ होगा। दूसरों के झगड़े में पड़ कर आप अपना नुकसान कर सकते हैं, सावधान रहें। आपमें कुछ बेरहमीपन भी आ सकता है जिसके कारण आप दुःखी रहेंगे।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें या फूलों वाले गमले लगावें।
2. केसर या हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 2 में है जिसकी वजह से इस वर्ष राग–रंग से आपकी नफरत रह सकती है। शुक्राणु दोष के कारण संतान की चिंता भी रह सकती है। दूसरे के घर में भी आपका निवास हो सकता है। पशु–पीयिों के प्रति आपके दिल में नफरत रह सकती है जो आपके लिये ठीक नहीं है। स्त्री, धन और जमीन संबंधी झगड़ों और मुकददमों से बचें।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. आलू, देशी घी, दही का दान करें।

2. गाय (बिना सींग) की सेवा या पालन करें।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 5 मे है जिसकी वजह से इस वर्ष आप भाई–बंधुओं के साथ लड़ाई–झगड़ा या धोखा न करें। मांस–मदिरा का सेवन करना आपको हार और हानि देगा। परिवार में समस्याएं बढ़ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें विशेष कर पेट/गुर्दे में पथरी का। आपके नाम पर अगर मकान बनेगा तो पुत्र सुख में बाधा आ सकती है।

शनि की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. शुद्ध सोना या केसर पास रखें।
2. सांप को दूध पिलायें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 10 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष मौके के ऑफिसर से झगड़ा नहीं करना चाहिए। परिवार वालों से नेक संबंध बनाये रखने में आपका भला है। परिवार से अलग रहना हानि देगा। पिता–ससुर को कष्ट की आशंका है। कारोबार में परेशानी का योग है आप अपनी संपत्ति बेच सकते हैं। बिना कारण जुर्माना/दंड का भय रहेगा।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. सिर पर सफेद या शरबती टोपी पहनें–पगड़ी बांधे या स्कार्फ बांधें।
2. अंधे व्यक्तियों को स्वादिष्ट भोजन खिलायें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से आपका इस वर्ष गुरु भक्ति में रूचि रहेगी। चाल–चलन ठीक रहेगा। धर्म–ईमान की स्थिति शुभ होने के कारण संतान का सुख मिलेगा। पुत्र के द्वारा आपका भाग्योदय होगा और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में किसी स्त्री के संतान पैदा होने का योग है तो पुत्र लाभ होगा। यात्रा से तरक्की होगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. बुरे चलन के लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक/ट्रंक/अलमारी को हमेशा ताला न लगा रहें। ताले को कभी–कभी खोलते रहें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन सिर पर सफेद–शरबती टोपी/पगड़ी/रूमाल/स्कॉर्फ से ढाप कर रखें।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)

लाल किताब वर्षफल 2043-2044

वर्त्तमान आयु - 70
वर्त्तमान दशा – राहु

ग्रह	अंधा	सोया	धर्मी	नेक/मन्दा
सूर्य	——	——	——	मन्दा
चंद्र	——	——	——	नेक
मंगल	——	——	——	नेक
बुध	——	——	——	नेक
गुरु	——	——	——	मन्दा
शुक्र	——	——	——	मन्दा
शनि	——	——	——	नेक
राहु	——	——	——	मन्दा
केतु	——	——	——	नेक

भाव स्थिति

खाना	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सोया	——	हाँ	हाँ	हाँ	——	हाँ	——	हाँ	——	हाँ	हाँ	——

वर्ष कुंडली 2043 – 2044

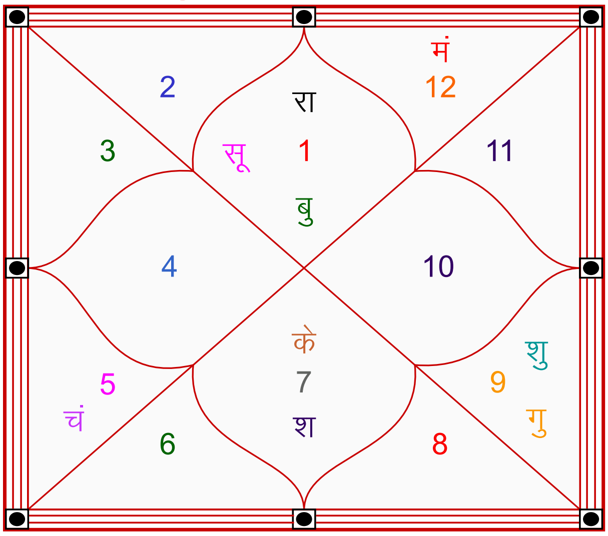

वर्ष चन्द्र कुंडली 2043 – 2044

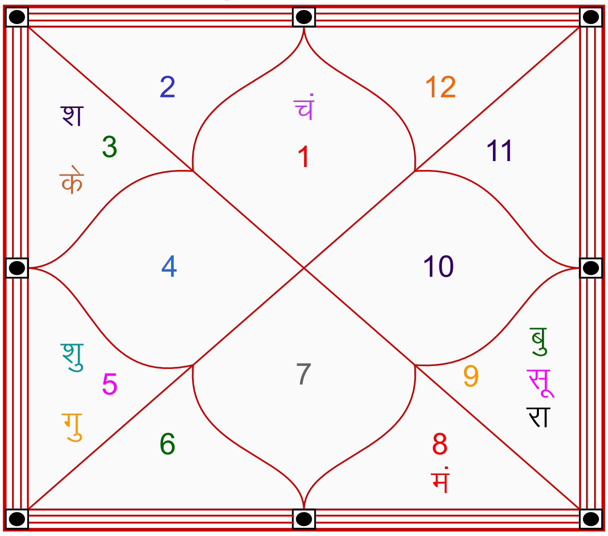

लाल किताब वर्षफल 2043-2044

सूर्य

आपकी वर्ष कुंडली में सूर्य खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके मकान में अंधेरा कमरा है तो उसे रोशनी में बदलने से, माया का सांप, दौलत का हाथी आपके घर से चला जाएगा अर्थात् धन की कमी या हानि होगी, हड्डी संबंधित चोट/रोग का भय, दिल की धड़कन बढ़ जाना, रक्त चाप घट या बढ़ जाये, ऐसी आशंका है, मान–सम्मान की हानि भी हो सकती है।

सूर्य की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :
1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य का अर्घ्य देवें।
2. बन्दरों को गुड़/केला खिलायें।

चन्द्र

आपकी वर्ष कुंडली में चंद्र खाना नं. 5 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपके परिवार वालों को सोने–चांदी का लाभ होगा, विद्या का लाभ होगा, आप दूसरों के कष्ट अपने पर झेलेंगे, दूसरों पर परोपकार करेंगे, लड़ाई–झगड़े में आप जिसका भी साथ देंगे उस व्यक्ति की जीत होगी। आपकी बहुत प्रसिद्धि होगी और समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

चंद्र की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. हर कार्य में किसी की सलाह जरूर लेवें।
2. पाप के कामों में अपना हस्तोप न करें।

मंगल

आपकी वर्ष कुंडली में मंगल खाना नं. 12 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी समाज में आवाज बुलन्द रहेगी, शत्रु मुंह की मार खायेंगे, मुसीबतें टल जाएगी, गुरु निर्धन–ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहेंगे, आप अपनी मनमर्जी के अनुसार कार्य करेंगे, किसी से दब कर नहीं रहेंगे। मीठा–भोजन या मिठाई आपको अधिक पसन्द रहेगी। मुकददमे में जीत या सरकारी विभाग से लाभ से लाभ हो सकता है।

मंगल की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :
1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।

2. लोग आपका नमक खाकर नमक–हरामी करेंगे, सतर्क रहे।

बुध

आपकी वर्ष कुंडली में बुध खाना नं. 1 में शुभ है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष विदेश यात्रा या विदेश से सम्बन्धित कामों से लाभ हो सकता है। आपके मुंह से निकली हुई बात में दम होगा, आप दूसरों की परवाह नहीं करेंगे। मधुर भाषा बोलेंगे, कल्पनाशील विचार होंगे। आप पर दूसरे लोगों का प्रभाव रहेगा। आप परिवार के झगड़ों में सुलह करने में भूमिका निभाएंगे।

बुध की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. अण्डा–पेस्ट्री आदि अण्डे से बनी चीजें न खावें।
2. शराब–बीयर न पियें, मांस–मछली का भोजन न करें।

गुरु

आपकी वर्ष कुंडली में गुरु खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आपको इस वर्ष नास्तिक प्रवृत्ति बन सकती है जो आपके लिए शुभ नहीं है। बुजुर्गों से विरोध या झगड़ा आपको नहीं करना चाहिए। परिवार में किसी को दिल से संबंधित बीमारी हो सकती है। सोना बिक जाये या गिरवी पड़े या गुम हो जाए ऐसी संभावना है। किसी को दिया हुआ वायदा आप पूरा नहीं करेंगे तो हानि होगी।

गुरु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. गंगा स्नान करें 9 बार (दो महीने लगातार या महीने में एक बार या 9 दिन लगातार)
2. वचन और धर्म की पालना करें।

शुक्र

आपकी वर्ष कुंडली में शुक्र खाना नं. 9 में है जिसकी वजह से आप इस वर्ष एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग करेंगे तो वह आपको हानिकारक हो सकते है। मादक द्रव्यों और चीजों का कुसंगति के कारण प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं इससे बच कर रहें। स्त्री, धन, संतान पर समय मध्यम रहेगा। चाल–चलन ठीक रखें कारण गुप्त रोग का भय है। भाई–बंधुओं से सावधान रहें।

शुक्र की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. मकान बनाएं तो नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।

2. नीम के पेड़ के तने में चांदी के 9 चौरस टुकड़े दबायें (अगर आपके पुत्र संतान है तो)।

शनि

आपकी वर्ष कुंडली में शनि खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से आप इस वर्ष परोपकार करने से धन लाभ पाएंगे। यह लाभ 7 गुणा तक हो सकता है। मकान बनेगा और बुजुर्गों से जमीन–जायदाद का लाभ मिलेगा। आपको गांव/शहर या किसी संस्था में पद मिल सकता है। पिता/ससुर और पत्नी के लिये समय शुभ रहेगा। चाल–चलन खराब रखने से धन हानि होगी।

शनि की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. डाक्टर/कैमिस्ट का साथ न रखें।
2. चोर–डाकू से संबंध न रखें।
3. बुजुर्गी मकान के मुख्य द्वार की दहलीज ठीक रखें उसके दोनों तरफ सूर्योदय से पहले सरसों का तेल डालें।

राहु

आपकी वर्ष कुंडली में राहु खाना नं. 1 में है जिसकी वजह से इस वर्ष आपकी कुछ अदला–बदली का योग है। किस्मत का असर स्थिर नहीं रहेगा। आपका शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव हो सकता है। कुछ बनते कामों में रूकावट भी आ सकती है। आपको नीला–काला कपड़ा पहनना हानिकारक हो सकता है। सरकारी विभाग द्वारा रिश्वत या गबन का केस बन सकता है।

राहु की अशुभता कम करने हेतु निम्नलिखित उपाय करें।

उपाय :

1. धर्म स्थान में गुड़–गेहूँ दान देवें।
2. दूध शरीर पर मल कर स्नान करें।

केतु

आपकी वर्ष कुंडली में केतु खाना नं. 7 में शुभ है जिसकी वजह से इस वर्ष दिनों–दिन आपके धन की बढ़ोत्तरी होती रहेगी, ऐसी संभावना है। आजीविका के नये साधन बनेंगे। आप अपनी धुन के पक्के रहेंगे। जिसके कारण आप बड़े से बड़े व्यक्ति के सामने अपना झंडा गाड़ लेंगे। आपकी संतान आपकी सहायता में रहेगी और संतान मुसीबत में दुश्मन को मार आयेगी।

केतु की शुभता बढ़ाने हेतु निम्नलिखित परहेज करें।

परहेज :

1. चाल चलन ठीक रखें और अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का काम न करें।

वर्ष को शुभ बनाने हेतु वर्षारम्भ में विशिष्ट उपाय

• 43 दिन सूर्य को चीनी डाल कर अर्घ्य देवे।

(उपरोक्त उपाय जन्मदिन को या जन्मदिन से 40 दिन के भीतर करें/शुरू करें।)